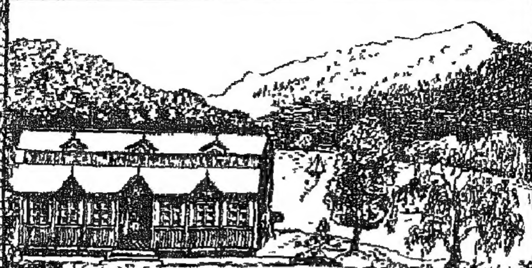




Durga Sah Municipal Library
Naini Tal
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल

Class No. 891·3
Book No. S26G
Reg No. 4599

गाँव की बेटी

[री पृष्ठ भूमि पर आधारित उच्च कोटि का मौलिक सामाजिक उपन्यास]

सागर बालूपुरी

प्रकाशक

मंजुल प्रकाशन

राम निवास बिल्डिंग, आरा कशां रोड

राम नगर, नई दिल्ली

प्रकाशक

मंजुल प्रकाशन

राम नगर, नई दिल्ली



लेखक

श्री सागर वालूपुरी

★

संशोधक

श्रीचन्द जैन

★

प्रथमा वृत्ति

११००

Durga Sah Municipal Library,
NAINITAL.
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल [illegible]

Class No. ....
Book No. ....
Received on ..... July 57



अगस्त १९५८



मूल्य

पांच रुपये



सर्वाधिकार सुरक्षित



मुद्रक

श्री देवभूषण मुद्रणालय

४११, एसप्लेनेड रोड,

दिल्ली–६

गाँव की बेटी

विश्व के उन समस्त गाँवों की जनता को
जो इस प्रगतिशील युग में भी
अनेक प्रकार की समस्याओं के
समाधान में सतत प्रयत्नशील हैं।

एक

सूरज डूब चुका था, पर क्षितिज में लालिमा अभी तक कुछ शेष थी। नदी के किनारे गाँव की युवतियाँ अपने-अपने घरों से बर्तन धोने के बाद एक साथ उठ खड़ी हुईं और क्षितिज में डूबती सूरज की अन्तिम किरणों को श्रद्धा से जल अर्पित करके सबने अपना बर्तन उठाया सिर पर रखा और नदी के कछार से ऊपर पहुंची थीं, कि एकाएक युवतियों की प्रतिनिधि युवती मधुमा के पाँव आगे बढ़ते-बढ़ते रुक गए। उसके पाँवों की गति के साथ ही अन्य युवतियों की पग ध्वनि भी जब शान्त हो गई, तो मधुमा अपनी सखियों की ओर संकेत करके, बोली—"क्यों"तुम सब क्यों रुक गईं?"

इस पर उसकी घनिष्ठ सखी ने उसकी बात काटते हुए कहा—"और तुम क्यों रुक गईं, मधुमा? तुम तो हमारी प्रतिनिधि हो। नेतृत्व करने वाला ही जब रुक जाये, तो भला हम"।"

"मैं तो चाहती हूँ, कि अब सूरज डूब चुका है। संध्या की इस प्रथम बेला में, मैं बांसुरी बजाती हूँ और तुम लोग भारत नाट्यम नृत्य नाचो"।"

उसने कहा—"तो यह कहो, कि नदी का किनारा देखकर मुरलीधर की बात याद आ गई। पर मुरली तेरे पास है भी, तो उसे धारण कौन करे" फिर भारत नाट्यम नृत्य। मेरे विचार में तो राधा कृष्ण का नृत्य सबसे अच्छा रहेगा।"

मधुमा ने अपने सिर से बर्तन उतार कर वहीं रख दिया और उसके साथ-साथ अन्य सखियों ने भी उसका अनुकरण किया। बर्तन एक ओर रखकर उसकी एक सखी सामने आ खड़ी हुई, कुछ मटक कर, बोली—"यह कहती है, कि राधा कृष्ण का नृत्य! भला मधु! तू ही बता, कि बिना कृष्ण के राधा कृष्ण नृत्य कैसे पूरा होगा!"

मधुमा मुसकरा उठी। उसने बाँसुरी में फूँक दी और अपने अधरों लगाकर जब तर कर चुकी, तो ओठों से बांसुरी हटाकर बोली—"अगर बाँसुरी के राग सात्विक होंगे, मेरे स्वर में उनका स्वर होगा, तो वह आप हमारे नृत्य में···।"

"लेकिन रात हो जायेगी। घर पर लोग चिन्तित होंगे।"

"घर की चिन्ता! मेरे पिता जी तो कभी नहीं बिगड़ते।"

"तू ठहरी मुखिया की बेटी। भला तुझे कौन कुछ कहेगा। अच्छा, बजा बाँसुरी, हम सब नृत्य करेंगी।"

मधुमा ने अधरों से बाँसुरी लगाई और सूरदास के किसी गीत को रागों में संजोकर सुर निकालने लगी। स्वर से मधी संगीत साधना ग्राम गीतों के मधुमय साज से सुसज्जित होकर भी वंशी की धुन में उपवन और वृक्षों की छाया में जैसे डूबती जा रही थी। मधुमा की वंशी की तान से उसकी सहेलियों की ताली के ताल से ताल मिलाकर नृत्य का कार्य-क्रम आरम्भ हो गया था! मधुमा के अधर से निकली ध्वनि के साथ उसकी सहेलियों के पायलों की ध्वनि से मिलकर एक स्वर्गिक छटा सी प्रतीत हो रही थी। लय और ताल पर सधा लोक संगीत का यह प्रदर्शन अद्भुत था, जिसे देखने के लिए नदी के जल को चूम कर आता हुआ पवन भी उस नृत्य से प्रभावित होकर जैसे ऊंघने लगा था, और मौन गीत से पवन के झोंकों पर तैरती हुई स्वर लहरी समाप्त ही हुई थी, कि मधुमा के सामने चाँद की झिलमिलाती चाँदनी में एक व्यक्ति आ खड़ा हुआ। उसके सिर पर साफा, शरीर में मिर्जई और पाँव में जूता। नृत्य रुक गया, मधुमा उसे देख ही रही थी कि आगुन्तुक व्यक्ति ने स्वयं उसकी उत्सुकता भंग करते हुए कहा—"बजाओ-गोरी! बजाओ न। तुम्हारी मुरली की मादक तान ही ने तो मुझे यहाँ ला खड़ा किया है। बजाओ और अपनी सखियों से कहो, कि एक बार पुनः नाच शुरू करें!"

संगीत की साकार प्रतिमा मधुमा के ओंठ काँप उठे। उसने उपेक्षित दृष्टि से देखते हुए कहा—"तुम कौन हो।"

'मैं तुम सब का सरपंच हूं'''गाओ न ! क्यों बन्द कर दिया । मैं तुम ों का साधना के स्रोत से अपनी प्यास बुझाना चाहता हूं ।"

चाँदनी की ज्योति में मधुमा ने सरपंच के नेत्रों में झाँक कर देखा। उसकी पुतलियों में कामुकता की असीम लहरें उठ रही थीं और उस ध्वनि से जो कुछ आभास हुआ, उससे मधुमा विचलित न हो सकी। वह क्रान्ति की तरह रक्त वर्ण सी होकर बोली—"साधना, प्यास बुझाने की साधन नहीं। तुम गलत समझ रहे हो। अगर अपने रास्ते नहीं जाते, तो समझ लो, कि तुम एक हो और हम दस सहेलियाँ।"

कहकर मधुमा ने अपने चुस्त बलाऊज से एक छोटे चाकू को निकाल लिया। उसकी छोटी कटार को देख कर आगुन्तक सरपंच ने जोर स हंसकर कहा—"उसकी क्या आवश्यकता है, गोरी ! इस कटारी से तो तुम्हारी आँखों की धार बड़ी तेज है !"

मधुमा की सहेलियाँ उसके पीछे खड़ी-खड़ी यह सब कुछ देख रही थीं। कुछ भय से भयभीत होकर सरपंच की ओर देख रही थी, कि मधुमा ने निर्भिक होकर कहा—"भूल रहे हो तुम ! अब वह युग चला गया, जब तुम अपनी रियासती ठाट से गाँव की गोरियों का अपहरण करने में समर्थ होते थे ! अब भय दिखाकर नारी पर अधिकार करने का युग समाप्त हो चुका है। सीधे चले जाओ, नहीं तो दोनों गाँवों के बीच संघर्ष पैदा हो जायेगा। व्यर्थ ही शत्रुता का बीज न बोओ'''। जाओ'''जाओ'''।"

सरपंच ने आगे बढ़ते हुए कहा—"गोरी ! सरपंच आगे बढ़कर पीछे नहीं हट सकता। आखिर तुम मुझे इतनी स्पर्धा से क्यों देखती हो। क्या मैं मानव नहीं हूं'''हिंसक जन्तु की भाँति मेरे साथ व्यवहार करके तुम्हें क्या मिल जायेगा, गोरी ! तुझे नहीं मालूम कि तेरा बाप मुझ से कितना डरता है। इसी गाँव में नहीं, बल्कि आस-पास के सभी गाँवों में मेरी धाक है। अकेले चार सौ बीघे जमीन की खेती है। घर में धन-धान्य की पूर्ति के बाद भी तुझ जैसी एक नारी के बिना मेरे घर का कोना-कोना सूना हो रहा है ! तू मेरा प्रस्ताव मान ले'''एक बार मेरी गोद में आकर बाँसुरी बजा दे, गोरी।"

मधुमा का मानस किसी अज्ञात आशंका से कुछ सशंकित हो उठा। उसने तड़फकर दाँत पीसते हुए कहा—"जबान की बागडोर सम्भाल कर बातें करो; सरपंच ! तुम जैसे मनुष्यों की अब भारत में आवश्यकता नहीं। तुम ··· तुम वही सरपंच हो न, जिसके प्रभुत्व के सामने जनता त्रस्त हो रही है, अपने धन के आवेश में तुमने अपने पक्ष में अनेक पहलवानों की समिति बना रखी है। अपनी सेवा और व्यक्तित्व की चन्दचापलूसों की प्रधानता पर तुम···तुम गाँव की हर गोरी के नारीत्व को लूट कर अपनी कामाग्नि को शान्त करते हो। यही तुम्हारी मनुष्यता है। न्याय के मन्च पर बैठ कर स्वयं अन्याय करते, तुम्हें शर्म भी नहीं आती ! दूर चलो, हटो यहां से ! आस-पास की सभी नारियाँ तुम्हारे चरित्र से परिचित है।"

सरपंच आवेश में भर उठा। उसके दोनों नथूने फूलने लगे, जोर से एक कदम आगे बढ़कर बोला—"मेरे चरित्र के विषय में कौन कह सकता है गोरी ! फिर यह दुनियाँ तो हर एक में कुछ न कुछ बुराई निकालती ही है। अगर मैं बुरा हूं, तो तू तो मुझे सुधार लेगी। सच कहता हूं, कि अगर तू मेरी बात मान लेगी, तो···निहाल कर दूंगा।"

"चुप रहो। जनता के सेवक बनने वाले, चुप रहो। गाँव के निरीह अशिक्षित नारीत्व के जीवन को खरीद कर जीने वाले सेवक तुम चुप रहो। नारी को अपने दाँतों के बीच रखकर तुम उसे अपनी जीभ का स्वाद समझ रहे हो। गाँव के भोले भाले ग्रामीणों पर अपनी निरंकुशता का परिचय देने के बाद भी तुम अपने को जनता का सेवक समझते हो···सच अगर तुम जैसे मनुष्यों को मनुष्य कहा जाए, तो पिशाच का रूप कैसा होता होगा ?"

मधुमा का हृदय तीव्र तूफान की तरह तेज होता जा रहा था उसके नेत्रों की लाली पर चाँदनी रात सहयोग देने के लिए तैयार बैठी थी. परन्तु सरपंच फिर भी उसकी ध्वनि के वजन को अपने मस्तिष्क की तराजू पर न तोल सका। मधुमा क्रोध में काँप रही थी। उसे काँपते देख सरपंच मुस्कुरा उठा। अपने दाहिने हाथ की टार्च से उसके मुंह पर रोशनी फेंक कर देखा, फिर रोशनी बुझा कर बोला—"नारी का क्रोध भी उसके सौन्दर्य को

पाने का सन्देश है। अगर तुम इस तरह नहीं मानती तो सुन लो......उस दर-दर के चरागाहों में गाय भैंस चराने वाले जीवन से तुम्हारा विवाह नहीं हो सकता...नहीं हो सकता।"

"मधुमा स्वयं अपनी शक्ति को समझती है, सरपंच! तुम क्या, यह सारा संसार, ब्रह्म और कानून भी हमें एक दूसरे से अलग नहीं कर सकता, यदि हमारे प्रेम की नींव सत्य के हाथों पड़ी होगी!"

सरपंच ने घूमते हुए कहा—"अच्छी बात है, मधु! देख लूंगा, तुम्हारे जीवन को और तुम्हारे उस बाप को, जो गाँव में मुखिया की कुर्सी पर बैठा हुक्का पीता होगा और मैं तुझे सारे समाज के सामने अपनी दुलहिन बनाकर लाऊंगा। तेरा जीवन देखेगा, तू खड़ी रहेगी और तेरे जीवन के सामने तेरी माँग में सुहाग दान करूगा।"

"सुहाग दान! यह तो मेरा जीवन बहुत पहले कर चुका है, देख-देख मेरे माथे पर मेरे पति की बिन्दी, सगाई......।"

"यह सगाई टूट जायेगी...।"

"जब तक धरती, आकाश, वायु और इस संसार में मानव प्राणी रहेंगे तब तक हम एक साथ रहेंगे.........एक रहेंगे, सरपंच!"

"देखूंगा...।"

कहकर आवेश में जब वह चला गया, तो मधुमा ने अपनी सखियों की ओर संकेत किया और तब सबने अपने बर्तन उठा, बोझिल मन से अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान किया!

—o—

दो

मधुमा मधुपुर गाँव के मुखिया राम की बेटी थी। मधुपुर गाँव के निवासियों में ही नहीं अपितु दस-बीस गांव के मुखियाओं में सब से अधिक जन सेवा का कार्य किया था, तो मधुमा के पिता ने। अपने गांव में युवक-युवतियों का स्कूल, सिंचाई तथा बुवाई जोताई सम्बन्धी बातों से लेकर राजनैतिक और सामाजिक कार्यों में भी उसके पिता का सहयोग जनता को सक्रिय रूप से प्राप्त था। वह इतने शांत प्रकृति के व्यक्ति थे, कि भले ही उनकी व्यक्तिगत वस्तु का नष्ट होना उतना अधिक महत्व पूर्ण नहीं था, जितना सामूहिक विकास के नष्ट होने से उन्हें दुख होता था। ले देकर एक मधुमा बेटी थी और उसके विवाह के लिए वह चिन्तित थे। पर स्वयं अपने विवाह के विषय में पिता को समझा बुझाकर राजी कर ले और कहती कि काका अभी क्या जल्दी पड़ी है। मुझे पूरा-पूरा पढ़ लेने दो न! फिर मैं भी तुम्हारे साथ गाँव की बहनों को सुशिक्षित करूंगी... और फिर अपने मन से, तुम से पूछकर किसी देश के ऐसे सक्रिय कार्य कर्ता के साथ विवाह कर लूंगी, जो मेरे साथ मेरे सबसे अच्छे भारत के नव निर्माण में योग दे सके! मुखिया जी हंस पड़ते। प्रेम से विह्वल होकर अपनी बेटी को गले लगाकर कहते मधु, बेटा! मेरी अवस्था देखती है और तू अपनी अवस्था भी देख रही है। भला शादी के बाद भी तो तू उसके साथ देश के निर्माण में सहयोग दे सकती है। तब मधुमा मुस्करा देती और अपने काका की गोद में मुंह छिपा कर कहती, नहीं काका, विवाह के बाद सब कुछ ऐसा ही नहीं रहता, बल्कि जीवन का स्वरूप एक नए रूप में परिवर्तित हो जाता है।

मुखिया जी बेटी की बात पर स्नेह से गद गद हो उठते और बड़े भाव से उसके बालों पर हाथ फेर कर कहते—अच्छा जा जा... जरा हुक्का तो ले······ आ।"

मधुमा किसी प्रकार के नशा को मनुष्यों की आदतों में सबसे खराब और गन्दी नशा की आदत ही समझती थी। इसलिए कभी कभी तो वह अपने पिता की अलोचना करने से नहीं चूकती। वह चहाती थी, कि भारत ही नहीं प्रत्येक देश में नशा का प्रयोग न हो और इसीलिए वह अपने पिता से हुक्का भरने की आज्ञा पाते ही कुछ नाराज हो जाती, कुछ तन कर कहती, काका अगर माँ होती, तो तुम यह नशा भी कभी नहीं करते– तब मुखिया जी कहते, बेटा तेरी माँ के बाद मेरे हृदय का एक अंग सूना हो गया। वह तुझे देकर चली गई, नहीं तो किसी और नशा का सेवन भी करने लगता। उसके प्यार के गम को भूलने के लिए ही तो तम्बाकू पीता हूं।"

मधुमा पिता की प्रतिक्रिया पर पश्चाताप से भर उठती और वह लपक कर अपने पिता के कन्धे पर जा लेटती। स्नेह से कहती—काका! यह सब भ्रम है। नशा गम भूलने के लिए नहीं, उसे और याद करने की सामग्री है।"

इस प्रकार बाप बेटी अपनी जीवका के साथ-साथ गाँव-गाँव के लोगों की जबान की चर्चा बन गये थे। साल भर की खेती के बाद मुखिया के पास जो अनाज पैदा होता, उसमें साल भर की खुराक लेने के बाद मुखिया जी सारा अन्न अपने गाँव के स्कूल मे पढ़ने वाले लड़के लड़कियों को दे देते, इसलिए उनके पास न कभी इतना अन्न बचा, कि उसे बेचकर अपनी बेटी की शादी कर लेते, न कुछ जोड़ सके थे। मधुमा जब से स्यानी हुई थी, तब से उसके विवाह की चिन्ता भी उनकी मानसिक शक्ति को शिथिल बनाए जा रही थी।

उस दिन की घटना को जब मधुमा ने अपने घर आकर सुनाया, तो मुखिया का कोमल, निष्पक्ष हृदय अपने-आप विक्षुब्ध हो उठा। गाँव में पहुंच-कर मधुमा की सखियों ने भी एक-एक घर मे उसकी सूचना, सूचनाप्रसार विभाग की भाँति फैला दिया। मुखिया जी का मन भीतर ही भीतर रो उठा। अपनी झोपड़ी के सामने बने चौपाल पर बैठे, वह सोच रहे थे, कि मधुमा अपने स्कूल

से आकर उनके पास खड़ी हो गई। स्नेह से काका के गंजे सिर पर हाथ रखकर बोली—'यह क्या काका ! क्या सोच रहे हो ! शाम हो चली है। अभी तक न गाय का दूध निकला है, न कुछ। आज क्या हो गया है, तुम्हें काका !"

मुखिया ने सामने की ओर उसी मुद्रा में देखते हुए कहा।

"हाँ, आज कुछ काम करने को जी नहीं चाहता !"

"सो क्यों, क्या सिर मे दर्द है !"

"नहीं, सिर दर्द और मौत से भी बढ़कर यह दर्द है। मेरी प्यारी बेटी !"

"और यह दर्द, यह चिन्ता, केवल लड़कियों के कारण ही उत्पन्न होती है, न काका।"

"पगली लड़कियो के कारण नहीं, वल्कि पुरुष अपनी पौरुष की वास्तविक परिभाषा न जानने के कारण ही नारी के साथ इस प्रकार का व्यवहार करता है, बेटा ! तेरी ही समस्या का समाधान सोच रहा हूँ।"

मधुमा हँस पड़ी। वह काका को खींचकर उठाती हुई बोली—"छोड़ो भी काका ! चलो, गाय खड़ी है। पहले दूध निकाल लो—कुछ खा-पीकर आराम करो। मुझे धान के खेत पर जाना है।"

मुखिया ने बेटी की ओर देखकर कहा—"भला, तू रात को जायेगी, धान के खेत !"

"तो क्या हो जायेगा, काका !"

"हो...तो बहुत कुछ सकता है। रात का मामला...।"

"तो क्या हुआ। चाँदनी रात है। खेतों के आस-पास और लोग भी अपनी फसल को देखने के लिए जाते ही हैं, क्या कर लेगा कोई...।"

"नहीं-नहीं। अब तुझे रात को नहीं जाने दूंगा...अपने गाँव की तो कोई बात नहीं, पर बेटा ! वह सरपंच अगर सचमुच तुम्हें देख चुका है, तो वह अपने काले कारनामे से बाज नहीं आयेगा।"

मधुमा मुसकरा कर, बोली—"तुम मुझे इतनी कमजोर समझते हो, काका।"

"शारीरिक शक्ति में तो नारी पुरुष से कमजोर पड़ती ही है बेटा।"

"किन्तु नारी की मानसिक शक्ति पुरुष के शारीरिक एवं मानसिक दोनों तत्वों मे अधिक सबल होती है काका !"

मुखिया राम हँस पड़े। बोले—"बेटी ! तू उसे जान कर भी अन जान बन रही है। गाँव की कौन ऐसी नारी है, जो उसके चरित्र से परिचित न हो—।"

"और फिर भी तुम लोग उसका विरोध नहीं करते...क्यों नहीं सरपंच के पद से हटाकर उसे...।"

"उसे हटाना सरल नहीं बेटा !"

"क्यों...क्या वह जनता के विरोध पर भी नहीं हट सकता ?"

"अगर जनता कर सके लेकिन जानती हो, जनता तब तक क्रान्ति नहीं करती, जब तक दमन-भ्रष्टाचार का बोझ पृथ्वी पर अधिक नहीं हो जाता !"

"तब वह इसी तरह करता रहेगा...और हम सब सहते रहेंगे...क्या हमारे गाँव में कोई ऐसा नहीं, जो उसके विरोध में जनता को खड़ा कर सके !"

मुखिया राम कुछ सोचते हुए, बोले—"हाँ...हाँ; क्यों नहीं ! परन्तु वह हमसे पाँच मील दूर है। उसके कार्य क्रम में, उसकी निस्वार्थ सेवा ने जनता को जीत लिया है, यदि वह चाहे तो जनता की आवाज को उसके साथ मिलाकर उसे पद से हटा सकता है !"

"पर लोग, स्वतंत्र होकर भी इस तरह पदाधिकारियों की शासक पद्धति के विरोध में आवाज क्यों नहीं उठाते ?"

"इसलिए कि उसके पास धन है, और आज का जन ! ऐसा जन जो व्यक्तिगत सुख-स्वार्थ के लिए जन के साथ ऐसा व्यवहार करता है। इसका निवारण है, वह परदेशी जो उस दिन आया था और जनता के बीच तीन दिन में ही सर्वमान्य हो गया था। याद है, तुझे उसने कितने प्यार से कहा था-मधुमा ! मैं फिर आऊंगा, जब तुम बुलाओगी। पर-पर पगली तूने तो उसे भूलकर भी नहीं बुलाया, वह चला गया और इस गाँव से पाँच मील की दूरी पर लड़कों को बटोर कर एक बगीचे में पढ़ाता है। उन्हें तरह-तरह के काम करने, बनाने

की शिक्षा देता है । उसकी ही मेहनत का फल है, कि हमारे गाँव गाँव में बिजली और नए गाँव का निर्माण हो गया।"

मधुमा ने कहा—"वह...वह तो महा सनकी था, काका। बात बात पर मुझे सन्देह से देखता था। बात-बात पर वह झुंझला जाता था। भला ऐसे आदमी की बात पर भी जनता-विश्वास...।"

"नहीं...वह सनकी नहीं था ! वह एक सफल क्राँन्तिकारी था, बेटी !"

"क्राँन्ति कारी ! चलो काका, अच्छा छूटे। यह लोग तो बड़े भयानक होते हैं।"

"समाज और संसार की बर्बरता की भयानक सीमा को तोड़ फेंकने वालों को लोग ऐसा ही कहा करते हैं। तुम एक बार भी नहीं गई न ! इस पाँच मील के अन्तर्गत उसने लोगों को सामूहिक श्रम द्वारा जिन नए गाँवों का निर्माण किया है, वह शहरों से भी साफ-सुथरे हैं।"

"काका...सच, तब तो मैं कल अवश्य जाऊंगी...लेकिन सरपंच के गिरोह में कत्ल करने वाले लोग भी तो हैं, अगर वह उनके विरोध में खड़ा हो, तो लोग वाग उसे मार तो नहीं डालेंगे...?"

"क्रान्ति कारी लोग सत्य और न्याय के लिए अपनी मौत को भी जिन्दगी समझते हैं, बेटी ! एक सरपंच क्या दस भी उनका कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि जनता उन्हें बहुत सम्मान की दृष्टि से देखती है।"

"तो आप लोग उससे क्यों नहीं कहते...क्या आप लोग उससे नहीं कह सकते। आप तो कह सकते हैं, वह हमारे घर पर कई बार आ भी चुका है !"

"हाँ, लेकिन वह स्वयं जानता है, कि सरपंच कैसा है और हमने कहा भी, पर न जाने क्या सोचकर वह कह देता है, कि जनता अभी उसके अत्याचार को अत्याचार नहीं समझती। जिस रोज जनता उसके अत्याचार को समझ लेगी, वह अपने आप असहयोग करके उस स्वार्थी एवं शोषण करने वाले व्यक्ति से शक्ति छीन लेगा ! पढ़ा लिखा है, इसलिए हम लोगों की बात और नहीं मानता !"

"हूं, ऐसा है, तो देख लूंगी उसे। जब सारा गाँव कह चुका और नहीं मानता, जो अब मैं भी कहूंगी कि अगर नहीं माने मेरी बात तो, मैं उसके विरोध में नारी वर्ग को खड़ा कर दूंगी।"

"नारी वर्ग... हां... तुम कर सकती हो'''तुम्हारा वर्ग कर सकता है बेटी ! क्योंकि वह कामुक है। स्त्रियों की सुन्दरता को अपने मनोरंजन का साधन समझ कर अपने भले बुरे का ज्ञान भी खो बैठता है, बेटी।"

मधुमा को आश्वासन देकर मुखिया राम झोपड़ी के भीतर चलने लगे थे, कि एकाएक बाप बेटी के कानों में खट-खट की आवाज सुनाई पड़ी। दोनों ने घूमकर देखा, तो दूध की चाँदनी में नहाकर एक युवक अपनी अँगुली पकड़ाए घोड़े से उतर कर चला आ रहा है। मुखिया राम ने मधुमा की ओर संकेत करके कहा—"देख, शायद पंचायत इन्सपेक्टर आ रहा है, क्या ? आ चलकर देखें, तो सही।"

बाप बेटी दरवाजा छोड़कर बाहर निकल आए और समीप जाकर देखा, तो मधुमा लजा गई, पर मुखिया के मुंह से प्रेम का एक अपनत्व से भरा स्वर निकल पड़ा—"जीवन दादा ! इस वक्त कहाँ से !"

जीवन ने कहा—"इस लड़के की खोज में गया था ! इसके माँ-बाप परेशान थे, और यह घूमता घूमता जरा देखो तो, कहाँ से कहाँ चला गया, अपने माँ-बाप की एक छोटी सी बात पर नाराज होकर।"

"छोटी सी बात पर नाराज होकर...यह क्यों...?"

"यह पढ़ने में बहुत तेज है, परन्तु इसके माँ-बाप की आर्थिक दशा ऐसी नहीं, कि वह इसे पढ़ा सकें...माँ-बाप ने कह दिया, कि हमारे पास पैसा नहीं है, जहाँ मन चाहे चला जा, अब हम नहीं पढ़ा सकते। इस पर यह घर छोड़कर चला गया। शान्ति पुरा के एक ग्रामीण का लड़का है। अब मैं पढ़ाऊंगा ...। इधर से ही जा रहा था, सोचा, कि आप से मिलता चलूँ !"

"अच्छा किया, दादा। बैठो, आज की रात यहीं काटो, न ! घर में जो साग-सब्जी है, उसे हमारे साथ खाओ'''सुबह होते ही ग्राम आश्रम पर चले जाना।"

जीवन ने बच्चे को मधुमा के सामने किया और उसने अपनी गोद में लेकर कहा—"हां, तुम चलकर बाहर आराम करो और मैं इसको अपने पास रखूंगी।"

कहती हुई मधुमा ने उसे अपनी गोद में ले लिया और लेकर भीतर चली गई। उसे खिलाने-पिलाने के बाद उसने अपनी चारपाई पर सुला दिया।

इसके बाद उसने अपने पिता के साथ जीवन को भी खाना खिलाया और खाना खा चुकने के बाद जब मुखिया राम आचमन कर चुके तो जीवन की ओर देखकर बोले— 'बेटा, आज की रात पानी चढ़ने का डर है। धान लगा चुका हूँ, अगर रात को खेत पर नहीं गया, तो न जाने कहीं मेड़ टूट जाय, तो सारी फसल बह जायेगी। तुम जरा घर पर देखना।"

तभी मधुमा ने आगे बढ़कर कहा—"नहीं, जी ! आप जाकर आराम कीजिए, काका के साथ। मैं आज खेत पर जाऊंगी।"

"क्यों नही, बूढ़े आदमी को तो कहीं नहीं जाना चाहिए।"

"वाह···यह कैसे हो सकता है बेटा, माता पिता अपने होते हुए कभी भी संतान को इस तरह से खतरनाक मौके पर नहीं भेजते···फिर मधुमा बेटी है।"

उसने दालान की ओर बढ़ते हुए कहा–"बेटी होते हुए भी वह उन बेटों से कहीं अधिक वीर है मुखिया जी, जो केवल शरीर से तो पुरुष होते हैं, पर भावनाएं उनकी स्त्रियों से भी अधिक संकुचित होती हैं।"

"नहीं बेटा ! मैं नहीं जाने दूंगा।"

"आखिर आज से पहले भी तो आप के घर आया हूं, जब कभी देखो तो मधुमा रात-रात भर खेत की रखवाली करती रही है, आज आप इस तरह क्यों डर रहे हो !"

"जानकर भी अनजान बन रहे हो बेटा! सरपंच की गुफा के गीदड़ रात को स्त्रियों के सौन्दर्य का माँस नोचने के लिए घूम रहे हैं। ऐसी स्थिति में भला मधुमा को कैसे भेज सकता हूं।"

"न सही ! मैं चला जऊंगा।"

'और मधुमा भी आपके साथ चलेगी !" उसने कहा।

किन्तु मुखिया राम न मान सके। अपनी लाठी लेकर वह घर से निकल पड़े।

मुखिया राम के चले जाने के बाद मधुमा ने स्वयं भोजन किया और दूध भरा गिलास लेकर जीवन के पास पहुंची, तो वह मुखिया जी के बिस्तर पर लेटा-लेटा कुछ सोच रहा था। एकाएक मधुमा को लालटेन की रोशनी में सामने खड़ी देखकर कहा—"यह क्या ?"

"दूध है, पी लीजिए।"

जीवन ने पलकों को उठाया और लालटेन की रोशनी में मधुमा की ओर बार बार देखने लगा। उस भोली आकृति में मूक समर्थन के स्नेह का स्त्रोत उमड़ रहा था। जीवन ने उसके हाथ से, दूध का ग्लास लेते हुए कहा—"बैठो, मधुमा !"

मधुमा जमीन पर बैठने लगी, पर जीवन ने उसे आग्रह करके अपने पास ही तख्त पर बैठा लिया और ग्लास होठों से लगाकर हलक के नीचे दूध उतारने लगा था, कि मधुमा बोली—"भला आप का मुंह भी नहीं जलता !"

"बहुत जल चुका है, न ! इसलिए किसी प्रकार की जलन नहीं मालूम होती !"

"मजाक छोड़िए, आप यह बताइये कि इतने दिनों से मेरी कभी याद नहीं आई ?"

"भला याद भी कहीं भूलने योग्य होती है मधु, परन्तु गाँव की दृष्टि में··· तुम स्वयं सोच-विचार करने के बाद ही तो मेरे प्रति उपेक्षित भाव से देखने लगी। वह दिन याद है न···।

"हाँ, याद है और इसलिए आज सरपंच को अवसर मिला, कि वह मेरे सामने खड़ा होकर सौन्दर्य रस पान का दान माँग रहा था।"

"सरपंच हाँ-हा ! उस बच्चे को खोजने के लिए जब गाँव-गाँव में घूम रहा था, तो तुम्हारी चर्चा सुनी थी। क्या यह सच है ?"

"उसकी कायरता के सामने तो सब नम्र पड़ गए हैं।"

"पर यह प्रजातन्त्र का युग है, मधुमा ! क्या इस गाँव-नगर के अन्दर कोई ऐसा नहीं, जो उसके इस प्रकार की व्यवहारिकता की आलोचना कर सके ?"

जीवन ने ग्लास का दूध खत्म किया और रखते हुए बोला, तो मधुमा उदास हो गई, उसने जीवन के सामने अपने हृदय की बात व्यक्त करते हुए कहा—"आलोचना कौन करे, उसका विरोध कौन करेगा ?"

"क्यों, क्या वह इतना बलवान है ?"

"वह बलवान नहीं, पर उसके यारों की संख्या अधिक है, वह अपने यारों के बहुमत से जो चाहता है वह करा सकता है···।"

"लेकिन यह तो अत्याचार है, अनुचित बात है। क्या गाँव के सभी लोग मर गए हैं ? क्या किसी में इतनी शक्ति नहीं, कि वह इस नीच को पद से अलग कर सके। सचमुच यह नई बात है।"

"नई क्यों, पुराने जमाने में भी तो जब महाभारत का युग था, और एक से एक विद्वान बलशाली, आचार्य सभा में बैठे थे और सभी नीतिज्ञों के बीच द्रोपदी का चीर खींचा गया था। क्या उस वक्त द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह और कर्ण के पास विवेक नहीं था। लेकिन अपने सामने नारी को उस समय प्रताडित होते देखकर भी इन आचार्यों का पौरुष मानो सदा के लिए सो गया था, आज यहाँ गाँव शहर में भी वही हो रहा है, जीवन ! तुम तो···।"

जीवन ने मधुमा की हथेली पर हाथ रखकर कहा—"मधु ! यह तो जानती हो, कि हमारा जीवन एक राग में बंध गया है। तुम कहो तो सही कि तुम चाहती क्या हो ?"

"उस नीच को इस पद से हटाना।"

"इसके लिए तुम अपने वर्ग द्वारा सरकार से तथा जनता से अनुरोध करो, वह अवश्य निकाल दिया जाएगा।"

"बात से पहाड़ उड़ा देना तो सभी जानते हैं। जनता की बात कह रहे हो, पर जनता उसके आतंकवाद से स्वयं भयभीत हो चुकी है, जानकर भी अनजान बन रहे हो !"

जीवन ने अधिक रात होते देखकर कहा—"जो कुछ भी होगा, देखा जायेगा, मधु ! अब जाकर सो रहो। रात काफी बीत चुकी है।'

"नहीं, मैं तुमसे वचन चाहती हूं। अगर तुम अग्रसर नहीं होगे तो, वह मेरी आबरू लूटने पर आमदा है ?"

जीवन हंस पड़ा। मधुमा के रक्तिम कपोलों पर उसने लालटेन की रोशनी का प्रकाश देखा और बड़े स्नेह से उसके गाल पर एक हल्का सा चपत लगाकर कहा—"मधु नारी की इच्छा के विरुद्ध पुरुष उसकी आबरू की बात तो दूर रही, उसके शरीर को स्पर्श भी नहीं कर सकता। तुम जाकर सो रहो, गाँव की बेटियाँ इस तरह भयभीत नहीं होती।"

अबकी बार मधुमा उठ पड़ी और दालान में जाकर उस बच्चे के साथ सो रही।

—o—

तीन

सुबह होते ही मुखिया राम अपने खेत से जब घर लौटे, तो मधुमा गाय-बैल को खाना-पानी दे चुकी थी और जीवन के लिए नाश्ता बना रही थी। एकाएक चौके की ओर अपने काका के साथ जीवन को आते देखकर बोली-

"काका आज मटर की गाँठ नहीं लाए, क्या ?"

मुखिया राम ने अपनी आँखों को बेटी की पलकों से मिलाकर कहा--"मटर की फसल भी क्या रही, बेटी। जानती ही है, कि एक तो पत्थर ने सारी फसल पीट दी, दूसरे आज रात को तीन बीसवा मटर काट कर किसी ने गिरा दिया है।"

मधुमा जल्दी-जल्दी पराठे सेंक रही थी। खेत कटने की बात सुनते ही बेलन की चाल में ब्रेक लग गया और वह चकित भाव से बोली--"खेत कट गया ! इस स्वतन्त्रता के युग में भी मनुष्य इतना अज्ञान है कि आपस की वैर भावना का बदला खेतों की फसलों से लेता है। यह किसका काम है काका ! और किसी का तो नहीं कटा ?"

"खेत के पास के जो खेत हैं, उनमें उनके खेतों की फसल सुरक्षित है, जो सरपंच के गुट्ट के हैं।"

जीवन अब तक खड़ा-खड़ा सुन रहा था। सरपंच का नाम लेते ही बोला-- "तो सरपंच ने अब यह कर्म करना शुरू किया है। आप लोग उसे इस पद से हटा क्यों नहीं देते ?"

"प्रजा तन्त्र का युग है, बेटा ! भला जिसकी लाठी उसकी भैंस की कहावत में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों के सामने जिसकी भैंस उसकी लाठी का क्या महत्व है।"

"जो भी हो, कच्ची फसल को काटना घोर अपराध है ! आपको पुलिस में इतला करनी चाहिए।"

'जब पुलिस स्वयं इस प्रकार के व्यक्तियों से कुछ धन लेकर छोड़ देती है, तब इतला करने से लाभ ही क्या होगा ?"

"एक ग्राम सभा करके हमें एक ऐसा प्रस्ताव पास कराना चाहिए, जो इस बर्बरता के विरोध मे अपना तर्क प्रस्तुत करके इस प्रकार के लोगों से सार्वजनिक कार्यों का अधिकार छीन ले।"

मुखिया राम मधुमा के समीप बैठ गए और तभी मधुमा ने चौक की दीवार से लगी थाली को उठाते हुए कहा–"जीवन बाबू ! आप तो बस बातों में अधिक विश्वास करते हैं। चुपचाप आकर नाश्ता कीजिए, अब मैं इस समस्या का समाधान करूँगी।"

जीवन के पास ही वह लड़का खड़ा था। नाश्ता का नाम सुनते ही लड़का मधुमा के सामने आ बैठा, और अपने बचपन की बुद्धि द्वारा बोला "दीदी रानी ! मुझे नाश्ता दे दो। मुझे भूख लगी है।"

मधुमा ने उसे खाना दिया और दोनों हाथ से थाली में रखे पराठे को तोड़कर टमाटर की सब्जी के साथ खाने लगा। उसके साथ खाने जीवन भी बैठ रहा था, कि दालान की ओर मुखिया की दृष्टि जा पड़ी। देखा, तो सामने नीरजू खड़ा था। उसे देखते ही मुखिया राम ने कहा –"आओ, भैया। क्या बात है, यहाँ कौन लजावर बैठी है, जो दालान में ही खड़े हो गए ?"

नीरजू दालान के दरवाजे से बाहर आकर खड़ा होते हुए, बोला—"अरे मुखिया काका ! आज गांव में पंचायत जुड़ेगी।"

पचायत का नाम सुनते ही मुखिया राम उठ पड़े, बोले—"क्यों, भैया ! आखिर किस बात की पंचायत है। क्या खेत कटने के विषय में ... ?"

"खेत कटने के लिए नहीं, बल्कि बैजू अपनी पत्नी को त्यागना चाहत है, उसके लिए पंचायत की सभा बैठेगी ...तुम्हें भी बुलाया है।"

इसके पूर्व कि मुखिया राम कुछ उत्तर देते, मधुमा ने नीरजू को देखते हुए कहा –"नीरजू भैया। आओ न, गरम-गरम पराठे सेंक रही हूं ! तुम खा लो—।"

"मेरी इच्छा नहीं है, दीदी। अभी कई सदस्यों को सूचित करना है !

चलने दो, फिर कभी खा लूँगा।" उसके बाद वह जीवन की ओर घूमकर, बोला—"जीवन दादा ! तुम यहाँ कैसे खड़े हो ?"

जीवन ने नीरजू के कन्धे पर हाथ रख कर कहा—'कल इस बच्चे को खोजने गया था।"

"तब तो आज तुम भी पंचायत में अवश्य रहोगे !"

"मैं पंचायत का सदस्य नहीं हूँ।"

"परन्तु तुम रहते तो न्याय परमेश्वर सा होता। सुनते हैं कि पंच मुख में परमेश्वर का निवास रहता है।"

"मुझे तो पंचों का निष्पक्ष निर्णय ही परमेश्वर सा प्रतीत होता है। लेकिन पंच पक्षपात तथा मुँह देखी बातें करते हैं, तो परमेश्वर मुख रहते हुए भी अन्याय करने वालों का उस क्षण उचित दण्ड नहीं देता। तुम्हारी पंचायत में साफ-इन्साफ करने की जब क्षमता नहीं, तो उसमें सम्मिलित होने से क्या लाभ ?"

नीरजू के दिल में बात बैठ गई। उसने चलते-चलते कहा—"जो भी हो, जीवन दादा। तुम्हें आना पड़ेगा। गाँव की बात है, फिर एक महिला के जीवन का सवाल है। तुम नहीं रहोगे, तो कोई काम निष्पक्ष भाव से नहीं हो सकता।"

"आखिर किस आधार पर तुम ऐसा कह रहे हो। दोनों पक्षों के क्या विचार हैं ?"

नीरजू चलते-चलते रुक गया और जीवन की बात का उत्तर देते हुए, बोला—"दोनों पक्ष की क्या कहूँ ! तिलकू के बेटे को जानते हो न ?"

"हाँ, बैजू से है न, तुम्हारा मतलब ?"

"हाँ···उसकी बहू पर, उसके माता-पिता ने यह आरोप लगाया है कि वह चरित्र हीन है और उसके चाल-चलन खराब होने के कारण बैजू उसका परित्याग करना चाहता है।"

जीवन नाश्ता करने लगा था, वह नरम पराठों के शुद्ध घी से तर टुकड़ों को तोड़ कर अपने मुँह में रखकर कुछ कहने चला था, कि मधुमा

ने तवे से अन्तिम पराठे को उतार कर, थाली में रखते हुए, कहा—"भला, उसकी मजाल है कि वह अपनी पत्नी को छोड़ दे ···।"

"तुम्हारे कहने से क्या होता है, जब पँचायत की यही राय है ?" नीरजू ने कहा।

"पंचायत अन्याय नहीं कर सकती। इस तरह किसी स्त्री को बिना अपराध कलंकित करके उसके अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।"

नीरजू ने मधुमा की बात पर मुस्करा कर कहा—"ठीक कहती हो, दीदी ! पंचायत में जरा तुम भी आ जाना, तो मजा आ जायेगा।"

मधुमा ने कहा—"हाँ···हाँ नीरजू भैया। मैं जरूर आऊंगी। पर एक बात तो बताओ कि बैजू अपनी पत्नी को क्यों छोड़ना चाहता है ?"

नीरजू ने कहा—"तलाक का कानून देखकर वह समझता है कि जब कोई चाहे, अपनी स्त्री को त्याग सकता है।'

इस पर मधुमा ने व्यंग भाव से कहा—"हिन्दू कोड बिल का यह अर्थ नहीं है, कि जब चाहो, स्त्री को अपनी जूती समझ कर उनका परित्याग कर दो। आज कोडबिल पास हो गया है, लेकिन आज से पहले भी तो बैजू के परिवार के लोग अकसर अपनी स्त्री को छोड़ते आए हैं। मेरे विचार में तो उसके परिवार का यह पेशा हो गया है। स्त्री उस परिवार के लिए एक सम्पत्ति के रूप में है, जिसे जब चाहे छोड़ दें, जब चाहे किसी स्त्री को अपना लें।'

नीरजू ने कहा—"दीदी ! उसके जाति के लोग भी तो इस बात से सहमत नहीं हैं। परन्तु अब बैजू और उसके परिवार के लोग रखना नहीं चाहते, तो जबरन तो कोई स्त्री किसी पति के पास नहीं रह सकती।"

"क्यों नहीं रह सकती, अगर उसका पति रखना नहीं चाहता, तो उसे पुनर्विवाह करने का अधिकार है, वह क्यों उसके पीछे जोंक की तरह लिपट रही है ?"

नीरजू उठ खड़ा हुआ और जीवन ने नाश्ता समाप्त किया फिर उस बच्चे को अपने साथ लेकर मुखिया राम के साथ पंचायत भवन की ओर चला। साथ-साथ मधुमा भी थी।

पंचायत भवन के समीप जब सब लोगों के पाँव पहुँचे, तो सबने देखा, कि गाँव के बाहर कुछ पेड़ों के बीच पंचायत घर थी। छोटी-सी इमारत के भीतर गाँव के लोग एकत्रित हो रहे थे। परिस्थिति पर विचार करने के लिए पंचायत के सदस्यों की पंक्ति एक ओर बैठ चुकी थी और सबके सामने सरपंच बैठा अपनी मूँछों पर ताव दिए जा रहा था। उसके आस-पास गाँव के लोगों की अच्छी भीड़ लगी हुई थी, उस तंग स्थान में लगभग सौ आदमी बैजू की पत्नी का फैसला सुनने के लिए दीवार के सहारे छिपकली की तरह चिपके हुए खड़े थे, कुछ पास के पेड़ों पर चढ़ गए थे और कुछ सरपंच के सामने खड़े थे।

थोड़ी देर के बाद मघुमा, जीवन, मुखिया राम उस छोटे से बच्चे के साथ पचायत के भीतर आकर बैठ गये। मघुमा स्त्रियों के वर्ग में जाकर बैठ चुकी, तो सरपंच ने पंचायत की कार्यवाही आरम्भ की। कार्यवाही के पूर्व उसने अपनी आकृति की भाव भंगिमा ऐसी बनाई, जिसका अभिप्राय था, कि वह अन्तिम निर्णय देने जा रहा है, उसके चेहरे से स्पष्ट ज्ञात हो रहा था, कि वह स्त्रियों की सारी आशाओं पर, उनकी आकाक्षाओं एवं महत्वाकांक्षाओं पर पानी फेर देने वाला फैसला सुनाएगा।

और यही बात सत्य हुई। सरपंच ने उठकर अपना फैसला सुनाते हुए, कहा—"सभा जनों! बैजू की पत्नी प्रायः घर से भाग जाती है और वह अपने पति से प्रेम नहीं करती। बार-बार भागने का प्रमाण इस बात को सिद्ध करता है कि वह बैजू के साथ रहना नहीं चाहती, अवश्य उसका प्रेम उसके मयके में है। बैजू तथा उसके परिवार के अलावा आप भी सोच सकते हैं कि यदि बैजू की स्त्री अपने पति को प्रेम करती, तो वह कभी भाग नहीं सकती थी। अतः इन समस्त बातों को देखते हुए यह कहना पड़ता है कि बैजू की पत्नी अपना दूसरा विवाह कर ले और वह जहाँ चाहे जा सकती है, बैजू तथा उसके परिवार को किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी। पंचायत ने इतने दिनों की कार्यवाही के बाद अपना अन्तिम निर्णय सुना दिया। आशा है कि पंचायत के सभी सदस्य निर्विरोध इस फैसले को स्वीकार करते हुए अपना-

अपना हस्ताक्षर कर देंगे। बैजू की पत्नी अब इस गाँव में अपना विवाह भी नहीं कर सकती।"

अपनी बात कहकर पंचायत के सरपंच ने मधुमा की ओर दृष्टि डाली और तभी चूल्हे की आग की तरह मधुमा का शरीर लाल होकर लपक कर उठ खड़ा हुआ। भरी पंचायत के बीच उसने खड़ी होकर कहा—"पचों के सामने, मैं इस फैसले का विरोध करना चाहती हूँ।"

सारी पंचायत में खामोशी छा गई। आपस की फुस-फुस की आवाज, लोगों के हिलते-डुलते शरीर सब कुछ जैसे गहरी खामोशी में डूब गए। मधुमा खड़ी होकर अपने प्रश्न का उत्तर चाहती थी, कि सरपंच ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा—"यह अन्तिम निर्णय है। तुम्हारी सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है।"

मधुमा ने नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा—"आपका फैसला भी अन्तिम फैसला नहीं कहा जा सकता। क्योंकि आपने बैजू की पत्नी पर जो आरोप लगाया है, उसमें उसका बयान नहीं है। रही, बार-बार घर से भाग जाने की बात। सो आप सबसे मैं यह पूछती हूँ कि कोई स्त्री अपने पति के घर से कभी भागना नहीं चाहती, जब तक उसके साथ उसकी ससुराल वालों का व्यवहार बुरा न हो? रहा, चरित्र को कलंकित करने का प्रश्न, उसके लिए बैजू तथा उसके परिवार वालों की यह पाबन्दी कोई महत्व नहीं रखती, कि बैजू की पत्नी अब उस गाँव में अपना विवाह नहीं कर सकती। उस अधिकार को नष्ट करने का अधिकार न पंचायत को है, न सरकार को। सरकार ने स्वंय सबको प्रत्येक प्रकार की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की है, इसका अर्थ यह नहीं, कि हम अपने अधिकार से किसी के अधिकार की हत्या करें।"

मधुमा की बातें तीर सी उड़कर जन-जन के कान से होती हुई, उनके हृदयों में समा गई, पर उसकाप्रभाव कुछ न हुआ। अपितु सरपंच ने पंचों से अपने फैसले को घुमवा दिया और उस निर्णय पर सब के हस्ताक्षर हो गए।

पंचायत उठने लगी और धीरे-धीरे सब लोग अपने अपने घर जाने लगे।

परन्तु मधुमा की बातों से महिलाओं में तथा उन सब सुनने वालों पर बम फटने जैसा प्रभाव हुआ था। मधुमा की आवाज में बिजली जैसी गूँज थी और उसकी कजराही आँखों के ऊपर की घनी बरौनियों के नीचे दृढ़ निश्चय और इस निर्णय के विरोध में कुछ कर गुजरने की क्षमता थी, जिसे देखते ही जीवन ने कहा—"सच, मधु ! आज तुमने खुलकर सामना किया। आज प्रत्येक स्त्री के मुख मे ऐसा ही तर्क सुनने के लिए मैं आतुर हूँ।"

"झूठी प्रशंसा न करो ! आज हम सब स्त्रियाँ एक गुप्त सभा करेंगी और कल से हम सब अपना काम शुरू कर देंगी। पुरुषों की इस बर्बरता के विरोध में हमारा वर्ग संघर्ष करेगा, जीवन !"

"और उस संघर्ष में जीवन का पूर्ण सहयोग होगा, मधु !"

"तुम्हारे सहयोग के लिए नारी वर्ग की ओर से धन्यवाद दे रही हूं।"

जीवन उत्तर देने वाला था, कि मधुमा के पिता मुखिया राम स्वयं उठ पड़े, और अपनी बेटी की ओर देखकर बोले" बेटा, यह संसार का नियम है, पंचायत ने जो निर्णय दिया है, उसे मानना ही पड़ेगा।"

"अपवाद और अंह को मान्यता दी जायेगी तो स्वतंत्रता का महत्व ही व्यर्थ होगा, पिता जी ! पंचायत के इस निर्णय को नारी वर्ग अपने नारीत्व को चुनौती समझती है। यदि इस निर्णय को पंचायत वापिस नहीं लेती, मैं अपनी समस्त स्त्रियों से अनुरोध करती हूं कि वह अपने-अपने घर का काम-काज बन्द कर दें।"

मधुमा की बात सुनते ही सारी सभा के बीच सन्नाटा छा गया और एक हल्के से स्पन्दन से भरी हुई, उस सन्नाटे के बीच जीवन की आवाज ने जोर से कहा—"मैं मधुमा के इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।"

सभा के सभी सरदार उचक-उचक कर जीवन की ओर देखने लगे। पर किसी में यह साहस नहीं हो रहा था, कि जीवन के विरोध में खड़ा होकर कुछ कह सकें। अंत में सरपंच से न रहा गया, तो उसने अपने स्थान पर खड़े होकर सभा-जनों के बीच ललकारते हुए कहा—" भाइयों ! जीवन बाबू की यह चुनौती हम सभी पंचों को चुनौती है। हमारी पंचायत का

अपमान ही नहीं, बल्कि पंच परमेश्वर का अपमान है। क्या आप अपमान सहने के लिए ही यहाँ बैठे हैं। क्या आप चाहते हैं कि स्त्रियों को हम अपने सिर पर चढ़ा लें ?"

सभा जनों में से टीमल उठकर बोला—"नहीं-हम यह कभी सहन नहीं कर सकते। स्त्री अबला भी है, तो आखिरकार वह मिट्टी की बाड़ी है, वह पैर की वह जूती है, जो जब चाहे धन रहने पर बदली जा सकती है।"

टीमल की बात का समर्थन करने वाले वैजू के परिवार के लोगों का दल एक स्वर से चिल्ला उठा—"ठीक कहते हो···स्त्रियों को अपने सिर पर चढ़ाने से तो वह कल दुश्चरित्र हो जायेगी। भला आज तक स्त्री का मन और मस्तिष्क भी कभी किसी निश्चय पर अचल रह सका है।"

जीवन की बात जीत रही थी, कि दूसरे ने खड़ा हो कर, कहा—"जीवन बाबू ! तुम लोग पढ़े लिखे हो, भले ही स्त्रियों को मेम सहाब बनाकर अपने सिर पर रखकर चला करो, पर हमारे गाँव के समाज में यह सब नहीं चलेगा। स्त्री की क्या कीमत है। वह जब अपने पति की नहीं होती, तो और किसी की क्या हो सकती है ! भूल क्यों रहे हो···तुम पढ़े हो। मैं तो दर्जा सात तक ही पढ़ा हूं और कुछ रामायण-महाभारत, सूर सागर। उनकी बातों से लगता है कि हर युग में यह स्त्री ही तो संहार का कारण बनी है।"

जीवन ने मुसकरा कर कहा—"हाँ,···लेकिन इसमें भी हमारे पुरुष वर्ग की ही बर्बरता थी। विलासिता के वैभव में पलने वाले पुरुष ने नारी को प्रत्येक रूप में बेचने का साधन बनाया। उसके बाह्य सौन्दर्य पर वह मनोरंजन का भवन खड़ा करता, तो उस के शरीर के सौन्दर्य पर वह अपनी कामना तृप्ति की साधना मात्र समझकर उसे भाग्य मान बैठा। अपनी कामना की तृप्ति करने के लिए पुरुष ने नारी के लिए युद्ध किया और जहाँ नारी ने पुरुष के वास्तविक रूप को देखा, वहाँ उसने उसे अपने नारीत्व

से पूर्ण चरित्र का सर्वस्व दान का उदाहरण भी दिया, जहाँ वह संहार की कारण है, वहीं वह सृजन का कारण भी है, मेरे मित्रों !"

सरपंच चमक उठा। उसने एक मर्म भेदी आवाज से कहा—"बैठ जाओ! जाओ, चले जाओ हमारे गाँव से और आज से तुम इस गाँव में आए तो तुम्हारी कुशल नहीं। पंचो! सुन लो! आज से इस गाँव में जीवन को जिसने अपने घर पर स्थान दिया, वह जाति-बिरादरी तथा गाँव का गद्दार समझा जायेगा!"

जीवन ने कहा—"मेरा निवास तो घर-घर, कण-कण और पृथ्वी तथा आकाश के नक्षत्रों तक है, सरपंच! यदि तुम यही चाहते हो तो मैं कभी इस गाँव में पैर नहीं रखूंगा!"

कहकर वह सभा में से उठकर चला गया। मधुमा उसे रोकना चाहकर भी न रोक सकी।

उसके जाने के बाद पंचायत टूट गई और सब लोग अपने अपने घर चले गए तो मधुमा भी उदास मन से अपने काका के साथ चल पड़ी।

—o—

चार

साँझ की डूबती वेला में जीवन जब उस बच्चे को लेकर अपने गाँव आया, तो उसके दरवाजे पर घर परिवार-तथा गाँव के पुरोहित जी पल्थी मारे बैठे थे। उनके सिर के पीछे आधे गज की चुटईयाँ स्त्री के केश सा जूड़ा बनकर एँठ रही थी और गोरे शरीर पर तीन धागे का जनेऊ। पुरोहित जी ने नाक दबा कर स्वाँस क्रिया की गति समझी और ज्योंही जीवन उनके समीप पहुँचा कि अपनी नाक खोलकर बोले—"आ गए जीवन, भैया ! भला किया। मैं तो तुम्हारी इन्तजारी में बैठा था। कहो, रामदीन का बच्चा मिल गया न !"

"हाँ, मनगवाँ गाँव में चला गया था। उसके घर पहुंचाकर आ रहा हूं, पर आप इस वक्त यहाँ कैसे ?"

पुरोहित जी ने कहा—"ऐसे संध्या करने के लिए बैठ गया। अब साँझ हो गई है। सोचा कि रास्ते में वियाबान जंगल है। आज की रात तुम्हारे आश्रम में ही गुजार लूं, कोई हर्ज तो नहीं होगा''' ?"

"हर्ज की क्या बात है, यह आश्रम भी तो आप लोगों का है। परन्तु आज से पूर्व तो आप कई बार इससे अधिक रात बीतने पर भी चले गए हैं, पर आज आपका रुकना कुछ सन्देह उत्पन्न कर रहा है।"

पुरोहित जी ने मुसकरा दिया। फिर बड़े भाव से अपने सिर पर हाथ फेर कर बोले—"सन्देह तो मुझे हो रहा है कि तुम आए हो, इस गाँव में सेवा करने और इसके उलटे सब काम कर रहे हो।"

जीवन का मन जैसे किसी आघात से व्यथित होकर तिलमिला उठा। उसने पुरोहित जी के सामने पड़ी चारपाई पर बैठते हुए कहा—"कौन सा काम उलटा कर रहा हूं, पुरोहित जी !"

पुरोहित जी अपने नथुनों को फुला कर बोले—"तुम अभी मुखिया राम के गाँव से आ रहे हो न ?"

"हाँ···कहिए न, क्या बात है ?"

"बात क्या है । बैजू की बीबी के लिए पंचायत जुड़ी थी और तुम पंचों की राय के विरुद्ध बोल आए हो। भला स्त्री जाति का इस तरह पक्षपात लोगे, तो गाँव वाले तुम्हारे चरित्र पर विश्वास करेंगे ?"

"मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जो चरित्र से बाहर हो। मैं तो यही समझता हूं कि स्त्रियों तथा पुरुषों के बीच प्रतिदिन जो संघर्ष उत्पन्न होते हैं, वह दोनों के चारित्रिक दोष के ही आधार पर पलावित होते हैं। स्त्री पति से, पति स्त्री से अपने चरित्र के दुर्गुणों को तो छिपाता है, पर सद्गुणों को नहीं। आपने मेरे चरित्र में यदि···।"

"मुझे क्या आवश्यकता है, जीवन भैया ! यहाँ बैठ गया तो कुछ सुन लिया। इस गाँव के लोग पंचायत से लौटकर जा रहे थे, वह तुम्हें चरित्र हीन कह रहे थे। तुम चाहते हो, कि स्त्रियों को स्वतंत्र छोड़ दिया जाय; भला सोचो तो सही कि जब उन पर इतना नियंत्रण रखा जाता है, तब तो वह अपनी करनी से बाज नहीं आतीं, अगर उन्हें इस तरह उनकी इच्छा पर छोड़ दिया जायगा, तो भ्रष्टाचार की क्या सीमा होगी !"

"नियंत्रण का ही यह परिणाम है। स्त्री जब अपने समीपवर्ती पुरुष की उपेक्षा करने पर तुल जाती है, तो पुरुष उसकी इच्छाओं पर लाख कोशिश करने के बाद भी नियंत्रण नहीं लगा सकता, पुरोहित जी ! अतः उनकी इच्छा ही मूल है। जब तक जिस पुरुष से वह प्रेम करती है, करती है, जब उनके जीवन में यदि अधिक योग्य पुरुष मिल जाय, तो वह अपने पूर्व पति को त्याग सकती है। यदि हम उनके साथ जबरदस्ती करें भी तो यह हमारी मूर्खता होगी।"

"इससे तो यही साबित होता है कि तुम अब इस गाँव में नहीं रह सकते !"

"गांव मेरी आवश्यकता नहीं समझता, तो मुझे किसी के साथ भार बन-कर नहीं रहना है, पुरोहित जी ! मैं कल यहाँ से चला जाऊंगा !"

पुरोहित जी ने बड़े भाव से कहा—"सच, जीवन दादा ! तुम बहुत समझ-

दार आदमी हो। यहाँ से चले जाना अच्छा होगा। उस मधुमा के चक्कर में क्या पड़े हो !"

"क्यों...क्या मधुमा भी चरित्रहीन है ?" जीवन ने संशकित दृष्टि से पूछा।

पुरोहित जी बोले—"क्या कहूँ, बेटा ! तुम तो अभी दो तीन वर्ष से यहाँ आए हो, नहीं तो इस मुखिया राम की बेटी की करतूत सुनते तो भूल कर भी उसके समीप नहीं जाते।"

"मुझे तो उसमें इस प्रकार का कोई अभाव नही दीख सका !"

"स्त्री के अभाव को पूर्ण करने के लिए उसका सौन्दर्य और आकर्षण ही पर्याप्त है, जीवन दादा ! तुम सीधे-सादे आदमी हो। हमने इन स्त्रियों के छल-कपट को खूब देखा है।"

"क्या देखा है। मधुमा के विषय में क्या जानते हैं, आप ?"

"तुम क्या जानते हो ? क्या तुम्हें विश्वास है कि वह तुम को सच्चे दिल से प्यार करती है ?"

"मुझे इससे भी अधिक विश्वास है कि वह मुझे सच्चे हृदय से प्यार करती है और-और सदा करेगी।"

जीवन की इस बात पर पुरोहित जी खिलखिलाकर हँस पड़े और बहुत मुश्किल से अपनी हसी रोककर, बोले, "स्त्री की जाति पर इतना विश्वासात करो, जीवन दादा ! एक दिन तुम स्वयं समझ जाओगे, कि मधुमा कहाँ तक तुमसे सच बोलती है।"

"आखिर, यह सब किस आधार पर आप कह रहे हैं ?"

"अपनी आँखों देखी बात है !"

"कैसी बात...।"

"नाराज तो नहीं, हागे ?"

"नहीं, नाराज होने की कौन सी बात है ? कहो, न। स्पष्ट कहो !

"तो सुनो...मधुमा जब कभी तुमसे मिलती है, तो वह क्या कहती है ?"

"यही, कि वह घर से आ रही है।"

"यह झूँठ है, सफेद झूँठ है, जीवन दादा ! वह घर से नहीं आती है, बल्कि अपने प्रेमियों से मिल कर आती है। हर एक संस्था में वह कुछ सीखने के बहाने से नए-नए प्रेमियों की छान-बीन कर रही है, यदि विश्वास न हो, तो अवसर पड़ने पर तुम्हें सब साथ-साथ मालूम हो जायेगा !"

करते हुए पुरोहित जी उठकर चलने लगे, तो जीवन ने कहा–"आप तो आज की रात रुकना चाहते थे, पर...।"

"मैं भगवान के अस्तित्व में विश्वास रखता हूँ, जीवन ! तुम जिस मधुमा के लिए पागल हो, उसका एक अंश भी वह तुम्हें प्रेम नहीं करती, उसे तो रोज नए-नए प्रेमी चाहिए। क्या तुमने कभी उसके अभिभावकों को नहीं देखा ? यदि नहीं देखा है, तो एक रोज सात बजे गाँव की सड़क पर खड़े हो जाओ और साढ़े सात की ६ नम्बर वाली बस में बैठकर चले आना। उसी दिन तुम्हें सब कुछ मालूम हो जायेगा, कि जिस स्त्री को तुम देवी-दुर्गा मानकर इतना प्यार करते हो, वह भीतर से कितनी काली है।"

"चाहे वह मेरे प्रति काली हो या दुर्गा, परन्तु मेरा कुछ अनिष्ट नहीं होगा, जिस रोज मालूम हो जायेगा, कि वह मुझ से भी झूँठ बोलती है, उस रोज से मैं स्वयं उसके मार्ग से हटकर, उसके नए प्रेमी के मार्ग से अपने को अलग कर दूंगा !

"अच्छा तो खुश रहना। अब मैं चला।"

कहते हुए पुरोहित जी उठकर चले गए।

परन्तु जीवन के मन में मधुमा के प्रति तरह-तरह के विचार उठने लगे। लाख सोचने के बाद भी जल्दी पुरोहित जैसे व्यक्तियों की बातों का उसे विश्वास नहीं था। मधुमा के विषय में वह किसी से शिकायत सुनने के लिए किसी कीमत पर तैयार नहीं था। फिर भी उसने दूसरे रोज साँझ के साढ़े सात बजे जाकर गाँव आने वाली बस को पकड़ लिया और ज्योंही बस के भीतर आया तो उसकी दृष्टि सामने की सीट पर पड़ी। सचमुच ही मधुमा एक खद्दर धारी व्यक्ति के साथ बड़े सुख से उसकी बाँहों के सहारे बैठी थी और बस भागी जा रही थी। जीवन के सामने पुरोहित की बातें सच हो गईं,

फिर उसने उस समय पिछली सीट के कोने में अपना स्थान जमा लिया, ताकि मधुमा उसे न देख सके।

धीरे-धीरे बस गाँव पर आकर रुकी। मधुमा के साथ अन्य साथी भी उतरने के लिए खड़े हो गए। भीड़ काफी थी, इसलिए जीवन भीड़ की आड़ में छिप गया और मधुमा से उस व्यक्ति ने कुछ बातें की और उसके बाद वह बस के दरवाजे तक उसे छोड़कर पुनः अपने स्थान पर जा बैठा। जीवन का हृदय उमस कर रह गया। लेकिन अपने भारी से मन किए वह बस के दूसरे स्टाप पर जाकर रुका और वहाँ उतर गया।

दूसरे स्टाप से उतर कर वह गाँव की ओर आ रहा था, कि मधुमा से उसकी भेंट हो गई। उसे आते देखकर वह बोला—"क्यों, मधु! कहाँ से आ रही हो ?"

मधुमा के स्वर में घबराहट थी। फिर भी उसने सत्य को छिपाकर कहा "मैं कस्बे की सड़कसे आ रही हूं!"

"सच कह रही हो, मधु!"

"हाँ, घर से आ रही हूँ!"

"सच कह रही हो ?

"हाँ, सच कह रही हूं...तुम्हारी शपथ लेकर कह रही हूं!"

"लेकिन तुम झूठ बोल रही हो, मधुमे। तुम मेरे साथ ६ नम्बर की बस से आई हो...और आगे की सीट पर एक खद्दर धारी के साथ बैठी थी!"

मधुमा की बात पकड़ ली गई। पर वह अपने झूठ को सत्य के रूप में सिद्धकरने के अभिप्राय से बोली—"तो तुम मुझ पर विश्वाश नहीं करते ?"

जीवन ने उदास मन से कहा—"विश्वास मैं नहीं करता हूं, कि तुम मधु! यदि तुम मुझ पर विश्वास करती तो भला इस तरह आँखों देखी बात को भी तुम गलत साबित करने की कोशिश करती, मेरी आत्मा की किरण।"

"तो जाओ। आज से मधु तुम्हारे लिए विश्वास की पात्र नहीं...। बस यही चाहते हो न!'

"मैं चला जाऊंगा। परन्तु तुम्हारे इस झूँठ बोलने से मेरे विस्तृत प्यार

की सीमा नहीं टूट सकेगी, मेरी मधु ! तुम मेरे जीवन के समीप केवल स्त्री और पत्नी ही नहीं हो, बल्कि मेरे जीवन की सहयोगिनी हो, मेरी प्रिये ! अपने इस झूठ को तुम स्वयं सोचती हो, कि झूठ मैं बोल रहा हूं या तुम । स्पष्ट वादी बनो मधु ।"

"तुम्हारे विरोध में उपेक्षा है और तुम चाहते हो, मुझ से छुटकारा पाना । तुम अपने को क्यों नहीं देखते कि तुम कितने बड़े स्पष्ट वादी हो । एक नारी से झूँठ बोल कर तुम अपने को स्पष्टवादी कहते हो...?" तुम मुझ से छुटकारा पाना चाहते हो, तो अवश्य जा सकते हो, परन्तु लांक्षन क्यों लगाते हो ?"

"कैसा लाक्षन ! मैंने जीवन में तुम्हें कभी अपवित्र नहीं समझा, सन्देह नहीं किया ! केवल तुम्हारी बातों पर ही विश्वास करता आया और करता जा रहा हूँ, अगर आज तुम झूँठ न बोलती, तो शायद मुझे कुछ कहने का साहस नहीं होता । तुम मानों या न मानो, पर अपने आँचल में बाँध लो, कि पाश्चात्य देशों की नारियों के अनुकरण से भारतीय नारी कभी भी अपनी अलौकिकता का संचार अपनी सन्तान में नहीं कर सकती, मधु ! नारी हो...पर तुम स्वयं नहीं जानती कि नारी किसे कहते हैं ?"

मधुमा ने कुछ तीखे स्वर में कहा—"तुम पुरुष होकर-पुरुष को जानते हो ?"

"हाँ, पुरुष में राग की अपेक्षा रुद्रता अधिक है । पर नारी की भावना को यदि कला से अलग कर दें, तो विश्व की कला विहीन हो जायेगी, बल्कि गर्मी के उस खेत सी सूख जायेगी, जो लू की आग में तपकर स्वयं भस्म हो जाता है । समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष का सृजन नारी करती हैं, मधु ! तुम अपने झूँठ को तर्क और प्रवंचना की नींव पर उठाकर आगे बढ़ना चाहती हो...मेरा प्रेम पाश्चात्य देशों सा नहीं, अपने देश की साँस्कृतिक पृष्ठ-भूमि पर आधारित है, मधु !"

मधुमा ने उपेक्षित भाव से कहा—"मेरे अधिकार का यही मान है, यही मेरी स्वतंत्रता को तुम मान्यता देते हो । तुम जैसे प्रगतिशील व्यक्ति के विचार इतने

संकीर्ण···। यदि इसी संकीर्ण भावना से नारी को अपने घर में बन्दी रखना चाहते हो, तो उसकी स्वतन्त्रता के लिए इतने लम्बे भाषण क्यों देते फिरते हो···?"

जीवन अपनी मधुमा के तर्क पर प्रसन्न होकर बोला, "तुम्हारा तर्क दूसरी ओर चला गया है, परन्तु जिस अधिकार और स्वतन्त्रता की बात कह रही हो, तुम उससके आधार पर नवीन सामाजिक व्यवस्था की नींव पर स्वर्ग नहीं बन सकतीं। जो लोग तुम्हें समानता के स्वर्ग में ले जाने का सब्ज बाग दिखा रहे हैं, वह मृग मरीचिका है, एक प्रलोभन है, जिसमें विलास की भावनाएं ही अधिक हैं। तुम्हें वैधानिक रूप से जो अधिकार और समानता प्राप्त हुई है, उसका उपयोग तुम्हारे साथी पुरुष भी नहीं समझ सके हैं। नारी से युग की पवित्रता को छीन कर आज पुरुष उसे मनोरंजन और विलास का केन्द्र बिन्दु बनाने में लीन है! जहाँ झूंठ बोलने की भावना प्रेमी प्रेयसि में होगी, वह प्रेम भारतीय नहीं हो सकता, इस प्रकार का प्रेम तो पाश्चात्य में ही पलता है। तुम मुझपे सन्तुष्ट हो, तो मुझे त्याग कर, जिससे तुम्हारी भावनाएं सन्तुष्ट हों, उसके साथ विवाह कर सकती हो, पर प्रेम एक पवित्र विषय है, उसे दूषित करने का अधिकार स्त्री पुरुष को नहीं।"

मधुमा खीज उठी और उठती हुई बोली—"अच्छा तो कल से मैं अब तुमसे कहीं नहीं मिल सकती।"

"तुम अपने शरीर को लेकर भाग सकती हो, पर मेरी आत्मा में जो चित्र तुम ने अपने हाथ से युग-युग का समय नष्ट करके खींचा है, उसे कैसे छीन सकती हो? तुम लोग आज प्रचारक पुरुषों के हाथ का खिलौना बन कर रही हो। क्लब, सिनेमा, कालेज ब्यूटी शाप्स, प्रसाधन गृह, प्रदर्शियाँ, फैंसीफेयर, फ्लावरशो, बेबीशो, पार्टियाँ इत्यादि में यदि तुम लोग न जाओ तो सब ठप्प पड़ जायेंगे। प्रदर्शनियों में तुम लोग तितली बनकर न घूमो तो दूसरे वर्ष कोई मेला प्रदर्शनी न लगेगी न किसी को अच्छा लगेगा, अच्छा नमस्ते।"

कहकर जीवन चला गया, मधुमा अपने घर चली गई।

—o—

पाँच

लाल ऊषा ने घूँघट खोला और उसके साथ ही मधु की पलकें खुलीं तो आकाश की ओर देखकर उसने अंगड़ाई ली और अपनी चारपाई से उठ रही थी, कि उसके पिता मुखिया राम दरवाजे पर आ खड़े हुए। मधुमा की ओर देखकर, बोले—"बेटी दिन निकल आया। आज अब तक क्यों सो रही है ?"

मधुमा आँख मलकर उठ खड़ी हुई और मुखिया राम के निकट पहुंचकर बोली,—"आज कुछ देर हो गई, काका ! गाय दुही गई या नहीं ?"

"सब काम हो गया है।"

"किसने किया है ?"

"मैंने स्वयं किया है, बेटा। जा, जल्दी से मुंह धोले। दरवाजे पर बैजू की बहू आकर खड़ी है।"

"बैजू की बहू ?' मधुमा ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ···वह अपने पिता के साथ आई है, तुमसे मिलने के लिए।"

मधुमा अधिक ,कुछ न सुन सकी। वह दरवाजे की ओर लपककर बढ़ी थी, कि सहसा बैजू की बहू अपने आंखों से गिरते आंसूओं को पोछकर आ खड़ी हुई और मधुमा से लिपट कर बोली—" बहन तुम देवी हो ! भगवान करे कि तुम्हारा पति सुयोग्य मिले। मेरे नसीब में तो पति का सुख नहीं लिखा था···।"

मधुमा ने उसे गले से लगाते हुए कहा—"तुम दुखी क्यों हो रही हो। तुम से जब बैजू की नहीं पटती, तो इस तरह किसी पुरुष को अपने पास कब तक घेर सकती हो। यदि वह तुम्हें रखना नहीं चाहता, तो तुम नारी होकर उसके लिए अपने अमूल्य जीवन को नष्ट क्यों कर रही हो बहन ?"

बैंजू की बहू सुखदा की रूलाई बन्द हो चुकी थी। मधुमा के इस आसवासन पर वह और भी जोर से बिलख कर बोली—"यह क्या कह रही हो, मधुमा

दीदी ! एक बार जब एक पुरुष ने मेरे अस्तित्व का, नारीत्व का उपयोग समाज के सामने कर लिया, तो दूसरा समाज का व्यक्ति मुझे अपना सकता है । समाज और शास्त्र क्या कहेंगे ?"

मधुमा ने मुस्करा कर कहा—"यदि पुरुष किसी स्त्री के साथ रहना नहीं चाहता, यदि स्त्री पुरुष के साथ रहना नहीं चाहती, तो समाज और शास्त्र के नियम उनकी आत्मा पर और उनकी इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं रख सकते, बहन, बल्कि इस सामाजिक प्रतिक्रिया का यह प्रभाव होगा, कि समाज में भ्रष्टाचार की आंधी बहेगी । तुम अगर विवाह करने के लिए इच्छुक हो, तो शास्त्र तथा इस वर्तमान समाज एवं सरकार ने तुम्हें वैधानिक रूप से अधिकार दिया है, सुखदा ! फिर तुम्हारे शास्त्रों ने ही तो यह व्यवस्था कि है, कि यदि स्त्री-पुरुष में स्वभाव एवं गुणों की समानता न हो, प्रतिदिन कलह की आग जलती रहे तो दोनों को एक दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए ···फिर यह भय कैसा ?".

सुखदा ने कुछ नाराज होकर कहा—"तुम नारी होकर ऐसा कह रही हो ! भला समाज में कौन ऐसा है, जो परित्यक्ता नारी से विवाह कर सके ?"

"अक्लमन्द हो···परन्तु जब तुम अपने को, अपने स्वभाव तथा विशेष गुणों को जान लोगी, तो कोई व्यक्ति यदि विवाह न भी करे तो अपने वर्ग की सेवा तो कर सकती हो ।"

सुखदा बोली—"मेरे स्थान पर तुम होती, तो कभी ऐसा नहीं कहती दीदी ! दूसरे को उपदेश देना सबको आता है !"

"उपदेश की बात तो मैं नहीं जानती । हाँ, अगर मेरा पति मुझे साथ न रखना चाहे, तो मैं कभी विवश नहीं कर सकती, न इसके लिए समाज के सामने जाकर प्रदर्शन ही करूंगी ।"

"क्यों, क्या तुम नारी नहीं हो···?"

"नारी होते हुए भी मैं जानती हूं कि समाज और सरकार स्त्री और पुरुष को कानून से जबरन एक साथ रखना चाहें, तो वह इसमें सफल नहीं हो सकती ।

विवाह मानव जीवन का व्यक्तिगत अधिकार है, सुखदा ! फिर समाज से भय क्यों ?"

"जो विवाह समाज और सरकार के नियमों के आधीन होकर विवाह को स्वच्छन्दता के रूप में प्रयोग करने की श्रद्धा रखते हैं, उनके लिए समाज और सरकार का प्रतिबन्ध है, परन्तु समाज और सरकार व्यक्ति के मन की इच्छाओं को क्या कर सकता है ? मान लो कि सरकार तथा समाज ने कानून बना दिया, कि कुछ कारणों वश ही विवाह तलाक को मान्यता दी जायेगी, लेकिन पुरुष तथा स्त्री दोनों कानूनी दृष्टि से बाध्य होकर एक दूसरे के साथ रहने के लिए विवश किए जाएं, तो भी दोनों के बीच की दीवार को न्याय नहीं मिटा सकता !"

सुखदा ने तर्क को स्वीकार करते हुए कहा—"तो आखिरकार मैं क्या करूं ?"

"तुम पढ़ी लिखी हो। जितना समय नष्ट कर चुकी, कर चुकीं । अब अपने समय का उपयोग राष्ट्र निर्माण में करो, सुखदे। बैजू को छोड़कर तुम्हें विवाह करके जीवन यापन करने की इच्छा हो, विवाह कर लो !"

"नहीं, यह सब मेरे पूर्व जन्म का पाप है !"

"पूर्व जन्म की बात सोचकर जीवन नष्ट करने का युग बीत गया । पाप-पुन्य और स्वर्ग-नरक की सीढ़ी यहीं है, सुखदा ! यह सोचो, कि जीवन न जाने किस प्रकार मनुष्य का तन पा सका है। केवल बैजू के लिए अपना सारा जीवन नष्ट करने से तुम पतिव्रता नहीं कही जाओगी। घर जा रही हो, चली जाओ और अपने गाँव में जाकर अपनी बहनों को जगाओ, यदि नारी शिक्षा तथा दूरदर्शी, चरित्रवान राष्ट्रीय भावनाओं की केन्द्र बिन्दु बन जायेगी, तो इस प्रकार की सामाजिक हीनता का विनाश हो जायेगा। स्त्री-पुरुष अपने विवाह के पूर्व एक साथ रहकर एक दूसरे को परख कर विवाह किया करेंगे...तब ...।"

"तब नारी का चरित्र योरोपीय नारी सा हो जायगा ?"

मधुमा मुस्करा कर बोली—"योरोपीय नारी को तुम इस दृष्टि से न देखो। माना कि उनके जीवन के सामाजिक विधान में चरित्र को प्रधानता नहीं दी

जाती, पर पाश्चात्य हो या पूर्व। किसी देश की वही नारी विश्व के इतिहास में चिरस्मरणीय हो सकी है, जिसके चारित्र में विशेषता रही है। चरित्र को प्रधानता न देने वाले स्त्री पुरुष का मन कभी अच्छे आदर्श का सृजन नहीं कर सकता, न उसके चरित्र के आधार पर किसी समाज का उत्कर्ष सम्भव है।"

इस पर सुखदा ने कहा—"फिर स्त्री अपने अधिकार के लिए संघर्ष क्यों कर रही है ?"

"ठीक कहती हो। परन्तु भारत में नारी का अधिकार, चरित्र ही उसका सत्य और अधिकार है। भारत और पाश्चात्य नारी जीवन में युगों से भिन्नता चली आ रही है, सुखदा !"

"फिर भी भारत और पाश्चात्य का आदर्श तो एक ही है।"

'नहीं, दोनों जगह की नारियों का आदर्शवाद एक दूसरे से भिन्न है।"

"सो कैसे...?"

"भारतीय आदर्श है कर्तव्य पालन और पाश्चात्य देशों का आदर्श है अधिकार की प्राप्ति ?"

"फिर भी तो दोनों में अन्तर नहीं !"

"अन्तर क्यों नहीं हैं ? कर्तव्य पालन में सबके अधिकार स्वत: सुरक्षित रहते हैं और अधिकार प्राप्ति की छीना झपटी में किसी का अधिकार सुरक्षित नहीं रह सकता।"

"यह क्यों...?" सुखदा ने आश्चर्य से पूछा।

"क्योंकि अधिकार अन्धा और पंगु होता है, बिना कर्तव्य की दृढ़ता के उसका अस्तित्व शून्य के समान है। अधिकार केवल अपना स्वार्थ देखता है, उसके विपरीत कर्तव्य का रूप प्रकाश की भाँति होता है।"

सुखदा ने चकित भाव से कहा—"तो क्या पाश्चात्य देशों में कर्तव्य पालन नहीं है ?"

"नहीं, सुखदा ! पाश्चात्य देशों में पत्नियाँ अपना सामूहिक संघ बनाकर आन्दोलन करती हैं और सब से बड़ी बात यह है कि वे चरित्र पर ध्यान नहीं देती। उनके वादों में चरित्र को प्रधानता नहीं दी जाती है।"

"नहीं नहीं...मैं तो चरित्र को प्रधानता देती हूं। तुम्हारी बात स्वीकार करके अब अपने गाँव में जाकर अम्बर चरखा का केन्द्र खोलूंगी और अपने भारतीय आदर्श के आधार पर ही हर प्रकार से देश की नारी को आगे बढ़ाऊंगी। मैं पाश्चात्य देशों का अनुकरण नहीं कर सकती।"

कहती हुई सुखदा उठ पड़ी और अपने पिता के साथ मधुमा के घर से निकल आई। मधुमा ने बाहर आकर उसे विदा करते हुए कहा—"कभी-कभी यहाँ आया करना। जीवन बाबू के गाँव के पास ही तो तुम्हारा गाँव है, उनसे जाकर शिक्षा लेती रहना। वह अच्छे विद्वान हैं।"

"सो तो पहले ही सोच रखा है।" सुखदा के पिता ने कहा और नमस्ते करके दोनों अपने गाँव की ओर चल पड़े।

—o—

छह

मधुमा के उस दिन के व्यवहार से पीड़ित होकर जीवन ने अपना गाँव छोड़ दिया और सीधे चलकर राजपुर आ पहुँचा। राजपुर उसके गाँव की रियासत थी, यद्यपि सामन्त वाद का जनाजा निकल चुका था, परन्तु राजपुर के राजा की नेकनीयती के कारण जनता में उनका स्थान अभी तक कुछ न कुछ अवश्य बना हुआ था। भले ही अब वह रोब दोब नहीं था, पर जनता उन्हें मानती थी, क्योंकि राजा के द्वारा सैकड़ों बीघे जमीन खेती की जाती थी, इसलिए पिछले दिनों की रियासत खत्म होने के बाद भी दान-दक्षिणा तथा नृतक-नृतकियों का होली-दिवाली पर पिछले दिनों की तरह जमघट लगा ही रहता। राजा रामसिंह अपनी रियासत के अमीर-उमराव तथा सभी वर्ग के लोगों को इस त्योहार पर आमंत्रित करते और रियासत टूटने के बाद जो कुछ भी उनके पास होता, उसमें से प्रत्येक उपस्थित जन को दान देते थे।

इसी प्रकार दिन पर दिन बीत गए, होली का पर्व करीब आया, तो हर साल की तरह इस साल भी राजपुर रियासत में होली मनाने के लिए जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगीं। प्रतिवर्ष के समान इस वर्ष भी राजा रामसिंह ने गवैये, नर्तक, नर्तकी, कवि तथा शायरों को निमंत्रित किया।

तैयारियों के पूरे होते ही होली आई और सभी लोग अपना-अपना कमाल हासिल दिखा चुके, तो मुशायरा शुरू हुआ। मुशायरे के बाद राजा साहब ने कवि सम्मेलन का आयोजन किया था, क्योंकि वह हिन्दी कम जानते थे, लेकिन हिन्दी के कवियों का भी वह उतना ही सम्मान करते थे, जितना अन्य शायरों का। समय आते ही हिन्दी के कवियों ने अपनी कविता पाठ आरम्भ किया और जब सारी कविताएं पढ़ी जा चुकीं, तो जीवन ने कवि दरबार के बाहरी दरवाजे से तेज स्वर में कहा—"राजा साहब ! भारत माता''' कहता हुआ जीवन राजा की ओर बढ़ निकला !

सभा की आँखें पीछे घूम गई। सभा के देखते-देखते जीवन सबके बीच में आ खड़ा हुआ। राजा तथा उनके पीछे रेशमी चादरों के बीच बैठी अमीर उमराबों की स्त्रियों के साथ उनकी रानी और राजकुमारी शैला ने भी अपने सामने से एक बार परदा हटाकर उसे भर आँख देखा, फिर परदे की आड़ में छिप गई। पर सभा जनों के साथ राजा रामसिंह जीवन की तेज आवाज, चेहरे की ललाई, आंखों की चमक, उभरी छाती, भींगती मसें, बेकरार दिल और गहरी लगन को देखकर अपने को न रोक सके। मंच पर उठकर बोले—"इस महफिल में भारत माता का नारा लगाने वाले युवक, तुम कौन हो ?"

जीवन आगे बढ़कर बोला—"राजा साहब ! मुझे एक कविता पढ़ने का अवसर दिया जाय।"

राजा ने कहा—"हाँ तुम मंच पर आकर कविता पढ़ सकते हो।"

जीवन सहर्ष आगे बढ़ा। मंच पर आया और कविता पढ़ गया। पढ़कर नीचे उतरा ही था, कि नारियों की ताली के साथ-साथ पुरुषों की भी ताली एक साथ मिलकर बज उठी। जिधर देखिए, वही कहता"'वाह-वाह क्या खूब कहा। कवि लोग सुन्न रह गए। नारियाँ उसके लचीले गले की राग से सधी कविता सुनकर अपने को भुला बैठीं और राजकुमारी शैला थी, जो मन ही मन उसके प्यार के सरोवर में तैर उठी। रेशमी परदों के भीतर छुपी उसकी आँखें जीवन को निहारती रहीं, पर जीवन मंच से नीचे उतर आया और सभा से जाना चाहता था, कि राजा साहब ने कहा—"कवि कहाँ जा रहे हो ? क्या नाम है, तुम्हारा ? कहाँ के रहने वाले हो ?"

जीवन ने घूम कर कहा—"सब जगह मेरा घर है। भारत का रहने वाला हूँ, मेरा नाम जीवन है।"

"लेकिन किस गांव'''?"

"मधुपुर गाँव से तीन मील की दूरी पर मेरा गांव है।"

"तुम्हारे माता-पिता'''बड़े सौभाग्य शाली हैं, जिन्होंने तुम जैसे रत्न को पैदा किया। क्या तुम हमारा आतिथ्य स्वीकार करोगे ?"

"यदि मैं अस्वीकार कर दूँ तो'''।"

"तो तुम्हारे साथ दूसरा व्यवहार होगा ! जानते हो, कि तुम सभा-सत्ता के आधीन हो !"

जीवन ने हँसकर कहा—"राजन ! साहित्यकार किसी सत्ता के आधीन नहीं होता। वह केवल अपनी सृजन सत्ता की कला के आधीन होता है, वह किसी सरकार अथवा दल का प्रचारक नहीं, अपितु स्वयं सृजनकार होता है और जनता का प्रतिनिधि !"

"तुम बहुत समझदार हो"'आज की साँझ हमारे भवन में रहो ! आशा है, निराश नहीं करोगे।"

जीवन कुछ कहने जा रहा था, कि पीछे से राजकुमारी शैला ने कहा—'पिता जी ! श्रेष्ठ कविवर का स्वागत करने के लिए हम भी तैयार हैं।"

जीवन ने सुना और एक क्षण के लिए उसके सामने उसकी प्यारी मधुमा की प्रतिमा आ खड़ी हुई। नारी का स्वर"'नहीं-नहीं, वह मधुमा को छोड़कर अपनी कविता किसी को नहीं सुनाता था "उसने सुनाया ही क्यों ? अपने आप जीवन का भोला-भावुक सरल-तरल और केले के नए पत्ते की तरह कोमल मन सिहर उठा। उसने ताव में आकर कहा—"जी नहीं"'मैं आज रात को ही वापिस जाना चाहता हूँ।"

"कहाँ जाना चाहते हो, कवि ?"

"नौकरी करने के लिए"'।"

"नौकरी"'साहित्यकार तो किसी- का नौकर नहीं होता, कवि।"

"जनता का वह प्रतिनिधि होता है और जनता की ही वह नौकरी पसन्द करता है, राजा साहब।"

"यह काम तो तुम यहाँ भी कर सकते हो। आओ"'आज भवन में स्नान करके राजकुमारी को कविता सुनाओ"'राजकुमारी शैला की इच्छा है, जीवन।"

जीवन असमंजस में पड़ गया। वह उत्तर देने चला था, कि राजकुमारी की सहेलियाँ आ टपकी और जीवन के समीप खड़ी होकर बोलीं—"चलिए ! राजकुमारी अपने भवन में बुला रही हैं।"

न जाना चाहकर भी, न जाने किस अज्ञात प्रेरणा से प्रेरित होकर जीवन उसके साथ अन्तःपुर की ओर चल पड़ा।

अन्तःपुर में आकर उसने अनेक सुन्दरियों के बीच राजकुमारी को बैठे देखा, पर न जाने क्यों उसके हाथ नमस्ते के लिए भी न उठे, तो राजकुमारी की एक सहेली ने कहा—"कवि ! राजकुमारी को मस्तक झुकाओ।"

जीवन ने राजकुमारी की मुस्कराती मूर्ति की ओर देखकर कहा—"राजकुमारी तथा किसी राज्य सत्ता के सामने कलाकार का मस्तिष्क नहीं झुक सकता, बाले ! केवल राजकुमारी को नारी रूप में देखकर मैं उनके नारीत्व का स्वागत करता हूँ, बाले !"

राजकुमारी ने कहा—"बैठो, कवि ! मैं स्वयं साहित्यकार का सम्मान करती हूँ और नहीं चाहती कि तुम मेरी प्रभुता के सामने झुको।"

जीवन कुछ कहने ही जा रहा था, कि पीछे से राजकुमारी शैला ने सहेलियों को संकेत से हट जाने का सन्देश दिया और जब सब वहां से चली गईं, तो शैला ने बड़े स्नेह से जीवन के सामने बैठते हुए पूछा—"कवि ! तुम्हारी कविता ने एक नई प्रेरणा दी है। मेरे मन में एक हल चल मच रही है, कवि ! प्रतिवर्ष के उत्सव पर तुम्हारी ही प्रतीक्षा करती थी। बोलो, एक बात पूछूं, उसका उत्तर दोगे ?"

"जीवन ने शैला की आकृति की ओर देखा और अपने हृदय में बैठी मधुमा की आकृति से तुलना करने लगा। शैला और मधुमा में जो आकर्षण था, कितना अजीब था। शैला का शरीर मधुमा के शरीर के सामने नहीं के बराबर था··· वह सोच रहा था कि शैला मणि-मुक्त से जड़ने के बाद भी मधुमा के प्राकृतिक सुन्दरता के सामने फीकी जान पड़ रही है। अभी वह और सोचता, पर राजकुमारी शैला उसकी मौनता भंग करती हुई बोली—" क्यों, क्या सोच रहे हो, ! बोलो, मेरे प्रश्न का उत्तर दे रहे हो न ?"

जीवन ने शैला की ओर देखकर कहा—"अगर उत्तर देने योग्य हुआ तो अवश्य दूंगा, राजरानी !"

"तो यह कहो, तुम कविता कैसे लिखते हो ?"

"अपने लोगों की तकलीफों और उनकी प्रेम भावना की सहानुभूति से गति पाता हूं।"

मैं नहीं लिख सकती है !

राजरानी शैला का मुंह उतर गया। अपने सौन्दर्य की ओर संकेत करके वह, बोली — "तो क्या शैला से भी आपकी वह मधुमा अच्छी है ?"

"जो सीधी-साधी प्रथा है, प्रकृति है, उसके विषय में कुछ कहने के लिए शब्द नहीं।"

"शब्द···दर-दर की ठोकर खाने वाली मधुमा ! जिसके चरित्र का कोई विश्वास नहीं, जिसके पिता मुखिया हैं, वह मधुमा ! किसी दिन मेरी रियासत में उसकी माँ मजदूरिन थी और आज उसकी यह मजाल कि वह मेरी इच्छाओं पर अपना अधिकार कर सके ?"

न जाने क्या सोचकर जीवन के उधर खुल गए। उसने मुसकराकर कहा यह स्पर्धा और ईर्ष्या है, राजरानी !

"मधुमा में न स्पर्धा है, न ईर्ष्या ! न द्वेष है, न राग। वह चंचल है और अभी तक अपने महत्व को न समझ सकी है,···पर मेरी सारी इच्छाएं उसी में बंधी हैं।"

"यह तुम्हारा मिथ्या गर्व है, जीवन !· मेरी बात मान लो। तुम्हारी कविताएं तुम्हारा मन और तुम्हारी भावनाएं बहुत बार समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में पढ़ चुकी हूं, बड़ी इच्छा थी, कि तुम मेरे पिता द्वारा आयोजित सम्मेलन मे···पर आज साध पूरी हो सकी है। एक बार मेरी ओर भी देखो यह राज-पाट और धन सब कुछ छोड़ सकती हूं... ।"

"लेकिन सब कुछ छोड़ कर भी जब मेरी इच्छाओं को अपनी इच्छाओं से नहीं बाँध सकता, तो·· मैं इस प्रकार के प्यार को प्रदर्शन को पागल पन ही समझता हूं··· ।"

"लेकिन··· ।"

"लेकिन क्या··· ?"

"यदि तुम मेरी इच्छा न रख सके, तो तुम्हारी मधुमा भी नही मिल सकेगी···नारी को पहचानो, जीवन ·!"

"जिस नारी को एक वार पहचान चुका, उसे छोड़ कर दूसरी नारी से प्यार करना मेरे लिए चरित्र का पतन होगा। जीवन का मूल उद्देश्य रोमान्स नहीं है।"

शैला के सलोने चहरे का रंग बिगड़ गया। वह स्वर को कुछ खींच कर बोली—"अपनी मधुमा के प्रति तुम कठोर बन रहे हो। यदि मेरी इच्छा पूरी नहीं हो सकती, तो मधुमा की इच्छा भी पूरी नहीं हो सकेगी ?"

"जब मेरी इच्छा, उसकी इच्छा के साथ है, तब विजय की अब क्या आवश्यकता है ?"

"रियासत टूट जाने से तुम समझते हो कि मैं अस्तित्व हीन हूं...यदि मेरी बात स्वीकार नहीं करते, तो कल से ही मधुमा मेरे दरवाजे पर झाड़ू देने के लिए आ खड़ी होगी !"

"मैं उसके इस कार्य में भी एक सहयोग दूँगा !"

"जीवन...।" शैला ने चिल्ला कर कहा।

बेटी की आवाज सुनते ही शैला के पिता ने सहसा कमरे में प्रवेश किया तो शैला शरमा गई। अपनी साड़ी समेट कर बैठ रही थी, कि उसके पिता ने जीवन तथा शैला के मध्यान्ह होकर कहा—"जीवन ! शैला को भी कविता लिखने का शौक है, इसीलिए तुम्हें बुलाया है और आज से तुम यहाँ रहकर मेरी बेटी को काव्य रचना की शिक्षा देने के लिए एक गुरु के रूप में हो...।

"इस भार को सहन करने की इच्छा मुझ में नहीं। मैं इस भवन में रहने योग्य नहीं हूं।

"आखिर इसका कारण ? काव्य रचना का इससे अधिक उपयुक्त स्थान तुम्हें मुशकिल से ही मिलेगा।"

इस कार्य के लिए तुम्हें पाँच सौ रुपये प्रति माह दिया जायेगा। खाने-पीने की सारी जिम्मेदारी रियासत पर है।"

जीवन ने राजा की ओर उन्मुख होकर कहा—"मृत्युलोक के निवासियों में स्वर्ग के देवताओं के समान आपके किसी पद का लोभ नहीं रहा।"

राजा ने क्षुब्द होकर कहा—"जीवन ! तुम्हारे कहने का तात्पर्य क्या है ? यह मैं नहीं समझ सका ?"

"मेरा अभिप्राय मनुष्य के जीवन से है ।"

"मतलब ?"

"मतलब यह है कि मनुष्य मिट्टी के साथ इस तरह मिलता जा रहा है, कि अपने शौर्य पर स्वंय विश्वास नहीं करता, केवल बाह्य वस्तु पर ही उसका भरोसा रह गया है । आप जिस पथ के द्वारा मुझको अपनी पुत्री को शिक्षा दिलाने की व्यवस्था कर रहे हैं, उसका युग बहुत दिन पहले बीत चुका है । काव्य की शिक्षा तो स्वाध्याय द्वारा विकसित करने की कला है, राजा साहब !"

राजा ने उपेक्षित भाव से हँस कर कहा—"कवि आखिर, इस तरह की मान मर्यादा की अपेक्षा करते चलोगे, तो तुम्हारी उन्नति कैसे होगी ? इसीलिए न कहा जाता है, कि लक्ष्मी और सरस्वती में बैर है ।"

जीवन ने कहा—"दोनों में बैर नहीं, दोनों एक ही जाति की महान गुण-वन्ती एवं चरित्रवान नारियाँ हैं । दोनों आपस में सहोदर बहन सी हैं । यह समाज की प्रतिक्रिया है । रही उन्नति एवं दुर्गति की बात, कलाकार दुर्गति को भी सद्‌गति समझकर अपने समाज की उन्नति देखने के लिए उत्सुक रहता है, राजा साहब !"

शैला पिता के साथ जीवन को तर्क करते देखकर, बोली—"जीवन जी ! यह आपका अहं है ।"

"जो भी समझो, पर देखा होगा, नहीं तो सुना होगा, कि श्मशान की शून्यता शरीर के भस्म होने पर जगमग करके प्रकाश से आलोकित हो उठती है, राज कुमारी तुम में जब तक स्वयं अनुभूतियों को पकड़ने की क्षमता न होगी, साहित्य की शिक्षा लेने से तुम कलाकार नहीं बन सकती, न मैं तुम्हारा गुरु ।"

"इसका कारण···।" शैला ने पूछा ।

"मनुष्य का आत्मभिमान और स्वार्थ ।"

"क्या कहना चाहते हो, स्पष्ट कहो···?" राजा ने कहा ।

"दिवस के अन्त में जो सूरज डूबता है, उसके पीछे गहन अन्धकार की

शान्ति दायिनी सेना होती है, जिसका नेतृत्व नींद करती है और उसी नींद के बीच दिन भर का थका मानव विश्राम करता है, केवल आलसी तथा अपने को न समझ सकने के कारण उसी अन्धकार में किसी व्यक्ति को अनुचित-उचित का ध्यान नहीं रहता। यह मेरा अभिमान नहीं, साहित्य की साधना है माननीय नारियों ने अपने चरित्र पर संयम रखते हुए, जिस विद्वता का परिचय दिया है वह इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। फिर मैं जब किसी का गुरु होने योग्य नहीं, तो इस भार को कैसे स्वीकार करूं ?"

शैल का मन क्षुब्ध हो उठा। उसने उभरी मुस्कान के साथ कहा—"पुरुष की दृष्टि में न जाने क्यों नारी सदा उपेक्षित और सन्देह की सामग्री बनी रही, लेकिन कलाकार के लिए तो वह इस तरह की सामग्री नहीं हो सकती ?"

"नारी उपेक्षा और सन्देह की वस्तु नहीं है, राजरानी ! वह पुरुष की शक्ति है और शिक्षित तथा चरित्रवान नारी की नैतिकता पर ही किसी देश, राष्ट्र एवं समाज की उन्नति निर्भर है। चाहे लक्ष्मी हो या दुर्गा, पार्वती हो या सरस्वती, यह आकाश की देवियाँ नहीं थीं, बल्कि अपने चरित्र और विद्वता के कारण ही आज भी भारत के समाज और संस्कृति तथा सभ्यता में वे पूज्य बनी हैं। देवी का नहीं, न उनके देवत्व का, बल्कि अपने व्यक्तित्व और अपने चरित्र एवं गुणों के कारण ही वे जन प्रिय हो गई हैं। उनके पवित्र आदर्श पति-पत्नी के प्रेम के कारण ही संसारी उन्हें देव तुल्य समझकर पूजते आ रहे हैं यद्यपि उनके चरित्र का एक अंश भी नारी नहीं अपना पाती, न पुरुष।"

"व्याख्यान समाप्त कीजिए और आप यहाँ से चले जाइये।"

जीवन उठकर चल पड़ा और राजा साहब रोकना चाहकर भी न रोक सके। केवल शैला अपने हृदय में न जाने क्या सोचती रही। राजा साहब जब उसके कमरे से निकल गए तो शैल देखती ही रही। राजा साहब ने कुछ-कुछ समझा और फिर न जाने क्या सोचकर वह चुप रह गए। शैला द्वार से हटी और खिड़की पर आकर खड़ी हो रही। राजभवन के उद्यान के बीच जीवन मस्ती से अपना रास्ता तय करता जा रहा था और शैला देख रही थी।

—०—

सात

फागुन की सांझ फागुनी हवा के साथ मस्ती में क्षितिज में विलीन होती जा रही थी। गाँव के चरवाहे और मवेशियों का झुंड जब अपने-अपने घर के लिए लौट पड़ा, तो मुखिया राम भी अपने बरामदे के सामने आ खड़े हुए। देखा, तो मधुमा उदास मन से अपने घुटनों पर ठुड्डी रख, जीवन के गाँव की ओर देख रही थी। हरी-भरी खेती के बीच से गुजरती पगडंडी पर वह इस तरह व्यस्त रही कि अपने पिता का आगमन भी न जान सकी। बेटी को इस तरह व्यस्त देखकर पीछे से मुखिया राम ने स्नेह भरे शब्दों से पुकारा—"बेटा, मधुमे ! इस तरह साँझ की उदासी की तरह तुम उदास क्यों हो, ? उठो, गाय आ गई है, उसे बाँध दो !"

मधुमा उठ पड़ी। ध्यान टूट गया और वह झटपट आगे बढ़ी। अपनी मवेशियों को बांधकर पुनः अपने पिता के पास खड़ी होती हुई, बोली—"उदास...उदास तो नहीं हूँ, पिता जी !"

"तब क्यों इस तरह मन मारकर बैठी हो, बेटा ?"

मधुमा सहसा चौंककर, अपने सिर की साड़ी सम्भालते हुए बोली—"ऐसे ही आज माँ की याद आ गई थी।"

"ओह. .माँ...की याद ! हाँ..हाँ, बेटा। आज जो तेरी माँ जीवित होती तो शायद मुझे तुझ से कुछ कहने का साहस न होता।"

"क्या मतलब हैं, पिता जी !"

"मतलब..बेटा। अब तू सयानी हो चुकी है। मेरी इच्छा है कि कहीं शादी कर देता...।"

मधुमा के सामने जैसे सारे संसार का मानचित्र घूम गया। एक क्षण के लिऐ वह छुईमुई की तरह खड़ी-खड़ी पिता के प्रश्न का उत्तर सोच रही थी, कि मधुमा की हेली दर्मी आस खड़ी हुई। धर्मी पढ़ी लिखी थी, पर वह अपने

अहं एवं अर्द्ध नग्न उच्छृशंखलता की पूर्ण प्रतिमा थी। अपने जीवन में उसने न जाने कितने युवकों को गुप्तरीति से प्यार किया था, परन्तु पढ़ने-लिखने के कारण वह समाज की दृष्टि में अपना स्थान बनाए थी। मधुमा को भी वह उसी रास्ते ले चली थी। अतः मुखिया राम ने जो देखा तो झट धर्मी की ओर घूमकर बोले—"धर्मी, बेटा ! आ गई तू। जरा समझा तो इसे ! मेरी तो एक भी नहीं सुनती।"

"आखिर कुछ बात भी तो हो...चाचा जी ?"

"बात तू सब समझ ले। जानती है, कि सयानी बेटी हो जाती है, तो...।"

"अच्छा-अच्छा ! समझ लिया। मैं मधुमा को मना लूँगी। आप चलें !"

मुखिया राम बाहर चले गये, तो धर्मी ने मधुमा के सिर पर हाथ फेर कर कहा—"क्यों, क्या विचार है ? चाचा जी का कहना क्यों नहीं मानती ?"

"जो अपने मन को मनाने की बात हो, तो मान भी जाऊं, धर्मी ! जीवन के सिवा किसी भी युवक से विवाह करने की इच्छा नहीं होती !"

धर्मी हँस पड़ी। जीवन पर कटाक्ष करती हुई बोली—"जीवन ! ऐसे जीवन के चक्कर में पड़कर अपना जीवन नष्ट करने से क्या मिलेगा, मधु ? क्या है, उसके पास ? न धन, न योग्यता, न शिक्षा, न पद, न व्यवहार और नहीं तो उसमें अहं कितना भरा है ? अपने सामने किसी को कुछ समझता ही नहीं !"

"यह तो व्यक्ति का स्वाभिमान है। जिस व्यक्ति में स्वाभिमान नहीं, उसे मनुष्य कहने वाला भी इसी प्रकार का व्यक्ति समझा जाता है, धर्मी !" क्या तुझे जीवन पसन्द नहीं ?"

"बिल्कुल नहीं, मधुमा जैसी युवती के लिए वह बिल्कुल ही योग्य नहीं है ! इसलिए मेरा विचार है, कि किसी दूसरे युवक से तुम्हें विवाह करना चाहिए !"

"वह कौन सा युवक होगा-धर्मी ?"

"मेरे विचार में 'गिरीश अच्छा है। चाचा जी की भी यही राय है। फिर उसका सम्मान है। सरकार तथा समाज का वह सेवक भी है। सच कहती हूँ,

कि उस दिन उत्सव में तो वह तेरी बहुत प्रशंसा कर रहा था। तू उसके साथ मिलकर अम्बर चर्खा की ट्रेनिंग कर ले और उसके बाद बाल-साहित्य कला की ट्रेनिंग भी वह करा देगा। जीवन से सुन्दर है, सरल है। मान है, मर्यादा और तेरी जोड़ी भी गिरीश के साथ अच्छी रहेगी...। क्यों ठीक कह रही हूं न।"

"सब कुछ होते हुए भी यदि किसी विषय पर गिरीश और जीवन में वाद-विवाद हो, तो गिरीश जीवन की मानसिक एवं शारीरिक शक्ति के सामने नहीं टिक सकता धर्मी।"

"यह तो तेरी व्यर्थ की प्रशंसा है।"

"जो सत्य है, साकार है, उसकी प्रशंसा नहीं कर रही हूँ, धर्मी! और को जाने दे, तू तो एम. ए. पास कर चुकी है और गांव की महिला विद्यालय की प्रधान अध्यापिका भी है, पर जीवन के तर्क के सामने तो तू भी नहीं ठहर पाती!"

"जो भी है पर जीवन तेरा पति तो नहीं है। समाज के सामने तो तूने उसके साथ विवाह नहीं किया?"

"समाज के सामने नहीं किया, किन्तु प्रकृति को साक्षी देकर मैंने ही सर्व प्रथम उसके गले में माला डाली थी और उसने अपने गले से माला उतार कर मेरे गले में पहना दी। फिर क्या तू इसे विवाह नहीं कहेगी?"

"तो उसी सम्बध को तू अपने जीवन का भविष्य समझ बैठी। अपना अकेलापन दूर करने का यह बहाना है, मधुपा। मैं, क्या! कोई भी इस प्रकार के सम्बन्ध को विवाह नहीं कह सकता।"

"किसी के मानने की आवश्यकता ही क्या है। मेरा मन तो उसे पति रूप में वरण कर चुका है। भारतीय नारी की यही चारित्रिक विशेषता तो विश्व के किसी देश की नारी में नहीं है।"

धर्मी ने आत्मीयता और सहानुभूति से भरे स्वर में कहा—"तो जीवन के अतिरिक्त और किसी को तू पति के रूप में नहीं…?"

"स्वच्छ, निर्मल आत्मीयता से भरा जब एक पुरुष का प्यार मेरे अन्तराल

में श्रोत बनकर वह निकला, तो उस पति के अतिरिक्त किसी और पुरुष द्वारा अपने सौन्दर्य का अभिनन्दन, मेरे लिए मन का क्षणिक भावावेश, ओछे प्यार के प्रदर्शन से अधिक महत्व पूर्ण न होगा !"

"इसका अर्थ यह है कि तू चाहती है कि तेरे पिता का दिल फट जाए...।"

"दिल-और दिमाग फटने का प्रश्न ही नहीं, धर्मी ।"

"फिर क्यों अपने जीवन के साथ खेल कर रही है ?"

"एक पुरुष के प्यार से सन्तुष्ट न होने पर दूसरे पुरुष से प्यार की आशा एक नारी के जीवन का सर्वनाश भी तो कर सकता है, धर्मी ! मुझे अपने जीवन से खेलने में जो सुख मिल रहा है, उसे नारी होकर तू नहीं समझ सकती ।"

"फिर भी एक यौवन पूर्ण युवती को अपने आप को इस तरह नष्ट करना अच्छा नहीं है ।"

"तेरी सहृदयता के लिए धन्यवाद ।"

"धन्यवाद...धन्यवाद की बात तो रही, अलग । चल उठ, चाची का बक्स तो खोल ।"

"क्यों...मां के बक्स खोलने से तेरा अभिप्राय !"

"आज सरपंच तुझे देखने आ रहा है । मुखिया चाचा के पास उसने अपना रिश्ता भेजा था । उन्होंने स्वीकार कर लिया है ।"

मधुमा के मन पर उदासी छा गई और उसने एक बार तीव्र दृष्टि से धर्मी की ओर देखकर कहा—"सरपंच ! उससे विवाह करने की तू सलाह देती है । छिः छिः तेरी बुद्धि तो भ्रष्ट नहीं हो गई ?"

"क्यों, हर्ज ही क्या है । पूरे सौ बीघे की खेती है । आयु भी अधिक नहीं, कुल चालीस वर्ष का ही तो है, पर घर में लक्ष्मी का वास है । जाते ही माँ शब्द से सम्बोधित होगी । सच मैं होती तो अवश्य विवाह कर लेती ।"

"तो कर क्यों नहीं लेती ?"

"अपनी सहेली का अधिकार छीनना भी तो अनुचित होगा ।"

मधुमा गुम-सुम-सी बैठी सोच रही थी, कि धर्मी ने उसे अपने हाथों का

बल देकर उठाया और वहाँ से उठकर दोनों जब मधुमा की माँ के घर में पहुँची, तो मधुमा ने अपनी साड़ी के छोर में बंधी ताली का गुच्छा खोलकर धर्मी के सामने फेंक दिया। धर्मी न बक्स खोला, पर बक्स में कुछ एक फटी-पुरानी, रेशमी साड़ियों के अतिरिक्त कुछ न मिला। उसे देखते ही वह, बोली—"क्यों री, और सब क्या हो गया ? चाची के पास तो सोन के जेवर भी काफी थे।"

दबी जबान से मधुमा ने कहा—"पिता जी ने सब बेचकर मेरी अन्य बहनों की शादी कर दी और अन्त में जो कुछ बचा वह उसका भी तो स्वर्गवास हो चला। सच पूछो तो इसीलिए मैं विवाह नहीं करती, कि हमारे घर की लड़कियाँ ससुराल में जाकर जीवित नहीं रहतीं।"

"यह सब मन का भ्रम है। ले, इसमें से एक साड़ी पहन ले।"

"मुझे इस साड़ी की आवश्यकता नहीं। एक सफेद साड़ी धुल कर रखी है, उसे पहन लूँगी, पर सरपंच देखकर भी क्या करेगा।"

"तुझे अपनी दुलहिन बनाकर घर ले जाएगा।"

"ऐसे घर को मैं घर नहीं समझती, धर्मी ! तंग न कर ! मैं विलास की आकांक्षा नहीं बन सकती।"

"भूल रही हो, मधु ! मिलन और प्रतीक्षा के संगम पर पुरुष नारी का अभिनन्दन करता है।"

"और पारस्परिक मतभेद, संकोच नारी-पुरुष की अभिलाषा को नष्ट भी कर देता है, धर्मी।"

मधुमा के ललाट पर उभरी रेखाओं का लोप भी न हो सका था, कि बाहर से दालान के चौखट पर खड़े होते हुए मधुमा के पिता ने आकर कहा—"अरी, बेटी, मधुमा। वह लोग आ गए है, जरा जल्दी से आ जा।"

धर्मी ने वहीं से बैठे-बैठे कहा—"अभी लेकर आई चाचा। तुम मेरी बहन दीपा को सन्देश दे दो कि वह पान-इलायची तो ला दे।"

मुखिया राम ने वहीं से कहा—"सो सब आ चुका है। तू मधुमा को जल्दी से तैयार करा कर ले आ।"

कहकर मुखिया राम जल्दी से घूमे और बाहर की बैठक में जा बैठे। उनके चले जाने के बाद धर्मी ने एक सफेद साड़ी पहना कर मधुमा का शृंगार करना शुरू किया। उसने मधुमा के केश खोले और उनमें तेल डाल कर कंघी से सँवारने लगी। मधुमा संज्ञाहीन-सी कमरे की पिछली खिड़की से शून्य निर्निमेष नेत्रों से आकाश की ओर देख रही थी कि सहसा उसके दोनों गालों पर आँसुओं की गीली लकीरें चमक उठीं और उनके गिरते ही जब धर्मी को कुछ नमी जान पड़ी तो वह उसकी आँखों में झाँक कर, बोली "आखिर तुझे कुएँ-खन्दक में तो नहीं फेंका जा रहा है, फिर यह आँसू...?"

धर्मी का वाक्य सुनते ही स्नेह से मधुमा का गला भर आया, वह एक क्षण के लिए फूट पड़ी और उसकी आँखें मानों सागर की लहरों में डूब गई। फिर अपनी धोती के आँचल से आँसू पूछ कर वह, बोली—"कुएँ और खन्दक में गिर कर प्राण देना कहीं अच्छा होता है, पर इस प्रकार के बेमेल विवाह का जीवन तो नरक से भी बढ़कर कष्ट दाई होता है।"

"जो विधि और विधाता की लेखनी से लिख चुका है, उसे कौन टाल सकता है। यह सब विधाता ही की रचना है ?"

"नहीं...नहीं यह विधाता की रचना नहीं है, धर्मी !

"यह अनीति है, मधुमा !" धर्मी ने मधुमा का जूड़ा बाँधते हुए कहा।

"संसार में सारी नीति-अनीति तो एक कल्पना मय तत्व ही हैं, धर्मी !"

"मतलब...?"

"मतलब यह है कि स्थानीय प्रेमी ही प्रेमिका का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण आकर्षण है।"

"तब तो यह भी कहा जा सकता है कि स्वाधीन प्रेमी का प्रेम पुरुष के पैरों के नीचे होता है।"

"नहीं, स्वाधीन प्रेमी का प्रेम पुरुष के हृदय के पास होता है और पुरुष का प्रेम नारी के हृदय के पास...धर्मी !"

"अच्छा-अच्छा उपदेश देना, पीछे। अब चलो, वहाँ लोग इन्तजार कर रहे होंगे।"

अन्त में क्षोभ और असमंजस की सीमा से घिरी मधुमा धर्मी के साथ दालान से होकर बैठक में आ खड़ी हुई। अनायास उसके दोनों हाथ उठ गए और उसने सबको नमस्ते किया। फिर आगुन्तकों के सामने आकर, अपने पिता के समीप बैठ चुकी, तो मुखियाराम ने मधुमा की ओर लक्ष्य करके कहा—"यही है, मधुमा। आप लोग ठीक से देखलें।"

आगुन्तकों में से एक ने कहा—"अच्छा है, जैसे सरपंच वैसी ही मधुमा, अच्छी जोड़ी रही। लड़की हमें पसन्द है, मुखिया राम जी! पर एक बात है···।"

"वह क्या···?"

"आप की लड़की नाच गाना तो जानती ही होगी।"

"नाच-गाना, बजाना और सीना पिरोना तो वह शहरी जानती है, पर गाँव के गीत, गाँव का नाच और साज वह ऐसा बजा लेती है कि दस गाँव में भी कोई बराबरी नहीं कर सकता।"

"इसमें क्या सन्देह है, मुखियाराम! सचमुच आप जैसे घर में मधुमा का सौन्दर्य देदीयमान दीपशिखा सा है। अच्छा, अब आप इन्हें भीतर ले जाइए, हम इस रिश्ते को मंजूर करते हैं।"

मुखियाराम ने कहा—"आप के इस आश्वासन के प्रति मैं आभारी हूँ। पर जरा ख्याल रखें।"

"आप तनिक भी सोच विचार न करें। आप की मधुमा जिस घर में जा रही है, वह घर सोने सा हो जायेगा।"

मुखिया राम अब की बार भी चुप रहे। मधुमा धर्मी के साथ उठी और अपने घर के भीतर चली गई, तो आगुन्तकों में से दूसरे ने कहा—"तो विवाह की बात कब पक्की हो रही है?"

"जब आप लोग···।"

"मेरी ओर से तो अब अच्छा मौसम फागुन का रहेगा। जब तक फसल भी हो जायेगी, न आप को किसी प्रकार का कष्ट होगा, न हमें। अच्छा, तो अब हमें इजाजत दीजिए और यह लीजिए टीके की रश्म पूरी कीजिए।"

कहकर उसने सोने की जंजीर अपनी जेब से निकाली और मुखियाराम के हाथ में रखकर, उठ खड़ा हुआ। मुखियाराम भी उठे और दरवाजे तक सब को पहुंचा आए।

आगुन्तकों के चले जाने के बाद मुखिया जब घर में आए तो मधुमा के घर गाँव की लड़कियाँ आ धमकी थीं। उसकी शादी की बात सुनते ही सब ने मंगल गान गाने की क्रिया आरम्भ की थी, कि मुखियाराम ने आँगन में पहुंचकर धर्मी को बुलाया। जब वह समीप आ गई, तो बोले—"अरी बेटा, मधुमा तो राजी है न ?

'हाँ चाचा ! वह राजी है। शादी की लगन कब की रखी है ?"

"फागुन में रखा है, बेटा ठीक है, ?"

"हाँ, अभी छः महीने हैं। अभी तो क्वार भी नहीं बीत सका। इतनी देर की लगन क्यों...?"

"भावी की बात है। शादी का सारा प्रबन्ध भी करना है, अच्छा तुम गाओ, मैं जा रहा हूँ।"

मुखिया राम कहकर चले गए और ढोलक पर लोक गीत की स्वर लहरी तेजी के साथ गाँव के वातावरण में गूँजने लगी।



आठ

राजपुर रियासत के आस-पास के गांवों मे राजा रामसिंह की जो ख्याति थी, जो दब-दबा और रोब सामन्त 'वादी युग में था, उसका प्रभाव अभी तक किसी न किसी रूप में मौजूद ही था। किसी युग में राजा साहब पूजे जाते थे, अपने दान-धर्म और परोपकार के कारण जनता में भी उन्होंने अपना अच्छा स्थान बना लिया था। चापलूसों की चापलूसी और चटोरों की चाशनी बनाकर जो लोग उन्हें चापलूसी का चस्का लगाए थे, उनमें सबसे अधिक विश्वास पात्र थे, तो पंडित राजनाथ। पंडित राजनाथ एक प्रायमरी स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और अपनी साधना और अध्यवसाय के कारण वह हिन्दी कुछ अच्छी लिख लेते थे, कविता तथा साहित्य पर भी इधर-उधर से पढ़कर लम्बी बातें कह डालते थे, पर संसार के साहित्य मे जैसे राजा साहब अनभिज्ञ थे, वैसे ही पंडित जी। राजा साहब रुपए के बल पर दो बार विलायत भी हो आए थे, परन्तु अंग्रेजी की अच्छी राइटिंग लिखने के सिवा वह साहित्य की एक लाइन भी नहीं जानते थे। पर हर अंग्रेजी लेखकों का नाम वह बड़े सम्मान के साथ लेते थे। साहित्य से रुचि होने के कारण ही अपनी पुत्री शैला को वह साहित्य की शिक्षा दिला रहे थे। जब तक जीवन की कविता नहीं सुनी थी, तब तक राज पंडित से बढ़कर उनकी दृष्टि में कोई कवि नहीं था। उसकी कविता पर मुग्ध होकर उन्होंने शैला के आग्रह का स्वागत किया और आज जब जीवन उनकी पुत्री की इच्छा की अवहेलना करके चला गया, तो दूसरे दिन वह क्रोध से काँपते हुए अपने ड्राइंग रूम में टहल रहे थे, मन ही मन दाँत पीसते, टहलते, कभी सामने देख लेते और फिर जीवन से बदला लेने की भावनाएं उन्हें झकझोर देतीं।

इन्हीं विचारों में उलझे वह टहल रहे थे, कि सहसा पीछे से पंडित राज ने पुकारा—"महाराज की जय हो।"

राजा साहब घूम पड़े। जल्दी से कोच पर बैठ कर, बोले—"आइए, पंडित जी ! आज तो बहुत दिन के बाद आ रहे हैं।"

पंडित जी ने ड्राइंग रूम की एक कुरसी पर बैठते हुए, कहा—"अब यहाँ हमारी क्या बिसात, सरकार।"

"ऐसा क्यों कहते हो, पंडित जी ? रियासत खत्म हो गई, हम तो नहीं···।"

"नहीं, सरकार, आप रहेंगे तो कितनी ही रियासतें आ सकती हैं।"

"छोड़िए, इन बातों को ! कहिए कैसे आए···?"

"सरकार की कुशलता जानने। आप आज कल कुछ चिन्तित से हैं, सरकार ?"

"नहीं, तो पंडित जी। चिन्तित तो नहीं हूँ।"

"मस्तिष्क की शिकन ही इसका प्रमाण हैं, सरकार ! आखिर कौन है ऐसा जिसने ऐसी मानी हुई रियासत के मालिक से···।'

राजा साहब ने कहा—"वही जीवन, पंडित जी। जिस रियासत की बात गवर्नर तक नहीं टालते थे, आज उसी की बात एक अदना कलाकार अपने पैरों से ठुकरा गया है।"

"सरकार, यह रियासत का ही नहीं, बल्कि सारी राजपुर जनता का अपमान है। हमें इसके विषय में सोचना चाहिए। आपने उसे यहाँ से···।"

"नहीं···वह यहाँ से चला गया है। अब उसे···प्राण दण्ड देने का रियासत को अधिकार भी तो नहीं।"

"फिर आपने क्यों नहीं उसका काम तमाम कर दिया ?"

"उससे बदला लेने का उपाय···?"

"मैं बताऊंगा, सरकार।"

"जल्दी कहो, पंडित जी !"

"तो सुनो ! मधुपर की मुखिया की लड़की मधुमा का सौन्दर्य आपकी रियासत में सबसे अपूर्व है। यदि आप मधुमा को किसी प्रकार अपने राजभवन में बुलाकर रख सकें, तो जीवन यह स्थान छोड़ कर कहीं नहीं जा सकता।"

"यह तो कोई बड़ी बात नहीं। मुखिया राम तो मेरा काफी सम्मान करता है और वह मेरी बात कभी नहीं टाल सकेगा।"

"लेकिन मुझे सन्देह है, सरकार···।"

"आखिर क्यों···?"

"मधुमा का विवाह उसी गाँव के निवासी सरपंच के साथ होना निश्चित हो चुका है।"

"परन्तु यह विवाह नहीं हो सकता। कोई उपाय बताओ, पंडित जी !"

"बस एक उपाय है, सरकार। आप उसके पास अपने विवाह का···।"

अपने विवाह का···लेकिन लोग-बाग क्या कहेंगें—मैं चालीस-पतालीस का प्रौढ़, वह २० बाइस की दुहिता, समाज तथा मेरी शैला क्या कहेगी ?"

"वह कोई नई बात तो सरकार करेंगे नहीं ? सरपंच भी तो चालीस जाड़े देख चुका है। मधुमा जैसी बेटी का वह बाप है। जब मुखिया राम उसके साथ शादी करने से नहीं चूकते, तो आप तो उससे हर माने में बड़े हैं। वैसे भी जब मुखियाराम यह-सुनेंगे, तो सरपंच से रिश्ता तोड़ कर आपका रिश्ता स्वीकार कर लेगें।"

बात राजा साहब के मस्तिष्क में समा गई। उन्होंने पंडित जी के कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"सचमुच रियासत के सच्चे सेवक तुम सब हो, आप लोगों के कारण ही तो हम टिके हैं, नहीं तो ये राजनीतिज्ञ तो हमारे साथ न जाने कैसा व्यवहार करते·· अच्छा। तुम मुखियाराम से बात चीत करो और साथ ही जीवन को किसी ऐसे अपराध में फँसा दिया जाय, जिससे वह जिन्दगी भर छुटकारा न पा सके।"

"यह काम मेरे जिम्मे रहा। आप की इच्छा भर की आवश्यकता थी। अब मैं दिखा दूँगा, सरकार। आज का जीवन तो हम सबकी प्रगति के मार्ग का रोड़ा है। यदि उसके साथ हमने उचित व्यवहार नहीं किया, तो हमारी कला का विकास नहीं होगा, न हम आगे बढ़ सकेंगे ?"

तभी राजा साहब को जैसे कोई बात याद आ गई। उन्होंने पंडित जी के कन्धे पर हाथ रखकर, पूछा—" लेकिन एक बात है। जीवन के हाथ में

जनता है। यदि वह जनता के बीच आग की लपटें फेंक देगा, तो सब कुछ स्वाहा हो जायेगा।"

"आप नहीं जानते, मधुमा तथा जीवन में मतभेद हो गया है। वह स्वयं अपने गाँव से भाग गया है।"

"क्यों, क्या उसके परिवार में कोई नहीं है ?"

"सब कोई है, पर सबने उसे घर से वर्षों पहले उपेक्षित समझकर निकाल दिया।"

राजा साहब ने स्वर समेट कर पूछा—"आखिर उसके परिवार के लोगों ने उसे क्यों निकाल दिया, पंडित जी ?"

पंडित जी ने अंगुली पर कुछ इन-गिन बातें बताईं और फिर नाक की साँस गति को देखकर, बोले—"कुछ न पूछिए सरकार। महा नीच आदमी है। मुझे तो उस रोज बहुत आश्चर्य हुआ जब आपने उसे अपने महल के भीतर जाने दिया।"

"क्यों···वह कलाकार था, आपने भी तो सुना था, कि सब लोगों में उसकी कविता ही सर्व प्रधान थी ?"

"सब कुछ होते हुए भी वह एक दुश्चरित्र व्यक्ति है, सरकार !"

"क्या कह रहे हैं, पंडित जी ?"

"मैं···मैं सच कह रहा हूं, सरकार ! उसकी 'हिस्ट्री' मैं जानता हूँ।"

"तब तो अवश्य सुनाएंगे !"

"क्यों नहीं, सरकार की हवेली की इज्जत अपनी इज्जत है ? भला किया जो आपकी हवेली में उसे स्थान नहीं मिला, नहीं तो वह तो सीधे कुमारी लड़कियों पर मीठी-मीठी आकर्षण की रोशनी फेंक कर उनकी इज्जत नष्ट कर देता है !"

"पंडित जी ! मुझे तो विश्वास नहीं होता। जीवन तो बहुत शान्ति-प्रिय युवक लगता है, पर आपने एक नयी बात बताई !"

"जो सत्य है, उसे कहना अपराध एवं अपमान नहीं। मैं तो स्पष्टवादी हूँ, सरकार। आपकी मर्यादा को अपनी मर्यादा समझता हूँ।"

"तो स्पष्ट कहिए, कि जीवन कैसा है, कौन-सा उसने अपराध किया है ?"

"जीवन···एक बार विवाहित है और सुना जाता है कि उसने प्रेम विवाह किया और उस स्त्री को त्याग दिया। उसके बाद उसने अपनी पत्नी मीनू की हत्या भी कर दी।"

"जीवन, विवाहित है···क्या यह सत्य है ? क्या सचमुच ही उसने अपनी पत्नी की हत्या की ?"

"जी, सरकार !"

"फिर वह मधुमा से प्रेम कैसे करता है ? क्या मधुमा नहीं जानती।"

"जो चरित्रहीन है, उनके लिए मर्यादा और चरित्र नाम की कोई बात नहीं, जो चरित्र में विश्वास नहीं करते, वह उच्च भावुक पूर्ण समाज की स्थापना के लिए व्यर्थ ही प्रयत्नशील हैं। मधुमा जानकर भी उसे इसलिए प्रेम करती है, कि जीवन के समान ही वह चरित्र हीन है। मजे की बात यह है कि जीवन और मधुमा के बीच खटपट हो गई है। इससे आपको लाभ होगा !"

"मुझे विश्वास नहीं होता, पंडित जी। सबूत चाहता हूँ।"

"सबूत उसकी पत्नी है और इससे भी बड़ा सबूत है कि जब इस गाँव के क्षेत्र में उसकी पत्नी आई थी और पाँच पंचो के सामने उसने उस चरित्रहीन व्यक्ति के विषय में कहानी कही। आप चलकर स्वयं पूछ लें तथा चाहें तो स्वयं बुला कर···।"

राजा साहब ने परेशान सा होकर कहा—"पंडित जी, वह तो बड़ी शान्त एवं मधुर प्रकृति का व्यक्ति था। आप यह सब क्या कह रहे हैं ?"

पंडित राज ने हँसकर कहा—"सरकार ! आप तो जानते ही हैं कि शान्त प्रकृति से काटने वाला साँप और आदमी का विष एक समान होता है। वह आस्तीन का एक ऐसा साँप था, जिसने स्त्रियों को सिर पर चढ़ा दिया। स्त्रियों की प्रगति के बहाने रोमान्स करने की क्रिया तो कलाकारों की परम्परा की देन है, भले ही वह नूतन अभियानों का गीत गाते रहते हैं, पर नारी अब

तक इन इच्छाओं की कामना की तृप्ति कला के रूप में ही साहित्य अथवा चित्र एवं मूर्ति में अवतरित हो रही है !"

"ठीक कहते हो, पंडित जी । आपके ज्ञान से मेरे मस्तिष्क का सोया हुआ विवेक जाग उठा है । मैं कल जीवन की पत्नी से अवश्य मिलूँगा ।"

"केवल उससे मिलने से ही क्या होगा ? वह भी कम नहीं है । लेकिन जीवन को नीचा दिखाने में उसकी पत्नी मीनू काफी सहयोग दे सकती है ।"

राजा ने अपने उद्वेग को प्रगट करते हुए कहा—"नीचा दिखाने से ही काम, क्रोध शान्त नहीं होंगे, पंडित जी । मैं तो जीवन की लाश चाहता हूँ ।"

पंडित जी नम्रता पूर्वक बोले—"महाराज ! आप क्षत्री हैं, रोष में आकर अनर्थ नहीं करना चाहिए । उसकी मृत्यु से बढ़कर तो सजा मेरे पास है, सरकार !"

"जल्दी कहो, कौन सी वह सजा है, राजनाथ ?"

"अदमापुर में जो रक्तपात का केस हुआ है, उसी केस में जीवन को भी फँसा दिया जाय, आप गवाह हो जायें और थानेदार से मिलकर उसके नाम से गिरफ्तार करने की सलाह दी जाय !"

"बात सवा सोलहो आने सही है, लेकिन यह काम कौन करेगा ?"

"आप चिन्तित न हों, यह सब मैं कर लूँगा । आप मधुमा के पिता के पास अपने विवाह का पैगाम भेज दें । अब चल रहा हूँ ! आज्ञा दें !"

राजा साहब ने अपनी जेब से सौ का नोट पंडित जी को दिया तो वह समेटते हुए चले गये ।



नौ

शैला से छुटकारा पाकर जीवन दिन भर गाँव की पगडंडियों पर चलते-चलते जब एक गाँव के निकट पहुंचा तो साँझ डूब रही थी। चलते-चलते भी उसके पाँव में अभी थकावट नहीं आ सकी थी, पर प्यास के मारे गला सूख रहा था। इसलिए वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। एक बार पलक उठाकर देखा, तो सामने के मैदान में भीड़ लगी थी और उसमें भेड़ों की तरह कुछ लोग लाल, पीला, तिरंगा झंडा लिए जोर-जोर से बोल रहे थे, जीवन अपने स्थान से उठ, उस भीड़ की ओर चला जा रहा था, कि एकाएक उसकी दृष्टि दूर से आती एक स्त्री पर पड़ी। वह आधुनिक वेश भूषा में सुसज्जित थी। सिर पर लेडी छतरी की छाँव थी, तो हाथ में एक सेर परवल भाटा, टमाटर, भर लेने वाला बेनिटी पर्स भी और इन सब से लैस युवती के शरीर पर सिल्कैन साड़ी फहरा रही थी। जीवन अधिक देर तक मौन न रह सका। जब वह समीप आई तो वह पहचान गया। वह थी दीपा। मधुमा की सहेली। उसे देखते ही जीवन ने कहा—"दीपा जी, नमस्ते।"

दीपा के नेत्र उठे और उसी क्षण दूर से नमस्ते का उत्तर नमस्ते से देती हुई, बोली—"अरे, जीवन बाबू! आप यहाँ कैसे?"

"जहाँ का दाना-पानी जिस रोज का होता, वही मेरा वास है, दीपा जी! तुम अपनी कहो। इस वक्त कहाँ से आ रही हो?"

दीपा ने जीवन के समीप पहुंचकर उसे एक भर नजर देखा, इसके बाद वह बोली—"मैं तो चुनाव के सम्बन्ध में आई हूं।"

जाने क्यों जीवन हंस पड़ा। उसकी इस हंसी में यद्यपि शून्यता थी और दीपा के चुनाव सम्बन्धी विषय के प्रति घृणात्मक भावों के दृष्टिकोण फिर भी अपनी हंसी को रोककर, वह बोला—"चुनाव में प्रचार करने आई हो। किस पार्टी की ऐजन्ट बनकर काम कर रही हो, दीपा जी।"

दीपा ने मुस्करा कर पूछा—"आप किस पार्टी के उम्मीदवार के पक्ष में है।"

जीवन ने मुस्कराते हुए कहा—मैं...मैं तो न किसी पार्टी विशेष का सदस्य हूँ और न किसी सिद्धाँत की सीमा में बन्दी हूँ।"

"यह तो आप की प्रतिक्रिया होगी। क्या एक स्वतन्त्र देश के साहित्कार के मुख से यह बात शोभा देती है ?"

"साहित्यकार किसी भी सत्ता के आधीन नहीं होता दीपा जी !"

"फिर वह अपने साहित्य का निर्माण क्या कर सकेगा ?"

"कोई भी विद्वान चाहे वह राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान कला, कला के किसी भी अंग का अभ्यास करता है और वह अपने स्वतन्त्र विचारों के आधार पर नए समाज के लिए उपयोगी बातें कहता है,- वह मेधावी कलाकार यदि किसी एक सिद्धाँत के प्रतिपाद में अपने विचारों को बन्दी बना देगा तो उसकी मौलिकता ही क्या होगी। परन्तु तुम किस के प्रचार के लिए जा रही हो ?"

दीपा ने विषय को अधिक गम्भीर न बनाने के अभिप्राय से बात को बदलते हुए कहा—"आप तो जानते ही हैं कि मैं 'कम्यूनिस्ट पार्टी' के सिद्धाँतों में विश्वास करती हूँ।"

"बात तो सुन्दर है ! पर कम्यूनिजम की कितनी पुस्तकें पढ़ी हैं तुमने ?"

"कुछ न कुछ तो पढ़ा ही है।"

"क्या उसमें तुम एक सी ही समानता को, व्यक्ति के विकास के लिए दिए गए नियमों को अपनी आत्मा के अनुकूल समझती हो।"

"वह तो विश्व के उन्नति की वस्तु है।"

"वस्तु नहीं विचार है, दीपा। परन्तु क्या रूस का कम्यूनिजम ही संसार के सभी देशों में होगा, या उसमें परिवर्तन भी किया जा सकता है।"

"परिवर्तन मय तो यह सारा संसार है···फिर नीति में भी परिवर्तन क्यों न हो ?"

"लेकिन स्टैलिन के काल में तो तुम्हारे दल के लोग उनको देवता मानकर

पूजते थे और तुम्ही तो हो, जिन्होंने बयालिस की क्रान्ति में साम्राज्यवादियों के साथ होकर स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कराया था और आज जब नेहरू संसार में शान्ति स्थापना के लिए देश के जन-जन से अनुरोध कर रहे हैं, जब रूस और भारत मित्र भाव से एक दूसरे को सह-आस्तित्व भावना से बरत रहे हैं, तब भी तुम्हारी पार्टी के समझ में न आ सका कि वह भारत की आत्मा पर अनाधिकार किसी वस्तु का प्रयोग करके···।"

दीपा अपनी पार्टी की आलोचना सुनते ही कुछ खीज कर बोली—"रहने भी दीजिए। आपके नेहरू में इतनी शक्ति है तो वह देश की बेकारी और भुखमरी क्यों नहीं दूर करते। पूंजीपतियों को समाप्त क्यों नहीं करते। क्या आप इसे स्वतन्त्रता कहते हैं ?"

"स्वतन्त्रता का अभिप्राय वैदेशिक नीति से निर्देशित होकर चलना भी नहीं है। उधार ली हुई नीति और स्वतन्त्रता देश के लिए दासता का परिचायक होती है, दीपा ! अपने देश की तथा योरोपीय देशों की साँस्कृतिक समन्वय भले ही हो जाय, फिर भी दोनों ओर के देशों की भौतिकता में अन्तर रहेगा ही।"

दीपा की समझ में बात नहीं आई। वह कुछ कहना चाहती थी, पर उसी समय राज पंडित आ धमके। अपनी साइकिल रोककर, वह बोले—"कैसे खड़े हो, जीवन बाबू ?"

"नमस्ते पंडित जी ! अच्छे मिले कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं तो 'पोलिंग' पर जा रहा हूँ।"

"किस पार्टी से···?"

"कम्यूनिस्ट पार्टी से···।"

अब की बार जीवन बड़ी जोर से हंस कर बोला—"पंडित जी, आप तो साहित्यकार बनते हैं। कविता-कहानी, लेख भी लिखते हैं और आश्चर्य की बात है कि आप कम्यूनिस्ट कब से हो गये ?"

"जब से मेरा गाँव हो गया।"

"बहुत अच्छा। क्या सिद्धाँत है, पंडित जी आपके कम्यूनिजम का ?"

"यह फुरसत में बताऊँगा। इस समय तो जल्दी में हूं।"

"इससे अधिक फुरसत है, कब ? मुझे बताइए !"

"तुमको क्या बताना है, जबकि तुम स्वयं जानते हो कि मार्क्स ने जो भविष्य वाणी की है, वह सब सत्य हो रहा है।"

"मार्क्स के विचारों को आप अच्छी तरह समझते हैं ?"

"तुमसे अच्छा···।"

"तब समझाइये कि मार्क्स ने कहा पर लिखा है कि संसार के सभी देशों का साम्यवाद एक सा ही होगा। मार्क्सवादी स्वयं अपने को तथा मार्क्स के व्यापक दृष्टिकोण को समझने में अभी तक असमर्थ हैं, पंडित जी ! आपसे अधिक विद्वान साम्यवादी नेता भी भली भाँति समझ चुके हैं, कि मार्क्सवाद कितना व्यापक है। मार्क्स किसी को कट्टर पंथी होने का आदेश नहीं देते। उनकी विचार धारा में सामूहिक योजनाओं की सफलता पहले है, उसके बाद कुछ और··· आप अर्थ पर अधिक जोर देते है और नैतिकता पर कम।"

पंडित जी की बोलती बन्द हो चली। यद्यपि उनके मस्तिष्क पर कुछ साम्यवादी साहित्य के अध्ययन का प्रभाव अवश्य पड़ा था। परन्तु उनका साम्यवाद भी तोता रटन्त की तरह था, यदि उनसे मार्क्स, लेनिन, एंगिल्स, ट्राटस्की की तथा स्टैविन के लिखित पुस्तकों के विषय में पूछा जाय तो वह कोरे बछिया के ताऊ थे, पर अपनी अल्प ज्ञानता के आधार पर अपने शिष्यों पर उन्होंने अच्छा रंग फेर रखा था, बल्कि यह कहें कि वह स्वयं कूप मण्डूप थे और अपने शिष्यों को भी उसी मण्डूक की तरह शिक्षा दे रहे थे। इसलिए जब पंडित जी से उत्तर नहीं बन पड़ा तो बात बदलते हुए, बोले, "अच्छा···तुम गुमराह कर रहे हो और मुझे कोसते हो ?"

"मैं नहीं, स्टैलिन ने आप लोगों को गुमराह किया और आप ने समाचार पत्र में पढ़ा भी होगा, कि जिस स्टैलिन को आप देवता मानकर पूजते थे, उसी की मूर्ति को रूस की जनता ने कितनी उपेक्षित दृष्टि से देखा।"

पंडित जी चुप हो गए और राजा साहब की बात की याद दिलाकर बोले—"अच्छा तुम बड़े रहे। राजा साहब को नाराज कर आए हो न। देखो

कि क्या मजा आता है ?"

"मैंने अपने जीवन में भय का कभी दर्शन नहीं किया।"

"यह तुम्हारा अहं है। अपने सामने तुम दूसरे को कुछ नहीं समझते।"

"जिसमें अहं नहीं, अपनत्व नहीं, स्वाभिमान और देश के उत्साह के लिए मौलिक साधन अपनाने की क्षमता नहीं, वह व्यक्ति स्वतन्त्र देश का नागरिक नहीं, बल्कि दासता के राज्य का एक उपकरण होता है, पंडित जी ! राजा साहब से आप भयभीत हो सकते हैं, इसलिए कि गाँव में अपने को सबसे अच्छा समझते हैं···मुझे उनसे भय नहीं।"

"लेकिन कानून भी तो कोई चीज है ?"

"हाँ कानून का उलंघन मैंने कभी नहीं किया।"

"इसका प्रमाण तो मीनू की हत्या है। उसकी हत्या करके तुम भागे-भागे फिरते हो ? लेकिन अब अधिक दिन तक तुम कानून की दृष्टि से अलग नहीं रह सकते।"

दीपा समीप ही खड़ी थी। जीवन के विषय में इस प्रकार की बातें सुनकर वह, पंडित जी की ओर देखकर, बोली—"ठीक कहते हो, पंडित जी। जीवन का चरित्र ही ऐसा है। यदि इन्होंने कानून के साथ अन्याय किया है तो सजा अवश्य मिलनी चाहिए।"

राज पंडित अभी उत्तर भी न दे सके थे, कि एकाएक दो पुलिस मैनों के साथ एक थानेदार आकर साइकिल से उतर पड़ा। पंडित जी थाने से ही होकर आए थे। दरोगा जी को देखते ही बोले—"यही है, जीवन, दरोगा जी। राजा साहब की बेटी के गले से हीरे का हार लेकर भाग निकला।"

दरोगा जी ने अपनी जेब से वारन्ट निकालकर जीवन को दिखाते हुए कहा—"जीवन बाबू ! आपके नाम से वारन्ट है। कृपया आप थाने तक चलने की कृपा करें।"

जीवन ने मुस्करा कर थानेदार से पूछा—"किस अपराध में महाशय ?"

"राजपुर के राजा साहब की बेटी का हार चुरा कर भागने का आरोप

आप पर लगाया है। साथ ही यह सुना गया है कि आप ने अपनी पत्नी की हत्या भी की है ?"

"वारन्ट आप के साथ है ?"

"जी···और अब देर न कीजिए।"

जीवन उसके साथ चलने को था, कि दीपा बोली—"दरोगा जी ! आप इस इन्सान को ऐसी सजा दें, कि यह जीवन भर याद करे।"

अपनी उपेक्षा सुनकर जीवन ने दीपा से कहा—"और तुम मधुमा से कह देना कि अब वह आराम से अपने रोमान्स की अभिपूर्ति करे। स्वच्छन्दता-पूर्वक जिसके साथ प्रेम कर रही है, उसे अपना हृदय दे···।"

तभी राज पंडित जी ने कहा —"दरोगा जी'। देर न कीजिए, हमें तो अभी अपनी पार्टी के उम्मीदवार के चुनाव में जाना है।"

"तो आप जा सकते हैं।" जीवन ने कहा !

दीपा अपने काम से चल पड़ी और थानेदार पुलिस के साथ जीवन को लेकर आगे चला। कुछ दूर आने के बाद वह बोला—"जीवन बाबू आपके घर के लोग तथा कोई जमानत दार हो तो छोड़ दूं।"

"मेरे पास कोई जमानत दार नहीं है, आप मुझे ले चलो !"

अन्त में दरोगा जी उसे लेकर थाने की ओर चल पड़े।



दस

आम के वृक्षों पर बौर आया और गाँव के लोगों की नजरें पत्तों पर तिरने लगी। सब लोग अपने-अपने बाग में घूम कर आम की फसल अच्छी होने की सम्भावना से ऐसे मद-मस्त हो-हो कर आपस में बात-चीत कर रहे थे, मानों बौर देखकर ही उनके मुँह का जायका ही कुछ बदल गया हो। गाँव के लोगों में अक्सर फसल की ही चर्चा रहती है। दिन भर खेत-खलिहान और बाग-बगीचे के बाद जब सूर्यास्त होने लगता है, तो मुखिया की चौपाल ही उनके लिए क्लब और रेस्ट्रा होते हैं। ऐसी ही चौपाल मुखिया राम के घर के सामने एक विशाल नीम के वृक्ष की सघन छाया के नीचे आबाद थी। उस चौपाल से सटकर मुखियाराम का घर था। वैसे भी मुखिया राम की न्याय प्रियता आस-पास के गाँवों के इलाके में प्रसिद्ध थी, परन्तु जब से पंचायती अदालत और सरपंच की परम्परा कायम हुई थी, तब से मुखिया जी समझ गए थे, कि सरपंच के अधिकार उनसे अधिक हो गए हैं। फिर भी गर्मियों, सर्दियों और सावन भादों की साँझ में गाँव के लोग उनकी चौपाल पर एकत्रित होते थे। इन लोगों में किसान-मजदूरों की टोलियों का जमघट अधिक रहता। सभी लोगों के बीच में मुखिया राम बैठते और गाँव की राजनीति, पंचायत की गति विधि तथा अच्छी-बुरी खबरें वहाँ प्रायः विचाराधीन रहतीं। इनका विषय होता, कि किसने आज किसके खेत में अपनी मवेशी छोड़ी, अमुक व्यक्ति ने अमुक की फसल उखाड़ ली, अमुक ने रात को खेत काट लिया। इन तमाम बातों पर जोर-शोर की चर्चा रहती, पर खलिहान का चोर, फसल उजाड़ने वाला वहाँ नहीं बैठता, क्योंकि मुखिया की वह चौपाल थाने से अधिक भयानक थी, वकील, मुख्तार, गवाहों की भी वहाँ कमी नहीं होती, जज भी मिलते थे और मानसिक ऐय्याश लोग भी वहाँ उपस्थित रहते थे। लेकिन इस अदालत में क्या, आज किसी अदालत में भी अपराधी अपने अपराध को स्वीकार करने को तैयार नहीं रहते हैं।

रोज की तरह आज भी साँझ बीती और चाँद की चाँदनी के छिटकते ही चौपाल पर जमघट आ लगी। पर रोज की तरह आज किसी के खेत-खलिहान का विषय पेश न हो सका। वातावरण शून्य रहा और अन्त में मुखिया राम ने उपस्थित गाँव वालों को सम्बोधित करके कहा—"भाइयो ! आप लोगों ने तो सब कुछ सुन लिया ही होगा। आज की सभा में एक विशेष विषय है ! उसमें पंडित राज जी सामने बैठे हैं और राजपुर के राजा का पैगाम लेकर आए हैं।"

एक व्यक्ति ने सभा के बीच पूछा—"कैसा पैगाम है ? मुखिया काका !"

"पैगाम है···मेरी बेटी मधुमा से राजा साहब विवाह करना चाहते हैं। अब आप सब बताइए कि मैं क्या करूं ? गाँव जानता है कि मैं अपनी बेटी मधुमा का विवाह सरपंच से ठीक कर चुका हूं...और अब...।"

सभा में सनाटा था। मधुमा के विवाह की चर्चा सुनते ही सरपंच ने पंडित राज की ओर मुखातिब होकर कहा,—"आप पंडित जी ! अपना पैगाम लेकर तशरीफ की टोकरी ले जाइए। मधुमा की शादी मुझसे तय हो चुकी है, अब वह मेरी है ?"

सन्नाटे का वातावरण कुछ और तेज हो गया और सब लोग सरपंच की ओर देखने लगे, कोई पंडित जी की ओर देख रहा था, तो कोई मधुमा और सरपंच की तुलना कर रहा था और पंडितराज क्षण भर तक इधर-उधर ताक कर बोले—"सरपंच के पद पर आरूढ़ होने के नाते तुम राजा साहब की हस्ती को क्यों भूल रहे हो···यदि अभी एक नजर घूम गई, तो सार गाँव तबाह हो जायेगा, कौन सा मुंह लेकर मधुमा से शादी करना चाहते हो... ?'

सरपंच ने अकड़ कर कहा—"मुझमें कमी किस बात की है। राजा साहब की हस्ती रियासती शक्ति के साथ ही समाप्त हो गई, पंडित जी ! आप जैसे अवसर वादी व्यक्ति सा मेरा विचार नहीं है, जो सैद्धान्तिक रूप से कम्युनिस्ट और जब पद अथवा लोभ का प्रश्न उठे, तो जो पैसा दे, उसको वोट दे दें !"

पंडित जी लजा गए और बड़ी नम्रता से बोले—"गढ़े मुरदे उखाड़ने से

कभी कुछ लाभ नहीं होता । रोजी का प्रश्न है । राजा साहब का नमक खाया है, इसलिए मैं उसे अदा करूँगा !"

'कल आप कम्युनिस्ट थे, उसके बाद सोशिलिस्ट हुए !"

"लेकिन सबसे पहले तो काँग्रेसी था और अब फिर काँग्रेसी हूं ।"

"यह अवसर वाद का स्पष्ट उदाहरण है !"

पंडित जी झुंझलाकर बोले—"खैर, कुछ भी समझो ! मैं राजनीति को लेकर यहाँ नहीं आया हूँ । विवाह का प्रश्न है । मधुमा जैसी युवती के लिए राजा साहब ही उपयुक्त बर है चाहे तुम किसी से पूछ लो ?"

मुखिया राम गाँव के बहुमत के कारण कुछ चुप हो रहे । पर जब यह न सहा गया तो वह सबकी ओर घूम कर बोले—"गाँव के सभी पंच और भाई भी शामिल हैं । मेरा विचार है कि मधुमा को स्वयं सभा में बुलाकर पूछ लिया जाए, कि वह किससे विवाह करना चाहती है ?"

इस पर सरपंच बिगड़ कर, उठ पड़ा । बोले—"यह कैसे हो सकता है ? मेरे साथ विवाह का आपने सबके सामने वचन दिया है ।"

मुखिया राम बोलने वाले थे, कि एकाएक राज पंडित ने तर्क पेश करते हुए कहा—"सरपंच जी ! किस दुनिया में हो ! स्त्री सदा सौन्दर्य साधनों को अधिक से अधिक जुटाने वाले व्यक्ति को पसन्द करती है ।"

सरपंच ने कहा—"इसका क्या मतलब है, पंडित जी ?"

पंडित जी बोले—"मतलब यह है कि नारी अपने सौन्दर्य की प्रशंसा करने वाले को ही अधिक महत्व देती है । वह अपनी आलोचना नहीं सुन सकती ।"

कुछ लोग इस बात को समझ रहे थे, तो कुछ लोग केवल हाँ-हाँ कह कर चुप हो रहे । पर सरपंच भी ऐसी अच्छी पत्नी को भला कब छोड़ने वाला था । उसने विरोध करते हुए कहा—"इन बातों से कोई लाभ नहीं । यदि मधुमा के मन पर ही छोड़ दिया जाय, तो अच्छा रहे ।"

सरपंच की बात सब ने मान ली । मुखियाराम मधुमा को बुलाने के लिए उठे थे, कि द्वार पर खड़ी मधुमा स्वयं अपने पिता के समीप आ खड़ी

हुई और सभा के सम्मुख खड़ी होकर, बोली–"सभा तथा गाँव के भाईयों ! मेरे विवाह का प्रश्न मुझ पर है। मैं इन दोनों में से किसी से विवाह करना नहीं चाहती ।"

सरपंच के पैरों से जैसे कोई पुल अचानक टूट गया और पंडित जी भी निराश हो गये। परन्तु पंडित जी पूरे दर्जा चार के मास्टर थे, जल्दी हार मानने वालों में से नहीं थे। इसलिए मधुमा की ओर घूम कर बोले–"बेटी ! तू जिस जीवन के लिए अपना जीवन नष्ट कर रही है, वह जेल में है।"

"जेल...जेल में जीवन...नहीं...नहीं। वह अपराध नहीं कर सकता। वह...वह जीवन सत्यवादी है। सत्य बोलने के लिए तो वह मुझ से अलग हो गया, वह कभी ऐसा नहीं कर सकता। इसमें कुछ रहस्य है, अवश्य रहस्य है और यह रहस्य है, मुझे पाने के लिए। लेकिन सुनो, पंडित राज ! तुम राजा से जाकर कह देना, कि मधुमा को जो विलास की आकंक्षा समझकर उसे पाने का प्रयत्न करेगा, वह जलकर राख हो जाएगा, पंडित जी !"

राज पंडित को मधुमा ने जो भर्त्सना दी, उसे सुनकर मुखिया राम की आत्मा काँप उठी। यद्यपि राजा की रियासत समाप्त हो चुकी थी, पर दब-दबा अब तक काम कर रहा था, उस भय से भयभीत होकर मुखियाराम ने मधुमा के सिर पर हाथ रखकर, कहा— 'बेटा ! बूढ़े बाप की इज्जत पर ध्यान दो। अगर राजा साहब सुनेंगे, तो सारी फसल लुटवा लेंगे, न जाने गाँव में किस-किसके घर डाका पड़ेगा। मेरी बात मान लो, बेटा ! इतनी कड़ी सजा न दो, इसमें मेरी ही नहीं, सारे गाँव की भलाई है।"

मधुमा से अधिक सुन्दर उसका स्वभाव आत्मग्लानि से पीड़ित होकर, वह फफक-फफक रो पड़ी। वह पिता के आगे बढ़कर पाँव पकड़ते हुए, बोली—"काका मुझे माँफ कर दो। यदि मेरे रूप और सौन्दर्य के कारण गाँव पर आपत्ति आने वाली है, तो इसमें जो भी होगा, मैं करूंगी। पर मैं भी तो मानवी हूँ। मेरे पास भी मन है। मेरे मन के भी मान-सम्मान की भावना

का प्रश्न है। मैं पूछती हूँ कि विवाह लड़कियों के लिए ही इतना अनिवार्य क्यों है ? मेरे विवाह न होने से कौन सी धरती फट जायेगी ?"

"धरती नहीं बेटी, उससे भी बड़ी वस्तु फट जायेगी !"

'वह क्या काका ?"

"तेरी वात्सल्य मयी माँ की आत्मा को मैंने आश्वासन दिया था, जिन्दगी के आँधी-तूफान से बचने के लिए विवाह आवश्यक है "

"लेकिन समय के पहले मेरी आकांक्षाओं को न कुरेदो काका।"

मुखिया राम ने कहा—"बेटा ! संज्ञा हीन भी न बनो । तुम्हें क्या हो गया है । तुम्हें खन्दक में तो नहीं ढकेल रहा हूं !"

"खन्दक में ढकेलना अच्छा होता है, लेकिन बिना मनका किसी से विवाह करके जीवन भर चिन्ता की आग में जलना, अपने भविष्य को नष्ट करना है, काका । मैं गाँव की बहनों की सेवा करूँगी । तुम्हारी सेवा करूँगी और इन समस्त आस-पास के गाँवों की बहनों को सुशिक्षित, बनाकर राष्ट्र के निर्माण में योग दूँगी, काका !"

सभा के लोगों ने सुना तो चकित भाव से मधुमा की ओर देखने लगे। सबकी आँखें उस पर टिकी थीं और मुखिया राम शान्त भाव से बेटी की बात पर तर्क-वितर्क कर रहे थे, कि राज पंडित उठकर बोले—"तेरा दिमाग खराब तो नहीं हो गया है। जब बड़े-बड़े नेताओं के योग से देश की लूट-खसोट आपसी बैर-भाव दूर नहीं होता, तो तू लड़की होकर क्या करेगी ? भला तेरे जैसे सौन्दर्य प्राप्त स्त्री को यह अच्छा लगेगा।"

मधुमा का हृदय क्षोभ से भर उठा। उसने कुछ तीव्र स्वर में कहा—" पंडित जी। अपने उपदेश को आप अपने पास रखें। मैं सब समझती हूँ कि यह सारा किस्सा आप ने ही गढ़ा है।"

पंडित जी मधुमा की आवाज पर जरा मुस्कराए, फिर मुखियाराम की ओर घूमकर, बोले—"अजी, मुखिया राम ! क्या राय है ? जल्दी कहो और नहीं तो उनका खेत छोड़ देना पड़ेगा।"

"खेत···खेत···कैसे छोड़ देंगे ?" मधुमा बोली।

"इसलिए कि तुम्हारे सारे खेतों पर राजा साहब का नाम चला आ रहा हैं। लेखपाल कहो या पटवारी, इस गाँव के पूरे खेतों की परताल राजा साहब के नाम करता आ रहा है।"

"लेकिन अधिकारी हैं हम, उस जमीन को बाप-दादा के जमाने से जोतते आ रहे हैं।"

"यह सब कहने से काम नहीं चलेगा, न तुम्हारा गला छूट सकता है। मेरी बात मानकर तुम अपने गाँव की भलाई के लिए राजा की बात स्वीकार करलो, मधुमे ! वह कितना भी हो, है तो राजा।"

मधुमा ऊंचे स्वर में गाँव के लोगों की ओर मुखातिब होकर बोली—"गाँव के भाइयों, माताओं, एवं बहनों। आप लोगों के हित के लिए मैं गाँव छोड़ने के लिए तैयार हूँ और आप सब लोग सहयोग चाहते हैं, अपने अधिकारों के लिए हमारे साथ भारत सरकार से न्याय के लिए अनुरोध करना चाहते हैं, तो मैं रियासत की इस सड़ी हुई भावना के बोझ को गर्त में डुबाने के लिए तैयार हूँ! लेकिन कैसे शान्ति पूर्वक। तर्क और न्याय की शरण लेकर न कि रक्तपात और हिंसा द्वारा।"

एकाएक शमा की लौ तेज हो गई। सारे ग्रामीणों का मुख सूरज की लालिमा सा तेज हो चला और सब ने एक स्वर से चिल्लाकर कहा—"हम अधिकार के लिए न्याय की शरण सामूहिक रूप से लेंगे। तुम आगे बढ़ो ! राज पंडित, तुम लौट जाओ। राजा साहब से कह देना कि मधुमा सब गाँव की बेटी है। जब तक गाँव में उसका एक भी ग्रामीण जीवित है, मधुमा को ताना शाही से कोई नहीं पा सकता...लौट जाओ राज !"

जो व्यक्ति सभा के बीच में खड़ा होकर कह रहा था, वह सरपंच था और सरपंच की भावना को बदलते देख, मधुमा के मुख पर मुस्कान विहंस पड़ी। उसने आगे बढ़कर कहा—"सरपंच भैया !"

"बहन...विश्वास रखो ! जब तक हम ग्राम वासियों के शरीर में रक्त है, जहाँ तुम्हारा पसीना होगा, वहाँ हम सब अपना रक्त दान करने के लिए तैयार रहेंगे। जब अंग्रेजों की गोली की प्यास बुझाने के लिए हम भारत वासियों ने

हंसते-हंसते अपने रक्त का दान किया, तो इस बुझी गोली की प्यास हमारे खून से अन्तिम बार पीकर [बुझना चाहती है, तो हम अपना रक्त देश की नारियों के स्वाभिमान के लिए अवश्य प्रदान करेंगे।"

मधुमा हंसकर बोली—"और नारियाँ...हमारी बहनें, हमारा वर्ग ! अपने भाईयों के बलिदान से पूर्व अपने आप को आगे बढ़ा देगा...तुमसे पहले हम अपने स्वाभिमान की रक्षा करेंगी !"

पंडित राज ने गुस्से में भरकर कहा—"स्वाभिमान की रक्षा। छोटी मुंह बड़ी बात ! रियासतें समाप्त हो गईं, पर राजा साहब की मान-मर्यादा तथा खर्च के समान, कौन पुरुष तुझे अपने पास रख सकता है, मधुमा ! रानी बनकर रहेगी-रानी !"

मधुमा ने पंडित जी की ओर घूमकर कहा—"रानी और राजा का युग अब समाप्त हो गया और अब तुम जैसे पंडितों का युग भी चला गया, जो विवाह के एजेन्ट बनकर इधर-उधर घूमते फिरते थे !"

पंडित जी चुप हो गए और उठते हुए, बोले—"सोच लो, समझ लो और इसका अंजाम भी सोच लो कि इसका अंजाम क्या होगा ? और तो और जीवन के प्राणों का भी तुम्हें मोह नहीं है क्या ?"

"जीवन, स्वयं इतना चतुर है, कि उसका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता।"

"बड़ा सत्यवादी है, तो इसी केस में समझ लेंगे ! अगर राजा साहब की बात न मान सकी, तो जीवन का प्राण अखर कर चला गया, मधुमा !"

"जीवन पर मुझे विश्वास है, वह भूल कर भी न तो किसी की हत्या कर सकता है, न किसी के साथ अन्याय।"

"तो तुम समझना ! मैं जा रहा हूँ मधुमा ! पर एक बात पर जरा सोच लो। जिस जीवन के विषय में तुम इतना सोच रही हो, वह तुम पर स्वयं विश्वास नहीं करता।"

"यह हमारे और जीवन के बीच की बात है। न तुम, न कोई और इस मामले को निपटा सकते।"

बात को अधिक बढ़ते देखकर मुखिया राम ने राज पंडित से कहा—"पंडित जी ! बात समाप्त हो गई। जब गाँव की राय नहीं और मधुमा की स्वयं राय नहीं है, तो मैं क्या कर सकता हूं ?"

"यह आपने भला नहीं किया।"

"इसमें भले बुरे का प्रश्न ही नहीं उठता है।"

"इसलिए कि आज रियासत के टूटने पर तुम लोग राजा की उपेक्षा कर रहे हो, पर...संसार के कानून कुछ भी हों- आपस के व्यवहार में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।"

"परिवर्तन के कारण ही आप इस तरह के मस्तिष्क से बोल रहे हैं, अन्यथा आप इस तरह की बात नहीं करते। अब सीधे हो, अपने घर जाइए पंडित जी !" मधुमा ने घृणा की दृष्टि से पंडित जी की ओर देखा।

और पंडित जी खिसीयानी बिल्ली सी अपनी आँखें दबा कर भाग खड़े हुए।

उनके जाने के बाद सभा समाप्त हो गई और सरपंच ने सबसे आगे आ, मधुमा की पीठ पर हाथ रखकर कहा—"बहन ! आज से तुम जीवन की हो, जीवन तुम्हारा है। तुम्हारे जीवन को बचाने के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग कर दूंगा।"

मधुमा सरपंच के इस व्यवहार पर हर्षित होकर अपने घर के दालान की ओर बढ़ गई और सभा के लोग अपने-अपने घरों की ओर।



ग्यारह

थानेदार के साथ जब जीवन थाने पर आया तो पहले तो थानेदार ने ही बहुत कुछ उल्टी सीधी पढ़ाकर उसे बहकाने की कोशिश की, परन्तु जब उसकी एक न चली, तब विवश होकर उसने जीवन से तर्क करना छोड़ दिया। पर कानून का वह चलता पुर्जा कानूनगो था। साम्राज्यवादी पुलिस समाज के घर में उसका-पालन-पोषण हुआ था। इसलिए उसकाल के वातावरण में रहने के कारण उसकी मनोवृति का रूप भी अभी तक उसी रंग से रंगा था। जब जीवन से तर्क करने में वह सफल न हो सका, तो जीवन के विरुद्ध की गई रिपोर्ट को दिखाकर वह बोला—"जीवन बाबू ! यह कानून है और कानूनी नजर मे आप पर राजा साहब ने जो अपराध लगाया है, वह मेरे वश का तो नहीं। आप लाख अपने को निर्दोष कहें, पर गवाह के साथ जो रिपोर्ट दी गई है, वह तो न्यायालय द्वारा ही निरपराध साबित हो सकती है। मैं आपका चालान भर कर भेज रहा हूँ।"

जीवन ने मुस्करा कर कर कहा—"यह आपका दोष नहीं है, पुलिस स्टेशन में जो बृटिश लाल बत्ती जल रही है, उसकी रोशनी में आप लोगों की दृष्टि कमजोर हो गई है। आपका चालान भी केवल न्यायालय के सामने जाकर परास्त होने के लिए है।"

थानेदार ने बड़े भाव से जीवन का मोखोल उड़ाते हुए कहा—"जीवन, बाबू ! अगर हार ले आए हो, तो अपराध स्वीकार कर लो, क्यों अपनी मर्यादा खो रहे हो ?"

"मर्यादा···मर्यादा की परिभाषा आप भी समझने लगे, यह जान कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। अब आप मेरा चालान कर दीजिए।"

जीवन की बात सुनते ही थानेदार का पिट्ठू सिपाही हँस पड़ा और जीवन के निकट आ, उसके कंधों पर हाथ रखकर, बोला—"सो न कहो, जीवन बाबू !

भला चालान करने के बाद तुम कहाँ के रह जाओगे। मेरी मानो, तो कुछ दे दिलाकर मामला तय हो जाय। हमारे थानेदार तो इतने दयालु आदमी हैं, कि मुजरिमों को आरज़ू पर ही छोड़ देते हैं।"

"मुझे तो ऐसा नहीं लगता...।"

"आप कहकर देखिए। नहीं तो मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं सब तय करा दूँगा।"

"तय करने के लिए पैसा नहीं है, जब आदमी को देखकर ही उसके अपराध का परिचय पाने की क्षमता किसी में नहीं, तब वह न्याय क्या कर सकता है? अगर तुम मेरे प्रति सहानुभूति रखते हो तो अलग जाकर दरोगा जी से कहो, पर घूस देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है।"

सिपाही ने जीवन की अंगुलियों की ओर देखकर कहा—"कुछ क्यों नहीं है, जीवन बाबू! भला आपके हाथ में जो अंगूठी है, उसे ही दे दीजिए।"

"अंगूठी...नहीं, अंगूठी नहीं दे सकता। यह मेरी होने वाली पत्नी की भेंट है।"

"लेकिन आज आपकी इज्जत बच जाय तो अंगूठी तो बीबी होने पर भी वह दे सकती है।"

जीवन कुछ सोच कर बोला—"निरपराध को घूस देते भी अखरता है, सिपाही जी। मैं चालान को अच्छा समझता हूँ, पर घूस देकर एक रास्ता नहीं खोल सकता।"

सिपाही की बात न चली। यह सोचकर वह बिगड़ कर बोला—"तो कोई जमानत दार है?"

"मैं किसी की जमानत नहीं चाहता।"

"तो बैठो यहाँ। जेल की लारी आते ही होश ठीक हो जायेंगे।"

"कौन जानता है, कि किसका होश ठीक होगा?"

उत्तर देकर जीवन थाने के बरामदे में बैठा रहा। सिपाही थानेदार के कमरे की ओर बढ़ा और तभी जीवन की दृष्टि थाने के दरवाजे की ओर घूमी, उसने देखा कि एक लड़की एक बूढ़े के साथ एक्के से उतर कर थाने

के भीतर चली आ रही है। जीवन ने जरा ध्यान से देखा तो भली-भाँति समझ में आ गया, कि मधुमा अपने पिता के साथ चली आ रही है। वह उठा और आगे बढ़ते हुए बोला—"अरी, मधुमा ! तुम, यहाँ कैसे ?"

मधुमा ने मुस्करा कर कहा—"अपने भावी जीवन की रक्षा के लिए...।"

"जीवन की रक्षा...पगली। इस शरीर की रक्षा के लिए इस दहकती धूप में आ रही हो !"

"यह सब न कहो...मैं काका को जमानत के लिए ले आई हूँ।"

"मेरी जमानत मुखिया काका देंगे ?..."

मुखिया राम बेटी के साथ थे। आगे बढ़कर बोले—"हाँ, बेटा ! हमारे गाँव का नियम है कि निरपराध को थाने में नहीं जाने देंगे...।"

"लेकिन थानेदार के कानून के सामने आपका कानून क्या कर सकता है ?"

"कानून किसी का नहीं होता, वह अपने जनता की रक्षा के लिए होता है, उसे पीड़ित करने के लिए नहीं।"

"भला कहा आपने, पर यहाँ तो लेन-देन के बगैर मामला तय होने की गुंजाइश नहीं दीखती।"

मधुमा बोली—"लेन-देन। यह तो हम जानते ही नहीं, पर यह जान गए है कि यह सब जालसाजी राजा साहब की है, जीवन ! तुम इस तरह निर्भिकता पूर्वक जेल में जाकर क्या करोगे ?"

"न्यायालय समझ लेगी कि देश में किस प्रकार पुलिस की गवाहियाँ एक को तबाह करने के लिए तैयार की जाती है और तब निरपराध को अपराधी, अपराधी को निरपराधी कहकर न्याय उसे छोड़ देता है। थानेदार किसी की जमानत नहीं चाहता।"

"फिर वह किसकी जमानत चाहता है ?"

"पैसे की जमानत... पूंजी की जमानत ! अंग्रेजों के युग के सिपाही अब तक स्वतन्त्र देश में रह कर भी वहीं पर परेड कर रहे हैं, जहाँ वह कुछ वर्ष पहले कर रहे थे।"

मधुमा उत्तर देने वाली थी कि सिपाही थानेदार के कमरे से निकल

आया। सामने एक लड़की और बूढ़े को देखकर बोला—"अरे''तुम लोग बिना इजाजत थाने में क्यों आ गए?"

"जमानत देने'''।"

"किसकी जमानत''' ?" सिपाही ने पूछा।

"जीवन बाबू की !" मधुमा बोली।

"तुम्हारी जमानत नहीं ली जायेगी'''।"

"तब''' मेरे पिता के नाम से तो जमानत हो सकती है।"

"हाँ'''पर कम से कम दस हजार की मालियत होनी चाहिए और नहीं तो तुम चाहो तो बिना माल–मलिकियत के, साहब को अपनी आँखों से ही मना सकती हो।"

मधुमा बिजली सी चमक उठी। सिपाही को फटकारते हुए, वह बोली–" मूंछे सफेद हो चली, पर बेटी और बाप का रिश्ता नहीं समझ सके। चुप रहो, आगे कुछ न कहना।"

सिपाही ने छेड़ते हुए कहा–"बादल में बिजली को चमकते तो सबने देखा है, पर बिजली में बादल को चमकते आज ही देख रहा हूँ, आप यहीं रहो; साहब को बुला देता हूँ, शायद आपकी प्रार्थना पर सब ठीक हो जाय।"

कहकर वह लम्बे कदम फिर चला गया और क्षणभर के बाद थानेदार के साथ वह बाहर निकला। बाहर आते ही थानेदार की दृष्टि जब मधुमा पर पड़ी, तो वह एक क्षण के लिए उसके सौन्दर्य–सागर में डूब गया। उसे एक टक निहारिता सा निहारता रहा, कि मधुमा ने स्वयं ध्यान भंग करते हुए पूछा–"इस तरह क्यों देख रहे हो ?"

"'दुनियां में अब तक मेरे सामने तुम जैसे शरीर की स्त्री नहीं आई। तुम्हारे चेहरे के भोलेपन और बड़ी-बड़ी काली कजराली आँखों में कितनी लाली है''' ।"

"होश में बातें करो'' मैं यहाँ अपने रूप की प्रशंसा सुनने के लिए नहीं आई हूं।"

"तब''' ।"

"जीवन बाबू की जमानत के लिए''' ।"

"कुरबान जाऊं''! भला तुम्हारे कहने पर तो अदालत जीवन को छोड़ सकती है, यह तो थाना है। मैंने तुम्हारी बात स्वीकार की, पर एक बात का उत्तर देने के बाद।"

"मैं सौ प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार हूं''।"

"तो जीवन से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है।

"सम्बन्ध'''बहुत घना सम्बन्ध है।"

"लेकिन'''मेरी इच्छा एक है'''उसे पूरा करने के बाद'''।

"कौन सी इच्छा'''।"

"मुझे आज की रात प्यार की आँख से देख'''।"

थानेदार के मुंह से बात निकली और मधुमा ने ऐसे जोर का तमाचा उसके गाल पर रसीद किया कि लाल पगड़ी की झालर चटक कर अलग हो गई। उसके बगल में सिपाही खड़ा था। उसे लपक कर पकड़ते हुए, बोला—"नादान छोकरी! भला तेरी यह मजाल। आज सबको जेल में बन्द कर दूंगा।"

थानेदार ने अपने गाल मलते हुए सिपाही से कहा—"इसे तथा जीवन को बन्द कर दो।"

सिपाही उसकी ओर बढ़ा था कि थाने के बाहर से आवाज आई—"जीवन बाबू, जिन्दाबाद। जीवन बाबू निर्दोष हैं। जीवन को छोड़ो, मुक्त करो।"

आवाज सुनते ही थानेदार घबड़ाकर बोला—"ठहरो। देखो, बाहर गाँव के लोग आ रहे हैं, लड़की...तुम अब मेरी बात मान रही हो।"

"क्यों नहीं, लेकिन जरा सी देर में ही गाँव वाले आपके शरीर का कचूमर निकाल देंगे। यदि आप अपनी खैर चाहते हैं, तो जीवन को छोड़ दें।"

"जीवन के स्वतंत्र होने से तुम्हें क्या मिलेगा ?"

"इसलिए कि मैं उसे प्रेम करती हूं।"

थानेदार हंस पड़ा। हंसते हुए बोला—"तो तुम इसके प्रेम में दीवानी बनकर आई हो, पर यह मुजरिम है। मैं इसे नहीं छोड़ सकता।"

"गाँव की सारी जनता ही उसे प्रेम करती है, यदि जीवन मुक्त न हो सका, तो इसी समय जनता आप से बदला लेने लगेगी।"

मधुमा के वाक्य समाप्त हुए थे कि भारी भरकम भीड़ के कदम बढ़ते-बढ़ते थाने पर आ धमके। उनके साथ ही राजा साहब और पंडित राजदेव भी थाने में आ धमके।

दोनों पक्ष के बीच-बचाव के बाद जीवन मुक्त हो गया। थानेदार ने उसे छोड़ दिया। जनता ने एक स्वर से उसकी जय-जयकार की और फिर वह अपने घर को लौट पड़ी।

मुखिया राम भी गाँव के लोगों के साथ ही लौटे। पर मधुमा जीवन के साथ बाजार की ओर चल पड़ी।

उस दिन दशमी का चाँद अपनी चाँदनी के साथ गगन में विचरता चला जा रहा था। मधु और जीवन भी शान्त भाव से दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए मौनवत बाजार करके जब घर लौटने लगे, तो मार्ग में मधुमा के सौन्दर्य पर कटाक्ष करते हुए जीवन बोला—"मधु! आज तुम्हारा सौन्दर्य बहुत बड़े खतरे से बचा है।"

इस पर मधुना ने हंसकर कहा—"मैं नहीं! तुम अपने को कहो।"

"मैंने तो अपने जीवन में खतरे को कभी खतरा समझा ही नहीं।"

"रहने भी दो...दरोगा के सामने तो तुम्हारी बोलती बन्द हो गई थी। मेरे सामने डींग हाँक रहे हो।"

"डींग हाँकने की कौन सी बात है? मेरा मतलब यह था कि वह तुम्हारे सौंदर्य पर ही मोहित होकर मुझे छोड़ सका है।"

"सौन्दर्य नहीं, बल्कि सत्यता से भयभीत होकर वह ऐसा कर सका है।"

"लेकिन मुझे इस रिहाई से कोई खुशी नहीं!"

"क्यों...?" मधुमा चकित भाव से बोली।

"इसलिए कि सिफारिश कराने की उसे आदत पड़ जावेगी और...अब मैं तुम्हें घर तक पहुंचा कर वापस चला जाऊंगा।"

'वापिस'''आखिर क्यों?"

"इसलिए कि तुम'''कभी-कभी कुछ ऐसी बातें कर जाती हो, जिसे मैं ठीक नहीं समझता।"

"कौन सी वह बातें हैं ? जरा कहो भी तो...।"

"यही कि जब तुम मुझसे झूठ बोलने की आदत नहीं छोड़ सकती तो क्यों मुझे अपने समीप...?"

"तुम इतने समीप हो चुके हो कि स्वप्न में भी न जाने क्यों मुझसे अलग नहीं हो पाते, जीवन ! तुम नहीं जानते, पर इसे एक औरत ही समझ सकती है।"

"औरत...वह अगर अपने को समझ लेगी तो उसका पतन नहीं होता, मधु ! अब तुम अपने रास्ते पर चली जाओ।"

"आखिर इस उपेक्षा का क्या कारण है ?"

"उपेक्षा का कारण...मैंने जीवन में कभी किसी को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा, फिर नारी को इस दृष्टि से कैसे देख सकता हूँ, मधु ! परन्तु मैं यह कभी नहीं चाहता, कि जो भी मेरे साथ रहे, वह झूठ-धोखा धड़ी का व्यवहार करे।"

"तो मैंने कब धोखा दिया है, तुमको...?"

"कभी नहीं...।"

"फिर क्यों भागना चाहते हो ? इसीलिए न कि औरत को तुम ऐसी वस्तु समझते हो, जिसको जब चाहे धोकर अलग रख दिया जाए।"

"तुम नहीं समझी, मधु ! औरत न बर्तन है, न वस्तु ! न वह धोने का कोई बर्तन है !"

"फिर तुम ऐसा क्यों समझते हो...?"

"मैं नहीं चाहता, कि तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट हो !"

"मेरी कठिनाइयों को अगर अधिक महत्व दे रहे हो, तो मेरी सीमा से दूर न जाओ, जीवन !"

कहती हुई मधुमा ने एक बार जीवन की आँखों में एक विषादपूर्ण हँसी का दर्शन किया और उसी समय जीवन के सामने उसने अपने हाथ फैला दिए। जीवन अपने आप को न रोक सका। मधुमा के अंक में वह स्वयं समा गया। चाँद अपनी चांदनी के साथ दोनों के इस मिलन पर लजाकर स्वयं बादल में छिप गया...।

न जाने जीवन कब तक मधुमा को अपने अंक में भरे निहारता रहा और फिर क्षण भर के बाद मधुमा उसके अंक में समाकर बोली—"सचमुच तुम कितने अच्छे लगते हो ?"

"कैसे मधु···?"

"मैं नहीं जानती। बस इतना जानती हूँ कि तुम्हारे साथ एक योग्य पत्नी बनने में मुझे सहायता मिलेगी।"

"सच··· तुम जैसी युवतियों से ही पति-पत्नी के प्रेम की प्रगति में··· सहायता मिलेगी, मधुमा। सचमुच तुम जैसी युवती को तो किसी क्रान्तिकारी पुरुष से विवाह करने का अधिकार है।"

"तब क्या मैं मुरदों से विवाह करूँगी।"

"हिश···ऐसा न कहो ? मेरा मतलब यह है कि तुम्हारा विवाह किसी ऐसे महान पुरुष से होना चाहिए···जो तुम्हारे योग्य हो।"

मधुमा हँस पड़ी। उसके अधरों की हँसी में एक अपूर्व चपलता थी। उसने चाँदनी की ओर निहारते हुए कहा—"सांसारिक भावनाओं में डूब कर तुम मुझे भले ही कुछ न समझो, पर तुमसे अधिक योग्य मेरे दिल को कोई ऐसा नहीं दीखता जिसे···।"

"लेकिन, इस तरह कब तक मेरे नाम पर ...।"

"तुम्हें पाकर सदा हँसती रहती हूं और यह निश्चय कर चुकी हूं कि जीवन के अन्तिम क्षण तक तुम्हें पाने के लिए संघर्ष करुंगी। यदि तुम्हें पा सकी, तो अपने को धन्य मानूंगी, नहीं तो देश का काम करते-करते अपना जीवन काट लूंगी। इस प्रेम की रचना प्रकृति ने हमारे लिए की है। तुम इतना संकोच क्यों कर रहे हो ? जानते हो न, कि संकोच प्रेम के मिलन के आनन्द को नष्ट कर देता है।"

"अच्छा, अब चलो। बहुत देर हो चुकी है।"

मधुमा उसके अंक से अलग हो गई और दोनों हाथ मिलाकर घर की ओर चल पड़े।

—०—

बारह

राज पंडित की करतूतें जब कामयाब नहीं हो सकीं, तो वह राजा साहब से बेइज्जत होकर एक दूसरा दल बनाने लगे, क्योंकि एक ओर राजा साहब सोते-जागते मधुमा की सुन्दरता का मंत्र जाप कर रहे थे, तो दूसरी ओर उनकी पुत्री शैला के मन में जीवन को पा लेने के लिए अजीव सी एक बेचैनी जाग उठी थी। लेकिन जब किसी तरह से वह जीवन को अपने समीप न पा सकी, तो निश्चय किया कि वह जीवन को भी मधुमा के साथ न रहने देगी। लेकिन उपाय क्या है। बहुत सोच-विचार के उपरान्त उसने अपने महल की सबसे प्रिय सहेली से कहा– "नीली ! सच तू तो बहुत सी प्रेमी-प्रेमिकाओं की कहानियाँ सुनाती आई है। आज मेरी सहायता क्यों नहीं करती ?"

नीली जैसे नीली छतरी के ऊपर चढ़ गई। बोली–"राजकुमारी, भला यह कौन सी बात है। भला उस हरवाहे–चरवाहे के पीछे क्यों पड़ी हो। आखिर उसमें रखा भी क्या है, राजकुमारी ?"

"उसमें वह गुण है, जो एक राज कुमार में भी नहीं हो सकते, नीली। तू मेरी प्रिय सहेली है। मैं चाहती हूँ कि तू मुझे जीवन के घर तक पहुंचा दे।"

"घर तक। यह क्या कह रही हैं, आप ?"

"सच कह रही हूँ, तू क्यों रोक रही है ?"

"भला अपनी प्रजा के घर आप जाइयेगा ! कल जीवन को यहाँ मैं बुला लाऊंगी !"

"एक बार जब किसी की जहाँ बेइज्जती हो जाती है, तो वहाँ उस व्यक्ति की जाने की इच्छा नहीं होती। वह मेरे घर अब नहीं आ सकता, नीली ! तू मुझे यहाँ से ले चल। जा मेरी कार निकलवा दे।"

हार मानकर नीली को जाना पड़ा। कमरे से निकलकर वह शोफर के कमरे में पहुंची तो वह नींद के खर्राटे भर रहा था। नीली के पहुँचते ही

उसके सिरहाने रखी ग्लास से पानी अपने चिल्लु में उड़ेल कर छींटा दे मारा। शोफर नाक भौं सिकोड़ता आँख मींचकर उठ बैठा और आँख फाड़कर, वह बोला—"सच नीली, तू भी न जाने कैसी है। भला इतनी रात गए क्यों आ गई ?"

"राजकुमारी की आज्ञा है, विनोद ! गाड़ी निकाल कर महल के सामने लाओ, आज वह यहाँ से कहीं घूमने जायेंगी।"

"घूमने जायेंगी···भला यह भी कोई समय है घूमने का ! तेरे दिमाग के सब पुरजे ढीले तो नहीं हो गए "

"मेरे दिमाग के पुरजे ढीले हो गए। नहीं···नहीं, विनोद ! तेरे दिमाग का पुरजा ढीला हो गया है।"

"मेरे दिमाग का ! सो कैसे···?"

"और नहीं तो क्या ? तेरे दिमाग के पहिया में ब्रेक लग गए हैं, नहीं तो तू ऐसी बातें नहीं करता।"

"कैसी बात···?"

"यही कि राजरानी इतनी रात को भला घूमने क्यों जायेगी। क्या यह कोई नई बात है ?"

"हाँ···जब से रियासती हवेली में ड्राइवर होकर आया हूं, इतनी रात को कभी गाड़ी का बुलावा नहीं आया।"

शोफर की वाद-विवाद ग्रस्त बातें नीली को पसन्द नहीं आ रही थीं। वह जरा गम्भीर हो गई, बोली - "बकवास बन्द करके गाड़ी निकाल, नहीं तो कल से स्टेयरिंग पकड़ना नसीब में नहीं होगा।"

"अरे रहने भी दे, नीली ! क्यों इतनी बढ़कर हाँक रही है। यदि अपने हाथ में गुण है, तो लाख कारों के स्टेयरिंग अपने आप हाथ में आ जायेगी, नीली !"

"लेकिन इस तरह 'रोल्स राइस' पर चढ़कर तुम्हें किसी मालिक के घुमाने का मौका नहीं मिलेगा। मैं तो जाती हूँ, तुम आना या अपनी नींद पूरी करना।"

कहकर वह चलने लगी तो विनोद हंस पड़ा। अपनी चारपाई से उठकर खूंटी पर टंगी वर्दी लेकर पहनते हुए, बोला—"नाराज न हो, नीली। हम तो चौबीस घंटे के कर्मचारी हैं। पर वहाँ पहुंच कर राजकुमारी ···।

पर नीली कुछ उत्तर नहीं दे सकी चुपचाप सोफर के कमरे से निकल कर महल की ओर बढ़ गई।

"उसके जाते ही विनोद ने अपने सिर की टोपी, सिर पर रखी और गेरिज से कार निकाल कर, बाहर महल के बाग में गाड़ी लेकर आ रुका। कार की आवाज सुनते ही सन्तरी ने समझा कि राजा साहब का कोई मेंहमान आया होगा, एक सलामी मार दी। विनोद हंस कर कार से बाहर निकला, तब सन्तरी ने उसें पहिचान कर कहा—"अरे तुम, विनोद! इतनी रात को कहा जा रहे हो?"

"राज कुमारी, घूमने जायेगी।"

सन्तरी उत्तर भी न दे सका था कि राज कुमारी शैला नीली के साथ आती दीख पडी। उसे देखते ही दोनों चुप हो गए।

शैला नीली के साथ आकर कार में बैठ गई और तभी विनोद ने स्टेयरिंग सभालते हुए पूछा—"कहां चलूं, हजूर।"

'मधुपुर!"

"मधुपुर···उस गांव में···।"

"हाँ, विनोद! आज वहाँ घूमने को मन कह रहा है। इस दूध सी उजेली चाँदनी के बीच खेतों की हरियाली कितनी भली लगती होगी। सरसों का पीला फूल और मटर की छिमी से भरे खेतों, गेहूं और जो चना के पौधे का त्याग कितना महान है। हम उन्हें देखने चलेंगे।"

विनोद को शैला की बातों पर हंसी आ रही थी। वह चाहता था कि शैला की इस भावुकता की वह एक स्वर से आलोचना कर दे। फिर भी उसने बहुत सभाल कर कहा—"राज रानी! भला खेतों में क्या त्याग है। यह अन्न-जल तो जीवन के लिए ही बना है न। इन पेड़-पौधों में जीवन तो नहीं है।"

"जीवन...संसार की प्रत्येक वस्तु में जीवन है, जब उसे प्रकृति से अलग कर दिया जाता है, तो वह जड़ पदार्थ के रूप में बदल जाती है, विनोद। तुम आज इस तरह क्यों पूछ रहा हैं ?"

"सरकार रात के ग्यारह बज रहे हैं, और फिर गाँव कस्बे का रास्ता। दिन दहाड़े तो लोग, लोग को लूटने से नहीं चूकते, फिर यह तो रात का मामला हैं।"

"तुम डरो नहीं। मैं तो हूं ! अगर कुछ होगा तो देखा जायेगा।"

विनोद ने ब्रेक से पांव खींचे और रोलस राइश आगे भाग निकली।

राजमहल से कार निकल कर अपने पीछे विस्तृत मैदान को छोड़ती चली जा रही थी और शैला अपने मन में जागते-जागते सपना देख रही थी कि जीवन उसकी बात मान गया और शैला उसके अंक में लेटी चांद की चाँदनी के संग आँख मिचौनी खेलते देख रही है। इन्हीं भावों के उतार-चढ़ाव के साथ वह अपनी कार से भागी जा रही थी। मन के आवेगों की गति तीव्रता के साँस-के साथ अस्वाँस बनकर नाक से निकल कर कहीं उड़ती जा रही थी, कि विनोद ने ब्रेक दे दिया और गाड़ी के पहिए किच-विच करके जहाँ के तहाँ 'जाम' हो गए। गाड़ी रुकते ही वह उतर पड़ा और पीछे का दरवाजा खोलते हुए, बोला—"जी, मधुपुर आ गया। सामने का गाँव ही तो मधुपुर है।"

विनोद के मुंह से बात निकली थी कि शैला उतर पड़ी। उसके पीछे पीछे नीली थी। दोनों ने उतर कर रात की उस पहली नींद में सोने वाली प्रकृति को देखा और विनोद को वहीं रोक कर गाँव के भीतर जाने वाली पगडंडी को पकड़ कर गाँव की ओर बढ़ी।

सोफर अपनी सीट पर आकर सो गया।

उधर नीली के साथ जब गाँव के समीप शैला पहुंची, तो गाँव का चौकीदार पहरे पर था। सारा गाँव घूम कर इधर आ रहा था, नीली तथा शैला को सफेद साड़ी में देखकर पहले तो वह भयभीत हो गया। कारण कि आधी रात गए, अगर कोई स्त्री गाँव के सुनसान स्थान मे खूब सफेद धुली

साड़ी पहन लेती है, तो लोग सुबह यही कहते फिरते है, कि रात को मैंने चुड़ैल देखी है। चौकादार भी कई बार चुड़ैल देखने की बात बता चुका था। इसलिए उसने सोचा कि अपने गाँव के पड़ोसी को वह क्यों न जगा दे। सोचकर वह मुखिया राम की चौपाल की ओर बढ़ा था, कि नीली ने अंधेरी रात में भी उसकी लाल पगड़ी का रंग देखकर पहचान लिया। झट वह आगे बढ़ी और उसके बढ़ते ही चौकीदार अपना प्राण लेकर भाग खड़ा हुआ। वह जोर-जोर से चिल्लाता हुआ दौड़ कर मुखिया राम की चौपाल पर जा गिरा। उसके गिरते ही मुखिया राम की नींद खुल गई। उस समय वहीं सो रहे थे, चौकीदार के गिरने की आवाज सुनते ही वह जाग उठे। आँखें मलकर समझ चुके कि यह चौकीदार है, तो उठकर बोले—"क्या है, रे। कहीं चोर-वोर तो नहीं आ गए हैं?"

"चोर··· नहीं···चुड़ैल!"

"चुड़ैल! बड़ा बहमी है। भला यहाँ चुड़ैलों का कहाँ वास, पागल तूने किसी स्त्री को देखकर ऐसा समझ लिया।"

चौकीदार बोला—"नहीं, काका। ठीक कह रहा हूँ, बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ, मैंने अपनी आँखों देखा है। दो चुड़ैल इतनी रात को सफेद सी साड़ी पहरे खड़ी थीं।"

"अच्छा तो चल, देखूं तो सही कि कहाँ है, तेरी चुड़ैल!"

धीरज बंधाने के बाद दोनों बढ़े थे कि नीली स्वयं आ खड़ी हुई और मुखिया राम भी उसे एकाएक देखकर सन्न रह गए। शायद वह भी डर जाते, लेकिन नीली स्वयं, बोली—"अरे, हम राजपुर की औरतें हैं, मुखिया जी, चुड़ैल नहीं।"

"हाँ···हाँ। यह तो मैं पहले ही कह रहा था, इससे।"

"सच, आप लोग ऐसों को इस स्थान पर क्यों रखते हो? जो आदमी और भूत, औरत और चुड़ैल!"

"क्षमा करो, बेटी! तुम क्या चाहती हो? इतनी रात में आने का क्या कारण?"

"कारण''' आपके घर जीवन बाबू रहते हैं।"

"जीवन'''हाँ'''। लेकिन इस वक्त तो वह सो रहा होगा। क्या काम है?"

"बहुत जरूरी काम है, उनको एक चीज देनी है।"

"लेकिन रात को जगाने के लिए उसने मना कर रखा है।"

"आप मेरा नाम बता दें, तो वह जरूर जाग जायेंगे।"

मुखिया राम ने कहा—"अच्छा, कुछ जल-पान करो और आपके साथ कौन है?"

"वह मेरी सहेली है।"

"सहेली!"

"जी, गाँव से आ रही है। खेत घूमने के लिए हम सब आई थीं, जीवन बाबू से अम्बर चर्खा केन्द्र के बारे में कुछ बातें भी करनी थीं।"

"सो तो कल सुबह भी हो सकती है।"

"कल सुबह हम अपने-अपने मैके चली जायेंगी।"

"तो तुम दोनों विवाहित हो, तब तो मिलने में कोई हर्ज नहीं।"

"और अविवाहित होने में क्या हर्ज है?" नीली ने पूछा।

"हर्ज जो कुछ नहीं बेटी। पर आज तो स्त्री पुरुष दोनों काम वासना को जीवन का महत्व पूर्ण अंग समझते हैं। न युवती, न युवक, दोनों कामशक्ति के कारागार के बन्दी हैं।"

नीली ने अपने प्रति विश्वास दिलाते हुए कहा—"आप विश्वास कीजिए, हम किसी बुरी नियत से नहीं आई हैं।"

"नियत सदव बुरी रहकर भी साथ नहीं रहती, उसके आने की भी एक घड़ी होती है।"

"अच्छा, दादा। तुम बूढ़े हो। उम्र और अनुभव भी अधिक होगा, जरा जीवन बाबू को बुला दो। नहीं तो बताओ, कि वह कहाँ रहते है?"

मुखिया राम कुछ कहने वाले थे, कि पीछे से किसी के आने की सूचना पाकर नीली की आखें पीछे घूम गई। प्रश्न करने वाली थी, कि मुखियाराम प्रसन्न होकर, बोले—"वह लो, जीवन बाबू स्वयं आ रहे हैं।"

नीली की आंखें कृतज्ञता से भर कर घूमी और चाँदनी की तरह एकटक जीवन के भोले चेहरे को देखती-देखती बोली—"जयहिन्द।"

"जयहिन्द। आप लोग कौन हैं?"

"जी, हम राजपुर की किसान युवतियां हैं। बाजार गई थीं। अधिक रात होने के कारण यहां आ पड़ी।"

"पर आप मुझे कैसे जानती हैं?"

"आप को कौन नहीं जानता?"

"क्या काम है?"

"किसी रोज आप हमारे गांव में आइए न!"

"जरूर आऊंगा। इस वक्त आप लोग हमारा आतिथ्य स्वीकार करें।"

"जी, नहीं हमारे रियासत की मोटर मिल गई है। आप से मिलने के लिए हम आए हैं।"

"और यह कौन हैं?" शैला की ओर संकेत करके उन्होंने पूछा।

"मेरी सहेली। आपकी प्रशन्सा सुनकर यह आपसे मिलने के लिए बहुत आतुर थी। आइए, चलें बाहर बाग में बैठेंगे।"

जीवन शैला की ओर देखकर बोला—"आप दोनों का शुभ नाम क्या है?"

नीली ने प्रसन्न होकर कहा—"नीली, और यह मेरी सहेली, शैला।"

"नाम सुन्दर हैं और शरीर भी। आप दोनों में स्वाभिमान और गुण भी झलकते हैं।"

"अधिक प्रशंसा न करें।"

"क्यों…?"

"उससे औरतें समझ लेती हैं कि पुरुष अपनी कामना के आधीन स्त्री की चापलूसी कर रहे हैं।"

"जी, हां सृष्टि ने नारी को ऐसा अद्भुत तत्व ही बना दिया कि युग-युग से वह जगत के सामने अद्भुत बनी रही है।"

"खैर, आइए हमारी कार तक तो साथ चलें।"

जीवन ने मुखिया राम की बरौनियों पर दृष्टि फेरी और चाँद की उजेली रोशनी में मुखिया के चेहरे पर उतरी आशंका को भाप कर, बोला—"तुम चिन्ता न करो, मुखिया काका।"

"चिन्ता किस बात की होगी ?"

"चिन्ता इस बात की कि रात का मामला है, दोस्त दुश्मन की नजर···।"

मुखिया के सन्देह पर जीवन का विवेक बोल उठा। उसने कहा—"अपने से दुश्मनी रखने वाले के साथ भी मैं मित्रता का व्यवहार करता हूँ, काका! फिर दुश्मन के पास दिल होता है। दुश्मनी की धारा दुश्मनी से बढ़ती है और साहित्यक सहन शीलता तथा तर्क द्वारा वह अपने रूप को बदल देती है। आप जाइए। मधुमा बाहर के आँगन में आम की छाया तले सो रही है।"

मुखियाराम ने रोकना चाहा पर जीवन न रुक सका। वह तत्क्षण नीली के साथ चल पड़ा। शैला प्रसन्न थी। जीवन की आकृति को देखती वह उसके पीछे-पीछे चल पड़ी।

कुछ दूर जाने के बाद।

जब तीनों एक साथ चले तो केवल जीवन का मस्तिष्क एक बार बिजली के पंखे की तरह से घूम गया और फिर जैसे किसी ने उसके मानसिक आवेगों में ब्रेक दे दिया। चलते-चलते वह नीली की ओर देखकर, बोला—" आप लोगों को इतना डर क्यों लगता है ?"

नीली से पूर्व शैला बोल उठी—"जी !"

"आखिर क्यों ?" जीवन मुस्करा कर बोला।

"रास्ता ही ऐसा है, पहाड़ी क्षेत्र।"

"लेकिन इधर तो डाकाजनी का कोई भय नहीं ?"

नीली ने नजाकत के स्वर में कहा—"डाकाजनी ! राम-राम, बाबू ऐसा न कहें। यह गाँव तो आजादी पाते ही न जाने क्यों इतना स्वार्थी बनता जा रहा है कि यहां के जन्म लेने वालों को भी यह कह दिया जाता है कि इस व्यक्ति का इस गाँव में जन्म नहीं हुआ था।"

शैला इन बातों में दिलचस्पी न लेती थी। फिर भी अपने स्वार्थ के

लिए वह एक ग्रामीण युवती की प्राकृतिक भाषा के स्वर सा स्वर बनाकर बोली जीवन बाबू ! आप भी तो देश भक्त हैं। कई बार जेल जा चुके हैं, गोली भी खा चुके हैं, पर न जाने क्यों इन गाँवों को क्यों नहीं संभाल पाते ? जिनको गाँधी जी भारत की आत्मा कहते थे।"

व्यंग ठीक था। जीवन के मन पर इसकी प्रतिक्रिया जाग उठी। फिर भी वह मुस्कराता रहा और अन्त में चलते-चलते कहा—"बात सच कह रही हो। परन्तु भारत की ही नहीं, हर देश की आत्मा उस देश का गाँव ही होता है।"

"फिर गाँव आत्मा है, तो उसे इतना पतित हो जाना चाहिए, कि अपने साथ काम करने वाले सहयोगी को रात को जान से मार देना, लूट लेना चाहिए।"

"लूट लेना चाहिए ! नहीं···पर लूट-मार की आदत भी तभी पड़ती है, जब दोनों पक्षों में जोर की तनातनी होतीं है। यह तनातनी प्रत्येक परिवार के नारी-पुरुष की सन्तान द्वारा या किसी स्वार्थवश ही पैदा होती है, जो दुश्मनी के रूप में व्यक्ति, परिवार, समाज और सरकार सभी की उन्नति में बाधक सिद्ध होती है।"

नीली को उत्तर मिल गया। वह चुपचाप शैला को कुछ संकेत करने वाली थी, कि शैला स्वयं बोल उठी—"जीवन बाबू। सच आपके विचार तो बहुत सुलझे हुए है···सचमुच ही वह स्त्री बड़ी सौभाग्यशालनी होगी, जो आपकी पत्नी बनेगी।"

जाने क्यों जीवन जोर से हंस पड़ा और शैला की ओर देखकर बोला—" पत्नी···पति और पुत्र ! कितनी विडम्बना है और विवेक का ज्ञान भी इतना सीमित है, जब दोनों एक दूसरे के स्वभाव को जाँच नहीं पाते, तो भी पति पत्नी !"

"सामंजस्य···यह क्या कह रहे हैं, आप ! भला स्त्री-पुरुष में सामंजस्य ?

"हाँ···सामन्जस्य का अर्थ शारीरिक समानता नहीं, न आर्थिक, बल्कि दोनों की मानसिक क्रियाओं की समानता की बात है।"

"यह सब समझ में नहीं आता !"

"जब तक नारी-पुरुष अपने कर्तव्य से जुड़े अधिकार को नहीं समझते, तब तक प्रत्येक वैवाहिक जीवन किसी न किसी रूप में अपूर्ण ही रहेगा।"

बात-चीत के सिलसिले में उन्हें मार्ग तय करने का ध्यान ही न रहा। शैला के मन में बात बैठ गई और उसने अपनी कार की ओर संकेत करके कहा—"मान गई, जीवन बाबू! आप की हर बात मिसाल के काबिल है। अब आप इस कार से हमारे घर तक चलें।"

"कार से···क्या आप लोग कार से आई हैं?"

"हाँ···कार से···।"

"फिर आप लोग क्यों डरती हैं?"

"हर एक मंजिल पर केवल न तो नारी अकेली पहुँच सकती है, न पुरुष, जीवन बाबू।"

"यदि दोनों में से किसी एक में साहस और वास्तविक क्रान्तिकारिता होती है, तो मंजिल के मार्ग की प्रत्येक कठिनाईयों को फूल समझ कर अपने परिवार, समाज और इन सब के साथ देश एवं राष्ट्र के जीवन में अभ्युदय की शक्ति बनकर, सभ्यता और संस्कृति को व्यवस्थित ढंग से सम्पादित करके समूह के जीवन के साथ बढ़ सकता है। मंजिल की दूरी सदा निस्वार्थभावना और कर्तव्य परायणता की सक्रिय क्रियाओं की गति द्वारा दूर होती है, कुमारी! पुरुष और नारी, दोनों की स्वाभाविक क्रियाओं में एक दूसरे के नैतिक जीवन में सामंजस्य नहीं, दोनों एक दूसरे के स्वभाव एवं गुणों के पारखी नहीं, तब तक सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करने में अधिक उत्साह नहीं मिल···।"

शैला सब कुछ सुनकर मुग्ध हो गई। जीवन की बात उसे इतनी अच्छी लगी, कि वह अपनी कार के पास पहुंच कर स्वयं बोली—"तो आज आपको हमारी मेहमानी मंजूर है, न। आ आइए न, इस कार में?"

"बेकार की कार···। हूं···क्या कह रही हो? क्या मैं एक नाटक देख रहा हूं?"

"नाटक···!"

"और नहीं तो क्या? गाँव से लेकर यहाँ तक ले आई हो, किस तरह

का धोखा देकर। कार'''तुम्हारे श्रम की कमाई की कार नहीं, यह श्रमिकों के शोषण से निर्मित पूंजी द्वारा अपहरण की हुई है। मैं, इस पर चलने से विवश हूँ।"

नीली ने ठहाका लगाया तो सोफर जाग उठा। जल्दी से अपने सिर का हैट सभाल कर, वह बोला—"जी हजूर। आ जाइये न!"

शैला ने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा—"जीवन बाबू। देश सेवक और समाज की तो किसी भी आरजू का अंजाम यह न देना चाहिए।"

जीवन ने कहा—"हर शब्द में उर्दू आप अधिक बोलती हैं। क्या आपने हिन्दी नहीं पढ़ी।"

"अपनी राष्ट्र भाषा किसे अप्रिय होती है।"

"फिर हिन्दी शब्द में ऐसा उदाहरण क्यों?"

"इसलिए कि पुरुषों को उर्दू के शब्द चुभते हुए जान पड़ते हैं, न, हिन्दी को वह नीरस कहते हैं।"

"इसका मतलब'''।"

"साफ है।"

"वह क्या?"

"यह कि हर आदमी को रोमान्स ही अधिक प्रिय वस्तु जान पड़ती है।"

जीवन के मुख पर कुछ रेखाएं दौड़ी बादलों के बीच जैसे बिजली कौंध गई और बिजली के लुप्त होते ही वह बोल उठा—"रोमान्स का नग्न नर्तन किसी एक देश का ही नहीं, बल्कि दुनिया के मानव जाति का उद्धार नहीं कर सकता! वर्तमान युग में मानवीय प्रवृतियाँ एक दूसरे के निकट इस तरह निकट पहुंच चुकी हैं, कि धोका देने वाली प्रवृतियाँ स्वयं ही प्रकाश में आ जाती हैं। आप लोग क्या हैं, उसे मैं अच्छी तरह समझ चुका!"

"हम'''हम क्या हैं'''?"

"हाँ'''आप क्या है और'''और उधर देखिए मोटर का नम्बर! उसके ऊपर लगा है आपके रियासत की मोहर—राजपुर।"

शैला चौंक पड़ी। उसने सत्य को छुपाते हुए कहा—"नहीं-नहीं यह कार मेरी नहीं है, मेरी इस सहेली की है।"

"फिर···यहां कैसे···?"

"यह रियासत की राजकुमारी की सहेली है। उसकी देख भाल करती रहती है।"

जीवन की ओर नीली ने अपनी नीली आँखों से देखते हुए कहा—"सच, जीवन बाबू! हम आपको अपने घर में मेहमान बनायेंगे···आप चलें तो सही।"

मन में कुछ विश्वास जगा, तो वह कार में आ बैठा। नीली ने सोफर को आज्ञा दी और वह रियासत की ओर ले चला।



तेरह

सूरज की किरणों ने मधुमा के कमरे की खिड़की से आकर उसे जगाया और मधुमा अपने सिर का दुपट्टा सभाल कर उठी। शीशे के सामने आई। बाल ठीक किए और पिता के सामने आकर बोली—"काका'''आज जीवन बाबू नहीं दिखते ! सुबह-सुबह कहाँ चल दिए।"

मुखिया जी ने एक लम्बी सांस खींच ली, फिर वह अपनी बेटी की अलसाई सुबह की पलकों की ओर देखकर बोले—"हाँ, बेटा, दो घंटे रात थी, तब से न जाने कौन दो लड़कियाँ आईं और उसे अपने साथ ले गईं ?"

"रात को लड़कियां ? क्या कह रहे हैं पिता जी ?"

"सच कह रहा हूं, बेटा ! दोनों की बात चीत से जान पड़ता था कि जीवन को वे बहुत पहले से जानती हैं। ओह'''जीवन को मैं कितना अच्छा समझ रहा था, पर वह तो सुन्दरता को ही जीवन का सबसे महत्व पूर्ण अंग समझता है''' काश कि वह यहाँ न आया होता।"

मधुमा का दिल धड़क रहा था और धड़कन प्रतिपल तेज होती जा रही थी। जीवन पर आने वाली विपत्ति की आशंका की बात सोचकर वह कांप उठी। फिर भी अपने जीवन की स्मृति में उसकी आत्मा चमक रही थी, वह जल्दी से बोली—"तुमने रोका नहीं। वह औरतें कौन थीं, काका ?"

"देखने में तो दोनों एक दूसरे की बहन सी जान पड़ती थी। फिर रात के समय किसी की आकृति को ठीक-ठीक पहचानना भी तो मुश्किल है, बेटा ! जा हाथ मुंह धोले। वह गया है तो आयेगा न !"

मधुमा के मन में एक बवन्डर सा उठ खड़ा हुआ। उसे लगा जैसे उसके अधरों की तमन्ना उसके हृदय से निकल कर नाचती हुई किसी अदृश्य दिशा की ओर चली जा रही है। वह बोली—"गाँव से पता लगाओ न काका। इसमें कोई बहुत बड़ी घटना घटी है।"

"घटना नहीं, बेटा, वह आ रहा होगा ?"

"टूटे हुए घाट की ईंट पकड़ने पर भी डूबने का भय अधिक रहता है, काका ! हाथ से गया धन और अपनी करनी से गयी अपनी इज्जत, कभी नहीं लौटती हैं।"

"हां, बेटा ! किसी छोकरे ने कहा था कि जीवन रसिक है, वह काम कम करता है, स्त्रियों के पीछे अधिक दौड़ता है।"

पर मधुमा कुछ न सुन सकी। वह जीवन की बुराई नहीं सुन सकती थी। उसे पूर्ण रूप से तो नहीं, पर विश्वास था, कि जीवन उसके सिवा किसी दूसरी युवती के प्रति अपना पति-पत्नी के प्रेम का प्रदर्शन नहीं कर सकता। इसलिए वह जल्दी से घर के बाहर निकल हमीदा के पास पहुंची। हमीदा का घर सामने ही था। उस समय वह अपने गांव की प्रौढ़ औरतों को बुलाकर पढ़ा रही थी। सुबह-सुबह मधुमा को आते देखकर बोली—"क्यों, दीदी के चेहरे पर पौने चार क्यों बज रहे हैं ?"

"मेरे दिमाग में एक चित्र खिंच गया है, दीदी !"

"सो तो बहुत दिनों से देख चुकी हूं ! इस वक्त चारपाई से उठकर आने का मतलब कहो, चित्र तो रोज ही बनते हैं और बिगड़ते हैं।"

"तो चल कहीं घूमने-घामने के लिए चलें।"

"इस वक्त तो बहनों को पढ़ा रही हूं।"

"पढ़ा नहीं रही है, यह कह कि उन्हें काम दे रखा है, तब तक यह लिख रही है, आ जरा, जीवन के बारे में पता तो लगावे।"

"जीवन बाबू के बारे में। यह क्या, वह तो कल शाम को तुम्हारे घर पर थे।"

"हां, और दो घन्टे रात रही, तो न जाने कौन दो लड़कियां आकर ले गईं।"

हमीदा कुछ कहने लगी थी, कि उसके अब्बा अपने हाथ का हुक्का समालते हुए आ धमके और मधुमा के सामने आकर बोले—"बेटा ! जीवन बाबू की बात पूछ रही है ?"

मधुमा को उस की बात में रस मिला, जैसे हमीदा के पिता उन्हें जानते हों। इसलिए वह उत्सुकता से हमीदा के अब्बा को देखकर बोली—"काका। क्या तुम कुछ जानते हो ?"

"हाँ जानता हूँ, बेटा ! पर इतना ही कि जब मैं अपना खेत घूम कर लौट रहा था, तो वह दो लड़कियों के साथ जा रहे थे।"

"तो आपने उन्हें रोका नहीं !"

"जब स्त्री पुरुष बेपरदगी की खुशी से भरी बात-चीत, करते हुए ठंडी हंसी के साथ चले जा रहे हों, तो मुझे यही जान पड़ा कि तेरे साथ इस वक्त किसी गाँव समाज के काम से जा रहा होगा।"

"किस ओर गया काका !"

"बेकार भटकने से क्या होगा ? तेरे प्रति उसका झुकाव होगा, तो वह हर मुसिबत को झेलकर आ जायेगा, बेटा ! जाकर अपना काम धाम कर, फिर देखा जायेगा।"

कहकर हमीदा के अब्बा ने हुक्का एक ओर रख दिया और खेत की ओर चले गये, तो मधुमा ने हमीदा के सिर पर हाथ रख कर कहा—"चल न, क्यों बैठी है !"

"आखिर तुम इतनी घबरा क्यों रही हो ?"

मधुमा कुछ कहने लगी थी, कि एक लड़की हांफती हुइ हमीदा के पास आकर बोली—"बड़ी दीदी ! गजब हो गया।"

"क्या है, अन्नु !"

"दीदी। राजपुर रियासत का पंडित राज ने हमारे गाँव की महिला पाठशाला में उधम मचा रखा है।"

"पंडित राज ! बड़ा शैतान है। चल मैं देखती हूं !" मधुमा ने कहा।

"नहीं, दीदी। वहाँ तो राजा साहब की बेटी राज कुमारी भी है, दीदी। उसकी आज्ञा है कि दो घन्टे के अन्दर महिला समाज वहाँ से हट जाय।

हमीदा उठ खड़ी हुई। मधुमा की ओर देखती हुई बोली—"चलो बहन।

जरा देखो तो सही, कि कौन है, जो नारी से उत्पन्न होकर नारी की प्रगति में बाधक बन रहा है।"

मधुमा ने कुछ कहा नहीं, वह हमीदा को साथ लेकर चल पड़ी।

अब दिन काफी चढ़ गया था। मधुमा ने मुंह में कुछ दाना भी नहीं डाला था। जैसे आई थी, उसी वेश में वह हमीदा के साथ पास के गाँव मे पहुंची, तो अलू के गाँव में काफी भीड़ लगी थी। आश्रम की सारी लड़कियाँ एक ओर निकल कर खड़ी हो गई थीं और महिला संघ का सारा सामान सड़क पर रख दिया गया था।

मधुमा देखते ही जोर स बोली—"कौन है, जो इस तरह सामान फेंक रहा है ?"

भीड़ में से राज पंडित अपनी घुटी चुट्टया को बांधते हुए, आ खड़े हुए और बड़े ताव से बोले—"अरी, तू मुखिया राम की बेटी। जा-जा नहीं तो तेरा कचूमर निकल जायेगा।"

"मैं कहती हूं कि सारा सामान महिला संघ मे रख दो !"

राज पंडित ने जोर से हंसकर कहा—"अरी, मक्खी जान बूझ कर मकड़े के जाल में फंसकर क्यों मरने के लिए आई है, जा, जीवन तेरा इन्तजार कर रहा होगा। सामान स यहीं रहेगा। यह तेरे बाप का घर नहीं है, रियासत का है। राजा साहब ने अपने मन से दिया था और आज वह ले चुके हैं।"

'दिया हुआ दान वापस लेने में अगर तुम अपना गौरव समझते हो, तो अवश्य ले लो। आज से महिलाओं का सारा काम बाग-बगीचे की घनी छाया के बीच होगा।"

"और जीवन बाबू को भी बुला लो ?"

"वह आ जायेंगे, पंडित जी !"

"वह ऐसी जगह चला गया, जहाँ से कोई नहीं आ सकता।"

यह सुनते ही मधुमा क्षण भर के लिए व्यग्र हो उठी। जीवन के विषय में सुनते ही वह कांप उठी। मन की सारी आशाएं किसी भावी आशंका के

पेड़ से जैसे पक्की पत्तियां टूटती जान पड़ी। फिर भी अनुभूतियों को एकाग्र करके कहा–"पंडित जी ! यह सब चाल आपकी है। परन्तु जीवन को जिस तरह के वातावरण में आप बाँधकर रखना चाहते हैं, वह उसके विचार और क्रान्तिकारिता पर विजय नहीं पा सकेगा।"

राज पंडित, बोले–"क्यों नहीं पा सकेगा—रियासतों को सरकार ने समाप्त कर दिया, तो तू सोचती है कि हमारी मान मर्यादा भी उसने नष्ट कर दी। अभी तक सारी जनता राजा साहब की कीर्ति का गुण गाती है।"

"हूँ···हूँ···वड़े राजा–जिसने गाँव की बहु-बेटियों का सम्बन्ध नहीं समझा, जिसने अदालत में एक लड़की को पेश करके पक्ष-पूर्ण इन्साफ किया और दिया जाता रहा है, उस राजा की बात कर रहे हो··।"

"बको मत, मधुमा ! तुम अपना काम करो। मैं इस महिला चर्खा संघ पर अपना ताला लगाने आया हूँ।"

"अपने मकान को लगाओ···महिला संघ को अगर काम करना है, तो वह वृक्षों की छाँव में अपना काम करेंगी···।"

राज पंडित जरा पास आ खड़े हुए और मधुमा के कन्धे पर हाथ रखकर बोले–"बेटी ! मैं तेरे बाप के समान हूँ ! तेरी भलाई के लिए कह रहा हूँ। तू राजा की बात मान ले···जीवन की बात भी रह जायेगी और फिर देखना कि तेरे गांव की रौनक क्या से क्या होगी···सच, सोना बरसेगा, सोना···।

"गाँव में सदा सोना ही बरसता रहा है, पंडित जी ! अब अधिक बात न बढ़ाइए। अपना काम कर चुके, अब अपने महल में ताला बन्द कर चुकें तो रास्ता लीजिए।"

मधुमा ने व्यंग के स्वर में कहा। पंडित राज के मन पर जैसे गरम कड़ाही का तेल उबल आया। वह क्रोध में आकर बोले–"हाँ-हाँ मैं जा रहा हूं, पर तू भी इसका मजा चख लेगी···।"

मधुमा ने गम्भीरता के साथ कहा—"मधुमा इस भय को साहस और उत्साह समझकर अपने ग्रामीण भाई-बहनों के साथ सामना करेगी और गांव

की जनता की आवाज से तुम्हारे घमंड की दीवारें धराशायी हो जायेंगी, पंडित जी !

पंडित जी आगे कुछ न कह सके। अपनी साइकिल उठा कर जब चलने लगे, तो एक लड़के ने छेड़ खानी करने के लिए कह दिया— "अरे पंडित जी, तुम्हारे लिए आज जगत साह ने न्योता दे रखा है।"

न्योता की बात पर उनका क्रोध जरा और जवान हो उठा। वह दाँत पीसकर बोले—"तू···तू··· ! इस छोकरी के इशारे पर मेरा मजाक उड़ा रहा है। पर सुन लो तुम सब गाँव के गोरे - गोरी ? अगर सचमुच मैं चाणक्य के वंश का पुत्र हूं तो तुम्हारे साथ सब लोगों की दशा महानन्द की तरह किए बिना नहीं छोड़ सकता।"

अपनी बात पर जोर देते हुए पंडित जी ने साइकिल की हैन्डिल साध कर पैडिल पर पाँव रखा और जल्दी से पगडंडी की दूरी तय करने लगे।

उनके चले जाने के बाद कुछ देर तक तो गाँव के सब लोग मधुमा की ओर मौनता पूर्वक देखते रहे। मानों भीड़ के खड़े होने वालों ही की आत्मा मर गई हो। उन सबको इस तरह मायूसी की हवा खाते देखकर मधुमा चुप न रह सकी। वह अपने समीप खड़ी हमीदा के कन्धे पर हाथ रखकर, बोली—"क्यों···क्या सोच रही है ?"

हमीदा का ध्यान टूटा और अपने स्वर को समेट कर, वह बोली—"कुछ खास बात नहीं, बहन !"

"फिर भी···कुछ न कुछ तो सोच रहीं थी तुम···?"

"सुनना चाहती हो, तो सुनो, मैं इस आश्रम के विषय में सोच रही थी !"

"सो क्या ?"

"यह कि बरसात आ रही है। इस अवसर पर आश्रम की महिलाओं को कितना कष्ट होगा ?"

'महिलाओं को कष्ट नहीं होता, हमीदा ! कष्ट को पुरुष वर्ग ही कष्ट समझता है, नारी तो इससे भी अधिक कष्ट दाई अबला की सीमा बड़े धैर्य और साहस से पार कर लेती है। तुम चिन्तित न हो ! मैं यहाँ पर उपस्थित

सभी बहिनों से अनुरोध करती हूं कि कल से गाँव-गाँव के लोग आश्रम बनाने के कार्य में लग जायें।"

हमीदा ने कहा—"और मैं इसके बनाने की जिम्मेदारी ले रही हूँ।"

मधुमा भीड़ की ओर घूमी और क्रान्तिकारी की तरह गरज कर बोली—"मेरे गाँव के भाई बहनों ! हमें अपने हाथों से नए आश्रम की नींव कल से डाल देनी है ! आप लोगों में से जो कुछ सामान दे सकें, उसे इस महल के सामने जो हमारी जमीन है, इस पर काम करना शुरू कर दें !"

कहती-कहती मधुमा चुप हो गई। उसके चुप होते ही एक बार भीड़ ने जोर से ताली पीट दी और कुछ लोगों के मुंह से निकला—"मधुमा दीदी जिन्दा बाद।"

मधुमा को इससे कुछ भी हर्ष नहीं हुआ। वह बोली—"बेकार के नारे बाजी की जरूरत नहीं, आज हमें काम करने की जरूरत है। अब आप लोग अपने-अपने घर जाइए और कल से हम सब मिलकर आश्रम का निर्माण शुरू कर देंगे।"

उसकी आज्ञा पाते ही सब लोग खिसकने लगे। धीरे-धीरे एक-एक करके भीड़ समाप्त हो गई, तो गाँव का ठग बनिया सुखदेव आकर खड़ा हो गया और मधुमा के सामने हाथ जोड़ कर बोला—"बेटी ! तू तो हमारे सब गाँवों की बेटी है। सारा काम कर रही है, जबसे तूने गाँव सेवा का व्रत लिया है, तब से आस-पास गांव, शहरों से भी अधिक सुन्दर हो गए हैं ! अब मेरी भी तो कुछ सुनना···।"

मधुमा ने शान्त भाव से पूछा—'कहो, सुखदेव काका ! क्या चाहते हो ?"

मैं···यह देख रहा हूँ। अपनी सरकार क्या हुई, कर लगा लगाकर हम सब का कचूमर निकालने की मशीन हो गई।"

मधुमा ने मुसकरा कर कहा—"सुखदेव काका ! सरकार कर अपने लिए नहीं, बल्कि देश की उन्नति के लिए, विकास के निर्माण के लिए लगाती है।"

"तो फैशन पर क्यों नहीं लगाती ?"

"सब वस्तुओं पर लगेगा...और लगेगा,..।"

"क्या ··क्या कह रही है, और लगेगा ।"

"हाँ, काका। जिस पूंजी को तुम जमीन में दबाकर रखते जा रहे हो, जिस नोट को देकर तुम सौदा खरीद कर अपनी बहू-बेटियों का जेवर बना रहे हो, उससे तुम भले ही समाज की दृष्टि में धनी मानी समझे जाओ, पर उससे देश को बहुत हानि हो रही है ।"

सुखदेव पुराने विचारों का आदमी था । उसने अपनी टूटी-फूटी आँख के ऊपर लगे काले चश्में के फ्रेम से गोल-गोल आँखों की पुतलियों को नचाकर कहा—"राम-राम, इतना त्याग और बलिदान करके हमने जो आजादी ली, क्या इसी दिन के लिए ?"

"आजादी का पौधा मिला है, उसे सींचने के लिए आजादी लेने से भी अधिक त्याग की जरूरत होती है सुक्खू ।"

सुखदेव नाक सिकोड़ कर बोला—"राम भला कहो। दिन-पर दिन तो सरकार टैक्स लगाती जा रही हैं ! तुम कहते हो, कि त्याग करो ! क्या त्याग का काम केवल हम जनता के लिए ही रख छोड़ा गया है, मधुमा !"

"केवल तुम्हारे ही लिए नहीं, बल्कि उस देश की सारी जनता के त्याग की जरूरत होती है, काका !"

"तो तेरा मतलब यह है कि सब लोग अपने घर की सारी दौलत निकाल कर सरकार को दे दें।"

"जिस रोज हर देश के लोग ऐसा करने की ठान लेंगे, उसी रोज से उस देश की सभी समस्याएं हल हो जायेंगी और इस भूतल पर स्वर्ग उतर आयेगा। संसार के हर देश की जनता का जीवन सुखमय हो जायगा, काका !"

"पगली है न ! उम्र काफी है। जिन्दगी का अनुभव नहीं, बेटी। इसलिए तुम यह सब कह रही हो।"

"मैं ठीक कह रही हूँ, काका !"

"स्वप्न की बात और भूतल पर स्वर्ग। यह भला कैसे हो सकता है, बेटा !"

'जैसे इस संसार में सब कुछ होता आया है।"

"पर स्वर्ग तो उतर कर भूतल पर नहीं आया ?"

"दुनियाँ के लोगों ने स्वर्ग को धरती पर लाने का प्रयत्न नहीं किया, काका !"

"तो फिर आज की दुनिया के लोग उस स्वर्ग को कैसे ला देंगे।"

मधुमा की बात पर उसके काका हँस पड़े। फिर बड़े प्यार से अपनी बेटी के कन्धों पर हाथ रख कर, बोले—"स्वर्ग-नरक आकाश की बातें हैं, बेटा ! तू इस भ्रम में न पड़। अब मेरी एक बात मान ले···।"

"कौन सी बात ?"

"ब्याह करले, मेरी बेटी ! जानती है न कि मुझे खून का दौरा होता है। डाक्टरों ने भी तो कह दिया है कि मैं अधिक से अधिक कुछ दिनों का मेहमान हूं।"

"ऐसा न कहो काका !"

"अच्छा-अच्छा, न कहूँगा। चल अब खेत चलें।"

"मैं तो जीवन का पता लगाने जा रही हूँ···।"

"ओ···जीवन—बड़ा प्यारा सा लड़का है ! इस गाँव में जब से आया, तब से गाँव के बेटे, बेटी सब कितने पढ़ लिख कर तहजीबदार हो गए हैं···।"

मधुमा चुप हो रही। जीवन की प्रशंसा सुनकर मन ही मन में पुलकित होकर वह एक ओर चली गई और उसके काका खेत देखने।

—o—

चौदह

शैला ने सिंगार किया और अपनी कीमती साड़ी में स्वप्न लोक में आने वाली परियों सी इठलाती-मचलती-मचलती जीवन के सामने जा खड़ी हुई। उसकी आँखों ने उसे देखा और फिर-फिर बड़े अन्दाज से अपने स्वर को समेट कर बोली—"क्यों···रात भर जागते रहो। क्या नींद नहीं आई ?"

"नींद !" उसने मुसकरा कर पूछा।

"हाँ···हाँ···नींद ! किसी तरह की तकलीफ तो नहीं हुई न ?"

"भला अमीरों के महल में भी तकलीफ··· !"

"हाँ···हाँ, जीवन बाबू ! अमीरों के महलों में गरीबों से भी अधिक तकलीफ होती है···अधिक जलन-तपन लिए उनका जीवन जीवित रहता है, इसे आप नहीं समझ सकते।"

मैं···"नहीं समझ सकता, ऐसा न कहो। मैं सब कुछ समझ रहा हूं और··· शैला, तुम जिस रास्ते पर चली जा रही हो, उसे भी समझ रहा हूँ···लेकिन तुम···तुमने मेरे साथ ऐसा छल क्यों किया ? तुम···मुझे ऐसे भी तो बुला सकती थीं !"

"देवता की बार-बार उपासना और आराधना के बाद भी जब उसकी आत्मा की ज्योति नहीं जलती, तब उसका आराधक ऐसा ही व्यवहार करता है जीवन !"

"देवता--कैसा देवता, किसका देवता, कौन देवता ?"

"जो मेरे हृदय में रम रहा है !"

"झूठ—बिल्कुल झूठ ! तुम्हारे दिल-दिमाग में देवता का नहीं, वासना का वास है, शैला !"

"वासना···वासना। सदा से यही सुनती आ रही हूं, सदा से यही देखती आ रही हूँ, कि पुरुष अपनी वासना को छिपाने के लिए स्त्री पर दोष लगाता

है"'क्या आपके दिल में वासना नहीं ?"

"हो भी तो एक स्त्री के सिवा दूसरों से नहीं'''।"

"और वह है, उस मुखिया की बेटी, जिसके पास न रूप, न रंग।"

"फिर भी वह तुमसे लाख दरजे अच्छी है ?"

"झूठी प्रशंसा न करो !"

"मैं इसका आदी नहीं हूं !"

"रहने भी दो–उस गाँव की असभ्य अनपढ़ लड़की के पीछे जान दे रहे हो ! "

"अपने-अपने मन की बात है, किसी को खट्टी चीजें अच्छी लगती हैं, किसी को नमकीन और किसी को मीठी, तो किसी को अधिक तेज मिर्च ! मधुगा तुम्हारे लिए तेज मिर्च है, तो मेरे लिए वह गुड़ से भी अधिक मीठी, मिठास है।"

"वाह–क्या कहने है, जीवन बाबू ! बड़ी तारीफ कर रहे हो !"

"हाँ, और तुम भी तो स्त्री होने के नाते एक स्त्री की निन्दा करने से बाज नहीं आती !"

"इसलिए कि वह स्त्री तुम्हारे योग्य नहीं है।"

"इसका फैसला करने का अधिकार तुम को नहीं, शैला ! बल्कि मुझे है। मेरे मन की मालकिन तुम तो नहीं, मैं स्वंय हूं ।"

शैला के अधर शरारत से भरी हँसी के साथ खुल पड़े। फिर अपनी हंसी को रोककर, वह बोली–"लेकिन इस वक्त तुम्हारे मन के मकान की मालकिन मैं हूं, जीवन !"

जीवन हंस पड़ा। बोला–"जमाने की बात है ?"

"क्यों, इसमें जमानत और जमाने की क्या बात है ?"

"क्यों नहीं, आज तक यही देखता और सुनता आ रहा हूं कि पुरुष स्त्री के साथ बलात्कार करता आ रहा है पर आज स्त्री पुरुष के साथ ऐसा कर रही हैं।"

शैला ने हंसते हुए कहा–"क्यों न करे, जीवन बाबू ! जब एक पुरुष किसी

स्त्री की इच्छा न होते हुये भी उसे अपने बल से, चाल और फरेब से वासना की तृप्ति करता हैं, तो स्त्री क्यों चूक जाय ?"

"पर बल तथा जबरदस्ती का प्यार कितने घड़ी का होता है, शैला !"

"जितनी देर ही के लिए हो, वह बहुत अधिक सुखदाई होता है।"

"तो तुम अपने प्रेम मे बांधना चाहती हो ?"

"हाँ...लेकिन तब, जबकि उस मुखिया की बेटी को इस जमीन में दफना दूंगी।"

"स्त्री को एक स्त्री से इतनी ईर्ष्या क्यों होती है, शैला ?"

"जैसे पुरुष को पुरुष से जीवन बाबू ! आखिर उस मधुमा से किस तरह मैं कम हूँ ?"

"दोनों में कोई तुलना के लिये शब्द नहीं है, शैला !"

"सच कहते हो···।"

"हाँ, हाँ ...सच कहता हूँ, अपने जीवन में मधुमा के सिवा किसी का पत्नीत्व पाने पर मैं सन्तुष्ट नहीं हो सकता, शैला ! अपने नारीत्व को समझो।"

"तुम अपने पुरुषत्व को क्यों नही समझते ?"

"व्यर्थ का तर्क विवाद का बीज होता है, शैला ! जब मैं तुम्हारे प्रेम को अंगीकार नहीं कर पाता, तो तुम विवश क्यों कर रही हो ?"

"स्त्री, जिस पुरुष को पाना चाहती है, उसके लिये सब कुछ कर सकती है, जीवन बाबू ! तुम जैसे कलाकार के लिए मधुमा जैसी लड़की... ।"

"बकवास छोड़कर, अपना मतलब कहो, शैला !"

शैला आगे बढ़ी और अपने गले से प्रेम का स्वर निकाल कर बोली—"सब कुछ समझकर अनजान बन रहे हो, जीवन बाबू ! मेरी बात मान लो, यह सारी रियासत तुम्हारे पैरों पर... ।"

"यह न भूलो, शैला। रियासत और फासजीम के पुत्र उपनिवेशवादी परिवारों की आयु भी बीत चली है। मुझे धन और पूँजी नहीं चाहिये, मैं तो केवल अध्ययन चाहता हूँ—तुम नहीं जानती...लेकिन मैंने समझ लिया है, कि मनुष्य को पहले 'लर्निंग' फिर 'मनी मेकिंग' तो अपने आप ही होने लगता है।"

"आई हुई दौलत को न ठुकराओ, जीवन बाबू !"

"मुझे दौलत से कभी प्यार नहीं रहा, शैला ! मुझे जाने दो-जाने दो। मेरी मधुमा बाँट देख रही होगी।"

"ओहो...तो मधुमा के सामने मेरी कोई कीमत नहीं !"

उसने शरारत भरी हँसी के साथ कहा तो जीवन का रोम-रोम जल उठा। उसने शैला को तेज नेत्रों से देखते हुये, कहा—"तुम कामना से अन्धी हो... अपने अस्तित्व को नहीं समझ पा रहीं हो न...।"

"सब कुछ समझ चुकी हूं और आज ही तुमसे विवाह भी कर लूँगी।"

जीवन का स्वप्न टूट गया। उसने गम्भीर होकर कहा—"विवाह,विवाह। बिना महूर्त, बिना इच्छा का विवाह, जैसे मेरी इच्छा का कोई महत्व ही नहीं ?"

"बहुत कुछ महत्व है। वह आज रात को मालूम हो जायेगा।"

"और मैं उस विवाह के बाद तुम्हें तलाक दे दूंगा, तब।"

"यह स्वीकार है, जीवन ! पर एक क्षण भी अगर तुम मेरे हो जाओगे, तो मेरी मनोकामना पूरी हो जायेगी। मधुमा के पूर्व का सारा संस्कार समाप्त हो जायेगा।"

"तो क्या यह विवाह-विवाह होगा, शैला ?"

"विवाह...विवाह...तो आठ प्रकार के होते हैं जीवन बाबू ! उन आठों में से एक प्रकार का यह विवाह भी विवाह ही होगा।"

कहती हुई शैला ने बड़ी नजाकत से जीवन की ओर अपनी मदभरी आँखो से देखा और कुछ कहने वाली थी कि नीली ने दूर से आवाज दी—"अरी, बाहर भी तो निकलो, शैला। गजब हो रहा है।"

शैला के मन का सारा रोमान्स कपूर की तरह न जाने कहाँ उड़ गया। वह जल्दी से नीली की ओर घूम कर बोली—"क्या बात है, नीली ! इस समय तेरी क्या जरूरत थी ?"

"जरूरत···जरूरत कह रही हो। बाहर जाकर जरा देखो, तो सही कि क्या हो रहा है ?"

"आखिरी बात कह, नीली, कि अभी तक तैयारी हो सकी या नहीं ?"

"जान के लाले पड़ रहे हैं, राज रानी साहब। बाहर न जाने कितने गाँव के स्त्री पुरुष जलूस बना कर हंगामा मचा रहे हैं।"

"हंगामा—कैसा हंगामा, नीली ?" शैला ने नीली की ओर बढ़ते हुए पूछा।

"जीवन बाबू के बारे में गांव वालों को पता चल गया और इस जलूस की नेता मधुमा है, शैला !"

"मधुमा···उसकी यह मजाल है, कि मेरे दरवाजे पर...। पिता जी कहां है ?"

"वह सुबह से शिकार पर गए हैं, बड़ी आफत है।"

"और राज पंडित...।"

"उस मुए का नाम न लो, आग लगा कर न जाने कहां चला गया।"

"घबराओ मत, नीली ! तुम मेरे कमरे से बन्दूक ले आ, आज मधुमा रहेगी या मैं...।"

नीली आज्ञा पाते ही चली गई। उसके जाने के बाद जीवन ने शान्त भाव से व्यंग किया—"तो अपने स्वार्थ के लिए नारी, नारी की हत्या करेगी, जब कि मेरा मन तुमको पत्नी रूप में स्वीकार करना नहीं चाहता।"

"इसका निर्णय तो अभी हो जायेगा, जीवन बाबू ! यदि आप मधुमा को अपने जीवन से, अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं, तो मेरी इच्छा पूर्ण करने का वचन दीजिए।"

"बल पूर्वक न तो कोई स्त्री किसी पुरुष को प्यार कर सकती है, न कोई पुरुष स्त्री को। चांदी के टुकड़ों पर चलने वाले प्यार की बात अलग है, वह भी बल पर नहीं, पेट की ज्वाला और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए नारी ऐसा करती है, शैला ! तुम जो चाहती हो, करो...परन्तु मधुमा से पहले अगर मुझे मार डालती, तो कितना अच्छा होता।"

"भला तुम्हें मार डालूँगी तो मैं कहां रहूँगी ? तुम यहीं रहो, मैं अभी आ रही हूं।"

कह कर वह जीवन के कमरे से निकल पड़ी। बाहर आकर उसने वैसे ही ताला लगा दिया। जीवन पुरुष होकर भी कुछ करने में असमर्थ था, वह कुछ

का कुछ सोचने लगा था, कि बाहर से नीली ने उसके कमरे खिड़की से भाँकते कहा—"और जीवन बाबू। क्यों मधुमा की जान ले रहे हो। जो कुछ हो गया, सो हो गया। अब तो मंजूर कर लो। शैला की रीभ बहुत तेज है, वह ठान लेती है, उसे करके ही छोड़ती है।"

जीवन ने कमरे के भीतर से मुस्काते हुए कहा—"नीली, स्त्री होकर ऐसी बातें क्यों करती है, भला बिना इच्छा के शैला के साथ विवाह कैसे करलूँ ?"

"जैसे एक युवक एक युवती से कर लेता है।"

"इसका मतलब क्या होगा ?"

"मतलब तो तुम जानते हो—राजा बन जाओगे। रियासत की सारी सम्पति तुम्हारी होगी।"

"प्यार और सम्पति का कोई सम्बध नहीं होता, नीली !"

"यह सब तो जब स्त्री-पुरुष के जीवन गाँठ लगती है, उसी दिन सब मालूम हो जाता है।"

"परन्तु शैला के साथ जो गाँठ पड़ेगी, उसका अर्थ होगा अपने को एक ऐसी गाँठ में बांध लेना, जो किसी तेज धार से काटने के बाद भी न कट सके, न खुल सके।"

"ऐसा न कहो तुम जैसा जीवन संगी पाकर वह निहाल हो उठेगी।"

"जानती हो नीली, कि जीवन संगी किसको कहते हैं ?"

"जो जीवन के हर क्षणों में साथ दे !"

"और इससे भी अधिक स्पष्ट परिभाषा यह कि जीवन भर स्त्री पुरुष दोनों दम्पति एक दूसरे की गलतियों को सुधारने के लिए सचेत करते रहें।"

"फिर शैला में क्या अभाव है ?"

"कुछ नहीं, पर मेरे मन को बहुत अभाव प्रतीत होता है।"

नीली उत्तर देने वाली थी, कि शैला अपने हाथ में पिस्तौल लेकर आ धमकी और जीवन की ओर तान कर बोली—"अब बोलो, जीवन बाबू ! क्या चाहते हो ?"

"जो पहले कह चुका हूँ, वह अब भी कह रहा हूँ।"

"मौत या जिन्दगी ?"

"न मौत, न जिन्दगी, बल्कि तुम्हारे इस व्यवहार से मुक्ति, शैला !"

"मुक्ति--मैं देवी-देवता तो नहीं, जो तुम्हें मुक्त कर दूँ ।"

"मुक्ति---मुक्ति---तुम देवी देवता से भी बढ़ कर हो, शैला !"

"बातें मत बनाओ । दरवाजे पर मधुमा खड़ी है ।"

"मुझे एक बार मधुमा से मिलने की इजाजत दे सकती हो, शैला ?"

"इस शर्त पर कि उसे तुम मेरे विषय में कुछ न कहोगे ?"

"हां...तुम्हारे विषय में कुछ नहीं कहूँगा । केवल गांव में जो रचनात्मक काम वह कर रही है, उसके बारे में ।"

शैला के मन का बोझ जैसे कुछ हलका पड़ा । वह उसी समय अपनी पिस्तौल को सम्भाल कर खोल में रखती हुई, बोली "तो आओ, मेरे साथ ।"

जीवन उस कमरे से निकाल कर उसके साथ-साथ चल पड़ा ।

बाहर आकर देखा तो मधुमा एक क्रान्तिकारी युवती की तरह भीड़ के आगे खड़ी थी । जीवन को शैला के साथ आते देख कर जोर से वह बोली---"जीवन बाबू...तुम यहां आ जाओ । गांव के नर-नारी सब लोग तुम्हारी प्रतीक्षा में खड़े हैं ।"

जीवन आगे बढ़ा और बढ़ता गया । आगे बढ़कर वह मधुमा के पास पहुंच गया और उसके पीछे थी शैला और नीली । समीप पहुंच कर मधुमा ने उसकी आंखों में देखा, देखते ही वह उससे मिलने के लिए आतुर हो उठी । उसे अपनी गोद में भरना चाहती थी, कि शैला ने डाँटते हुए कहा---"खबरदार जो आगे बढ़ी तो...।"

"तुम कौन होती हो---जीवन हमारा है ?" मधुमा कड़क कर बोली ।

"नहीं...जीवन अब तक तुम्हारा था, । अब जीवन हमारा है और मैं उसकी हूं---।"

"यह कब से...?"

"कल की रात ही जीवन के साथ हमारे जीवन का मंगल सूत्र एक हो चुका है ।"

मधुमा मुस्करा पड़ी। बोली---"स्त्री होकर एक पुरुष को जबरदस्ती पाना चाहती हो। मैं तो तुम्हारे हाथ में मंगल सूत्र का कोई चिन्ह नहीं पा रही हूँ।"

"जो चिन्ह हृदय पर अंकित हैं, उसे क्या देख सकोगी ?"

"क्या उस चिन्ह की छाप जीवन के हृदय पर भी अंकित है, शैला रानी ?"

"यह जीवन ही बता सकता है।"

'क्यों जीवन बाबू ?" जीवन की ओर घूमकर मधुमा ने पूछा।"

मधुमा के इस प्रश्न पर भी वह केवल मुस्कराता रहा, जैसे उसने शैला की बातों का मन ही मन मजाक उड़ाया हो। कुछ गम्भीर होकर वह बोला–" हृदय पर तो केवल एक ही चिन्ह अंकित है, मधुमा। वह चिन्ह न शैला का है, न तुम्हारा बल्कि मेरी देश की स्वतन्त्रता की जानी का है, इस पवित्र मातृ-भूमि का है और उसके बाद साँसारिक जीवन में जो चिन्ह अंकित हुआ, वह केवल एक स्त्री का, जिसका नाम मेरे हृदय की गति से सम्बन्धित है।"

उसकी बात को शैला न समझ सकी, न मधुमा, न नीली। इसलिए वह कुछ सतेज स्वर में बोली "तो गोल मटोल से क्यों बोल रहे हो ? साफ-साफ कहो, न कि धन के लोभ में मधुमा को त्याग कर शैला को अपना चुके हो ! रात भर के रोमान्स ने सिद्धाँत की हत्या कर दी।"

मधुमा ने जो यह कहा तो भी जीवन मुस्कराता रहा। जैसे उसे इन दोनों स्त्रियों की बातों का कोई विशेष प्रभाव उसके दिल और दिमाग पर नहीं हो रहा था। फिर भी बात रखने के अभिप्राय से वह बोला–"नहीं, मधुमा ! मेरे जीवन में स्त्री रोमान्स की वस्तु नहीं, न वह जिन्दगी की गाँठ है, न वासना की पूर्ति, न भोगने की वस्तु। फिर तुम ऐसा क्यों कह रही हो ?"

"इसलिए कि तुम बहुत बदल गए हो''और अब तो शायद मुझ पर विश्वास भी नहीं करते न।"

"ऐसा न कहो मधु ! तुम्हारे प्रेम के सात्विक स्वर में ही मेरे जीवन का पवित्र मोक्ष वर्तमान है।"

जीवन की भावुकता पर मधुमा जोर-शोर से खिल खिलाकर हंस पड़ी, फिर अपनी हँसी को रोककर, बोली—"प्रेम और बन्धन? बन्धन और मोक्ष! यह क्या कह रहे हो? यह तो तुम्हारी जाति का पुराना संस्कार है। रूप के साथ यदि धन की राशी भी मिल जाय, तो भला प्रेम के बन्धन में मोक्ष कैसा···?"

"मेरे उभरे हुए फफोलों पर नमक न छिड़को, मैं रात भर सिर दर्द से छटपटाता रहा है, उसे नाखून से न कुरेदो, मधुमे!"

"कल्पना का स्वागत कर रहे हो और दोनों रास्तों पर दो पैरों से चलना भी चाहते हो।"

"नहीं···नहीं···कान पर हाथ रखकर कह रहा हूँ, कि तुम जो कुछ समझ रही हो, वह स्वपन मात्र है।"

"और आज उसी स्वप्न को सत्य करने आई हूँ···तुम्हारे मन पर जो कुहरा और धुआं जम गया है, उसके बीच अपने आप को देखने आई हूँ, नवनीत के पुतले।"

शैला ने मधुमा का आलोचना पर खुश होकर कहा—"जीवन अब इस छोकरीसे क्या बातें कर रहे हो?"

मधुमा तुनक उठी। बोली—"छोकरी कह रही हो। विलायती फूल को छोड़कर अब जीवन पर जादू चला रही हो।"

शैला विगड़ कर खड़ी हो गई। उसने अपने गुस्से को दाँत के बीच पीसते हुए कहा—"जबान सभाल कर बोल, गाँव की लड़की! तहजीब सीखकर तुझे आना चाहिए।"

"हाँ, अपने मोहन की छाया में खड़ी हो न, बहुत तहजीब जानती हो, रियासत की मालकिन। अपने सुख को 'शो केश' में रखो। मेम सी बनकर अपने नये नकशों में अपना रूप देखो···लेकिन याद रखना, जिस जिन्दगी को तुम बन्जर समझती हो, उसमें भी तुम्हारे ही जैसे सपनों के बीज उगते हैं। अगर एक ओर सिसकते हुए कंगले हैं, तो दूसरी ओर इन्हीं कंगलों के हाथों से तुम्हारे बंगलों की इमारत खड़ी होती है।"

"चुप रह, कलंकिनी। किसी पर कलंक लगाते तुझे शर्म भी नहीं आती।"

"कलंक"··कैसा कलंक। चाँद में तो अपन ही आप कलंक की कालिमा लगी है, राज रानी। कलंकिनी कहकर तुम मेरा नहीं, अपना उपहास आप करा रही हो।"

"बस कर···बस कर, वरना मैं तुझे यहीं गोली से उड़ा दूँगी और सारे गाँव का अनाज बन्द हो जायेगा, एक-एक दाने के लिए तेरे गाँव के बच्चे तड़प-तड़प कर मर जायेंगे···।"

कहती हुई शैला ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल ली और गति हीन काया-सी मधुमा की ओर देख रही थी, कि जीवन ने उसके हाथ से पिस्तौल छीन ली और चीख कर बोला—"यह क्या कर रही हो, शैला ?"

"अपने प्रति द्वन्दी का अन्त।"

"प्रति द्वन्दी का अन्त ऐसे नहीं होता, प्रेम से होता है। गोली से मार देने में प्रति द्वन्दी को कैसे मालूम होगा, कि उसके प्रति द्वन्दी ने उसका अंत कर दिया।"

"तो, फिर···।"

"मुझे अवसर दो, मैं मधुमा को समझाकर यहाँ से विदा कर सकूँ।"

मधुमा ने सुनते ही कहा—"मुझे विदा करोगे। मैं तुम्हें रोकती कब हूँ। मेरी ओर से तुम्हारा मार्ग सदा प्रशस्त रहेगा। मैं स्वयं जा रही हूँ, तुम शैला के साथ विवाह करना चाहते हो, जरूर करो।"

"लेकिन सुनो तो मधुमा !"

"क्या सुनूँ···यह कौन नहीं जानता कि तुम विवाहित हो, एक पत्नी छोड़ चुके, तो मैं आई और अब मुझ से मन भर गया, तो शैला। कल शैला से मन भर जायेगा, तो कोई दूसरी छैल-छबीली···

"मधुमा···क्या कह रही हो ?"

"सत्य कह रही हूँ।"

"क्या इसीलिए तुम यहाँ आई थीं ?"

"नहीं, न तुमसे प्यार की भीख मांगने ···।"

"फिर ···?"

द्रोही पंडित राज का साथी था और अपने साथियों की सुनी सुनाई बातों के आधार पर वह मार्क्स वादी बनकर बोल रहा था। मधुमा ने स्वयं मार्क्स वाद का अध्यन किया था, इसलिए वह आगे वाद-विवाद करने में जब असमर्थ रहा, तो पंडित जी से वह बोला—"यार छोड़ो! अगर ये लोग नहीं मानते हैं तो सारे गाँव को हम जला देंगे। सारे सेठों से कह दो, कि एक छटाँक गल्ला इनको न दें।"

जीवन सब कुछ सुन रहा था। द्रोही की बात सुनकर वह, बोला—"छि:-छि: एक साम्यवादी विचार का युवक ऐसा कह रहा है, तुम्हारी जबान क्यों नहीं कट जाती ?"

"जनता पर काबू पाने के लिए सिद्धान्त को अपने रास्ते भी बदलने पड़ते हैं, जीवन बाबू। आप तो गाँधी वादी विचार धारा को मान्यता देते है, पर इससे कहीं समाज तथा किसी समस्या का समाधान हुआ करता है।"

"आज तुम्हारे रूस की जनता भी इस विचार धारा में अपने जीवन का मौलिक हल ढूंढ रही है, द्रोही। गाँव के लोगों के प्रति तुम्हारे विचार इतने संकीर्ण हो सकते हैं, मैंने कभी नहीं सोचा था।"

कहकर वह राज के साथ चला गया। उसके बाद शैला से जीवन ने कहा—"शैला, मुझे आज की छुट्टी दो। कल मैं तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी करूंगा।"

"नहीं-नहीं"''यह नहीं होगा, जब तक तुम मेरे सूत्र का स्वागत नहीं करोगे, मैं नहीं जाने दूंगी।"

और जीवन जाना चाहकर भी न जा सका। मधुमा थके मन से अपने ग्रामीण भाइयों के साथ लौट गई। जीवन पुनः उसी कमरे में बन्द हो गया। क्यों'''क्या जीवन भाग सकता था'''पर ऐसा वह करने में असमर्थ क्यों था'''?"

—०—

पन्द्रह

सांझ उतर कर अन्तरिक्ष में छिप चुकी, तो रात ने तारों से बुनी चादर पहन कर जीवन के कमरे में प्रवेश किया। एक रोशनी जली और रियासत के महल में बन्दी जीवन की आँखें कमरे की खिड़की से आती तारों की रोशनी की ओर जा लगीं। उसने देखा कि रोज की तरह आज के आकाश में विचरने वाली रात की साड़ी भी गहरे काले रंग की जाजेंट सी लग रही है और नीचे की ओर रियासती महल से सटकर बहने वाली नदी की कलकल धारा से उसकी ध्वनि मिल जाती, तब वह उस खिड़की से झांककर नदी के प्रवाह को देखने लगता, कभी चाहता, कि उसी नदी में कूदकर तैरता हुआ अपनी मधुमा के गाँव में पहुंच जाय और कभी सोचता कि वह शैला से इतना क्यों डरता है ? अजीब पशो पेश में था, वह···कि दरवाजा खोलने की ध्वनि से उसकी मुद्रा भंग हो गई। खिड़की से हटकर उसने गर्दन फेरी तो सामने नीली अपने हाथ में खाने की थाली लेकर चली आ रही थी। उसके पीछे शैला सोलहों कला से सुसज्जित, नई वाइला की साड़ी से लिपटी फैशन की परी सी फुदकती चली आ रही है। जीवन आगे बढ़ा—एक-दो-तीन···और तभी शैला ने उसके समीप पहुंच कर एक बार भर नजर उसे देखा, देखने के बाद कन्धे पर हाथ रख कर बोली—"हलो, डीयर। खाना खा लो। अब क्या सोच रहे हो ?"

"कुछ नहीं।"

"तो खाना खालो ?"

"खाना, न जाने क्यों भूख नहीं है।"

"भूख···ऐसा क्यों कहते हो ? अब तो मधुमा तुम्हें खुद फटकार चुकी, फिर भी उसकी याद में उपवास करने की जरूरत समझते हो ?"

"किसी की याद में नहीं, बल्कि अपनी शारीरिक क्रियाओं को सुव्यवस्थित

रखने की लिए उपवास लाभदायक भी तो होता है, शैला। फिर मधुमा पर इस व्यंग से क्या लाभ ?"

"व्यंग नहीं, सत्य है। अगर तुम मधुमा के व्यवहार पर जरा सा भी ध्यान से सोचो तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह तुम्हें प्यार नहीं करती।"

"इसके बारे में तुमसे कुछ विचार नहीं चाहता, शैला ! इस समय मुझे एकान्त में रहने दो।"

"तुम एकान्त को पसन्द कब करते हो"खाना खालो। मैं चली जाऊंगी।"

"जब खाने की इच्छा न हो, तब"।"

"तब भी थोड़ा खा लेना चाहिए।"

"नहीं तो क्या आदमी मर जाता है ?"

"मरता नहीं तो कुछ कमजोरी तो आ ही जाती है।"

"सच कह रही हो, शैला। पर मेरी एक की कमजोरी दूर करने से ही तो सबके शरीर की कमजोरी दूर नहीं हो सकती, सबकी कमजोरी को दूर करने के विषय में कुछ सोच सकती हो ?"

"सबकी जिम्मेदारी मैंने तो नहीं ले रखी है ?"

जीवन हंस पड़ा। कुछ मुस्करा कर बोला–"यहीं पर तो हम एक दूसरे से विचारों में नहीं मिल पाते हैं, शैला !"

"खैर जाने दो। खाना नहीं खाना चाहते तो न सही ! जब तक यह न बताओगे कि तुम क्या सोच रहे हो"क्या सचमुच मैं तुमको पसन्द नहीं ?"

"क्या कह रही हो ? पसन्द का प्रश्न तो उसके सामने उठता है, जो सौंदर्य तथा भोग्य की सामग्री मात्र समझता है, मेरे सामने तो तुम्हारा अस्तित्व पुरुष के व्यक्तित्व से भी आगे है, भला ऐसा कैसे सोच सकता हूं ?"

"फिर इस तरह की खामोशी क्यों ?"

"हाँ, यह खामोशी, यह उदासी और गम्भीरता जो बन गई है, वह तुम्हारे और मधुमा के जीवन से"तुम मुझे जबरदस्ती अपना जीवन साथी बनाने के लिए प्रयास कर रही हो और मैं"मै तुम्हारे नारीत्व से अलग मधुमा के साथ अपने जीवन को सफल होते देख रहा हूँ"तुम"!"

शैला का मन भर आया। उसने कातर नजरों से उसकी ओर देखते हुए कहा—"मधुमा को तुम नहीं भूल सकते ! सच, जिसके मां-बाप का ठिकाना नहीं होता, उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करता।"

'क्या मतलब है शैला। मेरी आलोचना से बढ़कर तुम मेरी मां-बाप की आलोचना करने लगी। यह मेरी सहन सीमा से बाहर की बात होगी, शैला !"

"क्यों"'अगर तुम किसी सगी मां की सन्तान होते, तो भला मेरे नारीत्व का इस तरह मजाक उड़ाते ?"

"मजाक उड़ाने वाले को हर बातें मजाक ही नजर आता है।"

शैला हँस पड़ी। अपनी हंसी के फुव्वारे के साथ वह व्यंग करती हुई, बोली—"तो तुम यही सोच रहे थे। परन्तु जानते हो न कि जब देश आजाद हो गया है, हमारे प्रजातांत्रिक विधान ने हमें भी तुम्हारे जैसा अधिकार दे रखा है, अब मैं दावे के साथ यह साबित कर सकती हूं, कि तुमसे मेरा विवाह हो चुका है और तुम मेरे पति हो ?"

"बिना सूत्र के वैवाहिक सम्बन्ध ! यह क्या कह रही हो, शैला ! एक शिक्षित युवती के मुंह से यह शोभा नहीं देता।"

"क्यों, जब पुरुष किसी स्त्री को बिना विवाह किए ही पत्नी सा उसके साथ व्यवहार करने से बाज नहीं आता, तब मेरे मुंह की बात अशोभनीय कैसे हो सकती है, जीवन !"

"तुम्हारी इन उदार भावनाओं का स्वागत करता हूँ, फिर भी मधुमा के सिवा न जाने क्यों मैं किसी स्त्री के प्रति'''।"

"लेकिन तुम तीन दिन तक यहाँ रह चुके हो'''गांव के लोग भी तो समझ गए हैं, कि तुम्हारा विवाह मुझ से हो रहा है। अब इन बातों को छोड़कर भोजन कर लो, जीवन !"

शैला ने अनुनय भाव से कहा, पर जीवन के मस्तिष्क प्रवाह में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आ सका। उसने अपनी चिन्ता को समेट कर कहा—"मेरा भोजन करना दुष्कर है।"

"क्यों···इस तरह उपवास करने से क्या होगा···?"

"यदि इस उपवास से शरीर का अन्त हो जाय, तो मैं अपनी मधुमा के प्यार के प्रति विश्वास घाती बनने से मुक्त हो जाऊंगा।"

"यह है, तुम जैसे प्रगतिवादी युवक का थोथा आदर्शवाद।"

"जो भी कहो, पर एक स्त्री से अधिक स्त्री को पत्नी भाव से देखना पुरुष के चारित्रिक पतन का द्योतक होता है।"

अब की बार शैला हंस पड़ी। उसने जीवन की ओर से अपना मुंह फेर कर खिड़की के सामने फैलने वाले विस्तृत आकाश पर चमकते-झिलमिलाते तारों के प्रकाश की रोशनी पर अपनी आँखें टिका दी और फिर बोली—'तो तुम्हारे लिए प्राण संकट तो उपस्थित नहीं हो गया है। तुम यहाँ से भाग भी सकते हो !"

"और मेरे भागने का परिणाम होगा, जनता का दमन, गाँव में आग और किसान मजदूरों के परिवारों के साथ अमानुषिक अत्याचार ! इससे तो यही अच्छा है, कि अनेक की रक्षा के लिए मैं अपने आप को ही तुम्हारी इच्छाओं की वेदी पर बलिदान कर दूं।"

शैला की भाव मुद्रा बदल गई, उसका मुख मंडल जो उदास हो गया था, उस पर उल्लास की रेखाएं बिजली के प्रकाश सी चमक उठी। उसने जीवन के समीप जाकर घुटने टेक दिए और उसके दोनों घुटनों पर अपना हाथ रखकर बोली—"जीवन ! समय थोड़ा है। पिता जी आ रहे होंगे। जल्दी से अपना निर्णय कर लो, हम सब तैयार हो चुके हैं। तुम···बहुत अच्छे हो···जब तुम क्रान्तिकारी भावनाओं से भरे जीवन को प्रगति देने वाले स्वर से अपनी कविता की पंक्तियां दुहराते हो, तो शैला का प्यार ज्वार-भाटे की तरह उमड़ पड़ता है। न जाने कौन सी संजीवनी मुझे खींच ले जाती है।"

जीवन ने उसे उठा लिया और शान्त भाव से शैला की अलसाई आँखों में देखते-देखते, बोला—"संजीवन न कहो, यह विष के समान होगा, शैला। जब मेरा मन नहीं चाहता तो तुम मेरी कविता से विवाह करोगी, कविता से,

मेरे साथ में उसी का ब्याह न्याय संगत होगा जो मुझ जैसे ही भावनाओं एवं व्यवहारों सा भाव रखती होगी।"

"वैसा तो मैं भीअपने को बना लूंगी···अगर तुम चाहो, क्या मैं मधुमा जैसी नहीं हो सकती ?"

"नहीं···कभी नहीं ! भावनाओं में भिन्नता होती है और सबसे बड़ी बात है कि एक के भाव दूसरे जैसे नहीं हो सकते···।"

"तो फिर···?"

"फिर विवाह से कहीं बढ़कर अच्छा हो कि तुम अपने योग्य किसी रियासती युवक के दिल की सम्राज्ञी बनो।"

"यदि ऐसा मन न चाहता हो···तब क्या करू ?"

"तब अपनी समस्त सम्पदा को देश के निर्माण के लिए अपनी सरकार को दे दो···और स्वयं नारी क्षेत्र में उतर कर अपनी बहनों के जीवन के स्तर को ऊंचा उठाओ।"

"इससे लाभ क्या होगा···क्या जीवन के थोड़े से दिन में अपने सब सुखों को छोड़कर इसी यौवन में सन्यासनी बन जाऊं ?"

"देश की जब जैसी पुकार होती है, उस देश के स्त्री पुरुषों को वैसे-ही त्याग करने की आवश्यकता पड़ती है, शैला ! तुम मुझसे विवाह करना चाहती हो, पर जानती हो मेरे हृदय में एक ही स्त्री की खोज थी और जब वह मिल गई, तो सभी स्त्रियों के प्रति मेरी भावना माता एवं बहनों सी हो गई और अब तो केवल अपने देश के रचनात्मक कामों के विषय में सोचता हूँ, फिर उसे सक्रिय रूप देकर उस समस्या का समाधान करता आ रहा था, कि तुम टपक पड़ी और जीवन का प्रशस्त मार्ग अवरुद्ध हो गया।"

"विवाह के बाद सब अपने आप ठीक हो जाएगा।"

जीवन चुप होने के अलावा कर भी क्या सकता था। वह शैला के इस वाक्य का उत्तर देने वाला था कि नीली दरवाजे से रेशमी परदों को उठाकर आ खड़ी हुई, उसे देखते ही शैला जीवन से कुछ दूर हटकर बोली—"अरी···इस वक्त कैसे ?"

"पिता जी आ गए हैं।"

'अच्छा'"और कौन है"?"

"पंडित जी।"

"पडित जी।"

"हाँ, और उन्होंने कहलाया है कि आज बारह बजे के शुभ महूर्त में पाणिग्रहण संस्कार सबसे अच्छा रहेगा। तुम जल्दी से तैयार हो जाओ, मैं मण्डप में सब समान ठीक करने जा रही हूं।"

कहती हुई नीली चली गई।

उसके जाने से दस मिनट तक जीवन और शैला दोनों खामोशी के आंगन में खड़े-खड़े जाने क्या सोचते रहे, जैसे दोनों को विजली का करेन्ट छू गया था, तभी दरवाजे से आवाज आई—"बेटी!"

शैला का ध्यान भंग हो गया। उसने दरवाजे की ओर घूमकर देखा, तो उसके पिता चन्दन की छड़ी पर अपना बोझ टेके दरवाजे पर खड़े थे। पिता को देखते ही वह जल्दी से दौड़ पड़ी। समीप आकर पिता जी से लिपट कर बोली—"पिता जी।"

पिता ने बेटी के सर पर हाथ फेरते हुए कहा—"कहो बेटा, जीवन राजी हुआ!"

"नहीं, पिता जी! वह राजी नहीं होते"।"

"फिर क्यों उसके पीछे पड़ी है, जानती है, जोगपर रियासत के राजा सावित्री प्रसाद"।"

"हाँ"'क्या हुआ उनको?"

"कुछ नहीं, बेटा"'वह भी तुमसे शादी करने के लिए तैयार है। आखिर इस जीवन के शरीर में क्या रखा है जिसके पास रहने के लिए न मकान, न धन न रूप, न भला परिवार"।"

"सब कुछ न होने पर भी जीवन में जो कुछ है, उसे पाकर मेरा मन खुश रहेगा और सावित्री प्रसाद के साथ विवाह करके मैं सदा दुखी रहूंगी।"

"कारण बेटी"'। सावित्री के पास किस चिज का अभाव है।"

"सब से बड़ा अभाव···क्या उसके अभावों को मैं नहीं जानती···एक दिन की बात तो नहीं, कितनी बार वह अपने ड्राइंग रूम में आकर शराब की बोतल तोड़ चुके हैं और इसी शराब तथा वेश्यागामी होने के कारण उनके अधिकाँश गाँव भी गिरवी रखे जा चुके हैं, उनके साथ क्या एक कुमारी अपना विवाह करके सुखी होगी ?"

"सुख के लिए जो साधन जरूरी होते हैं बेटा, वह सभी तो उसके पास मौजूद हैं, फिर ऐसा क्यों कहती है ?"

"इन सब साधनों से मूल्यवान है, अपने मन का सुख, अपने अन्तः करण का सुख, पिता जी ! उसका मोटा शरीर···और शराब से भीगी आँखें—नहीं··· नहीं। मैं जीवन भर कुंवारी रहूंगी, पर उससे विवाह नहीं कर सकती, बल्कि प्राण दे दूंगी।"

विवश होकर राजा साहब ने जीवन की ओर देखा और कुछ देर तक सोचने के बाद, बोले—"जीवन···आखिर तुम युवक हो किसी न किसी से विवाह करोगे ही···मेरी शैला से विवाह करके तुम रंक से राजा हो जाओगे। तुम्हे बहुत बड़ा काम मिल जायेगा···तुम तो समाज के सेवक हो न ! क्या एक नारी की इस इच्छा की पूर्ति नहीं कर सकते ?"

"जब मन अपने आधीन नहीं, तब किसी के मन को जबरदस्ती आधीन कोई कैसे बना सकता है, राजा साहब ?"

"तब···तब यह होगा, कि मेरी शैला अपने प्राण देगी और तू एक नारी का हत्यारा होगा। नारी वर्ग तुझ पर थूकेगा···तेरे नाम को रोयेगा, कि एक पुरुष ने अपनी जिद्द के कारण एक नारी की हत्या की।"

कहकर राजा साहब चुप हो गए ! शैला के मुंह पर एक तेज सी रेखा चमकी और उसने कुछ प्रसन्न होकर कहा— हाँ···हां पिता जी। सच कह रही हूं यदि जीवन न मिला तो मैं जहर खा लूंगी।"

"बोलो जीवन···मैंने भी यही सोचकर तुम्हें यहाँ बुला भेजा था। आज अगर मेरी शैला की इच्छा नहीं पूरी हो सकती, तो मैं तुम्हारी इच्छा भी कभी पूरी नहीं होने दूंगा।"

"सो कैसे···?" जीवन ने मुस्कराते हुए पूछा।

राजा साहब ने अपनी जेब से एक शीशी निकाल कर उसे जीवन की आंखों के सामने दिखाया और जेब में रखकर बोले—"इस शीशी से तुम दोनों की इच्छाओं को दमन कर दूंगा···।"

जीवन का मस्तिष्क घूम गया। एकाएक कुछ सोचकर वह बोला—"केवल विवाह शब्द के लिए दो जिन्दगियों को जहर देने की जरूरत नहीं, न खाने की जरूरत है, बल्कि, बल्कि हमारे विवाह से भी अधिक महत्व पूर्ण हमारी जिन्दगी है, मैं शैला से विवाह करने के लिए तैयार हूँ···।"

शैला के मुंह पर नाचती उदासी उसी क्षण न जाने कहां चली गई और वह अपने पिता के सामने प्रसन्न होकर बोली—"पिता जी। मेरी इच्छा पूर्ण हो गई, अब चलिए।"

राजा साहब कुछ कहने वाले थे कि नीला आ खड़ी हुई और हाँफती हुई बोली—"सरकार सब तैयारी हो चुकी है। महूर्त भी बीत रहा है।"

राजा साहब जीवन की ओर घूमें अपनी आँखों की सफेद काली भौं को उसकी काली भौं पर जमा कर बोले—"अच्छा तो कवि महाशय तैयार हो जाइए। जब यह करना था, तो इतने नखरे की क्या आवश्यकता थी?"

कहते हुए राजा साहब अपनी बेटी के कन्धे पर हाथ रखकर कमरे से निकल चले। उनके पीछे नीली और नीली के पीछे जीवन।

रात की उस आधी उम्र में जीवन को नीली बाथ रूम में ले गई। उसने स्नान किया और रेशमी कपड़ों से झिलमिल करता एक राजकुमार के वेश में ड्रेसिंग टेबुल के सामने खड़ा था। नीली उसके कपड़ों का चुनाव कर रही थी और शैला की सहेलियां···वधू का शृंगार!

एक अजीब गरीब सी समा थी, जिन्दगी का सौदा इतनी जल्दी तय हो जायेगा, जीवन इसे स्वयं न सोच सका था। इसलिए जहाँ नीली-शैला के चेहरे पर खुशी की उसांसें थीं तो वही जीवन के अधरों पर सदा खेलने वाली मुस्कान के स्थान पर चिन्तित रेखाओं से प्रवाहित होता हुआ उसके अधर पर कुम्हलाई हुई लालिमा। उसे इस तरह गमगीन, गम्भीर और किसी विषय

पर कुछ सोचता हुआ जान, नीली ने उसकी मुद्रा भंग करते हुए पूछा—"क्यों जीवन...आज से तुम हमारी रियासत के मालिक हो जाओगे।"

जीवन की मुद्रा टूट गई। उसने कुछ गम्भीर मुस्कान के साथ मुस्कराते हुए कहा—"मालिक और रियासत का नीली! हाँ, इस वक्त तो ऐसा ही हो रहा है लेकिन सूरज के निकलते ही मैं इस रियासत का मालिक नहीं रहूंगा, न शैला इसकी मालकिन।"

"छि...छि शुभ समय में ऐसी बात ठीक नहीं होती।"

"क्यों...यह अशुभ कैसे है नीली!"

"भला रियासत को कौन लेगा ?"

"रियासत ली जा चुकी है, अब न कोई राजा, न कोई प्रजा! फिर इस समय जिस रियासती दबाब का मुझ पर प्रयोग किया जा रहा है, वह अंग्रेजी हकूमत की बू है और...और जानती है, नीली! यह विवाह ऐसा विवाह ही जीवन भर की जंजालों की जड़ है।"

"तो सचमुच तुम जब नहीं चाहते तो क्यों जबरन गले ढोल बाँध रहे हो, बाबू! जानते हो न कि इस ढोल के गले में बाँधने की गाँठ ऐसी होती है, कि जल्दी उतरती भी नहीं, न गले मे यह ताँत जल्दी टूटती है।"

"हाँ, परन्तु जहाँ दोनों एक दूसरे को जानकर भी गलती करते हैं, वहाँ एक ही भोगने का अधिकारी भी आप होता है, यदि स्त्री जिद्द, अपनी जिद्द से, पुरुष अपनी जिद्द से विवाह करते है, या माता पिता के दबाब से तो भला वह विवाह ही तो रोज के झगड़ों का जड़ होता है, नीली मैं...मैं सोचता हूं कि क्या इस सूत्र बन्धन के बाद शैला का जीवन मेरे साथ सुखी हो सकता है ?"

"कोशिश करने पर तो बाबू पत्थर से भगवान निकल आते है, फिर वह तो बोलती-चलती-फिरती काया है, वह क्यों न अपने आप को ऐसा बना लेगी ?"

"कभी-कभी तो ऐसा हो सकता है, नीली! लेकिन स्त्री हो या पुरुष बचपन से हां उसके मानसिक गुणों को देखकर समझ में आ जाता है, कि किसी

स्त्री अथवा पुरुष की स्वाभाविक क्रिया होती है। शैला की सभी क्रियाओं और इच्छाओं से मेरी क्रियाएं विभिन्न हैं, फिर तुम स्वयं सोचो न।"

नीली ने हंसकर कहा—"छोड़ो इन बातों को जीवन बाबू, अब तो कुछ देर के बाद सुहाग रात यानी 'हनी मून' मनाने का भी समय आ रहा है। फिर क्यों बढ़कर बातें बना रहे हो ?"

"सोहाग रात और कोक शास्त्र। हाँ स्त्री और पुरुष की सीमा को नापने के लिए अथवा यों कहो कि आनन्द भोगने के लिए कुछ नियम हो गए हैं परन्तु जीवन का सुहाग किसी की इच्छानुकुल न हो, तो क्या उस सोहाग रात को भी तुम सोहाग रात कहोगी, नीली !"

नीली जूते को रेशमी कपड़े से पोंछने लगी थी, बोली "नहीं, जीवन बाबू ! पर क्या किया जाय ! एक के पीछे दो जान जायें, यह भी तो ठीक नहीं है। हाँ लीजिए अपना शू पहनिए।"

नीली ने जीवन के पैर में शू डाल दिया। जूते पहन कर वह नीली के साथ मण्डप में आ पहुंचा।

फिर वही फेरे सिन्दूर दान और कन्यादान की कुछ बातें सुनने के बाद वह उठ गया। विवाह का मंगल सूत्र बंध गया और समाज ने राज परिवार के नौकर चाकरों ने यह समझ लिया कि शैला का विवाह जीवन से हो गया।

रश्में अदा हो गई और फिर रात बीत गई ! कुछ खाने-पीने का सिलसिला लगा। पर गाँव में किसी को कानों कान खबर भी न लगी ! वह थी रियासती जमाने की बात, अब भी कुछ लोग ऐसा करते हैं पर उनसे क्या ?

रात के तीन बजे !

और जब सब सो रहे थे !

केवल जागते थे वे, जिन्होंने एक घन्टे पहले जीवन संगी बन, जीवन भर रहने का, एक दूसरे को बचन दिया था।

रात भींग रही थी, पर दोनों खामोश थे ! शैला फूलों से बनी सेज पर बैठी लाखों की कीमत से भरे हीरे जवाहारात

से बैठी थी और जीवन'''जीवन कमरे की उस सजावट से दूर खिड़की की ओर देख रहा था। उस सूने से आकाश में, मानो वह कहीं उड़कर चला जाना चाहता है, और'''और आकाश के सारे तारों को तोड़कर जमीन पर लगा देना चाहता हो, ताकि इतना प्रकाश हो जाय कि अन्धेरे का कहीं नाम न हो।

पर वह अधिक न सोच सका। उसी क्षण शैला अपने फूलों से सजे पलग से उतर कर उसके पीछे जा खड़ी हुई और एक दुलहिन की उमंगों को उसके सामने बिखरते हुए बोली—"क्या देख रहे हो ? अब तो जो होना था सो हो गया। रात बहुत बीत गई है। चलो, आराम करो।"

जीवन ने घूम कर शैला के सुसज्जित शृंगार को भर नजर देखा, पर हृदय को वह न जाने क्यों आकर्षक न लगी, न उसके मन में एक विवाहित पुरुष सी भावनाएं ही उठ रही थी, कि वह शैला को अपने अंक में भर ले, उसके घूंघट को उठा कर उसके सौन्दर्य का स्वागत करे फिर भी शैला के मन को शान्ति देने के लिए उसने ऊपरी मन से प्रेम प्रदर्शित हुए कहा—"सो जाओ, शैला। मुझे ऐसे ही रहने दो, मन बहुत घबरा रहा है।"

पर शैला ने उसे पुनः छेड़ा, गुदगुदाया और शोख नजाकत से चाहती थी अपनी सेज पर सजन को सुलाना। लेकिन जीवन वैसे ही खड़ा रहा और अनुग्रह पूर्वक बोला—"शैला सो जाओ, जब कुछ रात रहेगी, तो हमारे प्यार की घड़ी जाग उठेगी, तब हमारे प्यार का अभिनय भी शुरू होगा ! इस समय सो जाओ, शैला।"

कुछ सोच कर वह अधिक अनुरोध न कर सकी। पर मन ही मन उसकी छाती पर जो आघात पहुंचा, उसे उसने कैसे सहन किया, इसे तो केवल वही जानती थी, विवश मन लेकर पलंग पर आ लेटी।

जीवन ऐसे ही खड़ा रहा। कुछ सोचता रहा, समझाता रहा और अपनी गलती पर अपने आप को कोसता रहा, कि उसकी आंखें शैला के शरीर पर पड़ीं और उसकी साँस की गति को देखते ही वह अच्छी तरह समझ गया कि वह गाढ़ी नींद में सो रही है।

मन में विचार आया और फिर किसी युक्ति के सूझते ही वह खिड़की से

हट कर चमकती हुई हाथी दाँत की मेज के समीप पहुंच कर उसने दराज खोली। बढ़िया लेटर पैड को निकाल कर उसने कुछ लिखा और फिर खिड़की के रास्ते नीचे उतरने लगा···।

शैला सोई रही···और जीवन उस कमरे से छुटकारा पाकर रात की घनी छाया के साथ कहीं दूर जाकर खो गया।

—०—

सोलह

जीवन के एकाएक भाग जाने की सूचना सबको मिल चुकी थी। शैला को जितना दुख हुआ उससे अधिक मधुमा को। जब से उसने उसके विवाह और भागने की बात सुनी थी, उसके मन में शान्ति नहीं थी। कभी घर में, कभी बाहर और कभी अपनी प्रिय सहेलियों के घर पर। अब तो सहेलियाँ भी अधिक नहीं थीं, जो भी थीं वे दो, चार, दस बच्चों की माँ बन चुकी थीं, तो कुछ एक के पति महोदय ने तलाक दे दिया था, तो कुछ अपने पति को तलाक देकर कहीं काम कर रही थीं। केवल हमीदा एक ऐसी थी, जो उसके सुख दुख में हाथ बंटाया करती थी।

इसलिए जब कहीं मन न लगा, तो वह हमीदा के घर चल पड़ी। उसके घर आकर देखा, तो वह अपने अब्बा का कुरता सी रही थी। मधुमा को आते देख, सुई-डोरा एक ओर रखते हुए बोली—"आओ दीदी! आज आश्रम नहीं गई क्या?"

"नहीं, हमीदा। आज तुझे एक नई बात बताने आई हूं।"

"मैं कोई बात नहीं सुनती। आज तो आकाश बादलों से भरा है, बस एक अच्छा सा गीत सुना दो। कहो, तो हारमोनियम उठा लाऊं।"

"जी नहीं चाहता...।"

"जब गुनगुनाओगी, तो अपने आप स्वर से निकल पड़ेगा, गाओ, दीदी। आज अब्बा भी नहीं हैं, घर सूना है। मौसम की इस जवानी में कुछ गा कर ही हम मजा लेलें।"

मधुमा का मन तो नहीं करता था। आई थी कुछ कहने और सिर पड़ा कुछ और। न चाहकर भी उसने हमीदा की बात मान ली। स्वीकार करते ही हमीदा हारमोनियम उठाकर ले आई और मधुमा ने हारमोनियम के रीड

पर अंगुलियों को दर्दीली चाल से चलाया और फिर-फिर गले को खखारती हुई बोली—"अच्छा, तो बोल कौन सा राग सुनेगी, हमीदा।"

"राग-वाग मैं नहीं जानती, मुझे तो उस तर्ज पर सुना कोई अपना गीत···।"

"किस तर्ज पर···?"

"वही, न जाने किस फिल्म का है—बाबुल का घर छोड़ के गोरी हो गई आज पराई रे।"

"ओ···तो सिनेमा के स्वर में अधिक मजा आ गया है···ठीक कह रही हैं, हमीदा। आज तो मेरा मन भी कुछ ऐसा ही गाने को कर रहा है। अच्छा तो सुन। गीत के बोल हैं: -

सुख में सुधि-बुधि रही न मन की, अब क्या मैं पछताऊं री।
कैसे किसमें मैं भूली थी,
याद नहीं वह कुछ भी बात।
करती आई प्यार जिसे में,
समझ न पाई उसकी बात।
जाने कब से राह देखते,
बीती रोज अंधेरी रात।
सूने पन के सूने क्षण में, कैसे मन बहलाऊं री।
कितनी आँखें लागीं तन पर,
समझ नहीं कुछ पाती राम।
क्यों पुतली की काली पुतली,
आँसू अब बरसाती राम।
लुभा रहे जो मेरे मन पर उनको क्या समझाऊं री।

मधुमा गाती रही और एक दर्द से भरी आह से सनी आवाज हमीदा के आस-पास चक्कर काटकर कहीं जाकर खो गई, तो उसने मधुमा की कलाईयों पर हाथ रखकर कहा—"सच दीदी। गला भी अल्लाह ने तुम्हें अपने घर से

दिया है। पर दीदी, आज के गीत में तुम बहुत उदास थीं, आखिर यह क्यों ?"

"यह तो मैं खुद नहीं समझ पाती, हमीदा।"

"लेकिन मैं सब कुछ समझ रही हूं।"

"समझ रही है--पगली है, न। अच्छा, जरा बता तो सही, कि क्या समझ लिया है, तूने ?"

"पहले तुम बताओ, कि इस उदासी का क्या कारण है ?"

"कुछ खास नहीं, हमीदा !"

"छिपाओ न दीदी ! भला स्त्री से स्त्री के चेहरे की भावनाएं भी कहाँ छिपी रह सकती हैं।

"बड़ी सयानी हो चली। मनोवैज्ञानिकों की सी बात कर रही है। खैर, जाने दे। यह तो बता कि गाँव में इस साल सूखा पड़ रहा है! सारी फसल जब सूख गई तो क्या कोई दुखी न होगा, हमीदा ?"

"ओ हो, तो अब समझी, गाँव के सन्देश से मधुमा जी दुबली हो रही हैं।"

"और क्या तू दुखी नहीं है, हमीदा ?"

"होने से होता भी क्या है, दीदी ! जो अपने वश के बाहर की बात है, उस पर सोचना कैसा ?"

"बिना सोचे किसी समस्या का समाधान कैसे हो सकता है ?"

"तो इसका उपाय तुमने क्या सोच रखा है ?"

"उपाय···केवल अकेले मुझ से तो यह नहीं···हो सकता है न !"

"तो जीवन बाबू को बुला लिया जाय···?"

मधुमा हंस पड़ी। कुछ गम्भीर स्वर से एक आधी साँस को तेजी से खींचती हुई, बोली—"जीवन बाबू ! किस का नाम ले रही है, हमीदा !"

"क्यों, अब उनसे इतनी नफरत हो गई कि उसका नाम भी नहीं लेना चाहती ?"

"नफरत मुझे नहीं, उनको हो गई है, अब तो वह पूरे रियासत के मालिक

हैं और कल का जीवन, आज हमारे गाँव पर अपनी हकूमत की छड़ी लेकर जब लगान वसूल करने आएगा, तब···देखना उसके असली रूप को सारे गाँव के लोग समझ जायेंगे।"

"ऐसा न कहो, दीदी ! जीवन ऐसा नहीं है।"

"तो···फिर···तेरे ख्याल से वह अब तक क्रान्तिकारी रह गया है, पगली !"

"क्रान्ति कारियों की नीति को समझना बहुत कठिन होता है, दीदी ! मेरे ख्याल से, तो इसमें भी जीवन की कुछ कूट नीति ही होगी।"

"चुप रह। कूटनीति···! एक स्त्री के जीवन से खेलकर अब वह कूट नीति का कूटनीतिज्ञ बना है, अरे सच कह, कि वह पैसे का लोभी है और बिना श्रम किए ही खाने का अभ्यस्त हो गया है।"

"मुझे विश्वास नहीं होता दीदी !"

"इसलिए कि गाँव के लोगों के बीच थोड़ा बहुत काम करके उसने जो जागृत पैदा की, उस जादू का प्रभाव इतना तेज रहा कि तुम सब के सिर पर चढ़कर वह बोलता है।"

"दीदी···मैं यह सब क्या सुन रही हूँ···। कल तक जिस जीवन को तुम अपना जीवन समझ कर खुशी से फूली नहीं समाती थीं, उसके प्रति आज ऐसी धारणा क्यों दीदी ?"

मधुमा चुप हो रही। जाने क्यों हमीदा का यह तर्क उसे पसन्द नहीं आया। न वह यह सब सुनना चाहती थी। इसलिए हमीदा के कन्धे पर हाथ रखकर बोली—"इन बातों को छोड़ हमीदा। हमें इस साल अपने गाँव को सिंचाई की समुचित व्यवस्था कर देनी है। ताकि सूखा न पड़े।"

"और बाढ़ से कैसे मुक्त हो सकोगी ? प्रकृति के इस प्रकोप को तो नहीं रोक सकती। भला प्राकृतिक सत्ता के आगे मनुष्य की क्या बिसात ?"

मधुमा ने उसके केशों पर एक हल्की-सी चपत जमा कर कहा—"प्राकृतिक सत्ता से सम्पादित होकर ही सृष्टि के सारे कार्य क्रियान्वित होते हैं।"

"सो कैसे ?"

"यह हाथ-पैर, आँख-कान और मस्तिष्क का निर्माण केवल इसलिए नहीं है कि जीवन-जगत सब कुछ सदा भोग-विलास और आनन्द में लिप्त रहे'''और इस आनन्द को पूर्ण रूप से हम तभी पा सकते हैं, जब हम एक-एक मिलकर लाख-करोड़ों की संख्या में अपनी रक्षा का उपाय सोचें। रही जीवन की बात, तो उसका अब आसरा छोड़ दो।"

"क्यों ?"

"अब वह राजा का जमाई जो हो गया है।"

"नहीं, दीदी ! सब कुछ हो जाने के बाद भी वह तुम्हें नहीं भूल सकता। तुमने खुद उसके सरल हृदय को झकझोर दिया... उस रोज से न जाने कितनी बार तो उसके बिना मर्जी के कुछ कर डालती थी और तो–और उस रोज माया के सामने तुमने उसे बेहूदा भी बना डाला ! उसके मित्रों को भी कोसती रही।"

"यह गलत है ! मैंने उसको कभी ऐसा नहीं कहा, न उसके मित्रों को कोसने की मुझे आवश्यकता पड़ी।"

"फिर माया जो कुछ कह रही थी वह सब झूठ तो नहीं था। बिना आधार के कोई अफवाह भी तो नहीं उड़ती।"

"हाँ...हाँ...आधार था और वह यह कि उसके एक मित्र ने मेरी सहेली बेला के पति से कुछ झूठ-मूठ का लाक्षन लगाया था।"

"लांक्षन, कैसा लांक्षन, दीदी !

"उसने कहा था कि मधुमा मेरे आफिस में प्रायः आया करती हैं और मुझसे प्रेम करती है।"

"तो इस पर तुम बिगड़ गई !"

"बात ही ऐसी थी ! जब साहित्यकारों की विचार सीमा इतनी संकीर्ण है, तो वह साहित्य और समाज का निर्माण क्या करेंगे, कमोदा !"

"यही तो हर संस्था में दोष है, दीदी ! हमें तो अपने काम से मतलब है, न कि आम की गुठली से।"

"तो तू ही बता कि माया जैसी रोमांटिक लड़की को उसके प्रेमियों के विषय में ऐसा उत्तर देना क्या ठीक नहीं था ?"

"लेकिन यह प्रसंग उठा कैसे ?"

"ग्राम सेविका की ट्रेनिंग में हम साथ थीं, वहाँ माया के दो चार प्रेमी महोदय नित्य-प्रति मिलने आया करते थे। वह चाहती, कि मैं तथा मेरी सहेलियाँ भी उन छिछोरे साहित्यकारों की अंगुली का इशारा बन कर कल्ब और सिनेमा घरों में उनकी इच्छाओं पर नाचती फिरें...लेकिन हमने इनकार कर दिया। यह बता दिया, कि हम अपने पैरों से चलना चाहती हैं, अपनी प्रतिभा का विकास आप करना चाहती हैं...इस पर वह नाराज हो गई...उसने न जाने क्या-क्या कहकर अपने प्रेमियों के कान भरे और उन प्रेमियों ने जीवन से मेरी शिकायत की।"

"उन्हें कैसे मालूम हो गया कि जीवन तुम्हारे जीवन का अधिकारी है ?"

"यह मैं नहीं जानती...न जानने की कोशिश की हमीदा ! अब इन बातों को दुहराने से क्या लाभ ? बोल गाँव की सिचाई के बारे में तेरी क्या राय है ?"

"तुम ही बताओ, दीदी ! मेरे विचार से नहर आ रही है, जब सरकार खुद बना रही है, तो चिन्ता किस बात की ?"

"सरकार...किसकी ! अपने ही मतदान द्वारा तो हमने बनाई है. फिर नहर आने में काफी देर भी है। मेरी राय है कि कल सारे गाँव को एक जगह मैदान में इकट्ठा करके इस समस्या का समाधान ढूँढूँ।"

"तुमने क्या सोचा है ?"

"मेरी राय है कि हर गाँव में जितने गढ़े—तालाब हैं, उन्हें हर एक गाँव के लोग एक साथ मिलकर खोद डालें और फिर सरकार से मंजूर करा कर उसमें बोरिंग करा दें, ताकि उसमें पानी का अभाव न हो।"

"यह सम्भव नहीं दीखता, दीदी !"

"क्यों...असम्भव क्यों दीखता है ?"

"इसलिए कि लोगों में श्रमदान की भावना अभी सक्रिय रूप से जाग्रत नहीं हो सकी है।"

"यह काम मेरा है ! मैं करूँगी।"

"यदि जीवन होता तो और अच्छे ढंग से होता।"

"जो नहीं है, उसके बारे में क्या सोचना ? उसे तो अब रानी मिल गई है न।"

"तुम भी तो कोई राजा पा लोगी, दीदी !"

"मैं...।"

"हाँ...हाँ...। तुम भी तो किसी को प्यार कर लोगी !"

"यह भविष्य की बात है, हमीदा ! जीवन इसी सन्देह का तो शिकार हो गया ?"

"सन्देह नहीं, सच कहो। तुमने भी तो सदा उसके प्रतिद्वन्दियों से मित्रता की। उनके साथ घूमी और जब कहीं बाहर रहा, उसने सदा तुम्हें अनेक पत्र लिखे, पर तुम उसके पाँच पत्रों के बाद कभी एक का जवाब दिया करती थी।"

"तो उससे क्या हो गया ?"

"हो तो कुछ नहीं गया, पर इस तरह का बर्ताव यही जाहिर करता है, कि जीवन से अधिक योग्य तुम्हें कोई मिल गया है, तभी तो तुम उसके पत्रों की परवाह न करती थी, न कभी किसी काम करने में उसकी इच्छा अनिच्छा की जरूरत समझती थी...यही सब तो कारण हैं, जो वह अपने आप से नाखुश होकर दूसरी स्त्री की ओर चला गया।"

"दूसरी स्त्री...ऐसा मत कहो। यह मेरा विश्वास है कि जीवन दूसरी स्त्री की ओर नहीं जा सकता...।"

"क्यों ? क्या वह ब्रह्मा-विष्णु है ?"

"अरे, यह लोग भी तो स्त्री से अलग न रह सके, हमीदा ! खैर, इन बातों को छोड़। चल कलमी के घर चलें।"

"कलमी तो स्वयं आने के लिए कह गई है, दीदी ! बैठो, वह आती ही होगी।"

"न जाने क्यों यहाँ बैठने को जी नहीं चाहता, हमीदा ! तबियत घबरा रही है और मन कह कहा है कि कुछ होने वाला है ?"

"जो कुछ होना है, वह भी हो जायेगा। उसे कौन रोक सकता है ? इन बातों को छोड़ो, आज मुखिया चाचा कहाँ गए हैं ?"

"जीवन की खबर लेने।"

"कहाँ रियासत में···?"

"नहीं, राजमहल में, जहाँ की एक स्त्री जबरदस्ती किसी से विवाह कर सकती है...।"

"जबर दस्ती ! यह क्या कह रही हो, दीदी ! जब तक जीवन की इच्छा न होगी, भला उससे जबरदस्ती व्याह कैसे कर सकती है ?"

मधुमा उत्तर देने वाली थी, कि उसकी नजर अपने आप घूम गई। उसने पलकें फेरकर जो देखा, तो सामने से उसके पिता मुखियाराम अपनी लाठी टेकते चले आ रहे हैं। उनका सारा शरीर काँप रहा है और पसीने से सिर की गाँधी टोपी ऐसे भीग गई थी, जैसे धोबी की भट्टी से निकल कर आई हो। पिता को देखते ही मधुमा दौड़ पड़ी और समीप जाकर अपने काका से लिपट कर बोली—"क्या हुआ काका। कुछ पता चला।"

मुखियाराम हत बुद्धि सा बेटी के सिर पर हाथ फेरते रहे। उनका गला भरता आ रहा था। इसलिए रुंधे गले से उन्होंने कहा—"हाँ, बेटा। पता चला !"

"क्या पता चला, काका। जीवन से शैला ने विवाह कर लिया है।"

"हाँ···बेटा···सत्ता के सामने स्नेह की मर्यादा महत्व हीन हो गई !"

"मतलब···क्या सुना रहे हो, काका !"

"सच कह रहा हूं, जीवन शैला का हो गया, बेटा ! अब तो वह राजा साहब का जमाई है, लाखों की सम्पत्ति का स्वामी।"

"तो उससे मिले नहीं ?"

"जो बड़े-छोटे की भावना के समुद्र में डूब-उतरा रहे हैं, उन्हें हम जैसों से मिलने की फुरसत नहीं रहती बेटी !"

"तो तुमने उसे बुलाया क्यों नहीं ?"

"ऊँचे महलों में रहने वालों के कानों में, नीचे खड़े होकर पुकारने वालों की आवाज ही नहीं पहुंच पाती"'बेटा ! जब आकाश-पाताल और यह हमारी पृथ्वी माता ही हमारी नहीं सुनती, तो इस बुड्ढे गोश्त वाले इन्सान की उन्हें कब परवाह हो सकती है आ, घर चलें ।"

मधुमा अपने काका के साथ चल पड़ी। रास्ते में कुछ देर तक वह चुप्पी साधे सोचती रही, फिर अचानक जैसे उसके मस्तिष्क में एक कल्पना के स्वर गूंजे। एक प्रश्न उठा, तो उसने पूछा—"काका ! तुम अगर किसी संतरी से पूछते तो उसका पता मालूम हो जाता और यदि जीवन को मालूम होता, तो वह तुमसे मिलने के लिए जरूर आता।"

अचानक बेटी की इस बात पर मुखिया राम को हंसी आ गई और उन्होंने बेटी की ओर देखकर कहा—"सच, स्त्री हो चाहे, पुरुष, दोनों के दिल से एक दूसरे का मोह नहीं भाग सकता !"

"इसका क्या मतबल काका !"

"कुछ नहीं, बेटा ! केवल मोह की बात है, जीवन से तुझे इतना मोह है, और वह···।"

मधुमा लजा गई। लज्जा से उसके गाल पर लाल अंगारे सी जमी रेखाएँ थिरक उठीं। अपने-आप सकुचाती हुई वह बोली—"यह मोह भी स्वाभाविक है, काका ! तुम एक बार और जाकर उसके पास मेरा सन्देशा भेज दो न ?"

"जहाँ से एक बार दुत्कार कर भगा दिया गया हूँ, वहाँ फिर जाने की इच्छा नहीं होती, बेटी ! आखिर कौन सा तेरा सन्देशा है, जो उसे जीवन के समीप पहुँचा दूं।"

मधुमा पिता की ओर देखने लगी। पिता के इस प्रश्न का वह क्या उत्तर ? कौन सा सन्देशा वह जीवन के पास भेजे। इसी उहा-पोह में पड़ी, पड़ी जब वह अपने घर की चौपाल पर पहुँची, तो उसकी आँखें नीम के पेड़ की

छाया की ओर घूमी । देखा, तो सिपाही खड़ा था लाल टोपी खतरे का निशान है, यह देखकर वह अपने काका से बोली—"काका—चौपाल पर पुलिस ।"

मुखिया राम ने कहा—"हाँ···पुलिस...पुलिस की बात मत कर बेटी । राजा साहब का यह जाल होगा ।"

"तो क्या होगा ? मैं जाकर अभी देखती हूँ ,"

"अरी नहीं, बेटी ! भला तू पुलिस के सामने जायेगी ।"

"तो क्या हो जायेगा, काका ! वह कोई राक्षस तो है, नहीं, जो मुझे खा जायेगा ।"

"राक्षस...राम-राम-बेटा ! नाम न ले, इन लोगों से राक्षस कहीं अच्छे होते हैं, कम से कम वे एक बार खा लेता है, आदमी को अधिक तकलीफ नहीं होती, पर लाल पगड़ी बड़ी खतरनाक होती है । फिर तू औरत है, औरत...।"

'तो क्या हो गया, काका ! क्या कर लेगा ?"

"औरत बेटा । इस पुरुष जाति की नजरों में स्त्री का स्थान धन सा है, जैसे धन का लोभी धन देखते ही लखपति-और करोड़पति बनने का स्वप्न देखने लगता है, वैसे ही चाहे कोई पुरुष भी क्यों न हो, युवती को देखते ही कामना का शिकार हो उठता है ।"

"वाह, काका ! तुम गाँव के मुखिया हो । भला हमारे गाँव के लोगों के सामने उसकी क्या मजाल की, वह हमारी ओर बुरी नजर से देख लें ।"

मुखिया राम उत्तर न दे सके । वह चुप होकर मधुमा के साथ चौपाल पर बैठे पुलिस के समीप जा खड़े हुए और नम्र भाव से बोले—"कैसे पधारे हो, सिपाही जी ?"

सिपाही ने अपनी मूंछों को खड़ा किया, फिर जरा अकड़ कर, बोला—"मुखिया राम ! हमें पता चला है कि तुमने जीवन को अपने घर में छिपा रखा है ।"

"मैंने, जीवन को ! क्या कह रहे हैं, आप ?"

"अजी, जनाब ! घर के भीतर चलें, नहीं तो अभी थानेदार आकर आपकी अच्छी हजामत बनायेगा ।"

मधुमा से न रहा गया। वह अपने पिता के आगे बढ़कर, बोली—"सिपाही जी ! आप का घर है, जाकर आप घर का कोना-कोना देख लीजिए। जीवन कोई चींटी और चींटा तो नहीं, जो कि दीवार में घर बना कर गायब हो जायेगा। आप शौक से तलाशी ले सकते हैं।"

सिपाही की अकड़ कुछ ढीली पड़ी। फिर भी उसने मधुमा पर रोब गालिब करते हुए, कहा—"अरी, छोकरी । यह राजा साहब का मामला नहीं, सरकार का केश है। अगर अधिक इधर-उधर करें भी, तो बाप-बेटी को सीधे चौबीस घंटे की हवा खिला दूंगा ?"

"और दूसरे दिन जमानत पर छूटते ही तुम्हारे ऊपर हम इज्जत का दावा कर देंगे।"

सिपाही ने अपने हाथ की लाठी घुमाकर कहा—"क्या नाम है, तेरा छोरी !"

"क्या करोगे, नाम पूछ कर। तुम अपना काम करो।"

"बड़ी सयानी है। बिना मालिक को लिए घर में नहीं जाता···आवो। जल्दी करो।"

मधुमा के साथ वह घर की ओर बढ़ने लगा, तो मुखिया राम ने पूछा—"क्यों जी ! जीवन बाबू की शादी तो शैला रानी से हो गई । भला तुम लोगों को इधर उधर क्यों भटकना पड़ता है ?"

"यह तो अपना काम है, मुखिया राम ! थाने में जो रिर्पोट हुई और उसका हुक्म नामा पाते ही हम रवाना हो जाते हैं।"

"कैसी खबर—"जीवन बाबू तो महल में होंगे ?"

"अरे, महल में होता, तो यहाँ क्यों आता, मुखिया राम !"

"क्या कह रहे हैं, आप ?"

"सच कह रहा हूं, वह शादी की रात ही न जाने क्यों शैला को छोड़-

कर भाग गया। उसे भगाने में तुम्हारी साजिश है। ऐसा राजा और उसकी बेटी का ख्याल है।"

"झूठ···सरासर झूठ सिपाही जी ! भला जीवन अबोध बालक तो नहीं है, वह तो पूरा पढ़ा लिखा सयाना सा 'आदमी है।

घर आते ही जब मुखिया साहब ने मधुमा से दरवाजा खोलने के लिए कहा, तो सिपाही ने मना करते हुए, कहा—"रहने दो, मुखिया राम जी ! मुझे विश्वास है कि जीवन यहां नहीं आया।"

"नहीं,···नहीं। अब तो आप देखकर जाइए, नहीं तो साजिश कहीं अधूरी न रह जाए।"

और मुखिया राम सिपाही का हाथ पकड़ कर जल्दी-जल्दी अपने घर के भीतर घसीट ले गए।

एक-एक करके उसने तीनों घर की अलगने, चूल्हें, चक्की और कोना-कोना छान डाला। जब जीवन का पता न मिल सका, तो वह झुंझला कर, बोला—"मैं कह रहा था, कि यहाँ जीवन नहीं होगा, पर आपने मेरी एक नहीं सुनी। अब मैं ···।"

कहता हुआ वह तेजी से मधुमा के घर से निकला और चला गया। मधुमा एकटक देखती रही सोचती हुई कि क्या जीवन सचमुच भाग गया है ? हाँ वह भाग गया है।

—o—

सतरह

शैला के महल से निकल कर जीवन रात भर चलता रहा···दिन आया··· और सूरज की रोशनी में तपता-तपता जब साँझ की सवारी उतरी तो उसके साथ-साथ वह एक पीपल के पेड़ के नीचे आ बैठा। पेड़ के चारों ओर नजर फेरी तो समीप ही एक छोटी-सी झोंपड़ी में एक दीप की ज्योति टिमटिमा रही थी। रोशनी देखते ही वह उठा और उठकर चल पड़ा।

झोंपड़ी अब समीप थी उसके पास आया, झाँक कर देखा, एक लड़की, एक बूढ़ा···बूढ़े की दाढ़ी पर सफेदी और ··और वह रोटी खा रहा है। उसके दांत टूट गए हैं।

झोपड़ी के दरवाजे पर खड़ा-खड़ा जीवन देखता रहा। लेकिन अधिक देर तक वह खड़ा न रह सका। रात और दिन भर पैदल चलने के बाद उसके पाँवों में अकड़न-सी आ गई थी, कुछ विश्राम चाहता था। इसलिए आगे बढ़ा और झोपड़ी के दरवाजे से झांक कर बोला—"अरे, बाबा! आज रात भर के लिए जगह दोगे ?"

बूढ़ा तो रोटी खा रहा था, पर उस झोपड़ी में दो काली कजरारी आँखें चमक उठीं। एकाएक उसके सामने वह लड़की आ खड़ी हुई, उसने एक बार भरपूर नजर से जीवन की ओर देखा और फिर मुसकरा कर बोली—"अरे, तुम कौन हो ?"

"एक राही। चलते-चलते थक गया हूँ। साँझ का सूरज डूब गया है और चाहता हूँ कि यहाँ रात भर सोने के लिए जगह मिल जाए।"

"यहाँ ··· इस झोपड़ी में ··· ?"

"हां ···क्या आप को एतराज है ?"

"नहीं, मेरे अब्बा खाना खा रहे हैं। आप यहीं ठहरें। मैं अभी पूछ कर आती हूँ।"

उधर बूढ़े ने आवाज सुन ली थी और अपनी रोटी भी खा चुका था। हाथ मुंह धोकर बाहर आया। देखा तो सामने कोई खड़ा है और उसकी बेटी एक टक उसे देख रही है। वह अजनबी को देखकर बोला–"कौन है, बेटी ! क्या इसे तुम जानती हो ?"

लड़की घूमी, उसकी आँखें झुकीं और वह दो कदम पीछे हट गई, तो बूढ़े ने आगे बढ़कर जीवन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा–"आओ, बेटा ! आओ न। भला झोंपड़ी में आने से इतनी हिचक क्यों ? मैं तो जानता था कि एक न एक दिन तुम इस झोपड़ी में जरूर आओगे !"

"आप जानते थे···यह क्या कह रहे हो, बूढ़ दादा !"

"हां···हां, मैं जानता था, बेटा !"

"सो कैसे··· ?"

"यह बाद में बताऊंगा। पहले तुम कुछ खा-पी लो। लेकिन हाँ···तुम्हें कुछ इतराज तो नहीं !" फिर वह अपनी बेटी की ओर घूम कर बोला–"अरी खड़ी क्या है, बानू ! जल्दी से पडाईन की झोपड़ी से कुछ खाने-पीने के लिए ला।"

जीवन समझ गया। उसने कहा—"क्यों, तकलीफ कर रहे हो, दादा ! मुझे भूख नहीं हैं।"

"रहने भी दो, बेटा। चेहरे से मालूम हो जाता है, कि तुम भूखे हो, या नहीं।"

"तो फिर एक ग्लास पानी दे दो।"

"पानी···नहीं···पानी-खाना सब पडाइन के घर से आ जायेगा, बेटा ! तुम इस चटाई पर आराम करो।"

"लेकिन पड़ाईन के घर से क्यों मँगा रहे हो, दादा ! तुम्हारे पास क्या कोई बर्तन नहीं ?"

जीवन की बात पर बूढ़ा अनायास जोर से हंस पड़ा। बोला–"बर्तन··· बाबू ! यह भारतवर्ष है···हिन्दुस्तान है, यहां तो छोटे से छोटे परिवार में भी धातु के बर्तन मिलेंगे, बाहर वालों की तरह हम मिट्टी के बर्तन नहीं

रखते ···लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तान गरीब देश है यह बिल्कुल गलत है, दादा ? बिल्कुल गलत।"

जीवन के मन में एक लहर उठी। बूढ़ा सयाना है इसे तजुर्बा है और उसने उसके विचारों से खुश होकर पूछा—"यह तो हकीकत है, दादा ! यदि ऐसा न होता तो हमारे यहाँ बेकारी-भूखमरी और यह सब बातें क्यों होता ?"

"तुम तो पढ़े लिखे जान पड़ते हो, बेटा ! यह सब बातें तो हर जगह किसी न किसी मांइने में नजर आती हैं। लेकिन जो ऐसा समझते हैं, यह उनकी अक्ल की खूबी है, बेटा ! वरना हमारे देश की जनता के पास इतनी पूंजी पड़ी है, कि उससे कई पाँच साल के काम पूरे हो सकते हैं, देश को नई जिन्दगी मिल सकती है, बेटा ! लेकिन यह गाँव या शहर में रहने वाले हमारे देश के नागरिक अपनी खुदगर्जी के मारे देश को आगे बढ़ने से रोक रहे हैं ··· खुदगर्जी को नहीं छोड़ पाते ···।"

बूढ़े की बात उसके मन में अपील कर गई। उसने मुस्करा कर कहा—"वाह-दादा ! आज तो तुम से मिलकर मैं धन्य हो गया ! लेकिन इस बियाबान में तुम क्या करते हो ?"

इस पर बूढ़ा कुछ हंस पड़ा और अपनी बेटी वानू की ओर देखकर बोला—"अरी, अभी तक यहीं खड़ी है। बाबू के लिए कुछ ले तो आ !"

बानू जाने लगी। जीवन को देखती-देखती वह चली, तो जीवन स्वयं उठ पड़ा और उसे रोकते हुए बोला—"बानू। ठहरो, तुम मेरे लिए माँगने न जाओ।"

"न जाऊं ··· क्यों ?" बूढ़े ने कहा।

"इसलिए कि मैं आप का मेहमान हूं। मेहमान के आदर भाव के लिए किसी से कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं।"

"माँगने की बात नहीं बेटा ! सामान तो अपने पास भी पड़ा है, लेकिन जाति-पाँति की बात है। तुम तो स्वयं समझ गए होगे, कि ···।"

"हाँ ··· समझ गया हूं और जहाँ हृदय साफ है, वहीं सब कुछ पास है, दादा! तुमने दुनिया देखी है, पर जब तक यह जाति-पाँति की भावना

चलती रही, तब तक दुनिया में उपद्रव होते ही रहे ··· मुझे इसमें इतराज नहीं, तुम्हारे बर्तन से पानी पी लूंगा।"

"पर गाँव के लोग तो मुझे बुरा कहेंगे !"

जीवन कुछ कहने वाला था, कि बानु बोल उठी—"नहीं, बाबू !"

"तुम्हारे मन में अन्धेरा है। तुम्हें तिजोरी से तो हमारे गाँव के लोगों को सदा से ही घृणा रही है। हमारे गाँव के लोग इतने सकरे दायरे के आदमी नहीं, जो इतना सोच सकें।"

"तो बस पानी पिला दो, बानू !"

बानू दौड़ी। भीतर से पानी ले आई। शीशे का गिलास उसमें कुए का साफ-साफ पानी और बानू की काली बरौनियों के बीच छलकती सफेद पुतलियों को देखकर जीवन क्षण भर के लिए भूल गया अपने को ··· बूढ़ा उसके सामने ही खड़ा था। जीवन को एक टक देखते, देखकर, बोला—"क्यों क्या देख रहे हो, बेटा ? जवानी ··· का हर फल ऐसा ही होता है···यह भी जिन्दगी का एक समय है, जब सब कुछ हरा ही हरा नजर आता है ··· यह मेरी बेटी बानू है, इसे तो समझ गए होगे।"

"हाँ ··· पढ़ती हैं, या नहीं ?"

पूछकर उसने ज्यों गिलास अपने होठों से लगाया, त्यों बानू ने शीशे की तश्तरी में सूखे मोती चूर के लड्डू लाकर रख दिए और उसकी ओर देख बोली—"नहीं, बाबू ! खाली मुंह पानी नहीं पीते। कुछ खा लो ···।"

जीवन ने उसकी ओर देखकर मोती चूर का लड्डू अपने मुंह में रखा और दाँत के बीच दबाकर बोला—"बहुत सख्त है बानू।"

"हाँ, बाबू ! बहुत दिन के हैं न।"

"तुमने बनाया था, क्या ?"

"नहीं, मेरे मामू जान आए थे, तो वह ले आए थे।"

जीवन ने आगे कुछ नहीं कहा, वह गिलास का पानी पीने लगा। पानी पीने के बाद जब उसकी थकान कुछ दूर हुई तो बानू के अब्बा ने कहा—

"बेटा, हम किसान हैं। तुम्हारी खातिर नहीं कर सकते। अब कुछ देर के बाद खाना खा लेना। तब तक आराम करो। मैं जरा खेत से हो आऊं ?"

'ठीक तो है, दादा ! आप खेत से हो आइए मैं घर की रखवाली करूंगा।"

"हाँ, बेटा ! तुम बाहर सो रहो। फिर बानू की ओर देखकर वह बोला—"बानू ! बेटी। बाबू के लिए कुछ खाने पीने का इन्तजाम कर देना बेटा। मैं रात को खेत से लौटूंगा।"

"जरूर कर दूंगी, अब्बा।"

"अच्छा, बाबू ! अब मैं चल रहा हूँ।"

"आज न जाओ न दादा।"

"क्यों ... ?"

"अपनी अकेली लड़की को छोड़ कर ...।"

इस पर बूढ़ा हंस पड़ा। अपनी डाढ़ी पर हाथ फेर कर बोला—"हमारी लड़कियाँ ऐसी नहीं होतीं, बेटा। फिर तुम सोचो न कि अगर लड़की किसी लड़के से मोहब्बत करना ही चाहती है, तो माँ-बाप तथा उसके भाई-बन्धु क्या कर सकते हैं, मुझे अपनी बानू पर पूरा-पूरा विश्वास है।"

कहता हुआ वह वहाँ से चला गया, तो जीवन भी उस स्थान से उठ आया और बाहर चौपाल पर पड़ी चारपाई पर बैठ रहा। उसके साथ ही बानू भी उठकर बाहर आई। उस समय सांझ छिप गई थी और रात चाँदनी से नहाकर चाँद से अठखेलियां कर रही थी। बानू ने एक टक उसे देखा और फिर बड़े नाज से बोली—"बाबू। तुम क्या खाना चाहते हो ?"

"इच्छा तो कुछ भी नहीं है, बानू !"

"तो एक गिलास दूध पी लो न।"

"हाँ, मेरा भी यही विचार है। क्यों, इस वक्त चूल्हा जलाओगी, छोड़ो दूध पी लूंगा।"

"तो अब मैं चलूं।"

"क्यों, बैठो न।"

"क्यों, क्या कुछ काम है ?"

"नहीं, तुम्हारे गाँव नगर के बारे में कुछ जानना चाहता हूं।"

"सो क्या ?"

"यही कि तुम्हारे गाँव में पाठशाला वगैराह है, या नहीं।

बानू हंस पड़ी। फिर अपनी हंसी को रोकती हुई बोली—"बाबू हमारे गांव में कोई अनपढ़ नहीं है। न स्त्री, न पुरुष।"

"बड़ी अच्छी बात है। वह तो तुम्हें देखकर ही समझ गया था ....।"

बानू अपने गाँव की प्रशंसा सुनकर खुश हो उठी। बात के विषय को बदलती हुई बोली—"अच्छा, इन बातों को छोड़ो, बाबू ! तुमने तो अपना नाम पता-गाँव कुछ बताया नहीं।"

"हाँ-हाँ, मेरा नाम है जीवन। हर गाँव-नगर तो अपना ही है, बानू ! फिर कैसे कहूँ, कि कौन-सा गाँव अपना है, बानू।"

"आखिर तुम्हारा जन्म तो कहीं हुआ होगा न !"

"जन्म-भारत में हुआ।"

"सो तो ठीक है, लेकिन मेरा मतलब आपके माता पिता से है।"

जीवन ने मुस्करा कर कहा— माँ-बाप। संसार के सभी माँ-बाप तो अपने ही माँ-बाप हैं; बानू !"

बानू विवश हो गई और उसने खीज कर कहा—"अजीब हो बाबू ! तुम्हारे जैसा आदमी तो आज तक नहीं मिला था।"

"अब तो मैं मिल गया हूँ न। अब तुम बताओ कि क्या-क्या करती हो।"

"अभी तो पढ़ती हूँ और अपने अब्बा के साथ खेत का काम भी देखती हूँ।"

"और कोई परिवार में नहीं है ?"

"थे, लेकिन चाचा जान, चाची की चमक-दमक में आकर पाकिस्तान चले गए।"

"और तुम लोग क्यों नहीं गए ?"

यह सुनते ही बानू कुछ उदास हो गई। फिर अपनी उदासी को आप संभाल कर, बोली–"हम ''' हम क्यों जाते बाबू, जब हमारी रक्षा भारत सरकार कर रही है, जहाँ हमने अपनी सखियों के साथ झूले झूले, सावन के गात गाए, ईद, बंकरीद, होली, दिवाली में एक साथ बैठकर खुशियाँ मनाईं, भला उन भाई बहनों, चाचा-चाची और हमजोली सखियों को छोड़कर कहाँ चली जाती, जीवन बाबू !"

"बहुत खूब ! तुम्हारे विचार बहुत सुलझे हुए हैं, बानू ! अच्छा, जाओ अब सो रहो। चाँद छज्जे के नीचे उतर रहा है।"

"नींद नहीं आ रही है, बाबू।"

"अच्छा, तो अपने गाँव के बारे में बताओ। तुम्हारे गाँव में सब लोग खुश हाल तो हैं न ?"

"खुश हाल, जिस देश के लोग अपनी कमजोरी को समझ कर दूर कर लेते हैं, वे सदा खुश हाल रहते हैं, बाबू ! हमारे गाँव में सब खुश हाल हैं, पर कुदरत के आगे हम क्या कर सकते हैं। इस साल तो गाँव की सारी फसल बरबाद हो गई।"

"वह तो मालूम है, लेकिन साहस रखो, यह मुसीबत भी दूर हो जायेगी !"

"किसान अपनी हिम्मत कभी खो नहीं सकता, बाबू ! भला इससे अधिक बरबाद करने वाला कौन होगा ?"

जीवन का मन पुलक उठा। बानू के मुँह से यह सुन कर वह हँस पड़ा। बानू की ओर देख कर, बोला—"सच कह रही हो, बानू ! तुम लोगों का जीवन सबसे महान है। किसान सबसे पवित्र हैं !"

"है न'''लेकिन लोग ऐसा नहीं समझते हैं ?"

"समझेंगे, जरूर समझेंगे, बानू ! अब जाकर सो रहो !"

"कहा न कि नींद नहीं आ रही है, न जाने क्यों तुमसे बातें करने को बहुत जी चाहता है, बानू !"

"बानू'''क्या कह रही हो ?"

"सच कह रही हूँ, जब से तुम आए हो, जीवन बाबू ! यह जिन्दगी हमेशा सूनी-सूनी सी लग रही थी, वह खुशी की खुशबू से भर उठी है।"

"पागल हो बानू ! भला खुशी की खुशबू भी कोई खुशबू है। यह खुशबू तो तुम उस दिन पा सकोगी, जब तुम्हारा विवाह होगा !"

बानू का चेहरा फक पड़ गया। उसने कुछ टूटे हुए मन से कहा —

विवाह—नहीं बाबू ! मैं तो अपनी सारी जिन्दगी को अब्बा के साथ बिता दूँगी !"

"पागल हो, अब्बा की जिन्दगी कितने दिन की है ?"

"जब तक वह जीवित रहेंगे, तब तक मैं…।"

"यह तुम्हारी दूसरी गलती होगी !"

"गलती क्यों है, बाबू !"

"इस लिए कि विवाह मानव जीवन के लिए उतना ही जरूरी है जितना भोजन, कपड़े और…पानी, हवा !"

बानू ने मुस्करा कर कहा—"हाँ…ठीक कहते हो, पर सोचने की बात है, कि अनमेल विवाह से क्या फायदा। अगर विवाह जरूरी है, तो मर्द-औरत में झगड़ा क्यों होता है ?"

"झगड़ा…यह तो आपसी स्वभाव की बात है, बानू ! हर मर्द-औरत के विचार एक से तो नहीं होते…।"

बानू कुछ उत्तर देने वाली थी कि एकाएक दूर से किसी के गाने का स्वर आकर उसके कान में समा गया। गीत का स्वर सुनते ही बानू ने गीत की ओर जीवन का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा—"छोड़ो, इन बातों को। यह आवाज सुनो। गीत का स्वर कितना अच्छा है ?"

"हाँ…सो तो सुन रहा हूँ। गाँव के गीतों का स्वर सचमुच कुदरती होता है, बानू ! कौन गा रहा है, यह ?"

"एक पागल है। रात को गांव बाहर के मन्दिर में तो कभी मस्जिद में बैठ कर ऐसे ही राग अलापता रहता है और तो और सितार इतना बढ़िया बजाता है कि बस पूछो न !"

"तुमने उससे पूछा नहीं, कि इतना अच्छा संगीत जानने के बाद भी वह पागल सा क्यों घूमता है ?"

"मुझे क्या गरज पड़ी है, बाबू ! पर गाँव के लोग कहते हैं कि वह किसी लड़की की मोहब्बत की दरिया में डूब गया था, जब उस दरिया को पार न कर सका, तो पागलों की पतवार पकड़ कर ऐसे ही घूमता रहता है।"

"हूँ—उसने मोहब्बत की थी...सच यह बहुत बुरी चीज होती है, न बानू !"

"मुझे तो इसका तजुर्बा नहीं बाबू ! क्या तुमने कभी इसके बारे में तजुर्बा हासिल किया।"

"तजुर्बा, बानू ! हर मानव-जीवन के समय में एक ऐसा अवसर आता है, जब वह किसी न किसी को प्रेम करना चाहता है और जब सामाजिक कुरीतियों के कारण सफल नहीं हो पाता, तो कुछ कह कर अपने मन को शान्त कर लेता है !"

"तो इसका मतलब है, बाबू, कि तुमने इसका तजुर्बा किया है।"

"ऐसा तो नहीं बानू और है भी...मैंने जीवन में केवल एक को प्यार किया है, केवल एक को, और उससे...।"

"एक को, वह कौन, बाबू !"

"तुम जैसी ही एक भोली-भाली और क्रान्तिकारी लड़की, जिसमें सामाजिक कुरीतियों के विरोध करने में ही नहीं, उसको सक्रिय रूप देने में गजब की तेजी रखती है।"

"तो उसके विरह में तुम भटक रहे हो ?"

"नहीं, मैं तो गाँव-गाँव के लोगों को जगाने के लिए घूम रहा हूँ, बानू ! अच्छा, अब इन बातों को छोड़ो, यह बताओ तुम गाना जानती हो या नहीं ?"

"क्यों...?"

"इसलिए कि रात सूनी लग रही है। जब मुझे एकान्त मिलता है और कहीं कोई अपना नजर नहीं आता तो प्रकृति को सामने रख कर अपने-आप गुन गुना उठता हूँ।"

"प्रेमी लोग ऐसा ही करते हैं, बानू !"

"पर मैं दुख भूलने के लिए नहीं गाता, बानू ! मैं तो अपने मन का मूड़ बदलने के लिए"।"

"तो मुझे भी एक गीत सुना दो न !"

"बानू"मेरे गीतों को न सुनो।"

"क्यों, क्या मेरे कान फट जायेंगे ?"

"उससे भी बड़ा दर्द तुम्हें मिल जायेगा !"

"छोड़ो, बाबू ! मुझे यह रोग नहीं लगता। तुम खुशी से गाओ न !"

जीवन कुछ सोचने लगा था कि पुनः किसी के गाने का स्वर सुनाई पड़ा, उसकी आवाज सुन, वह बोला—"बानू ! सचमुच पगले का गला बहुत अच्छा है। ऐसा तो मैं कभी नहीं गा सकता !"

"यह मैं कैसे कह सकती हूँ, जब तक आपके गीत न सुन सकूँ।"

"सच, तो बानू ! तुम मेरा इम्तहान ले रही हो ?"

"नहीं–जब दो आदमी अदालत के सामने खड़े होते हैं, तो दोनों की बात सुनने के बाद ही तो जज फैसला लिखता है, जीवन बाबू !"

"लेकिन मैं इम्तहान देना नहीं चाहता।"

"न दीजिए, फिर मैं फैसला भी नहीं दे सकती कि आप उससे अच्छा गाते हैं, या नहीं।"

'तुम्हारे फैसले की जरूरत नहीं। अब जाकर सो रहो। मुझे भी नींद आ रही है। दिन भर का थका हूं, कुछ देर आराम कर लेने दो। सुबह होते ही किसी मंजिल पर चल दूँगा।"

"चल दूँगा। इतनी जल्दी, अभी तो अच्छे खासे जवान हो, जीवन बाबू ! भला इस तरह किसी मेहमान को हम जाने देते हैं। अब तो आप को दो चार दिन रहना ही पड़ेगा।"

"मेरे रहने से क्या फायदा ?"

"यह तो गाँव को जब पता चलेगा, तब आप देखेंगे, कि लोग आपका कितना आदर करते हैं।"

"यानी तुम चाहती हो, कि मैं पुलिस के हाथ में चला जाऊँ।"

"पुलिस···यह क्या कह रहे हो, जीवन बाबू ! बानू ने भयभीत स्वर में पूछा ?"

"नहीं···नहीं···पुलिस से मेरा मतलब यह कि मैं अजनबी हूं, पुलिस न जाने मेरे बारे में क्या सोचे, बानू ! मैं यहाँ किसी तरह नहीं रुक सकता।"

"रहने भी दो, हम भारतीय अपने मेहमान को इतनी जल्दी नहीं जाने देते !"

"नहीं···बानू ! मैं नहीं रुक सकता। तुम मुझे गलत समझने का प्रयास न करो, बानू !"

उसके गले से निकली आवाज दर्द भरी थी और यह आवाज बानू के दिल में बिजली की तरह जा लगी, उसकी चोट से बिलबिला कर बोली—"जीवन बाबू ! न रुको यह तो तुम्हारी तबियत की बात है। पर एक बात बताओ न, कि क्या अगर वह भी तुमको रोकती, तो क्या तुम नहीं रुकते ?"

"वह कौन···?"

"वही, जिससे तुमने मोहब्बत की थी ?"

"व्यंग न कसो...बानू ! मैंने जिसे प्यार किया, उसे हमेशा के लिये, नहीं तो तुम जैसी कितनी युवतियों ने न जाने इस हाड़-माँस के शरीर में क्या देखा, जो मेरी प्रेमिका बनने के लिए तरस उठी···।"

"सच···तुम्हारी आदत और जेहन के साथ-साथ कुदरत ने तुम्हें सुन्दर और सरल भी बनाया है। स्त्रियों को और चाहिए ही क्या···पर तुम्हारे दिल की दरिया का पानी कैसा है, इसे वे नहीं पहचान सकी !"

"झूठी तारीफ न करो, बानू ! मैं भी वही इन्सान हूँ !"

"लेकिन इन इन्सानों से तुम इन्सान कहलाने काबिल हो, जीवन बाबू ! सचमुच ही वह कितनी खुश किस्मत वाली है, जिसने तुम्हारे दिल का प्यार पाया है।"

न जाने क्यों जीवन के अधर खुल गए और वह हँस पड़ा। फिर

हंसकर, वह बोला—"पागल हो, बानू ! [दिल का प्यार ! अरे, कहीं आज तक स्त्री के प्यार को भी कोई पहचान सका है ?"

"पुरुष का प्यार भी तो कोई स्त्री नहीं पहिचान सकती, जीवन बाबू !"

"सच, परन्तु पुरुष यदि अपनी पत्नी अथवा प्रेमिका से छिपकर किसी दूसरी स्त्री को प्यार करे और इस बात को छिपाना चाहे, तो वह नहीं छिपा पाता, लेकिन स्त्री प्यार ही नहीं, अपना सर्वस्व अर्पण करने के बाद भी यदि उसे छिपाना चाहे, तो वह छिपा सकती है, उसका पुरुष जल्दी नहीं समझ सकता !"

"बस-बस रहने दो, जीवन बाबू !"

"क्यों, नाराज हो गई बानू ?"

"और क्या ''जो ऐब हैं, वे सभी स्त्रियों में है, पर पुरुष बगुला भगत से क्यों शिकार में लगे रहते है ?"

"यह भी पुरुष की ना समझी है, जैसे की आज की युवतियों में जो चरित्र को महत्व न देकर, उच्छृखलता को अधिक महत्व पूर्ण मानती हैं। यही दशा पुरुषों की है, वे देश-काल और अपने नैतिक स्तर से नीचे उतर गए हैं। इसमें दोनों का दोष है, बानू ! पर विश्वास रखो, कि जिन देशों का नैतिक चरित्र पतोन्मुखी प्रकृतियों का शिकार होता है, वे पनपने में सफल नहीं होते !"

"तो तुम्हारा विचार है कि सब युवतियाँ ऐसी हैं ?"

"लगभग ''जब सब लड़के ही ऐसे है, तो लड़कियाँ क्यों न हो ! देखती हो, शहरों में कभी गई हो ?"

"गई हूँ, देखा है। तो क्या हम गाँव की लड़कियों को भी तुम ऐसा ही समझते हो ?"

"जब एक बीमारी का प्रकोप होता है, तो उसके आस-पास के इलाके भी उसकी चपेट में आ जाते हैं, बानू ! गाँव हो, चाहे शहर—हर एक नागरिक जायज-नाजायज रूप से कमाओ, खाओ और आनन्द की सामग्री-नारी के साथ

खूब भोग विलास में लिप्त रहो। यही जीवन है, यही इस युग की प्रगति है, बानू।"

"हां ...यह ठीक है, बाबू! हमारे गाँव में भी एक नेतागिरी का ख्याल रखकर घूमता रहता है और अक्सर गाँव की लड़कियों पर वह अपनी नजरें फेंकता है।"

"तुम लोगों ने जवाब नहीं दिया ?"

"जवाब, गाँव को जानते ही हो ?"

"पर तुम्हारा गाँव तो काफी आगे है न ?"

"हाँ ...है भी, नहीं भी।"

"यह क्यों ?"

"इसलिए कि उस जैसे नेता के विचार हैं कि स्त्री केवल भोग्य की वस्तु है।"

"कौन कहता है।"

"वही मेरे गाँव का नेता।"

"बस...उसे समझा दो न...नहीं माने तो एक दिन सब लड़कियाँ मिलकर उसे खूब बनाओ। देखो, वह क्या करता है।"

"तुम्हारी राय से पहले हमने उसकी अच्छी दवा कर दी है, जीवन बाबू! अब आप सोओगे। मैं भी जा रही हूँ।"

दबी जबान से कहती हुई बानू उठ पड़ी और जीवन से दूर हटकर अपनी चारपाई पर सोने के लिए जा रही थी, कि उसके अब्बा आ गए। बेटी को सोने की तैयारी करते देखकर बोले—"क्यों री। तू अब तक जाग रही है।"

"हाँ, अब्बा। जीवन बाबू से बातें कर रही थी। बड़े अच्छे आदमी हैं।"

"सो तो मैं बहुत पहले समझ गया था बेटा। जब वह गाँव में लेक्चर देने लगता था तो बस मजा आ जाता था। अच्छा, अब सो रह। मैं भी सोने जा रहा हूं।"

कहकर बानू के पिता चले गए और बानू अपने मिट्टी के घर में पड़ी-पड़ी आकाश की ओर तारों से आंख मिचौनी खेलती न जाने कब सो गई।

—o—

अठारह

सूरज डूब गया, तो मधुमा अपने स्कूल से पढ़ाकर लौटी। घर आकर देखा तो उसके पिता मुखिया राम कपड़े पहन कर सिर पर पगड़ी बाँध रहे थे। पिता के सामने पहुंचते ही वह तपाक से बोली– "काका ! कहाँ की तैयारी कर रहे हो ?"

मुखिया राम ने पगड़ी को सिर पर लपेटते हुए कहा–"बेटा ! आ गई तू। बड़े समय से आई है।"

"क्यों–क्या आज खास बात है ?"

"हाँ, बेटा ! रियासत ने हमारे ऊपर खेतों से बेदखली करने का अदालत में दावा कर रखा है। कल सुबह की तारीख है। इसलिए इसी वक्त चला जा रहा हूँ।"

"खेतों की बेदखली।"

"हाँ, बेटा।"

"पर खेत तो हमारे हैं, जो इस खेत को सर्दी-गरमी और बरसात के ओले सहकर जोतता है, खेत उसका है, न कि उसका जो कमरे में बैठकर खस की खुशबू की हवा खाता है।"

मुखिया राम पगड़ी बांध चुके थे। सामने ही मधुमा का शीशा रखा था, उसे उठाकर पगड़ी की नोक-झोक देखकर बोले–"बेटा, यह सब बातें बेकार हैं। यह जमाना दौलत का है, भला हम किसान कर भी क्या सकते हैं ?"

मधुमा हंस कर बोली–"अपनी शक्ति को न भूलो, काका। हमारी शक्ति उनसे कहीं अधिक है ?"

पर मुखिया राम ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया, बात बदल कर वह बोले—"अच्छा-अच्छा, बेटा ! मैं जा रहा हूं। तू यहाँ देख भाल करना और मैं यही दो तीन दिन में आ जाऊंगा।"

"दो तीन दिन। वहाँ क्या करोगे, काका।"

"मोकदमे की तारीख देखने के बाद वहाँ से शहर चला जाऊंगा।"

"क्यों, शहर में क्या काम है ?"

"खेतों के लिए बीज लाना है।"

"तो जरूर चले आना, परसों। नहीं तो मेरा जी डूबने लगता है काका।"

"मैं खुद नहीं जाना चाहता, बेटा ! पर गांव के सब किसानों का मामला है। अगर न गया तो भला लोग क्या कहेंगे। मुखिया इस लिए तो हमें लोगों ने नहीं बनाया कि उन पर मुसीबत पड़े, तो हम अपने कर्तव्य को भूल जायें।"

."नहीं-नहीं काका ! पहले गांव का भला हो फिर अपना।"

मुखिया राम ने स्नेह से बेटी को गले लगाया और मधुमा के सिर पर हाथ फेरते हुए बोले—"बहुत नेक विचार हैं···बहुत नेक विचार हैं। अच्छा अब चलने दो !"

"जल्दी चले आना ?"

'जरूर चला आऊंगा।"

"तो कुछ खाना-वाना नहीं खाओगे !"

"खाना तो रामदेव ले जा रहा है, हमीदा के अब्बा भी है। तू इतना क्यों डरती है ?"

"तुम्हारी उम्र अधिक है। दुश्मनों की यह दशा है ?"

"दुश्मन भी अपने दोस्त हो जाते हैं, बेटा। फिर मैं अकेला तो नहीं हूँ, गांव के सब लोग है। तू चिन्ता न कर।"

कहते हुए मुखिया राम घर से निकल पड़े। उनके चले जाने के बाद मधुमा बहुत देर तक अपने घर के दरवाजे पर खड़ी जाने वाले पिता को देखती रही, फिर वापस लौट कर उसने दोपहर के पराठे से भोजन किया और स्कूल के पुस्तकालय से कोई पुस्तक ले आई थी, उसे पढ़ने के लिए चारपाई पर लेट गई और सामने का दरवाजा खुला रहने दिया। उसके दरवाजे के सामने एक घर था। घर क्या पक्की कोठी थी, उसमें रहते थे कुछ लोग। ये लोग गाँव में रचनात्मक काम करने के लिए आए थे, इनमें से अधिकतर जवान थे, इसलिए

मधुमा दिन अथवा रात को जब भी होता अपने उस कमरे में कभी कुरसी पर लेटी-लेटी उसकी ओर देखा करती, तो कभी चारपाई पर, उन लोगों से मधुमा की मित्रता भी हो गई थी। वे लोग मधुमा के लिए कभी मेगजीन पढ़ने के लिए भेजते तो कभी कुछ। पुरुष वर्ग की ओर से प्रायः प्रेम करने का सूत्र पात पुस्तक-पत्रिका के द्वारा ही हुआ करता है, इसलिए मधुमा से भी वे लोग प्रेम करते थे और मधुमा भी जीवन को भूलकर उन छोकरों की तड़क भड़क में आ गई थी। उधर जब जीवन उसके घर जाता तो वह मधुमा का व्यवहार देखकर दंग रह जाता था। अब जीवन दूर चला गया था। मधुमा स्वतन्त्र भी, क्यों न होती, जब जीवन इतने दिनों उससे अलग रहा, तो वह क्यों न अपना दूसरा साथी खोज लेती ?

आज कुछ दिनों से वह इन रहने वालों में से किस को प्रेम करने लगी थी, यह तो नहीं मालूम हो सका था। पर वह अब चिन्तित रहने लगी थी। इस चिन्ता को दूर करने के लिए वह पुस्तक पत्रिका से मन बहलाती और जब उसके मकान के सामने वाली बुर्जी का उसका प्रेमी आ जाता, तो वह खुश हो जाती, अपनी कुरसी खींचकर दरवाजे के सामने कर लेती और कभी अपने बदन का उभार दिखाकर उसे प्रेम करने का सन्देश देती, तो कभी आंख मिलाकर उनसे मुस्करा लेती।

मुखिया राम के चले जाने के बाद घर सूना था, सूनेपन में मन की कामनाएं बहुत तेजी से बढ़ती हैं, इसलिए मधुमा के मन में कुछ जागा, कुछ उठा और उसके मन ने निश्चय किया, कि वह अपने नये साथी से मिलेगी, उसके सामने अपने प्यार का अस्तित्व लुटा कर सदा के लिए उसकी हो जायेगी। पर दूसरे क्षण जब जीवन का ध्यान आया, उफ निकल गया उसके मुंह से। फिर अपने को सभाल कर वह अपने आप जाने क्यों खुश हो पड़ी और दरवाजे की ओर देखने लगी थी, कि उसके दरवाजे के सामने एक छाया आ खड़ी हुई। टिमटिमाती लालटेन की रोशनी में छाया को देखते ही संभल बैठी। क्षण भर वह छाया मधुमा की ओर सामने वाली बुर्जी पर खड़े युवक को देखती रही। फिर वह हंसी और आगे बढ़ती हुई बोली—"पहचान रही हो, मुझे।"

"तुम कौन हो ? यह लम्बी दाढ़ी और बाल।"

"पहिचानने की कोशिश करो न ?"

"आवाज से पहचान रही हूँ !'

"अब चेहरे को गौर से देखो !"

मधुमा ने भयभीत हाथों से लालटेन उठाकर उसके चेहरे को देखा और एका-एक बोल उठी—"तुम...जी...व...न ! इस वक्त, ऐसे वेष में। यह क्या बना रखी है अपनी शक्ल ?"

"अपनी शक्ल तो जैसी है, अब ठीक है। पर तुम इस बुर्जी के जवान की नजरों से क्या बातें कर रही थी ?"

मधुमा के चेहरे पर मुर्दनी छा गई। सत्य अपने आप उसके चेहरे पर उभर आया। फिर भी उसने अपने को छिपाने के लिए कहा—"कुछ नहीं ! सामने की बुर्जी वाले फिलम में काम करते हैं। उनके पास पत्र-पत्रिकाएं आती हैं, वे मेरे पास पढ़ने के लिए भेज देते हैं ?"

"बहुत उपकारी जान पड़ते हैं। खैर, अच्छी तो हो ?"

"हाँ, अच्छी हूं ! पर तुम कहाँ से आ टपके ?"

"तुम्हारे प्रेम में बाधा डालने के लिए नहीं आया हूं बल्कि तुमसे, तुम्हारे पिता से मिलने की बहुत इच्छा थी।"

"मेरा प्रेम...मेरा प्रेम केवल एक तक ही है, वह तुम हो जीवन ! बैठो तो सही, खड़े क्यों हो ?"

"अब यहां बैठना भी मुझे भार सा लगता है, मधु !"

"यह क्यों ? क्या मधुमा से अब इतनी घृणा हो गई ?"

'घृणा तो कभी हुई, न कभी होगी!"

"फिर ऐसा क्यों करते हो ?"

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि मैं तुम से घृणा करता हूँ। क्या इस भावना का अर्थ यह नहीं कि तुम मुझे भूल चुकी हो, जब मैं तुम्हारे पास नहीं रहा, तो तुमने क्या यह नहीं सोचा कि जीवन अब नहीं आयेगा, वह चला गया, यह सोचकर

तुमने पुनः प्रेमियों तथा, अपने अभिभावकों को चुनना शुरू किया और मिला भी तो कोई फिल्म वाला, तो कोई नकल वाला नकलची।"

"तो तुम्हें ईर्ष्या क्यों हो रही है ?"

"मुझे ईर्ष्या, मधु नहीं""अभी तुम अपने सामने वालों के सामने अपने यौवन का उभार दिखाने के लिए लेटी थी! इस वक्त भी तुम मुझसे बातें कर रही हो, मेरी ओर देख रही हो, पर तुम्हारा ध्यान फिल्मी सितारों के ऊपर है।"

"जो भी समझो, वे लोग कहानी लिखने के लिए कह रहे थे।"

"कल तुमसे कुछ और भी कह सकते हैं? सच, तुम अपने व्यक्तित्व की कीमत भी क्यों नहीं समझती ?"

"तो लड़ने के लिए आए हो ?"

"नहीं, लड़ाई करने का युग तो लद गया है, मधुमा। पर तुम्हें देखने आया था, कि हमने अपने प्रेम की जो दिवार चुनी थी, उसकी नींव कहाँ तक पक्की हो चुकी है, पर मैं अकेला ही जोड़ रहा हूँ, यह मालूम हो गया है।"

"क्या मालूम हो गया है ?"

"यही कि अब तुम्हारे दिल दिमाग में दो प्रेमियों का चित्र है।"

"दो प्रेमी"'यह क्यों ? इसकी क्या जरूरत ?"

"यह भी एक प्रकार की लड़कियों तथा लड़कों का कुछ दुविधा जनक स्वभाव होता है, कि दोनों को उलझाये रखो, दोनों मे से जो अधिक अच्छा लगेगा उसे साथ रखेंगे, दूसरे से सम्बन्ध तोड़ लेंगे।"

मधुमा हँसने लगी। फिर अपनी हंसी रोककर वह बोली—"प्रेम के धागे को इतना कमजोर नहीं समझा करते जीवन!"

"धागा इतना कमजोर होता ही है, मधु, कि वह किसी समय भी टूट सकता है, इसी तरह यह मन जो है, वह भी धागे के समान हैं, जो टूट कर कभी इधर से उधर उड़ जाता है। इसमें मनुष्य की निराशा जनक, असन्तोष जनक भावनाएं ही प्रधान होती हैं। तुम अगर किसी से प्यार भी कर रहो हो, तो मेरे प्यार में तो कोई बाधा नहीं आ सकती।"

"मतलब, नहीं समझी जीवन !"

"क्यों इसमें कौन सा गूढ़ रहस्य है ?"

'रहस्य'''नहीं तो क्या है ?"

"यह रहस्य हम खुद अपने आप पैदा करते हैं, स्पष्ट व्यवहार कुशल न होने के कारण जिन्दगी भर कसक-कसक कर जीवित रहते हैं। इससे कहीं अच्छा है, कि जब किसी से किसी को विश्वास न हो, तो'''।"

एकएक बात की धारा दूसरी ओर मोड़ते हुए मधुमा ने पूछा—"यह सब झगड़े बाद के हैं पहले यह बताओ कि कहाँ से आ रहे हो ?"

"जानती हो शैला ने मुझसे विवाह कर लिया और मैं भाग कर आया हूं। वे लोग मुझे जबरदस्ती शैला के गले से बाँधना चाहते हैं।"

"फिर यह दाढ़ी और बाल क्यों ?"

"इसलिए कि स्त्री जाति की आपाधापी देखकर विश्वास उठ गया है इस गृहस्थ एवं पति पत्नी के जीवन स।"

"तो जिसपर विश्वास जमे उससे विवाह कर लो।"

"जिसे कोई अपना बनाकर भी उसका पूरा विश्वास नहीं पा सकता तो भला दूसरों के बनाने से क्या होगा, फिर मैंने तो अब अपने गृहस्थ जीवन की बातों पर सोचन के समय को दूसरे कामों में व्यय करता हूँ। तुम्हें देखने आया था। तुम तकलीफ में तो नहीं हो ?"

"फिर मेरी तकलीफ से तुम्हें सहानुभूति क्यों है ?"

"इसलिए कि जीवन में केवल तुमको मैंने अपनी जीवन संगिनी के रूप में देखा था, तुम्हारे योग्य नहीं था, न हूं, न कभी बन सकूंगा, पर तुम क्या सोचकर इधर-उधर नजरें फेंकना शुरू की हैं।"

"अच्छा चुप रहो, मैं यह सब सुनने के लिए नहीं खड़ी हूँ। तुम जहाँ जाना चाहते हो, जा सकते हो ,बांध तो मैंने नहीं रखा है।"

"ठीक कहती हो, भला दो पैर का जानवर भी कहीं बाँधा जा सकता है। चार पैर के जानवर हम होते, तो हमारे चारित्रिक एवं नैतिक क्रियाओं का नियम पूर्वक पालन करते, पर हम तो दो पैर के जानवर हैं और न जाने

कौन सी चीज बटोर लेने के चक्कर में पागल है। धन, महल और अधिक से अधिक शृंगार साधनों की सामग्री।"

मधुमा चुप चाप सुनती रही। अभी तक उसने जीवन की आँखों की ओर ध्यान नहीं दिया था। अचानक उसके आंचल पर उसकी आंखों की पलकों से खून का एक कतरा चू गया, तो लालटेन को उसके पास लेजा कर देखा। जीवन की दाहिनी आंख की बगल से खून निकल रहा था। उसे देखते ही मधुमा ने कहा—"यह खून, कैसा? कहीं से लड़ झगड़ कर आए हो, क्या?

"नहीं, जंगल से पैदल आ रहा था। झाड़ियों की एक टहनी ने आँखें फोड़ देने का विचार किया, पर बच गई आँख!"

"ठीक है, क्या इतनी भी अपनी देख भाल नहीं कर सकते?"

"नहीं कर पाता, तो भी किसी दूसरे के शरीर को तो नहीं, अपने ही शरीर को पीड़ा होनी है। पर दूसरे की देख भाल अधिक करता हूँ।"

"छोड़ो, जो अपनी देख-भाल नहीं कर सकता, वह दूसरों का तथा मेरी क्या कर सकता है?"

जीवन समझ गया। यों तो वह बहुत पहले से ही समझ चुका था कि मधुमा के मन में स्पष्ट भावनाएं तो हैं, पर वह अपनी पुरानी भूलों को मंजूर करने में संकोच करती है, जीवन को प्यार करने के बाद भी वह अभी अपना योग्य पति खोजने से बाज नहीं आती। उसका व्यवहार ऐसा तो नहीं था। इन्हीं सब बातों को सोचते-सोचते उसने नम्रता पूर्वक कहा—"ठीक कहती हो! सचमुच मेरा जन्म ही इसलिए हुआ है कि मैं किसी का कुछ न कर सकूं। मैंने कब कहा है कि तुम को सम्भालने की सामर्थ मुझ में है, मधु! बदल गई हो बदल जाना भी चाहिए, क्यों कि दुनिया का सारा दस्तूर ही बदल रहा है, लेकिन बदलने का मतलब यह नहीं कि तुम अपने स्वास्थ्य को मिटा दो, अपने प्राण गंवा दो!"

"मैं तो अच्छी भली हूं···तबीयत ठीक न होने से कुछ दुबली होग ई हूँ।"

"तबीयत नहीं, कहो कि चिन्ता है?"

"चिन्ता कैसी?"

"चिन्ता-चिन्ता, तुम चिन्ता की चिता पर बैठकर यह सोच रही हो कि किसे चुनूं···किसको जीवन संगी बनाऊं ? जीवन अब विवाहित है, और··· और जीवन के पास है भी क्या, न पद, न, धन, न रहने के लिए घर। अपनी माहवार की वह रोजी भी तो नहीं कमा सकता । ऐसे जीवन से छुटकारा पाने के लिए कौन लड़की नहीं सोचेगी, मधु ! पर जो लोग ऐसा सोचते हैं, वे बुद्धिहीन हैं, छुटकारा तो एक वाक्य में मिल सकता है।"

"इतने वर्षों का सम्बन्ध एक वाक्य में टूट जायेगा।"

"यदि मन में विचार पैदा हो गया, प्रेम में झूठ बोलने की प्रकृति आ गई, तो वह टिकाऊ नहीं होता, मधुमा। इस चुनाव में स्त्री के मन को ही प्रधानता देनी चाहिए।"

"तो यह मेरे मन की बात है, तुम क्यों अपना सर खपाते हो ?"

"इसलिए तुम स्पष्ट व्यवहार नहीं करती।"

"तो तुम लड़ने के लिए आए हो ?"

"नहीं तुम्हें देखने के लिये···और तुमसे पहले देश का प्रश्न था।"

'कैसा प्रश्न ?"

"हड़ताल करने वालों का ?"

"तो इसमें अब तुमसे क्या ? तुम तो रियासत के राजा हो ?"

"रियासत का तो नहीं परन्तु तुमने एक दिन मुझे अपने मन का राजा कहा था, राजे कहा करती थी, तुम। इसलिये मैं अपने को किसी राजा से अपने को कम नहीं समझता।"

"लेकिन तुम तो हड़ताल करने आए थे न ?"

"नहीं, लोगों में यह प्रचार करने, कि देश की दशा शोचनीय है और हम एक रास्ते से गुजर रहे हैं कि हड़ताल करने से देश की हर स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ेगा मधुमा। कल मैंने अपने कुछ मिलने वाले मित्रों द्वारा अपनी आवाज संसद के विद्वान साथियों तथा यूनियन के अध्यक्ष को पहुंचा दी है। यहाँ की सरकार जनता को तकलीफ मे नहीं देख सकती। वह प्रस्ताव मान लेगी पर हड़ताल के दृष्टिकोण से देश की कार्य प्रणाली में नुकसान देह

साबित होती है जबकि देश में तो नहीं, परन्तु सरकार के कोष में धन का अभाव है"

"तो तुम्हारे चिल्लाने से क्या होगा ?"

"माना कि मैं पद पर नहीं हूँ पर अपने मित्रों को गाँव से संसद में भेज ही सकता हूँ मधुमा। यह काम मेरा खत्म हुआ, हड़ताल बन्द हो गई, जनता की मुसीबत टली, अब तुम्हें भी देख लिया, फिर वहीं जाने का विचार है।"

"तो आए ही क्यों ?"

"कह चुका हूं, न जाने क्यों तुम मेरी नस-नस में दौड़ने वाले रुधिर के साथ दौड़ रही हो तो क्या इतना भी अधिकार नहीं कि तुम्हें देख भी सकूं। हृदय और मन शरीर तो तुम्हारे साथ ही है पर जो कुछ सुधारूप में तुमने माला पहना कर दिया था, वह जीवन के लिए युग-युग तक का एक निष्कपट कर्तव्य बन गया है, तुम भले ही कुछ समझो या तुम्हारे समीप रहने वाली तुम्हारी सखियाँ।"

"बैठो तो सही।"

"नहीं, बैठना नहीं चाहता, अब तो अधिक से अधिक पैदल चलने का अभ्यास कर रहा हूँ।"

"क्यों ... ?"

"ताकि गाँव-गाँव में भ्रमण कर सकूँ।"

"लेकिन तुम पर तो कानूनी प्रतिबन्ध है ?"

"कानूनी नहीं, सामाजिक-पुरातनी सामाजिक नियमों के पालन करने वालों की दानवता के कारण मैं स्वयं कहीं नहीं जा पाता।"

"फिर हमारे घर पुलिस तुमको खोज रही थी। यह क्यों ?"

"शैला ने पुलिस में दावा किया होगा, कि मैं उसका पति हूं, या उसने कहा होगा कि उसके घर से बहुत सा माल लेकर भाग आया हूं।"

"तो तुम पुलिस के सामने क्यों नहीं जाते ?"

"हाँ, जा रहा हूँ। लेकिन तुमसे एक बार मिलने की इच्छा थी। अब

जा रहा हूँ ...और सुनो एक बात और कहना चाहता था, वह यह है कि तुम ...जिसके पाने से अपनी चिन्ताओं को दूर कर सको, उसे अपना जीवन साथी बना लो !"

"यह मेरे मन की बात है। तुमसे उधार नहीं माँगती, जब समय आयेगा, तो मैं स्वयं जैसा समझूँगी कर लूँगी। तुम क्यों इसकी चिन्ता करते हो ?"

"इसलिए कि जेल जाने के बाद जिन्दगी की कीमत और भी कम हो जायेगी।"

"लेकिन राजनैतिक आन्दोलनों में भी तो जेल हो आए हो ?"

"उस जेल जाने से इस जेल जाने में अन्तर है, मधुमा !"

"जेल तो बस जेल है। अन्तर कैसा ?"

"अपने तथा जनता के अधिकारों के लिये जेल जाने की बात और है और इस प्रकार के असामाजिक अपराधों के कारण अलग।"

"लेकिन इस तरह पुलिस के पास जाओगे तो क्या वह तुम्हारे साथ कठोरता का बर्ताव न करेगी ?"

"इस कठोर हृदय पर किसी की कितनी भी कटु-कठोरता का घन चले, मुझे कुछ नहीं होगा, मधु ! सच बोलने वाले को इन झूठे आडम्बर से पूर्ण जीवन का जीवन के सामने कोई महत्व नहीं। अच्छा, अब चलने दो, फिर कभी मिलूँगा ! काका कहाँ हैं ?"

"आज ही शाम को शहर गए हैं।"

"सो क्या करने ?"

"तुम्हारे ससुर राजा साहब ने हम गाँव के किसानों पर बेदखली का दावा कर रखा है।"

"बेदखली का दावा ! किसने किया है, मधुमा !"

"शैला के पिता ने ···।"

"और तुमने मान लिया ?"

"नहीं, सब लोग अदालत में गए हैं, देखो क्या होता है ?"

"होगा, क्या ? किसान-गरीब किसान-मजदूर जीतेगा, रियासत की सुगन्ध,

बासी पड़ चली है, मधु ! अच्छा, तुम आराम करो, मैं···मैं अभी शहर जाऊंगा !"

"लेकिन रियासत वाले तुम्हें गिरफ्तार कर लेंगे। तुम न जाओ, जीवन !"

"गिरफ्तारी जेल और जिन्दगी ! पगली हो, इतने किसानों के जीवन का प्रश्न है, उनके बच्चों उनकी बहू-बेटियों की रोटियाँ मेरे सामने हैं, मधुमा ! यदि गिरफ्तार भी करा लेंगे, तो जमानत पर छूटने के बाद न्यायालय के सामने सच्चा बयान दूंगा, चाहे अदालत जो भी निर्णय दे।"

"ऐसा न करो जीवन ! पहले काका को आ जाने दो।"

"काका के आने से पहले ही मुझे वे लोग यहाँ गिरफ्तार कर लेंगे तब-तब तुम्हारे काका को भी सरकार मुजरिम बना देगी, मधुमा !"

"मुझे इसकी चिन्ता नहीं, यदि सचाई हमारे साथ होगी तो हमारी विजय अवश्यम्भावी है जीवन ! हाँ, तुम अगर रियासत के हो गए हो तो काका तो नहीं हो सके हैं।"

"बातें न घनों, मधु ! तुम मेरे लिये इतना मोह भी करती हो और दूसरी ओर हर बात में मुझसे झूठ भी बोल लेती हो। आखिर इससे तुम्हें किस प्रकार का सुख मिल जाता है मैं नहीं समझ पाता।"

"यही मैं नहीं समझ पाती कि तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते ?"

"विश्वास ··· कितना विश्वास करता हूँ पर लोग विश्वास भी दिलाते हैं कि मैं बहुत बड़ा विश्वासी हूं पर अविश्वासी लोगों के मन की भी गहराई नहीं दीख सकती है।"

"तो बताओ कब तुमने ऐसा देखा है।"

"सन्देह न समझो, व्यवहारिक दृष्टि से आज का युग इतना स्पष्ट वादी हो गया है तो भला समाज में रहने वाले स्त्री-पुरुष की क्या बिसात है, मधुमा ! मेरे मन में एक चोर है, मधुमा !"

"चोर, कैसा चोर, मेरे राजे ?"

"राजे सचमुच, तेरे मुख से राजे शब्द कितना प्यारा लगता है, मधुमे !"

"और शैला के मुंह से।"

"हर शब्द, भाषा और विचार जैसे भिन्न होते हैं, वैसे ही हर शब्द, हर

आदमी के मुँह से अच्छे रूप में नहीं निकलते । स्वर-स्वर की विभिन्नता होती है।"

मधुमा उठ खड़ी हुई और जीवन के चेहरे पर लालटेन दिखाती-दिखाती बोली—"जीवन ! मधुमा तुम्हारी रही, रहेगी ! तुम पिछली बातों को भूल, समझ कर भूल नहीं सकते । बड़े त्याग की भावना है।"

"नहीं···नहीं मधु ! मुझमें त्याग नहीं ! मैं स्त्री का शरीर-सौन्दर्य और केवल समर्पण नहीं चाहता, न इस तरह की स्त्री के साथ किसी पिछड़े देश के नागरिक तरक्की कर सकते हैं, न देश की स्त्री समृद्धिशाली हो सकती।"

"क्यों ?"

"तुम्हारे ही नैतिक जीवन और चरित्र पर देश के नौनिहालों की नैतिकता निर्भर है । तुम मुझे कभी-कभी ऐसा शब्द भी प्रयोग करती हो, जो एक पत्नी के मुंह से नहीं निकलना चाहिए।"

"मतलब···?"

"तुम कभी-कभी मुझे भई भी कहती हो न !"

"यह तो हमारी मातृ-भाषा में प्यार से कहा जाता है।"

"इसका दूसरा अर्थ भी तो हो सकता है, मधुमे ?"

"वह क्या ?"

"कि तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहती हो !"

"यह कैसे ?"

"जैसे कि एक प्रकार के प्रेमियों की परम्परा चली आ रही है, कि जब वे अपने प्रेमियों को छोड़ना चाहते हैं, तो लड़की प्रेमी को भाई बनाकर सन्तोष कर लेती है, तो प्रेमी महोदय प्रेमिका जी की राखी लेकर सन्तोष कर लेते है । फिर-फिर जानती हो, मधुमा ! दोनों अलग-अलग जगह ब्याह करके कुछ सफल होते हैं, तो अधिकांश जिन्दगी को कोसते ही मिलते हैं। यही कारण है, कि फिर बाजार में मटकने वाली मटकियों के पीछे पागल बने फिरते हैं।"

मधुमा मुस्करा उठी । फिर उसने खुशी के लहजे में कहा—"लो, हमें तो

याद भी नहीं रहा । अभी तुमने राखी का नाम लिया एक बात याद आ गई ।"

"वह क्या, मधुमा !"

"मैंने सोचा था कि जीवन में जब कभी तुम मिलोगे और जैसे हर एक त्योहार पर पति-पत्नी रोज के झगड़ों को छोड़कर नया दौर शुरू करते हैं, वसे ही मैं अपने अटल निश्चय प्रेम की यादगार में तुम्हारे हाथ में एक लाल सूत का धागा बाँध दिया करूँगी !"

"इसका क्या अर्थ होगा, मधुमा !"

"वह धागा, मेरे स्नेह का रंग होगा—जितना गाढ़ा रंग लाल होता है, वैसे ही हमारे स्नेह का रंग उतना गाढ़ा है ।"

"बस या और कुछ ?"

"और यह लाल धागा हमारे सुहाग की सजीव स्मृति होगी, जीवन ! आज राखी का दिन है । भारत की स्त्रियाँ अपने भाई को राखी बाँधती हैं, और मैं अपने जीवन के साथी जीवन के हाथ में अपने स्नेह का सूत्र बाँधना चाहती हूँ ।"

"स्नेह सूत्र ! बहुत अच्छा कह रही हो । फिर तुम्हारा स्नेह इतनी ऊंची मंजिल पर होने के बाद भी इतना संकीर्ण क्यों है ?"

"संकीर्णता की बात नहीं, जीवन ! तुम्हारे मन में बेकार की बातें हैं। तुम्हारी मधु सदा तुम्हारी है ।"

"फिर हम जीवन के सूत्र में, समाज के शास्त्र में विवाहित अध्याय के अन्दर प्रवेश करन से संकोच करते हैं, यह क्यों ?"

"हर समय एक सी स्थिति नहीं होती, जीवन !"

"लेकिन इस स्थिति का ज्ञान हो चुका है, मधु कि तुम्हारे सौन्दर्य, विचार, रूप और गुण तथा शरीर के समीप दो प्रेमियों का निवास है ।"

"दो प्रेमियों का निवास ! यह कौन कहता है ?"

"कौन, मेरा मन । बुरा न मानना !"

"किस आधार पर ?"

"आधार अनेक हैं, पर तुम जब उन आधारों को सही नहीं मानोगी तो उसके लिए चारा ही क्या है ?"

"फिर भी सुनूं तो सही।"

"तुम अपने सामने किसी को प्यार नहीं करती ?"

"जो कुछ करती हूँ उसमें तुम्हें बोलने का अधिकार नहीं !"

"जानता हूँ जब तक सामाजिक रूप से हम विवाहित न हों, तब तक मुझे तुम्हारे विचारों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं ! पर मधुमा मैं तुम्हारे वर्ग की तरक्की देखना चाहता हूँ, मेरे विचार में अगर तुम्हारा वर्ग सभा की परी न बने तो भी तुम्हारी प्रगति और उन्नति में अन्तर नहीं आयेगा।"

"क्यों नहीं आयेगा, जब तुम हमको चहार दीवारी में बन्द रखना चाहते हो तो क्या प्रगति होगी ?"

"मधु ! यह चहार दिवारी नहीं, फिर तुम्हारे मन और मोह से तो इस चाहर दीवारी की नींव इतनी मजबूत नहीं, इसका सबूत इतिहास है न। इतिहास में चहार दीवारी में रहने वाली स्त्रियों ने ही मैदान में रहने वाली सेना-सेना नायक और राज्य तक पर विजय पाई है मधुमा ! पर गिरकर और झुककर नहीं, अपने आत्म बल के विश्वास पर अपने चरित्र और नैतिक जीवन की सक्रियता पर।"

"तो तुम्हारा मतलब है कि हम सब दुश्चरित्र हैं ?"

"यह किसी के बारे में नहीं कहा जा सकता मधुमा ! मैं क्या, कोई भी हो जो दुश्चरित्र होते हैं, जिनकी विचार शक्ति में नारी केवल भोगने की सामग्री है वे दुश्चरित्र होते हुए भी चरित्रवान बने रहते हैं, वैसे ही नारी की दशा है। आज जानवरों का प्रेम इस दुनिया के मनुष्यों के प्रेम तथा रोमान्स से कहीं अधिक संयमित है। जानती हो कि हर व्यक्ति का यह स्वभाव है कि वह अपनी बुराई को छिपाता है और अपनी बड़ाई दूसरों के सामने खूब मन से करता है। इसलिए अगर कोई स्त्री-पुरुष कहे भी तो ···।"

"अगर अपनी गलती दूसरे के सामने खोले तो क्या उस व्यक्ति को कोई अपने पास बैठने देगा।"

"यदि वह अपनी बुराईयों को छोड़ दे तो अवश्य सबके पास बैठने योग्य है पर वह अपने संस्कार रहित आदतों से ऐसा घिरा रहता है कि बुराईयां उसे अधिक अच्छी लगती हैं।"

"खैर छोड़ो, मैं बुरी हूं, भली हूँ अपने लिए अब कुछ खाना खालो।"

"खाने की इच्छा नहीं है।"

"इच्छा, बिना इच्छा के ही खा लिया करो न कभी, चलो।"

जीवन की पीठ पर हाथ रख कर ढकेलते हुए मधुमा ने उसे रसोई घर में बैठाया। घर में रोटियाँ तो थी नहीं। दोपहरी की बची रोटी उसने खुद खायी और दो पराठे और रह गये थे सो उसे जीवन के सामने रखते हुए वह बोली—"पराठे दिन के हैं। शाम को खाना नहीं बनाया। खाओगे?"

"क्यों नहीं?"

"बासी हैं न?"

"तो क्या हो गया। तुम्हारे हाथ में पड़ कर वह और भी ताजा हो जायेगा।"

"झूठी प्रशंसा। अच्छा किस चीज से खाओगे?"

"तुम्हारे स्नेह के प्यार के साथ।"

"लेकिन उसमें तो मिठास नहीं है। खारा है न?"

"तुम्हारे लिए मेरा स्नेह खारा है मेरे लिए तो तुम मधु से भी मीठी हो मधुमे।"

"तो मधु से ही खालो।"

"हाँ, यही कहने वाला था।"

मधुमा उठी। सामने की दीवार की खूंटी पर शहद से भरा बोतल लटक रहा था। उसे खूंटी से उतार एक कटोरी भर शहद जीवन के सामने रखती हुई बोली—"लो मधु, तुम्हें बहुत अच्छी लगती है न?"

"नहीं, मधु के हाथ का मधु मुझे बहुत मीठा लगता है वैसे तो बाजार की मधु में तो अधिकतर गुड़ की चासनी मिली रहती है।"

"मिलावट का जमाना जो ठहरा। खैर इतमीनान रखो, हम मिलावट का शहद नहीं दे रहे हैं। खाते क्यों नहीं। अब क्या सोचते हो?"

"सोचता हूँ! हाँ सोच रहा हूँ अभी इस शहद के बारे में कि यही शहद किसी चीज के साथ मिलकर विष बन जाता है और कहीं अमृत।"

"अब बकवास बन्द करो। खाओ·· जो मैं कहती हूँ। यह विष नहीं, और विष नहीं होगा?"

"अगर तुम विष भी दो, तो वह अपने आप अमृत हो जायेगा, पर मनुष्य की आत्मा की कामना नहीं मरेगी, केवल यह जीवन ही कट कर रह जायेगा। और तब मेरे द्वारा दिए तुम्हें सभी प्रकार के कष्टों से मेरा देश-दोष भी मिट जायेगा मधु! तुम···तुम कहती हो, कि जो अपनी रखवाली नहीं कर सकता, वह दूसरों की क्या करेगा? पर तुम अपने स्वास्थ्य को क्यों नहीं देखती? तुम्हारा स्वास्थ्य कहाँ सुधरा है?"

"तुम्हारे साथ रहूँगी, तो सब ठीक हो जायेगा!"

"तब की बात छोड़ो, शरीर से निकलने वाले प्राण की लौटने की बात छोड़ दो और अपने को समझने की चेष्टा करो!"

"बहुत चेष्टा की, पर न समझ सकी!"

' नहीं, कभी नहीं। अगर तुम समझने की चेष्टा करती, तो तुम्हारा स्वास्थ्य ऐसा नहीं होता?"

' पति के साथ रहने पर पत्नी का स्वास्थ्य अपने आप ठीक हो जाता है, जीवन!"

"पति-परमेश्वर है, जो···उसके साथ···।"

"हाँ, पति परमेश्वर होता है!"

"पति नहीं, हर व्यक्ति परमेश्वर है···तुम···तुम अपने स्वास्थ्य को न देखोगी तो परमेश्वर कुछ नहीं कर सकता, यदि पति को परमेश्वर मानती हो, तो पति को प्रिय बातों को स्वीकार क्यों नहीं करती?"

मधुमा कुछ उदास होकर बोली—"अधिक नमक न लगाओ।"

"हां···हाँ क्षमा करना। कुछ कह जाता हूं, क्योंकि तुमको, तुम्हारी उलझनों को और तुम्हारे जीवन की भावनाओं के आधार को नहीं समझ पाता मधु !"

"इसलिए कुछ लिखती हूं।"

"पर वह कर्म नहीं है !"

"अच्छा अब बस करो ! खा लो, बहुत देर हो चुकी है।"

"खा लूंगा।"

"तो खाते क्यों नही ? क्या अब तक मन से मैल नहीं निकला ?"

"मन से मैल। यह तो कभी मन पर जमा नहीं।"

"तो खा लो, यह शहद अमृत सा लगेगा, अमृत सा !"

"हाँ···यह अमृत है लेकिन सभी अमृत ही क्यों चाहते हैं, मधु !"

"यह तो अपनी-अपनी भावना है, जीवन ! तुम मुझे जैसा भी समझो, पर तुम्हारे बाद मेरे जीवन में कोई ऐसा नहीं आया, यदि उसने आने का साहस भी किया, तो मैंने उसे आगे बढ़ने से रोक दिया।"

"फिर माँथे की बिन्दी हाथ की चूड़ियों का क्यों त्याग दिया ? याद है, तुम्हारे माथे पर बिन्दी लगाई, कैसे तुमने माला पहनाई, क्या वे सब बातें इस लिए थी, कि यदि मैं कहीं चला गया तो मुझे मरा हुआ समझकर दूसरा पति अथवा प्रेमी तलाश कर लेती।"

"पुरुष और स्त्री में यही तो इतनी सी दूरी है, जीवन ! मैं स्वयं अपने से ऊब गई हूं।"

"यह न कहो, अपने से मनुष्य कभी नहीं उबता, बल्कि उसके विचार जब अटल नहीं होते, तो वह घबरा जाता है और उस समय नैतिक, अनैतिक बातों को ध्यान में न रखकर, अपना सब कुछ खा बैठता है, मेरे न रहने पर ऐसा नहीं, कि तुम्हारे जीवन के अभाव को पूरा करने के लिए दूसरा न आया हो, पर···।"

"यह क्या कह रहे हो, जीवन!"

"कह लेने दो। मरे मन का बोझ हल्का हो रहा है।"

'लेकिन यह सब लाक्षनां है।"

"लाक्षना के लिए हम खुद स्थिति पैदा करते हैं, मधु ! तुम्हारे पूर्व व्यवहार से अब में कितना अन्तर है। उस रोज की बात याद है, जब तुम्हें एक बार नहीं अनेक बार लिखा था कि मैंने तुम्हें बाँधा नहीं है। इसका अर्थ यही है न, कि तुम छुटकारा पाना चाहती हो···और यह छुटकारा किसी तरह मुझे नाराज करके पाने के बजाय शान्ति पूर्ण ढंग से भी हो सकता है।"

"इन बातों को छोड़ो, पहले खाना खा लो।"

"पेट भर गया, अब खाने की इच्छा ही मर गई ! हाँ, थोड़ा सा शहद चाट लूंगा।"

जीवन ने अपनी अगुलियां से शहद चाटने के लिए हाथ बढ़ाया था कि एकाएक बाहर से किसी ने आवाज दी—"अरी ओ मधुमा, दीदी !"

मधुमा ने भीतर से ही कहा—"कौन-भीतर आ जाओ।"

उसकी आवाज सुनते ही एक लड़का आ खड़ा हुआ ! मधुमा के समीप खड़ा होकर बोला—"अरी दीदी, गजब हो गया।"

"क्या है पत्तू ?"

"अरे दीदी ! पुलिस आई है, वह तुम्हें और जीनव दादा को पकड़ कर ले जायेगी।"

'मधुमा ने कहा—"क्यों···अब···।"

"कुछ नहीं ! मुझे पुलिस के साथ जाने दो, मधुमे !"

"लेकिन···?"

"लेकिन क्या ? अगर वासप लौटूं, तो फिर ऐसे ही प्यार करेंगे, नहीं तो तुम अपना जीवन साथी ढूंढ लेना।"

"ऐसा न कहो, जीवन ! मैं तुम्हारे लिए लडूंगी।"

"अच्छा···हाथ बढ़ाओ।"

"मधुमा ने हाथ बढ़ाया। उस समय उसकी आँखें गीली थीं। पत्तू खड़ा-

खड़ा दोनों को देख रहा था, वह वापस लौटने ही लगा था कि पीछे से दरोगा अपने सिपाहियों के साथ आ खड़ा हुआ—जीवन की ओर घूमकर वह बोला—"जी ! बहुत दिनों के बाद तो आपका दर्शन हुआ है। चलिए, बड़े घर की हवा खा आइए।"

"जी···मैं इसीलिए आया हूँ ! पर मेरे ऊपर कौन सा अपराध है ? पहली शादी···तो जबरदस्ती की शादी है।"

"यह सब सवाल जवाब तो अदालत के सामने देना, जीवन बाबू !"

जीवन ने देर नहीं की, उसने मधुमा की ओर एक बार भरी दृष्टि से देखा और दरोगा के साथ चल पड़ा। मधुमा रात की उस घनी छाया के बीच पुलिस की लारी को अन्धकार में विलीन होते देखती रही।

—o—

उन्नीस

आज शहर की कचहरी में खासी भीड़ थी। गाँव के किसानों का जत्था कहीं किसी बरगद के पेड़ के नीचे बैठे-बैठे जीवन के मोकदमे का फैसला कर रहा था, तो कोई उसके चरित्र की आलोचना करते हुए यह कहता कि बात सब सच है। नेता के वेश में ये लोग भोली भाली जनता को इस तरह ठगते रहते हैं, तो कोई उसके वकील के पास बैठे मधुमा तथा उसके पिता की ओर आँख से इशारा करके कहता कि यह सारी बदमाशी इस बूढ़े की है और फसाद की जड़ यह लड़की है ! और कोई इस इन्तजार में था, कि जीवन अदालत की कठघरे की चहार दीवारी में कब खड़ा होगा।

दूसरी ओर शैला अपने पिता के साथ अपनी मोटर के सामने उतर कर खड़ी थी। उसके पिता के साथ ही पंडित राज खड़े खड़े अपनी अक्लमन्दी की चाल दिखा रहे थे कि इतने में चपरासी ने अदालत मे बाहर आकर आवाज दी—"स्टेट, बनाम जीवन ! मुखिया राम बनाम राजकुमारी शैला हाजिर हो।"

आवाज सुनते ही शैला अपने पिता के साथ और मधुमा अपने काका के साथ न्यायालय के सामने उपस्थित हुई, तो जीवन पुलिस की रखवाली में कठघरे में आ चुका था। मधुमा को आते ही उसने अपनी मन की आँखों से भरपूर देखा था, कि अदालत के पेशकार ने जीवन के केश की फाइल खोलते हुए, उसके वकील से कहा—"वकील साहब मुजरिम का बयान दिलाइए।"

जीवन के वकील की नियुक्ति मधुमा के पिता ने की, सो वह अदालत के सामने खड़ा होकर बोला—"सरकार से मेरी यह अपील है कि जीवन को किस कानून में गिरफ्तार किया गया है ?"

पेशकार ने कहा—"जीवन पर तीन अभियोग हैं।"

"क्या अदालत उन केशो के विषय में कुछ बतायेगी ?"

"पहला केस है कि उसने शैला से विवाह किया और फिर एक पत्नी के रहते हुए उसने छिपकर मधुमा से विवाह कर लिया। कानून की नजर में यह अपराध है, उसने कानून के नियमों का उल्लघंन किया है, दूसरी बात यह है कि शैला के घर से कुछ कीमती जवाहरात गायब हुए हैं, जिसकी रिपोर्ट शैला के पिता ने थाने में दर्ज करा दी है। और तीसरी बात यह है कि उसने शैला को जान से मारने की कोशिश की। इसलिए अदालत इन तमाम बातों की सफाई चाहती है। पहले जीवन का बयान जारी किया जाय।"

अपनी बात कहकर वह छोटी अदालत के मजिस्ट्रेट की ओर देखने लगा था, कि जीवन ने कठघरे में से खड़े होकर कहा—"सरकार से अपनी अपील है कि पहले शैला तथा उसके पिता को अदालत के सामने खड़ा किया जाय। उनके साथ ही शैला की प्रिय सहेली नीली का बयान भी जरूरी है और इन सब झगड़ों को पैदा करने वाले हैं, श्रीमान पंडित राज, जो कहते हैं, अपने को कम्यूनिस्ट' पर काम सब करते हैं 'अपर चूनिस्ट' (अवसर वादी) बनकर, इन लोगों के बयान के बाद ही मैं अपना बयान दे सकता हूँ।"

अदालत ने शैला तथा उसके पिता को सामने खड़े होने की आज्ञा दी और उनके वकील के सामने देखकर मजिस्ट्रेट ने कहा—"क्यों मि० चतुर्वेदी ! आप अपनी पार्टी का बयान दिलाइए क्योंकि 'क्लेम' तो आपने ही किया है।"

"हाँ-हाँ, सरकार ! मैं कब भाग रहा हूँ। शैला आपके सामने खड़ी है, आप उसके बयान ले सकते हैं।"

अदालत ने कहा—"शैला अपना बयान जारी करे और शपथ लेकर कहो कि जो कुछ कहूँगी, सब सच कहूंगी।"

अदालत की आज्ञा पाते ही शैला ने सामने आकर वैसा ही किया और अपना बयान जारी किया। नाम, पिता का नाम और पेशा लिखने के बाद शैला ने जीवन के वकील से निधड़क होकर कहा—"पूछिए, वकील साहब ! आप क्या पूछना चाहते हैं ?"

जीवन के वकील ने प्रश्न किया—"हाँ, तो मिस शैला ! जीवन से आपने

कितने दिनों तक प्रेम किया था और इस प्रेम के कितने दिनों के वाद आपने इनसे विवाह किया !"

शैला बोली—"जी, जीवन से हमारा प्रेम तो केवल तीन चार माह ही चला था। उसके बाद उसने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया और मैंने इनसे विवाह कर लिया।"

'क्या आपने अपने विवाह के पूर्व अपने सगे सम्बन्धियों को सूचना दी।"

"जी, नहीं। क्योंकि जीवन ने इन सब रस्मों को पूरा करने के लिए समय नहीं दिया था, उसने एक ही रात में सबकुछ कर दिया।"

"आपने विरोध नहीं किया !"

"भला प्रेमिका अपने प्रेमी को पाने में देरी कब कर सकती है, वकील साहब !"

"फिर जीवन ने आप को इस तरह छोड़कर रास्ता क्यों ले लिया ?"

"इसकी मूल जड़ में मधुमा नाम की वह लड़की है, उसका बाप है, जो जीवन के केश की पैरवी कर रहे हैं।"

"मधुमा और उसके पिता से जीवन का क्या सम्बन्ध था, क्या इसके बारे में भी आप कुछ जानती है ?"

"जी ···यह जीवन पहले गांव में घूम-घूम कर लोगों में राष्ट्रीय भावना जागृत कर रहा था, वह मधुमा जो दिखाई देती है न, उसने इस पर अपना जादू-टोना चला दिया।"

"जादू-टोना की बात छोड़ो ! यह बताओ कि जीवन से पहले तुम मिली थी या मधुमा।"

"मैं मिली थी।"

"लेकिन जीवन ने अपने बयान में कहा है कि शैला से पहले वह मधुमा के दिल में समा चुका था।"

"यह कैसे। यह क्या आप कह रहे हैं ?"

"ठीक कह रहा हूं। क्या जीवन की छोटी बहन यहाँ नहीं रहती थी ?"

"बिलकुल-ठीक यहाँ रहती थी।"

"आज कल वह कहाँ है ?"

"यह तो नहीं जानती, पर यह मालूम है कि वह मधुमा की सहेली थी और जीवन को उसने ही मेरे प्यार से अलग किया।"

"क्यों उसमें उनका हाथ भी क्या था ?"

"जब जीवन अपनी बहन को पत्र लिखता था, तो वह मधुमा को उसका पत्र दिखा दिया करती थी"

"तो···तुम मधुमा से पूर्व जीवन को नहीं जानती थी ?"

"बताया न कि पहले वह हमारे घर आया था। रियासत में रह कर रियासत की ही जड़ खोदना चाहता था। उन दिनों जमीदारी प्रथा थी। ब्रटिश शासन था, इसलिऐ पिता जी ने अपने यहाँ से अलग कर दिया और तब यह मधुमा के घर चला गया। पर प्यार हमारा उसी दिन से शुरू हुआ था।"

"माना, मिसेज शैला ! पर एक बात और है, वह यह कि विवाह के समय तुम्हारी सखियों में से कोन-कौन थीं।"

"जी···जो। उस वक्त की दुलहिन भला क्या बता सकती है कि वहाँ कौन, कौन था, लेकिन मेरे सुख दुख में सदा साथ रहने वाली सखी नीली उस समय वहाँ अवश्य थी।"

"क्या यह विवाह जीवन की दिली इच्छा से हुआ था।"

"जी, भला विवाह भी बिना दोनों की राय के हो सकता है ?"

"आपने विवाह सामाजिक दृष्टि से, प्राचीन संस्कारों द्वारा या अदालत द्वारा किया ?"

'जी पूर्ण सनातनी रीति-रिवाज से।"

"या आर्य समाजी ?"

"सनातनी-आर्यसमाजी दोनों की एक ही तरह की तो विधान मंडली है सरकार ! मैं यह जानती हूं कि पिता जी और पंडित जी ने हमारे जीवन की गाँठ जीवन से जोड़ दी थी।"

"क्या इस विवाह से आप के पिता जी सहमत थे ?"

"भला अपने दिल से कोई अमीर अपनी बेटी को गरीब से थोड़े ही व्याह सकता है वकील साहब !"

"फिर आपके पिता की मरजी नहीं थी तो उन्होंने गाँठ कैसे जोड़ दी ?"

"जी, एकलौती बेटी की खुशी के लिए बाप लोग अपने दिल पर पत्थर रखकर सब कुछ करते ही हैं। मेरे पिता जी दुनिया को समझते थे, मैंने जिद्द पकड़ ली और अन्त में जीवन की बात पिताजी ने मान ली !"

"भाँवरें पड़ते समय जीवन ने कोई रस्म अदा की ।।

"दिन रात राजनीति में घूमने वाला गाँव-गाँव के फटे-पुराने मैले कुचैले कपड़ों में रहने वालों के बीच रहने वाला यह जीवन रस्म की अदायगी क्या समझेगा। उसके लिए तो नारी भोग की एक मात्र वस्तु है।"

मजिस्ट्रेट ने आर्डर दिया—"विषय से आगे न जाओ ! अपनी बात कहो।"

"हाँ···सरकार ! शैला का बयान दर्ज किया जाय और उनके पिता तथा पंडित राज का बयान लेकर आज ही मधुमा और उस के पिता का बयान भी ले लिया जाय।"

न्यायाधीश ने मुस्करा कर कहा—"हाँ, मि० नागर ! केश बड़ा ही 'इन्टरेस्टिंग' जान पड़ता है। आज ही इस केस का बयान दूसरे सप्ताह में बहस और तीसरे सप्ताह में सब बातों की सरकारी तौर पर छान बीन करने के बाद फैसला भी !"

शैला के वकील ने मजिस्ट्रेट की बात सुनते ही कहा—"इतना जल्दी फैसला !"

"हाँ···क्यों आप क्या चाहते हैं कि एक केश पाँच वर्ष चलता रहे।"

"नहीं, सरकार ! केश का जितना जल्दी फ़ैसला हो, पर केश की तैयारी के लिए तो कुछ समय चाहिए ही !"

मजिस्ट्रेट ने हँस कर कहा—"समय लेने की आदत भूलिये, वकील साहब !

और समय क्या इतने दिनों तक कम था। इस बीच आप के मुवक्किल जितनी भी अपनी सफाई पेश कर सकते थे, वे इकट्ठा कर लेते। आप जानते हैं कि मैं अपनी मौजूदगी में किसी केश को पेन्डिग में नहीं छोड़ सकता, न लम्बी तारीखें देना मेरा काम है। अब शैला के पिता तथा पंडित राज का बयान जारी किया जाय!

मजिस्ट्रेट की आज्ञा पाते ही शैला के पिता सामने आ खड़े हुए और शैला की तरह शपथ लेकर जब चुपचाप खड़े हो रहे तो जीवन के वकील ने राजा साहब से पूछा—"हाँ तो राजा साहब! आप की मर्जी से शैला ने शादी की थी?"

"जी, अगर वह मेरी मर्जी से ब्याह करती तो क्या ऐसे ही युवक के लिये उसे अदालत में खड़ा होना पड़ता। दोनों में मुहब्बत थी! जब इसने जिद्द पकड़ ली तो हार मानकर बात रखनी पड़ी।"

"क्या जीवन से भी आपने राय ली थी?"

"इसकी जरूरत नहीं समझी।"

"क्यों···?"

"क्योंकि जब तक लड़का राजी नहीं होता तब तक लड़की अपने माँ-बाप से विरोध करने के लिए तैयार नहीं होती।"

"तो यों कहिए कि आपने लड़की के कहने से केवल व्याह किया है!

"जी···।"

"क्या आप बता सकते हैं कि प्रेम पहले जीवन ने किया या शैला ने?"

"इसके विषय में कुछ ठीक नहीं मालूम!"

"दोनों के प्रेम का बीज कैसे पड़ा?"

"इस बारे में कुछ नहीं कह सकता, पर इतना उसकी सखी नीली ने बताया था कि शैला ने ही उसे पहले प्रेम पत्र लिखा था।"

"क्या जीवन ने उसका उत्तर दिया?"

"हाँ—दिया ···।"

"वह पत्र शैला के पास हैं।"

"जी, सबूत के दिन उन सब पत्रों को जरूर हाजिर करूँगा।"

"और कुछ तो नहीं कहना है ?"

"जी नहीं, आप को कुछ और पूछना है तो पूछलें ?"

"तो यह बताइए कि शैला ने कब से प्रेम किया था ?"

"एक बार रियासत मे कवि सम्मेलन हुआ था, उसमें जीवन की कविता सब में सुन्दर रही। उस दिन के बाद से शैला उसके पीछे पागल हो गई।"

"अच्छी बात है ! अब पंडित राज को सामने आने दीजिए !"

पंडित राज ने भी आकर अपने बयान में जो कुछ कहा वह शैला और उसके पिता के बयान से ही मिलता जुलता एक बयान था जिसके लिखने की कोई खास आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। इन दोनों के बयान के बाद मजिस्ट्रेट ने मधुमा को बयान देने के लिए बुलाया। उसके आते ही अदालत में खड़े लोगो की आंखें उत्सुकता से भर उठी। अदालत में जब वह खड़ी थी तो उसके चेहरे के गोराई का हल्का सा रग, गुलाबी रग के गुलाब के फूलों की तरह खिल रहा था जो उसके ब्रह्मचर्य का स्पष्ट उदाहरण था। मजिस्ट्रेट स्वयं उसकी कान्ति करिता पर मुग्ध होकर सवाल कर उठा—"हाँ, तो शपथ लेने के बाद बेटी तुम भगवान को साक्षी देकर कहो कि जो कुछ कहोगी वह अक्षरशः सत्य होगा !"

मधुमा ने अपने हाथ में गीता उठा ली और मजिस्ट्रेट के पीछे लगी महात्मा गाँधी की तस्वीर की ओर संकेत करके, बोली—"मै गीता को हाथ में लेकर गाँधी जैसी पवित्र महान आत्मा के विचारों को समक्ष रखकर कहती हूँ कि जो कुछ कहूंगी, सच कहूंगी।"

पेशकार ने नाम पता लिखकर मजिस्ट्रेट की ओर उसके बयान का कागज बढ़ा दिया, तो शैला के वकील ने प्रश्न किया, अच्छा "तो मधुमा देवी ! केस तो आप को सब मालूम ही होगा। अब आप अदालत के सामने यह फरमाइए कि जीवन से आप का प्रेम कैसे हुआ ?"

मधुमा ने एक लम्बी साँस ली और फिर अदालत की ओर देखकर बोली—"अदा

-लत मेरी बातों पर गौर करे। सबसे पहले मैं यह बताना चाहती हूँ कि जीवन से मेरा प्रेम कैसे हुआ, जैसा कि नीली ने बताया था, वही बात सही है। जीवन की बहन का व्याह इस गाँव में हुआ था, वह अक्सर अपनी बहन के पास जो पत्र लिखता था, उसमें भावनाएँ, विचार और नारी को आगे बढ़ाये जाने की प्रेरणा भरी रहती थी, उसकी बहन अपना पत्र मुझे पढ़ा देती थी उसके पत्र को पढ़ते पढ़ते मेरे मन में जीवन को अपने समीप पाने की इच्छा जाग उठी और मैंने पहले जीवन को एक स्मृति रूप से प्यार करना शुरू किया। जब वह आया, तो मेरा स्वप्न साकार हो गया। जीवन ने भी आते ही मुझे पसन्द कर लिया और हम गाँव में रहते हुए अपने भविष्य की योजना बनाने लगे, कि रियासत में कवि सम्मेलन हुआ, शैला उसके रूप, रंग और गले पर मुग्ध होकर मेरे अधिकार की स्वामिनी बनने के लिए पागल हो चुकी। मैं···मैं चूंकि किसान की लड़की थी। पर रूप-रंग और स्वास्थ्य में हमने जो शिक्षा प्राप्त की वह शैला से कम नहीं थी, सरकार, मैं अदालत में इसलिए नहीं कि जीवन मेरा है, उसे वापस ले जाऊँगी बल्कि हमारे बीच उस जीवन का महत्व है जिसने अपने जीवन का अधिकांश समय हमारे जीवन को ऊंचा उठाने में व्यतीत किया है, जीवन के प्रति गाँव के लोग गवाह हैं, सरकार !"

मधुमा आगे कुछ कहने वाली थी, कि एकाएक वकील ने उसे रोकते हुए कहा—"मिस मधुमा ! आप विषय से अलग जा रही हैं। मेरा मतलब इन बातों से नहीं बल्कि आपका जीवन से जो सम्बन्ध था क्या वह पति पत्नी के रूप में शुरू हुआ था ?"

"जी, कोई भी स्त्री जब किसी को प्यार करती है, तो वह उसे पति ही के रूप में देखती है, प्रेम करना सभी चाहते हैं, पर कुछ तो अवसर नहीं मिलने के कारण, कुछ उच्चछृंखलता के कारण असफल होते हैं। मैंने जीवन को बहुत दिनों से अपना बना लिया था और सबसे बड़ी बात तो सरकार यह है कि जीवन से ही पूछ लिया जाय कि क्या उसकी शादी उसकी रजामन्दी से हुई है।"

"आर्डर प्लीज !" मजिस्ट्रेट ने मधुमा की ओर देखकर कहा।

"जी, सरकार ! अपने विषय से अलग नहीं हूँ। शैला ने जीवन पर जो आरोप लगाये हैं, वह सब बनाए हुए केस हैं !"

वकील ने कहा—"तुम झूठ सच को साबित करने वाली नहीं हो। यह अदालत का काम है। जीवन पर एक ही जुर्म नहीं, इस धोखे के विवाह के साथ इस पर पच्चीस हजार रूपए गबन करने का आरोप भी लगाया गया है। उसके साथ ही वह अपनी पत्नी का हत्यारा है। उतने दिनों तक कानून की नजर से तुमने ही उसे छिपा रखा है।"

"यदि छिपाना होता, तो वह पुलिस के सामने अपने आप नहीं जाता, वकील साहब ! आप अदालत में ऐसी गुस्ताखी क्यों करते हो ?"

"आर्डर प्लीज !"

"हाँ···सरकार, मधुमा का सारा बयान नोट किया जाय।"

"अदालत को हिदायत देने की जरूरत नहीं, वकील साहब ! मधुमा से अदालत पूछती है, कि अदालत के सामने कुछ और कहना है।"

मधुमा ने कहा—"हाँ···सरकार ! मुझे बहुत कुछ कहना है ?"

"तो साफ-साफ ब्यान दो।"

"अवश्य दूँगी। हां तो मैं कह रही थी कि जीवन सबसे पहले गाँव में आया, और उसने हम सब को एक नया जीवन दिया सरकार ! इसके आलावा शैला से पूर्व उसे पति रूप में वरण की इच्छा रखकर मैंने वे वर्ष बिताए थे, कि एकाएक वह आ पहुंचा। मैंने खुशी में आकर उसके गले में जयमाला डाल दी।"

"क्या उसके सबूत में किसी गवाह को पेश कर सकती हो ?" वकील ने पूछा।

"जी, इस घटना को मेरे गाँव की हमीदा नाम की लड़की अच्छी तरह से जानती है और वह इस वक्त अदालत में उपस्थित है।" उसके······

"क्या आपने उसके सामने जीवन के गले में जयमाला डाली थी ?"

"नहीं...हमीदा के साथ मन्दिर गयी थी वहाँ मन्दिर में ही फूलों की माला खरीद कर ले आई। हमीदा ने पूछा तो उससे सब साफ–साफ बता दिया था। जीवन से पूछ जा सकता है।"

"क्या जीवन की पहली पत्नी के बारे में कुछ जानती हो ?"

"हाँ...जानती हूं, वह बहुत गरम दिमाग की औरत थी और जीवन उसके व्यवहार से ही ऊब कर भाग आया था।"

"लेकिन उसने तो अपनी पत्नी की हत्या कर दी थी ?"

"नहीं, जीवन हिंसा में विश्वास नहीं करता, जब उसकी पत्नी ने उसे बहुत तंग किया, तो उसने उस स्त्री के साथ रहना अस्वीकार कर दिया। इस पर उसकी पत्नी ने कहा कि तुम मुझे अपनी बहन बना कर ही, रखो !"

"फिर क्या हुआ ! क्या उसने उसे अपनी बहन बनाकर रखा ?"

"राम-राम कहिए। भला हिन्दू संस्कृति में तो हो नहीं सकता, जब एक स्त्री स्वयं ही अपने पति को भाई बना ले, तो वही पति फिर उसी स्त्री के साथ पत्नी का व्यवहार कर सकता है, जो स्त्री को केवल भोग की वस्तु समझता हो। जीवन ने उसी रोज से उसके प्रति बन्धुत्व भाव अपना लिया।"

"तुम्हें यह सब बातें कैसे मालूम हुई ?"

"जीवन ने अपनी कोई बात मुझ से नहीं छिपाई।"

"जब तुम जानती थी, कि वह विवाहित है, तो तुमने उससे प्रेम क्यों किया, क्या यह कानून से अपराध नहीं है ?"

"वकील साहब, इस संसार में जहाँ सब कुछ कानून है, वहाँ कुछ ऐसी बातें भी हैं, जिसे कानून अपने अधिकार में नहीं ले सकता, न उन पर अपना नियंत्रण रख सकता है। फिर प्रेम तो दोनों के ही स्वाभाविक प्रवृतियों के सामंजस्य से उत्पन्न होता है, उसके लिए कोई खास घड़ी और समय निश्चित नहीं होता। न वह यह देखता हैं कि कौन विवाहित है, कौन अविवाहित ?"

"इससे तो साफ जाहिर होता है, कि तुम्हारा प्रेम भी जीवन की पहली पत्नी के बाद का है।"

"जी, नहीं ! जीवन की पहली शादी भी ऐसे ही हुई थी, जैसे शैला ने

किया है और उसके विवाह से पहले मैंने उसके पत्रों को पढ़कर अपने हृदय में बिठाकर पूजना आरम्भ कर दिया था।"

"इसका सबूत ?"

"सबूत के रूप में तो उसकी बहन थी, पर वह अब रही नहीं, पर जीवन की आत्मा से ही पूछा जाय कि वह हम तीनों में किस को अपनी पत्नी मानता है।"

"और कुछ कहना है ?"

"जी नहीं, मुझे अब अधिक कुछ नहीं कहना है। जीवन के चरित्र के बारे में सारा गाँव गवाही देने के लिए तैयार है, कि वह चोर नहीं है।"

वकील ने मधुमा के पिता की ओर इशारा किया, तो मधुमा अदालत के सामने से हट गई। उसके स्थान पर मुखिया राम आ खड़े हुए। शपथ लेने के बाद, जब उनका नाम लिखा गया, तो वह बोले—"सरकार के सामने जो कुछ कहूँगा, ठीक कहूँगा।"

"पहले आप बताइए कि मधुमा और जीवन एक दूसरे को चाहते थे या नहीं ?"

"जी, वह तो अधिकांशतः हमारे घर ही रहता था। गाँव-गाँव में रचनात्मक कार्य करने के लिए वह जाया करता था और इस तरह दोनों एक दूसरे के साथ जीवन पर्यन्त बँधने के लिए तैयार हो गए थे।"

"और कुछ···?"

"और तो मेरी बेटी बता चुकी है, सरकार !"

"लेकिन तुम्हारा नाम इस मामले में कैसे आया ?"

"बाप होने के कारण, और...रियासत की रियाया होकर हमने रियासत के विरोध में जेहाद जो बोला था, सरकार !"

"तो इसका यह मतलब है, कि राजा साहब से तुम्हारी पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही थी ?"

"राजा साहब से नहीं, बल्कि उनकी रियासत से तो हम मजदूरों का

संघर्ष पुश्तैनी चला आ रहा है, सरकार ! लेकिन अफसोस की बात यह है कि रियासतों के विलय होने के बाद भी हमें रियासत का दबाव देकर नाजायज रूप से धमकाया जाता है। राजा साहब के काले कारनामों से कौन नावाकिफ है ?"

वकील ने पूछा—"काले कारनामे । वह क्या है, मुखिया साहब ! जरा उसे भी बताइएगा ।"

"जी, राजा साहब स्वंय मेरी बेटी से विवाह करना चाहते थे...पर मेरी बेटी की क्रान्ति-कारिता के कारण उनकी एक न चली । कौन-कौन से जाल उन्होंने नहीं फेंके, पर सदा वे असफल रहे, सरकार ! और जब किसी तरह उनका वश न चला, तो हारकर जीवन को ही अपने शिकंजे में कसने की कोशिश की और उसमें वह कामयाब हुए ।"

शैला के वकील ने पूछा—"तो आप से राजा साहब की पुश्तैनी अदालत चली आ रही थी ?"

"मुझ से ही नहीं, सारे गाँव को वह अपने पैरों की जूती समझते थे और सरकार, अब तो भारत सरकार है, नहीं तो अंग्रेजों के जमाने में तो गांव, शहर, मोहल्लों की जिसकी भी बहन-बेटी राजा, नबाब, जमीदार की नजरों मे लग जाती थी, उसकी इज्जत दिन दहाड़े लुटती थी, इन रियासतों के राजा साहब की काली करतूतों का सबूत यह धरती और आकाश देगा, सरकार ! यदि भारत सरकार का राज्य न होता, तो हमारी बेटी मधुमा की दशा कुछ और होती । वह जबरदस्ती महल में पकड़वा कर मंगाली जाती । '

"आर्डर... । विषय से बाहर न जाओ । अब कहो, कि तुम कुछ और कहना चाहते हो ?"

"जी, नहीं ! मुझे जो कुछ कहना था वह कह चुका । मधुमा ने संकेत रूप से यह जरूर बताया था कि उसने जीवन को अपने जीवन साथी के रूप में वरण कर लिया है ।"

"आपके सामने... और आपने उसका विरोध नहीं किया ।"

"जी, मैं स्वंय यह जानता था कि किसी न किसी दिन हमें जीवन के साथ मधुमा के हाथ पीले करने ही होंगे ?"

'अच्छी बात है, अपना जवाब ...।"

मुखिया राम अपना बयान देकर एक ओर हट गए, तो वकील ने जीवन की ओर देखकर कहा—"हाँ तो मिस्टर जीवन! आप के सामने तो सबके बयान हो चुके। अब आप अपना बयान देने के लिए तैयार हों! क्यों सरकार!" मजिस्ट्रेट की ओर देखकर उसने पूछा।

मजिस्ट्रेट ने जीवन की ओर देखते हुए कहा—"जीवन, अपना बयान देने के लिए अदालत आज्ञा दे रही है।"

मजिस्ट्रेट की आज्ञा सुनते ही अदालत में उपस्थित भीड़ की आँखें उसकी ओर जा लगीं। सबने देखा, कठघरे में खड़ा जीवन अदालत के सामने आकर बोला-"माईलार्ड! मैं अपना बयान देने के लिए तैयार हूँ!"

"तो गीता उठा कर कहो कि जो कहोगे, सब सच-सच कहोगे!" पेशकार ने गीता को उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

जीवन ने अपनी दोनों हथेलियों के बीच गीता को लेते हुए कहा-"मैं न्यायालय के सामने गीता को साक्षी देकर कहता हूँ, कि जो कुछ कहूंगा, सच कहूँगा!"

उसके बाद उसका नाम पता जब मजिस्ट्रेट ने लिख लिया, तो शैला के वकील ने पूछा-"जीवन! तुम अपने वकील के जरिए अपने मुकद्दमे की पैरवी करोगे या स्वयं ही अपने मोकदमे को आप...।"

जीवन ने मुसकरा कर कहा—"वकील साहब! मेरा अपना विचार है कि मोकदमा मेरा है, मैं और अपने मोकदमे को जितना समझता हूं, उतना तो न मेरा वकील मेरे 'केश' को समझ सकता है, न शैला के मोकदमे को आप। क्योंकि घटना स्थल पर न तो आप ही मौजूद थे, न मेरा वकील। केवल सुनी सुनाई बातों पर किसी मोकदमे की वहस कानूनी दृष्टि से तो उचित हो सकती है, पर उससे सचाई कोसों दूर भाग जाती है और वे बुनियादी बहस के आधार पर फैसला कुछ का कुछ हो जाता है। इसलिए मैं अपने मोकदमे की

पैरवी आप करूँगा और जिरह भी स्वयं ही करना चाहता हूँ। आदालत से मेरी आरजू है कि मुझे अपने केश की खुद पैरवीकरने की इजाजत दी जाय।"

मजिस्ट्रेट ने जीवन की ओर देख कर कहा—"अदालत तुम्हें आज्ञा देती है, कि तुम अपने मोकदमे की पैरवी करने की क्षमता रखते हो, तो अवश्य करो ! हां अपना ब्यान जारी करो !"

शैला के वकील ने जीवन से प्रश्न किया—"तो मि० जीवन ! आप ने शैला से शादी नहीं की, क्या आप पर जितने भी जुर्म लगाए गए हैं, उन्हें आप गलत समझते हैं ?"

"जी नहीं, पुलिस का जो काम है, उसे उसने पूरा किया। उसके पक्ष में जो सत्य है, उसे भारत सरकार के न्यायालय के सामने रखना अपना कर्तव्य समझता हूँ, फैसला चाहे कुछ भी हो, पर मैं सत्य कहूँगा, आप को जो कुछ भी पूछना हो, उसे आप शौक से पूछ सकते हो।"

जीवन की निर्भीकता पर वकील ने प्रश्न किया—"तो क्या विवाह के पूर्व आपका शैला से कोई सम्बन्ध नहीं था ?"

"जी नहीं।"

"फिर विवाह कैसे हुआ ?"

"जबरदस्ती···!"

"लेकिन किसी का व्याह जबरदस्ती कैसे हो सकता है, जब तक वर राजी न हो ?"

"भारत में प्रायः ऐसा रोज ही होता है, सरकार ! माँ-बाप की राय से जितने भी विवाह होते हैं, उसमें भला कब लड़के-लड़की से पूछा जाता है, वह भी तो विवाह ही है। ऐसे ही इस विवाह की एक लम्बी कहानी है, जिसके अधिकांश भागों को मधुमा तथा अन्य गवाहों से अदालत सुन चुकी है ! उसके विषय में फिर से दुहरा कर सरकार का समय नष्ट करना नहीं चाहता···।"

"लेकिन उन बातों को अदालत पूरा नहीं समझ सकती। यदि तुम शैला से विवाह करना नहीं चाहते थे, तो पुलिस में रिपोर्ट भी कर सकते थे !"

"मुझे इतना समय नहीं मिल सका, कि मैं अदालत की शरण ले सकता,

क्योंकि शैला ने एक रात को छल से मुझे अपने घर पर बुला लिया और अपनी बड़ी हवेली के एक कमरे की चहार दीवारी में बन्द करके एक ऐसा मजबूत ताला लगा दिया, कि मेरी आत्मा की आवाज चिलाते-चिल्लाते थक गई, शैला को समझाते-समझाते मेरा आत्म बल परास्त हो गया, फिर भी शैला के कानों पर जू न रेंग सके, और अन्त में जब मैंने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया, तो उसके पिता ने कमरे में अपने पिस्तौल के साथ प्रवेश किया··· और सरकार···उन्होंने कहा—कि यदि तुम मेरी बेटी की इच्छा पूरी नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूँगा···और तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारी लाश को इस हवेली के फर्श के इतने नीचे दफना दूँगा, कि किसी को कानों-कान भी खबर न हो सकेगी।"

वकील ने जीवन की जबान बन्द होते ही कहा–"तो क्या तुमने आवाज नहीं दी ?"

"आवाज···रियासत में बन्द कैदी की आवाज निकल कर भी क्या कर सकती थी, जब कि वह बाहर खड़े लोगों के कानों तक न पहुँच पाती ! यदि चीखता-चिल्लाता तो गोली का शिकार होता, माई लार्ड ! इस लिये बेमौत मरने से अच्छा यही था, कि मैं, शैला और उसके पिता की इच्छाओं का पालन करता।"

"लेकिन विवाह के बाद तुमने उसके घर से हजारों रुपयों की चोरी क्यों की ?"

जीवन ने मुसकरा कर कहा—"सरकार ! चोरी···भला चोर के घर में कोई क्या चोरी कर सकता है ? जिन्दगी को चुराने वाले के घर में से भला मैं चोरी कर सकता हूँ ! यह सब केश को मजबूत बनाने के हथकंड़े है, सरकार ! यदि मुझे धन-दौलत और बड़ा आदमी बनने की ही तमन्ना होती, तो शैला के घर से छोड़ कर क्यों भाग जाता !"

"मधुमा के बहकाने पर ही तुमने ऐसा किया है ?"

"मधुमा ऐसी नहीं, न मैं किसी के बहकाने में आ सकता हूँ। मैं अपनी भलाई-बुराई को स्वयं समझता हूं और यह जानता हूँ एक पत्नी के रहते

हुए दूसरी शादी करना कानूनी दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं व्यवहारिक तथा नैतिक दृष्टि से भीअव्यवहारिक है !"

"फिर तुमने ऐसा क्यों किया…? इसके पहले भी तुम एक पत्नी से विवाह कर चुके थे ?"

"जी, वह विवाह भी ऐसा ही था…!"

"उसका तो तुम विरोध कर सकते थे !"

"जी, विरोध तो कर सकता था, परन्तु उस लड़की ने न जाने क्यों इस नाचीज को चीज समझ कर प्यार करना शुरू कर दिया, पहले उसने मुझे पत्र लिखा कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ !"

"तो तुमने भी तो उसे प्रेम का संकेत किया होगा ?"

"जी नहीं, यदि मैंने उससे प्रेम किया होता, तो न्याय आज मुझे यहाँ नहीं देखती, न मैं अदालत का ही समय लेता। जैसे शैला ने जबरदस्ती व्याह करने के बाद भी मेरा प्यार नहीं पाया, उसी तरह उस लड़की ने मेरे साथ भाँवरें और मेरे हाथों से अपनी माँग में सिन्दूर डालने के बाद भी मेरे मन का प्यार नहीं पाया !"

"इसका मतलब है कि तुम हर स्त्री से विवाह करके उसे छोड़ने के आदी हो ?"

"जी, नहीं ! जिस मधुमा को मैंने प्यार किया है, उसे मैं अपने जीवन भर नहीं भूल सकता, न उसे अपने हृदय से अलग कर सकता हूँ !"

"आखिर मधुमा में और इन दोनों स्त्रियों में क्या नारीत्व नहीं था ?"

"नारीत्व तो सभी नारी में होता है, पर जैसा कि आप समझते हैं, कि विवाह हो जाने के बाद, सामाजिक संस्कारों के उपरान्त चाहे जैसे भी हो, उस स्त्री के साथ जीवन भर निबाह करना पड़ता है, इस परम्परा में मुझे विश्वास नहीं। मेरी दृष्टि में स्त्री न पूंजी है, न सम्पति है, न वह विलास, मनोरंजन की उपभोग्य है, बल्कि वह एक पुरुष के अभाव की कमी और ऐसी, संतुलित सहयोगिनी है, जो उसके सामंजस्य द्वारा ही स्वयं सुखी होती है और

उसे सुख देती है। वैसे तो वह लोगों की दृष्टि में बच्चा पैदा करने की मशीन बनी हुई है।"

वकील ने व्यंग भाव से कहा—" भला स्त्री और मशीन से क्या सम्बन्ध ?"

"है भी और नहीं भी है, सरकार !"

"जो भी हो, इससे साबित होता है, कि तुम्हारे लिए स्त्री एक खिलौना मात्र है।"

"जो लोग ऐसा समझते हैं, वे अवैज्ञानिक युग के मनुष्य ही कहे जा सकते हैं।"

"आडर प्लीज ! विषय से बाहर न जाओ"

शैला के वकील ने जीवन की ओर मुँह करके कहा—"अच्छा तो मि० जीवन ! आप तो पढ़े लिखे आदमी हैं, कानून को जानते हुए भी आप ने न पहली पत्नीको तलाक दिया, न अदालत को सूचना दी। इससे तो आपकी मंशा की यह बात मालूम होती है, कि आप ने जान बूझ कर एक स्त्री के साथ अन्याय किया ?"

"अदालत इसे अन्याय कह सकती है। कानून इसे अपराध समझकर मेरे साथ जैसा चाहे व्यवहार कर सकता है ! लेकिन मैंने जब शादी अदालत में नहीं की, तो तलाक देने का प्रश्न क्या ?"

"इसलिए कि न्यायालय को अधिकार है !"

'किन्तु यह मेरा व्यक्तिगत अधिकार है, यदि अदालत में मैंने रजिस्टर्ड मेरीज' किया होता, उस अवस्था में बिना तलाक दिए यदि मैं मधुमा से विवाह करता, तो अवश्य ही दंड का भागी था। परन्तु यहाँ तो स्थिति ही दूसरी थी ! एक लड़की मुझ से अनायास प्यार करने लगी और दूसरी ने जबरदस्ती अपने घर में बन्द कराकर, अपनी मांग में सिन्दूर भरवा लिया, लेकिन जब मेरी मानसिक क्रियाएँ उस स्त्री के प्रति पत्नीत्व भावों की उत्पत्ति नहीं कर सकतीं, फिर उस ब्याह को भी क्या न्यायालय ब्याह कह सकता है, जिस ब्याह में वर-वधू को एक दो तीन महीने की तो अलग रही, एकाएक रेल के डब्बों सा बाँध दिया जाता है !"

"लेकिन तुम्हारी पहली पत्नी से तो तुम्हारा खुद का प्रेम था ?"

"जी नहीं ! यदि मैं शैला तथा उसे प्यार करता, तो आज अदालत में खड़ा नहीं होता !'

"दूसरा अपराध ! तुमने अपनी पूर्व पत्नी की हत्या की ?"

"मैंने···नहीं ! हत्या किस अर्थ में आप कह रहे हैं ?"

"उसे जान से मार डाला ?"

"नहीं, वह जीवित है। परन्तु उसकी इच्छाओं की हत्या हो गई ! उसने अपना विवाह भी कर लिया !"

"बिना अदालत की आज्ञा के !"

"उसने अदालत में न विवाह किया था, न उसे अदालत से राय लेने की आवश्यकता पड़ी ! जहाँ मन, स्वभाव और विचार एक दूसरे से नहीं मिलते, वह केवल शारीरिक आकर्षण को प्रेम करना तो एक विलास एवं तुच्छ वासना जन्य प्रेम की स्थिति होती है, सरकार ! मधुमा के सिवा जीवन में किसी स्त्री के प्रति मेरी भावनाएँ पत्नीत्व की दृष्टि से देखने में असमर्थ थीं, इसलिए जो स्त्री भी मेरे जीवन में आई, उसे मैंने कोई महत्व नहीं दिया, ऐसी बात नहीं, लेकिन उसे पत्नी रूप में स्वीकार करने के लिए मेरे अन्तः करण से किसी प्रकार की स्वाभाविक क्रिया उत्पन्न न हो सकी "

वकील ने प्रश्न किया—"तुम्हें और कुछ कहना है ?"

"जी ! अधिक कुछ कहना नहीं चाहता। जो कहना था, वह कह चुका। अदालत जैसा समझे वैसा फैसला करे !"

मजिस्ट्रेट ने उसके बयान को लिखने के बाद वकील से कहा—'जी, अब आप हमीदा को अदालत के सामने पेश करें। अदालत उसकी गवाही चाहती है।"

हमीदा का नाम लेते ही वह वकील के निकट जा खड़ी हुई और शपथ लेने के बाद, जब उसने सांस खींचा, तब वकील साहब भी अपनी काली टाई की गांठ खींच कर बोले—"हाँ, तो मिस हमीदा ! जीवन और मधुमा के विषय में आप क्या जानती हैं। क्या दोनों ने विवाह किया था ?"

हमीदा ने कहा—"जी' सरकार ! भारतीय संस्कृति में अपने-अपने सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाज में कई प्रकार के विवाह बताए गए हैं, मधुमा और जीवन ने वैसे ही अपने सनातनी रीति-रिवाज से मन्दिर में शादी कर ली।"

"क्या उस समय तुम मौजूद थी ?"

"जी···मैं मौजूद थी ! जीवन मुझे अपनी बहन की तरह मानता है, उसने मुझे बुलाया था और मैंने ही दोनों की गांठे जोड़ी थी।"

"जोड़ते समय और कौन-कौन था ?"

"केवल मैं, प्रकृति, यह धरती, आकाश, और आकाश के आँगन में चमकने वाले सितारे।"

"शायरी न करो, हमीदा बेग ! यह अदालत है। तुम्हारे सिवा वहाँ कोई आदमी था, या नहीं ?"

"जी नहीं···।"

हमीदा ने कहा ही था कि अदालत में खड़ी मुवकिलों के बीच से तीन स्त्रियाँ निकल आई और वकील साहब से बोली—"हाँ, वकील साहब ! अदालत हमसे पूछे, तो हम बता सकते हैं कि उस समय हम भी थे ! हम जीवन से वाकिफ नहीं, केवल नाम सुना है !"

अदालत में खड़े लोगों की आँखें उन तीनों औरतों पर जा टिकी ! वकील ने पूछा—"आप लोग कौन हैं ?" अदालत आप लोगों के बयान पर गौर नहीं करेगी।"

"क्यों ! जब हमने अपनी आंखों देखा है, तब···क्या उसे प्रजातन्त्र की न्यायालय नहीं सुनेगी ?"

मजिस्ट्रेट ने तीनों औरतों की ओर घूमकर कहा—"क्यों नहीं ! अदालत आप लोगों का बयान जरूर सुनेगी ! आप अपना नाम पता बताइए !"

"जी हम सब रसूल पुर की रहने वाली हैं !"

"रसूलपुर, मधुमा के गाँव से कितनी दूर है ?"

"लगभग दो फर्लांग।"

"तो आप मधु पुर गाँव में कैसे आई ?"

"जी, मधु पुर और रसूल पुर गाँव के बीच में एक मन्दिर है, उसी के पास एक मस्जिद है ! हम सब उस दिन अपने त्यौहार ईद पर नमाज पढ़ने आई थीं, तभी जीवन और मधुमा का विवाह उस मन्दिर में हो रहा था··· सबूत के लिए मधुमा के हाथ में जो अँगूठी है, उसे देखकर मैं पहचान सकती हूं !"

"सच ! मधुमा को अदालत आज्ञा देती है कि वह अगूँठी छिपा दे !''

मधुमा ने ऐसा ही किया, तो वकील ने पूछा—"आप लोगों ने उस अंगूठी को कभी देखा था।"

"जी, रात की चाँदनी में हमने उसे देखा था। उस अँगूठी के ऊपर एक गोल सा छोटे नए पैसे के बराबर कटाव है, और उसमें कृष्ण, बाँसुरी तथा गाय के साथ खड़े है।"

अदालत ने मधुमा को अंगूठी दिखाने के लिए आज्ञा दी। उसने अपने हाथ की अगूठी अदालत के सामने खड़े सभी लोगों के सामने, अपनी अंगुली से निकाल कर रख दी। मजिस्ट्रेट ने स्वयं उठाकर उसे देखा और तीनों औरतों के बयान के मुताबिक वह सही उतरी, तो उसने सब कागजातों को पेश कार के हवाले करते हुए कहा—"अदालत के सामने मुद्दई और मुद्दालय दोनों के गवाह तथा उनके बयान लिए गए। अदालत इस तमाम बयान के बाद दोनों पक्ष के वकीलों की बहस और जिरह भी सुनती गई है। इसलिए अगले सप्ताह की बीस तारीख को अदालत अपना अन्तिम फैसला देगी। जीवन की जमानत के लिए मुखिया राम ने जो दरख्वास्त दी है, अदालत उनकी जमानत मंजूर करती है और जीवन को पाँच हजार रुपए की जमानत पर रहा किया जा रहा है।"

अपना निर्णय सुनाकर मजिस्ट्रेट उठ गया। उसके उठते ही सब लोग बाहर निकल आए।

—०—

बीस

जीवन जमानत पर छूटकर जब गाँव आया, तब मधुमा ही नहीं, अपितु आस-पास के गाँव के सभी लोग उससे मिलने के लिए उमड़ पड़े। कोई उसे गले लगाता, तो कोई उसके साहस की प्रशंसा करता, तो कुछ जो उससे ईर्ष्या रखते थे, वह मन ही मन कुढ़ कर आपस में यह कहते कि अभी तो जमानत पर छूट कर आया है। देख लेना उसे बीस वर्ष से कम की सजा न होगी।

इस तरह अनेक लोग आए, गए और उन सब के स्वागत में जीवन का सारा दिन बीत गया, तो साँझ आई। गाँव में गोधूलि की बेला, गायों का समूह जब अपने-अपने बछड़ों से मिलने के लिए-बा-बा करता हुआ अपने कारवाँ के साथ चल पड़ा तो मधुमा ने जीवन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—"चलो! आज तो मौसम बहुत अच्छा है। नदी के किनारे नाव चलायेंगे!"

"हाँ···लेकिन तूफान के आने का अंदेशा भी है, मधुमा!"

"तो क्या होगा···?"

"कहीं नदी में नाव चलाते समय तूफान न आ जाय और हम वहीं अपनी सारी मनोकामनाओं के साथ डूब जाँय।"

"ऐसे अपशकुन की बात न सोचो! चलो, आज बहुत दिनों के बाद तो तुम मिले हो!"

"मेरे आने से पहले के जो अभिभावक थे, अब उनका क्या होगा?"

"यह सब न कहो, जीवन! मैं सच कहती हूँ कि तुम्हारे सिवा जीवन में किसी को प्यार न किया! क्या तुम अब तक विश्वास नहीं करते?"

"विश्वास···विश्वास का गला तो तुमने ही घोट दिया था न···पर मेरे जैसा था, जो उसे मरने न दे सका, मधु! और अब जब तुम शुद्ध हृदय लेकर मेरे पास आई हो। झूठ बोलने की आदत भी न छोड़ सकी!"

"तब क्यों मेरे लिए इतना कष्ट सहते हो। शैला यदि चरित्रवान है, तो उसे अपनी सह धर्मिणी बना लो ?"

"मैं तुम्हारा व्यंग सुनने नहीं आया हूँ, न चाहता हूँ कि तुम अब अधिक कुछ कहो। मेरे साथ जो कुछ कर चुकी हो' वह सब तुम्हें स्वयं मालूम है !"

"सो क्या ?"

"तुम्हें हमीदा के घर बुलाया था, पर तुम घमण्ड में आकर न आ सकी ! दो रोज हमीदा के घर गया, पर तुम अपने शान में अकड़ी रहीं...अपने यौवन और सौन्दर्य तथा अपने नकली अभिभावकों के पीछे उपग्रहों की तरह घूमती रही !"

मधुमा ने उस व्यंग का बड़े नम्र भाव से उत्तर दिया। वह बोली— "सच पूछो तो अब तुम मुझसे भागना चाहते हो और... और तुम उदास हो इसलिए ! मेरे चरित्र पर विश्वास न हो, तो तुम मुझे छोड़ सकते हो !"

'फिर क्या करोगी ?"

"जब तक जी सकूँगी, जीवित रहूंगी ! आत्म हत्या न करूँगी। विश्वास रखो !"

"और दूसरा विवाह नहीं करोगी ?"

"दूसरा विवाह... जहां हृदय का समन्वय हो, वह चाहे पहला विवाह हो, या दूसरा। दोनों ही एक सीमित विचार के बन्धन मात्र होते हैं। मन में तुमसे सुख की जो आशा किरण प्राप्त होती है, वह दूसरे से नहीं ! यह मेरे विवेक की बात है, जिसे मैं अब किसी दूसरे पुरुष के साथ ऐसा सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकती।"

"अच्छी रही ! लेकिन इस तरह जीवन को नष्ट करने से क्या ?"

"सम्भवतः मेरे इस प्रलय में निर्माण के बीज अंकुरित हो !"

"संहार से निर्माण...अधूरे यथार्थ वादियों एवं आदर्श वादियों के साथ तुम भी तो कुछ दिन तक रही हो, उसका प्रभाव तो कुछ न कुछ पड़ा ही है।"

"उससे निर्माण नहीं हो सकता... न उनका प्रभाव है, जीवन ! भले ही तुम मुझे चरित्रहीन समझ कर अपने स्नेह की पवित्रता को कलंकित

करते रहे··· पर मधुमा के जीवन में जब से तुमने प्रवेश किया है, वह किसी के प्रति कभी आकर्षित न हो सकी !"

"संस्कृति के प्रचारकों के साथ रहकर तुम्हारे मस्तिष्क में जो अंकुर उपज रहा है, उसे भी समझ रहा हूँ ! अपनी सफाई देने के लिए हर एक स्त्री-पुरुष ऐसा ही कहकर तो छुटकारा पा लेता है, मधुमा ! फिर···।"

"छिः छिः, बेदाग फौलाद पर इस तरह रंग न छिड़को ! वह दिन भूल गए जब मेरे बालों की खुशबू, मेरी निगाहों की गरमी और···और मेरी मुस्कराहट ही तुम्हारे जीवन की साँस थी ?"

"हाँ, मधुमा ! और वह अब तक मेरी निगाहों में उसी तरह खिली है, जो फूल से कोमल और क्रांति से भी अधिक कठोर है।"

"फिर यह उपेक्षा क्यों··?"

"उपेक्षा नहीं ! तुम्हारी उपादेयता का मार्ग बना रहा हूं।"

"ऐसी उपादेयता को अपने पास रखो···अब अधिक आँख-मिचौनी खेलने का समय नहीं है।"

जीवन को हँसी आ गई, उसने मधुमा की ओर देखा और फिर अपनी मुस्कराहट को ओठों के बीच दबाकर, बोला—"आज मैं सब कुछ पा गया ?"

"क्या पा गए··· मेरे पास क्या रहा, जो पा गए··· ?"

"हाँ, मधु ! पा गया···।"

"आखिर क्या पा गए हो··· ?"

"तुम अब समय की कीमत समझने लगोगी, सच, भारत के नागरिकों ने जब इसे पा लिया तो··· मेरा मनोरथ पूरा हो गया ?"

"बिकल्प की बातें न करो··· तुम्हारा मनोरथ पूरा हो···मेरी छोड़ो ! और अब···अब यह कहो कि किस से प्रेम करने की ठानी है ?"

"जन-जन के जीवन से··· !"

"किसी स्त्री के जीवन से भी तो अब नया राग जाग गया होगा ?"

"तुम्हारे मुँह में चीनी से भी बढ़कर मिठास है ! तुम अगर···चाहोगी,

तो मेरा राग, विराग न होगा, स्वर और साधना की सीमा संगीत नहीं कर सकेगी।"

"बातें बनाने की जिम्मेदारी ही तो लेकर तुम जी रहे हो··· शैला से विवाह करके मन नहीं भरा···।"

"तो मैं तुम्हारे पास विवाह की भिक्षा माँगने भी तो नहीं आया ?"

"फिर क्यों आ टपके···?"

"जमानत पर तुमने छुड़ाकर अपराध किया···नहीं तो···वहाँ रचनात्मक काम बहुत से पड़े हैं।"

"तो सात दिन कैद में रहे और वहां भी अलख जगा आए ?"

"हां···मधुमा ! तुम नारी क्षेत्र में सत्य के प्रकाश के साथ अभ्युदय काल की चेतना के प्रकाश को जहाँ गाँवों के सृजन में ठीक व्यय कर रही हो···तो मैं कैदियों के साथ उनके जीवन में राष्ट्रीय चेतना जो, पूर्णतया: उनके चरित्र को विकसित कर सके, एक ऐसा बीज बो आया हूं !"

"तो कैदी भी क्रान्ति करेंगे ?"

"क्रान्ति करने का युग बीत गया···जनता को गुमराह करने वालों की तरह मैं उन्हें क्रान्ति करने के बजाय, राष्ट्रीयकता का भाव उनके हृदय में उदित करना चाहता था···पर तुमने वहां भी न छोड़ा !"

"खैर, चलो···मौसम अच्छा है। हम नाव पर बातें करेंगे !"

"नाव पर··· नदी चढ़ी है ! इतने दिनों से यहाँ हो और··· और अब तक बाढ़ की धार तक न रोक सकी !"

"जो प्राकृतिक है, उसके लिए चारा ही क्या ?"

कहती हुई मधुमा ने अपनी गोरी-गोरी लाल अंगुलियों को नाव के तख्तों पर रखा, तो जीवन भी उसके पीछे-पीछे पास ही जा बैठा और पतवार उठाकर, बोला—"तुम्हारे काका··· मल्लाह है, और तुम··· ?"

"हाँ, जीवन बाबू ! मल्लाहों का गाँव है, अब तो तुम भी मल्लाह हो गए हो न ! लगाओ पतवार··· चलो ! आज जन्म-जन्म के संस्कार के साथ हम अपने प्रेम को स्वाहा कर दें !"

"छि···छि··· क्या कहती हो···जिस रोज प्रेम स्वाहा हो जायेगा···उस रोज···तो सब···सब कुछ उच्छ्रृंखल हो जायेगा···।"

"फिर प्रेम से भागते क्यों हो ?"

मधुमा ने कहा और नाव को जोर का सहारा दिया, तो नाव नदी के भीतर तैरती हुई चली गई। जीवन ने नौका की पतवार संभाल ली और मधुमा की ओर देख कर बोला—"प्रेम से कौन भाग सकता है, मधुमा ! पर उस सस्ते रोमान्स की परिभाषा वादियों से मेरे प्रेम का धरातल और है··· ।"

"कौन सा सुरखाब का पंख लगा है, तुम्हारे प्रेम के धरातल पर ?"

"जिसे देख कर भी तुम अनभिज्ञ बन रही हो !"

"देख रही हूं ··· शैला से विवाह करके ··· जीवन का ध्येय अब भी हर लड़कियों को प्रेम की नजर से देखने से नहीं चूकता है !"

"यह तो मैं स्वयं कहता हूं कि मैं सब से प्रेम करता हूं, चाहे मुझ से कोई प्रेम करे, या न करे ··· लेकिन ··· स्त्री रूप का जो प्रेम होता है, वह केवल तुम्हारें ही अन्दर देख सका ··· ।"

"लेकिन ··· पुरुष की यह अभिनय कला बड़े मार्के की है ?"

"पुरुष ··· हाँ ··· हां वह इन्द्रिय लोलुप अधिक हो गया है और···और अभी वह और लोलुप होगा यदि तुम्हारे वर्ग ने अपने व्यक्तित्व की कसौटी तैयार नहीं की !"

"रहने दो ··· सब यह बातें ! काका मुझे तंग करते हैं !"

"हाँ ··· दुनिया का हर एक माँ-बाप ऐसे ही तंग करता है, लेकिन इसमें परिवार और समाज का दोष नहीं, हमारा तुम्हारा है ·· हम अभी तक कुरीतियों को छोड़ना नहीं चाहते ··· ।"

"तो इसके लिए प्रयास क्यों नहीं करते ···लोक-लाज के साथ साथ वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर भी तो विवाह आवश्यक होता है ··· फिर इस तरह ···?"

"तो तुम विवाह कर लो न ··· ।"

"तुम मेरी फिकर क्यों करते हो ··· मरूं या जीवित रहूँ ··· पर तुम्हारे नाम से··· ?"

"क्या कह रही हो, मधुमा !"

"लो ··· यह दे रही हूँ, मेरे ललाट पर बिन्दी लगा दो ··· आज से मैं तुम्हें अपना जीवन साथी मान कर गाँव के काम में जुट जाऊँगी !"

"एक कैदी को ··· एक विवाहित को अपना जीवन साथी बनाओगी, तो क्या समाज की सखी-सहेलियों और सगे सम्बन्धियों की आँखों से आँख मिला सकोगी ?"

"अगर तुम शैला से विवाह करके अपने को पूर्ण समझते हो तो मैं तुम्हें रस्सी से बाँध कर तो अपनी तरफ नहीं खींचती ?"

"हाँ ··· नहीं खींचती ··· न कोई किसी से इस तरह रस्सा कसी की खींचा-तानी में कुछ पा सकता है, मधुमा ! मुझे तो भय नहीं ··· ।"

"छोड़ो ··· पुरुष तो अपने निर्भय पन की सदा से डींग मारता आया है, क्या स्त्री तुम से कभी कम निर्भय रही है ?"

"तुम्हारे मुँह में घी शक्कर···मधुमे ! अवश्य ऐसी रही हैं, लेकिन एक बल से उतर कर झट दूसरे पर उछलते देख समाज की आँखों में विनौन्ही और रात को रतौनी होने लगी···जहाँ भी निकलोगी—लोग कहेंगे—कि तुमने एक विवाहित से विवाह किया···।"

"नहीं, न हमने–न तुमने ! हमारी विचारों की रेखा ऐसे केन्द्र बिन्दु पर आकर जम गई है, जो पृथक रह कर भी ऐक्य के विस्तृत मैदान में प्रगति के साथ काम करती रहेगी !"

"आई न बात···प्रगति की !"

"हाँ···क्या तुम इस प्रगति से अलग हो—तुम भी तो उसे जानते हो···।"

"अधूरे वाद की नगरी का निवासी···जो प्रगति के नाम पर खोखले आदर्श वाद की रामनामी पहन कर योजनाओं की पूर्ति की माला फेर रहे हैं...उनकी बात कह रही हो—कहो-कहो, नदी सुन रही है, आकाश और आस-पास के किनारों के सहारे खड़े खेत के पेड़-पौधे सब सुन रहे हैं···।"

"आखिर तुम प्रगति से इतनी ईर्ष्या क्यों कर रहे हो ?"

"इसलिए कि प्रगति अपने व्यक्तित्व को अब तक स्वतः नहीं पहचान सका

है, मधुमे ! प्रगति से ईर्ष्या नहीं, बहुत स्नेह है, लेकिन ऐसा से नहीं, जो केवल प्रगति की परिभाषा बताने के लिए केवल पम्पलेट निकालते फिरते हैं।"

मधुमा को हँसी आ गई। नाव के नीचे अपना हाथ लटका, पानी के छींटे पीछे उछाल, आकाश की ओर आँख उठा कर बोली—"बात-चीत के सिलसिले में चाँद भी आकाश में खो गया···लेकिन···?"

"लेकिन क्या, मधुमे !"

"मेरा चाँद मेरे सामने सदा रहा है।"

"इस लिए तो चाँदनी ने अपने चाँद को छिपा लिया···लेकिन···अब यह चाँद भी हम से भाग कर दूर नहीं रह सकता।"

"क्यों दिमाग लड़ाते हो। चाँद पर पहुंचना आसान नहीं ! न जाने कितने मृत्युकों की संख्या से आकाश का वायु मण्डल···।"

"लेकिन विजय का वह दूसरा शानदार सप्ताह होगा—जब कि चाँद हम से छिपने से मजबूर हो जायेगा।"

"तब वह उस पार तारों के देश में मुँह छिपा कर सो जायेगा।"

और-और न जाने क्यों मधुमा का गला भारी हो आया। उसने अपने जीवन के सहारे अपना सिर टिका दिया और तब जीवन को लगा जैसे मधुमा की आँखों से नरम-नरम बादल की बूँदें उतर कर, उसके कन्धे पर तैरने लगी, हैं, तो उसने बड़े स्नेह के स्वर में कहा—"रो रही हो ! सच···पुरुषों के आधीन जब तक तुम अपने आपको समझती रहोगी, तुम्हारे आँसू नहीं सूख सकेंगे ?"

"नहीं···यह दुख के आँसू नहीं—सुख के हैं। तुम उसे नहीं समझ पाते तो···मेरा क्या दोष···बड़ी साध से बिन्दी लगाने को कहा था···।"

"ओह···तुम इसलिए रो पड़ी···लाल बिन्दी···सोहाग का सिन्दूर··· तुम्हारे चमकीले बालों के बीच तो ऐसी लगेगी, जैसे भोर के सूरज की कोमल किरणें···लाओ न···।"

"लेकिन तुम तो नहीं चाहते···?"

"मैं···मैं चाहता था···पर जानती हो···जब तक समाज में बारात न चढ़े, अदालत में जाकर गवाही न दें, तो विवाह की भाँवरें पूरी कैसे होंगी ?"

"जी···विवाह की भाँवरें···अगर ऐसा न हो, तो समाज में दुर्व्यवस्था फैलेगी और···फिर समाज की क्या दशा होगी ?"

"ऐसे ही समाज के अन्तर्गत जो चारित्रिक नियम हैं, वे सब छिन्न भिन्न हो चुके हैं, अगर तुम···।"

"तुम-तुम नहीं—जवाब दो। जीवन की इस पृष्ठ भूमि से उतर कर हम कुछ और भी तो कर सकते हैं ?"

"एक साथ रह कर हम जितना काम कर सकते हैं, अलग-अलग रह कर नहीं। फिर काका भी तो बूढ़े हो चले···आखिर इस समाज के प्रति अपने जैसा कोई पुष्प देना भी तो नारी का एक कर्तव्य है···!"

"यह कोई आवश्यक नहीं, मधु की माँ-बाप जैसा ही उनका पुष्प हो···या तो अधिक ऊँचा, नीचा, या मध्यम···इन्हीं परम्पराओं के आधीन अपने जीवन के पुरुषार्थ को व्यय कर देता है।"

"तो तुम विवाह नहीं करोगे ?"

"मैं···मैं···चाहता हूँ—पर दैनिक खर्च के लिए अपने पास तो अभी कोई स्थाई जरिया नहीं···विवाह के बाद जिम्मेदारियाँ वैसे ही बढ़ जाती हैं, जैसे एक के जीवन की जिम्मेदारियाँ !"

"तो क्या हो गया ? इसी तरह सभी सोच लेंगे तो संसार में न कोई वैज्ञानिक होगा, न राजनीतिज्ञ, न···किसी विषय का जानकार ?"

"ठीक कहती हो, लेकिन यह सब सारे समाज के पतन का भी तो मूल कारण है ?"

मधुमा कुछ कहने लगी थी, कि एकाएक नाव नदी के दूसरे किनारे से जा टकराई और वह उस पर से उछल कर किनारे पर खड़ी होती हुई बोली—" अब आ जाओ !"

"अब कहाँ चलोगी ?"

"सरदी काकी के घर !"

"सरदी काकी के घर, कौन है ?"

"बड़ी बूढ़ी है। उसका बेटा अब फौज में लेफिटीनेन्ट हो गया है।"

"तो यार होगा···?"

"जिस अर्थ में तुम सोच रहे हो ''' वैसा यार नहीं, वह तो बड़ा भला है, जब गाँव में आता है तो वह फावड़ा लेकर घुटने तक मिट्टी अपने खेत से निकाल देता है। देखते हो, नदी के किनारे ग्यारह फुट ऊंचा बांध पहाड़ सा जो दिखाई दे रहा है, उसने अपने साथियों के साथ इसे श्रमदान से बनाया था !"

"उसके पौरुष की प्रशंसा जितनी भी की जाय, थोड़ी है ''' लेकिन इस रजनी में वहाँ जाने का क्या तुक ?"

"मैं ''' अकसर रात को कभी-कभी खेत से नदी पार आ जाती थी और-और इसी बूढ़ी माँ के पास बैठकर उसके पुराने सपनों की कहानी सुनती थी।"

"सपनों की कहानी !" कहकर जीवन नदी के किनारे पर उतर पड़ा।

मधुमा छिपती हुई चांदनी में उसको क्षण भर तक निहारती रही और फिर गले से लग गई। उसने अपने दोनों हाथों से जीवन को भर कर कहा—"एक बार अपने अधरों'''से'''।"

"रोमान्स की आशाएं ब्याह के बाद अधिक सफल होती है, मधुमा !"

"क्या मतलब'''?"

"जब तक तुम्हारे सिर पर अपने जीवन की बिन्दी नहीं लगाता, तुम्हारे शरीर को पत्नी भाव से स्पर्श करना चारित्रिक नियमों का उल्लंघन होगा।"

"यह तुम्हारा थोथा आदर्शवाद है। प्रकृति की अपेक्षा जीवन की नहीं, बल्कि हृदय और शरीर की अपेक्षा करो न'''।"

"अगर तुम ऐसा कहती हो, तो लाओ, बिन्दी !"

मधुमा ने अपने हाथ में पड़े कागज की पुड़िया से बिन्दी को निकाल कर, बोली—"लो आज इस नदी-के कल-कल प्रवाह और आकाश के नीचे मेरे ललाट पर बिन्दी लगाकर इस बन्धन से मुक्त करो।"

"लेकिन इस विवाह को विवाह कौन कहेगा ?"

"हम–तुम.'''हमारी सन्तान तो हमें माँ-बाप समझेगी !"

"लेकिन समाज इसे न माने–सरकार उसे मान्यता न दे'''तब'''?"

"यह मन का सौदा अपने मस्तिष्क से सोचा है न। किसी स्त्री-पुरुष को

समाज अब जबरन एक के साथ नहीं रख सकता ! हाथ उठाओ, अपने पुरुषार्थ में कुरीतियों को तोड़ने की क्षमता हो, तो बिन्दी लगाकर मधुमा के जीवन का अभाव दूर करो न···।"

अनायास जीवन के हाथ यंत्र की तरह उठ गए और एकाएक उसने मधुमा के ललाट पर बिन्दी लगा दी। मधुमा का मन बाँसो उछल गया, वह क्षितिज की लालिमा सी लजा कर जीवन की विस्तृत चौड़ी छाती पर अपना सिर देकर खिलखिला पड़ी, तो जीवन ने अपने कन्धे से टिका कर कहा—"अब तो खुश हो ?"

"हाँ, मन की सारी मैल धुल गई !"

कहती हुई मधुमा न जाने किस भाव में खो सी गई थी कि नदी के किनारे से किसी मेंढ़क ने टर्रा कर आवाज लगा दी और वह भयभीत मन से जीवन के कन्धे से अलग होकर, बोली—"मालूम पड़ता है कि कोई नदी के किनारे आ गया है ?"

"चाँद छिप गया है और अंधेरी रात काले बादलों की साड़ी पहन कर और भी अधिक सुहावनी लग रही है, मधुमे ! भला इस अंधेरी रात में यहां कौन आ सकता है, जहाँ अपना हाथ तक नहीं सूझता।"

तभी किसी के खाँसने की आवाज सुन पड़ी। दोनों का साहस जैसे क्षण भर के लिए सो गया हो। जीवन अधिक देर तक इस उदासी को न देख सका। उसने मधुमा की ठोढ़ी को ऊपर उठा कर कहा—"क्यों इस तरह उदास हो गई ?"

"मालूम पड़ता है कि नानी दादी आ रही है ?"

"नानी दादी···!"

"हाँ···इस गाँव की वह सरपंच हैं। रात को नदी पर पहरा देने क्यों आती है ?"

"बड़ी बहादुर औरत है।"

"पर विचार नानी के बड़े दकियानूसी हैं।"

"सो कैसे···?"

"सच मानों, अगर कहीं उसने देख लिया तो सारा गाँव पंचायत की योजना बनाने में व्यस्त हो जायेगा ?"

मधुमा की बात सुनकर जीवन ने कहा—"अगर डर है, तो आओ, चलें, रात भी भींग चली है।"

"और अब मन की ऊमस भी मिट गई है।"

कहती हुई मधुमा ने जीवन के साथ नदी के कगार से चलकर नाव में कदम रखा, तो लहरों के हिचकोलों से नाव डगमगा उठी। नाव को डोलती देख, जीवन ने कहा—"सभल कर मधुमा ! नहीं तो···।"

"आओ भी न···नहीं तो क्या हो जायेगा ?"

"कौन जाने लहर का कौन सा हिचकोला हमें ले डूबे···।"

"अब, मैं इस की चिन्ता नहीं करती।"

"क्यों···?"

"तैरना जानती हूँ···अगर समुद्र भी हो, तो तैरकर साफ निकल जाऊंगी ?"

जीवन नाव पर बैंठने लगा था, कि पीछे से किसी ने कहा—"अरे कौन है रे। इस रात को चोरी छिपे कहाँ माल ले जा रहा है ?"

मधुमा ने उसकी आवाज पहचान ली और नाव पर खड़ी होकर बोली—"मैं हूं नानी माँ। तुम इतनी रात की अंधेरी में यहाँ कैसे ?"

"खेती देखने आई थी। धान के खेतों में पानी चढ़ आया है, लेकिन तू कौन है ?"

"पहचानी नहीं, क्या ?"

"आवाज से लगता है कि तू मधुमा तो नहीं है ?"

"हाँ, नानी माँ ?"

"और यह छोरा कौन है ?"

"जीवन बाबू।"

"जीवन···अरे इसके साथ तू रात को यहाँ क्या कर रही है। बड़ा निर्लज्ज है रे। इसलिए तो सब लोग इसके चरित्र पर सन्देह करते हैं, सो बात सच हो गई।" फिर जीवन की ओर घूम कर वह बोली—"क्यों रे···तू

भी कैसा जानवर है। जरा भी आँखों में लिहाज नहीं कि मधुपुर गाँव की बेटी को यहाँ रात को बहका लाया है ?"

जीवन ने घबड़ा कर हकलाते हुए कहा—"अरी, नानी ! क्यों बिगड़ रही हो ? मैं तो पार जाना चाहता था, सो मधुमा की नाव को देखकर पार जाने के लिए कगार पर आ खड़ा हूँ।"

"रहने भी दे, क्यों हमें जानवर समझ कर ढोरों को चराना चाहता है। यह उम्र ऐसे ही नहीं उड़ती जा रही है, बल्कि इसके साथ मेरी जिन्दगी भी उड़ रही है···।"

"हाँ···नानी मां ! तुम्हारी जिन्दगी तो बहुत उड़ी है···।"

"फिर जबान लड़ाता है। जरा सुबह होने दे, तो मैं तुझे बताऊँगी !"

कहकर अपना दाँत पीसती हुई वह चली गई, तो मधुमा ने धीरे से कहा—"जीवन यह ठीक नहीं हुआ···।"

"सो तो तुम जानो···अगर मेरे प्रति तुम्हें छोड़ने की आवश्यकता पड़े, तो तुम अपने को बदल सकती हो ?"

"बस नाम न लो। तन की अदला-बदली से नारी अब तंग आ गई है, जीवन ! मैंने अपने मन पर पत्थर रखकर नहीं, प्यार का परिधान रखकर अपना जीवन साथी चुना है।"

"लेकिन गाँव भर में यह चर्चा फैल जायेगी ?"

"उसकी चिन्ता न करो···।"

"जानती हो न, कि मैं जमानत पर छूटकर आया हूँ ?"

"हाँ-हाँ मेरे खिवैया··· पतवार लो और जल्दी से उस पार चलें।"

जीवन नाव में आकर बैठ गया। पतवार उसने अपनी मुट्ठी में बाँध नाव को पतवार के सहारे लेकर चल पड़ा। नीचे पानी के बीच दोनों की परछाई भी साथ चल पड़ी, तभी मधुमा उसके अंक में लोटती हुई बोली—"चलो··· जो होगा देख लूंगी···।"

नाव चली जा रही थी, बढ़ी हुई दरिया की चौड़ी छाती पर।

—o—

इक्कीस

दूसरे दिन जब सूरज तवे की तरह लाल हो गया, तो जीवन और मधुमा की प्रेम-कहानी गाँव की चर्चा बन चुकी थी। इस चर्चा को जब राज पंडित ने सुना तो उनके मन के सारे हौसले पूरे हो गए। सुबह होते ही घर-घर घूम कर, इस चर्चा की घरनी सा बन कर घूमने लगे। घूमते-घूमते मुखिया की चौपाल पर आ पहुंचे और अपनी शान बघारते हुए, बोले—"कहो, काका! अब तो अपनी बछेरी की चाल समझ गए न।"

मुखिया का मुख लज्जा से पूर्ण उत्तेजना के साथ चमक उठा। अपनी पगड़ी संभालते हुए, बोले—"तो क्या हो गया। अब से कितने ही दिन पहले से तो सारा गाँव, समाज जानता है कि जीवन को मधुमा चाहती है···जीवन ने उसके मानसिक और शारीरिक जीवन का जब निर्माण किया है, तो वह···।"

"छिः छिः, तुम तो पूरे नास्तिक हो गए हो। भला-न जात का, न पात का और फिर भी उसका पक्ष ले रहे हो काका हैं, पंचायत जब जुड़ेगी, तो इस गाँव में रहना मुश्किल हो जायेगा?"

"पंचायत···सच। पंचायत के पंचों में मुँह देखी बातें अधिक आ गई हैं, आखिर किस बात पर पंचायत हमें गाँव में नहीं रहने देगी?"

"तुम अपनी जाति से अलग बेटी का गठ बंधन करो, तो भला इसे गाँव कैसे सहन कर सकेगा?"

"जाति-पाति-कैसी···हमारी जाति तो केवल एक जाति है···वह है मानव जाति···फिर यह भेद भाव कैसा···?"

"लेकिन समाज इसे नहीं मानता।···जानते हो, नदी पार के रमिया पुरा में कैसी गरम-गरम हवा बह रही है?"

"गरमी के दिन में तो लू चलती है, पंडित जी! इसकी चिन्ता करूँ, तो बस दो घड़ी साँस लेना दुर्लभ हो जाय।"

"लेकिन इसमें तो गाँव की हँसाई हो रही है, न ! हर गाँव में जब यह खबर हवा की तरह फैल जायेगी, तो हमारे घर की बेटियों से भी तो कोई विवाह नहीं करेगा—हुक्का पानी सब बन्द हो जायेगा ?"

मुखिया राम सोच में पड़ गए। कुछ देर सोचने के बाद बोले—"पंडित जी ! गाँव की इज्जत का सवाल है, तो गाँव छोड़ कर चला जाऊँगा।"

"गाँव क्यों छोड़ते हो ! अपनी बेटी को कहीं चलता करो। स्त्री जाति को अधिक बढ़ावा देने पर बस समझ लो···शहरी तितलियों का सब्ज बाग हो जायेगा···और हमारे खेत के सारे धन्धे ऐसे ही धरे रह जायेंगे।"

"गलत कह रहे हो···शहर अपने स्थान पर ठीक है, गाँव अपनी जगह... लेकिन गाँव में सभ्यता—स्वच्छता तभी सम्भव है, जब वहाँ की स्त्रियाँ सुशिक्षित हों···।"

"इसकी माला फेरने से काम नहीं बनता, काका ! अब तो जल्दी से उसे किसी किनारे लगा दो···नहीं···तो···।"

"नहीं तो क्या···हो जायेगा ?"

"गाँव की नाक कट जायेगी !"

"नाक···गाँव के लिए रचनात्मक काम करने में किसी की नाक नहीं कटती' पंडित जी ! इस सर्वांगिक बस्ती को हम अपनी ही गलतियों से सस्ती बस्ती बनाए हुए हैं। यदि गाँव को इतना द्वेष है तो वह द्वेष की सुपारी चबाता रहे–ईर्ष्या की चिलम पीता रहे–पर···पर···मैं जानता हूं···कि जब से जीवन आया है–मधुमा को उसने जगा कर जीवन दिया है और तब से देखते हो–कि हर एक जाति का युवक–युवती पूर्ण शिक्षित हैं, तब के गाँव में और आज के में कितना अन्तर है ?"

"किस बात का अन्तर काका ?"

"अन्तर–महान् अन्तर। पहले जिस जमीन को हम जोतते थे···जिसकी मिट्टी से हमारी सन्तान खेल कर—खाकर इतनी बड़ी होती थी···लेकिन यदि जहाँ जमींदार-राजा-जागीरदार और रियासत की नजर घूम गई, तो बस सारी सम्पत्ति एक दिन में स्वाहा !"

"अब भी तो वही बात है, काका !"

"नहीं···अब वह बात नहीं। बल्कि हमारे खेत हैं, हम अपने खेत के मालिक आप हैं। क्या इस तरह की चेतना कभी रही···?"

"इस चेतना—वेतना की बात नहीं। यहाँ तो गाँव की एकता की बात है, काका ! जानते हो—गाँव में क्या अफवाह है ?"

"अफवाह—क्रांतिकारी, गन्दी भ्रमोत्पादक बातों को सुन कर उस पर गौर नहीं करते, पंडित जी !"

"लेकिन इसका प्रभाव गाँव की लड़कियों पर भी तो पड़ेगा ?"

"प्रभाव···कैसा···प्रभाव ?"

"काका ! कल की रात मधुमा, जीवन की गोद में नदी के उस पार लेटी थी।"

"कौन कह रहा है।" मुखिया का स्वर जरा तेज हो गया।

'नानी माँ।"

"कौन नानी माँ ?"

"वही रमिया पुरा की सरपंचा···अपनी···।"

"वह झूठ बोलती है ?"

"वह···वह इस तरह झूठ नहीं बोलती, काका ! आखिर उसने भी तो अनुभव के आँगन में ही अपने बाल सफेद किए हैं।"

"तो देखा भी तो क्या हो गया ? आखिर जब जीवन से वह ब्याह करने के लिए लालायित है तो···।"

"लेकिन यह ठीक नहीं काका ! गाँव की बहू-बेटियाँ भी इसी तरह की हो जायेंगी, वह···वह जीवन तो शहरी है जानते हो कि शहर के लोग सिनेमा देख कर ही यह सब कुकर्म सीखते हैं, फिर तुम क्या चाहते हो कि सारा गाँव इन्हीं कुकर्मों के पीछे हठ धर्मी होकर चल पड़े।"

"यह तो सब अपने-अपने स्वभाव की बात है, पंडित जी !"

"स्वभाव नहीं, नैतिक पतन है। तुम नहीं जानते कि वह किस बिल का साँप है ?"

"तुम्हारे घर में तो वह कभी नहीं गया—फिर क्यों इस तरह घबरा रहे हो ?"

"ताव न दिखाओ, मुखिया काका ! जीवन की जबान तुम्हारी जबान से बोल रही है, पर वह बच नहीं सकता। न उसके बचने की कोई गुंजाइश है।'

"बयान तो उसने सच दिया है, तुम जैसे चापलूसों की सिफारिश पर भले ही सच—झूठ हो जाय···।"

"और ऐसा होकर रहेगा···?"

"लेकिन···इस केस में जान नहीं है ?"

"जान···अगर जाल से बचा, तो टाप से कहाँ जायेगा ? जीवन की चाल तुम नहीं समझ सकते।"

"क्या मतलब है, तेरा···?"

"मतलब यह है, काका कि एक जीवन जाल से मछली को पकड़ता है, लेकिन जाल से मछली निकल जाय, तो टाप वाला उसे पकड़ लेता है।"

"तो जीवन का उदाहरण तू जाल साज सा दे रहा है।"

"जाल साज···इसमें क्या शक है। अभी तो तुमने उसके बारे में दूसरा केस नहीं सुना··?"

"दूसरा केश···? वह क्या है, पंडित जी !"

"पंडित राज कुछ कहने वाले थे, कि बाहर से दौड़ती हुई मधुभा आ खड़ी हुई—बोली—"दादा ! गजब हो गया।"

"क्या है, बेटा ! रोती क्यों है ?"

"जीवन बाबू को पुलिस पकड़ कर ले जा रही है।"

"क्या कह रही है रे ! भला अब उस पर कौन सा जुर्म लगा दिया !"

पंडित राज ने झट अपनी टेंट से चुनौटी की डिबिया निकाली और उसमें से चूना निकाल कर अपनी हथेली पर रखते हुए, बोले—"अरे मुखन काका ! यह सुरा-सुन्दरता जिसके घर बैठ जाय, ओकर नाश हो जात है। सच कह रही है। मलहोवा गाँव की सरहद पर खेत के मेड़ के बारे में आपस में दो किसान लड़ पड़े···।"

"लेकिन कब···?"

"आज की सुबह।"

"तो जीवन से उसका क्या सम्बन्ध ?"

"जीवन···जीवन ने वहाँ एक आदमी का खून कर दिया है।"

"जीवन और खून···क्या कह रहे हो ?"

"सच कह रहा हूँ। इसमें चकित होने की बात नहीं।"

"बड़े अचरज की बात है। भला जीवन···खून···?"

"हाँ, काका ! जीवन ही जीवन का खून करता है !"

"लेकिन किस कारण वश ?"

"केवल वह समझौता कराने की गर्ज से गया था···लेकिन बात चीत के सिलसिले में उसे भी क्रोध आ गया और उसने रक्टू के हाथ से गंड़ासा छीन कर सोखा की गर्दन पर दे मारा।"

"झूठ—सरासर झूठ ! वह ऐसा नहीं कर सकता ?"

तभी मधुमा ने कुछ अधीर होकर कहा—"काका कुछ करो—मेरा जीवन···।"

"जीवन का आसरा अब छोड़ दे बेटा ! अब यह कातिल हो गया !" पंडित राम ने अपनी चुटकी में तम्बाकू भर कर अपने ओठों में रखते, हुए कहा।

मुखिया राम की आँखें गीली हो गई। अपनी पगड़ी सभाल कर उठते हुए बोले—"चलो, राज पडित ! देखें क्या बात है। जीवन ने ऐसा क्यों किया ?"

पंडित राज भी उठ कर अपनी खड़ाऊ पहनने लगे, थे, कि हमीदा आ पहुँची और हाँफती हुई, वह बोली—"काका, जीवन बाबू को पुलिस पकड़ कर ले जा रही है।"

"पुलिस···हाँ···हाँ ! चल रहा हूँ, बेटा !"

"कह कर वह अभी दो चार कदम ही चल सके थे, कि गाँव का चौकी-दार शिवपूजन आता दीख पड़ा। उसे देखते ही मुखिया ने उसके समीप जाकर लाठी टेक दी और फिर उसके कन्धे पर हाथ रख कर बोले—"क्या है शिवपूजन ! यह सब क्या सुन रहा हूं ?"

"सब ठीक है, काका ? जीवन बाबू ने सोखा का खून कर दिया।"

"लेकिन यह कैसे हुआ !"

"घटना पर तो मैं नहीं था, काका ! लेकिन लोग कहते हैं कि खेत सोखा वर्षों से जोतता आ रहा था और रियासत कहती थी कि हमारे जोत में है। दोनों के हल बैल के साथ दोनों तरफ से भाले-गड़ासे-बरछे भी साथ थे, फिर क्या था···दोनों दलों में बज गई···।"

"क्या जीवन भी वहाँ था ?"

"हाँ···जब यह घटना घटी तो हमारे घर के सामने के नदी के किनारों पर मिट्टी फेंक रहे थे···।"

"फिर वहां कैसे गया ?"

"वहां·· लोगों का शोर सुन कर वह वहाँ आए थे···और शायद सोखा से कुछ कहा सुनी हो गई, उसे उन्होंने मार दिया।"

"क्या सोखा के घायल होने के पूर्व वह वहां पहुँच गया था ?"

"लोग ऐसा ही बताते हैं।"

मुखिया राम ने चलते हुए, पूछा—"क्या उस समय वहाँ कोई न था ?"

"नहीं, काका ! बस दोनों दलो के सिवा तीसरा कोई न था।"

"जीवन कहाँ गया ?"

"उसे लोगों ने पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया है। इस समय वह गाँव की पोखरी पर बैठा है। सारा गाँव तमाशा देख रहा है।"

"जीवन को भी चोट आई है, क्या ?"

"हाँ···काका ! उसका तो सिर खुल गया है, बेचारा बहुत···।"

"तो तू कहाँ जा रहा है ?"

"मैं अपना वर्दी-पेटी लेने जा रहा हूं। थाने पर जाना है।"

"और लाश कहाँ रखी है ?"

"वह भी पीपल की पोखरी पर रखी है। तुम चलो, मैं अभी आया।"

कह कर शिवपूजन अपने घर की ओर भाग खड़ा हुआ। उसके चले जाने के बाद मधुआ और हमीदा के साथ पंडित राज मुखिया जी की हाँ-में-हाँ

मिलाते हुए, आगे बढे, तो ऐसा लगा, मानो गाँव के पेड़-पौधों के पत्ते भी इस घटना से चीख चिल्ला रहे हों। मधुमा शान्त भाव से अपने काका के साथ चली जा रही थी, कि पंडित राम ने सब की मौनता भंग करते हुए कहा—"चलो ! भगवान से अन्याय न देखा गया। वह खुद उसके मन में बैठ कर उसे अपने दरबार में ले गया। सच-मुखिया काका ! हम तुम भले ही किसी के पाप को छिपा लें, परन्तु वह सर्वशक्तिवान् पापियों को कभी नहीं छोड़ सकता।"

मुखिया राम ने चलते-चलते कहा—"इसमें भगवान को क्यों दोष देते हो। भगवान का नाम लेकर हम अपने अपराधों को छिपा लेते हैं।"

वह इतना ही कह सके थे कि पोखरी आ गई और सब ने देखा कि जीवन कुछ लोगों के बीच में बैठा था। उससे थोड़ी दूर पर सोखा की लाश रखी थी। जीवन को मोटे रस्से में बाँध कर एक पेड़ के तना से बाँध दिया गया था। मुखिया को देखते ही वह हँस पड़ा, फिर बोला—"आ गए, काका !"

"हाँ, मैं तो आ गया। लेकिन यह क्या किया तुमने—?"

"मैंने···खून···नहीं किया···काका ! मारने वाला कातिल और है, मैं तो बीच में समझौता करा रहा था।"

पंडित राज बोले—"रहने दो, जीवन बाबू ! क्यों जान बचाने की अब कोशिश कर रहे हो ! आदमी के भेष में तुम जानवर हो···।"

"ठीक कहते हो, पंडित जी ! आदमी एक ऐसा जानवर है, जो बड़े से बड़े जानवरों के साथ आदमी पर भी अपना अधिकार कर लेता है "

"जा-जा···अब तुझे मालूम होगा, आदमी का रिस्ता आदमी से होता है, तू तो जानवर है, जानवर !"

"और तुम आदमी होकर भी जानवर सी बातें करते हो···जानवरों सा दिमाग भला आदमी के रिस्ते को क्या समझ सकता है ?"

"अरे पडित जी ! तुम रियासत के आदमी हो। भला तुम आदमी के रिश्ते को क्या जानो। जब मेंढ़क भी मुर्गे की तरह बांग देने लगे, तो बिना समय का सवेरा कैसे न हो ?"

"बच्चू ! अब मालूम हो जायेगा, कि आदमी से नाता न रखने का क्या मजा होता है ?"

"हाँ···पंडित जी ! तुम रियासत से नाता रखते हो, पर हम जानवर तो जानवर, पेड़-पत्तों से भी नाता रखते हैं।"

"इसमें शक क्या है, पंडित जी !" मधुमा ने कहा।

"चुप रह। वह जमाना निकल गया, जब तू जिधर से निकलती थी, बिजली सी कौंध जाती थी···अब तेरी उम्र भी जो उठ रही थी, वह समझ जायेगी—जब पेट भर भोजन के लिए मुहताज होकर इधर-उधर मारी-मारी फिरेगी।"

"रहने दो पंडित राज ! भले ही तुम और तुम्हारा समाज भूखों मरे, अकाल में तड़फे, पर हम कभी भूखों नहीं रहते। कभी कोदो का चावल, कभी सिकइ पेय, नहीं तो करौदा के दाने, तेंदू के फल, जारया के बेर और चिकोड़ा की भाजी तो हम से कोई नहीं छीन सकता।"

मधुमा की निर्भीकता पर जीवन खुश होकर बोला–"सच, मधुमा ! तुम्हारे सन्तोष जनक उत्तर की कोई तारीफ नहीं कर सकता।"

"हाँ···हाँ···तुम नहीं तारीफ करोगे, तो कौन करेगा ? अभी तक साँप जैसी ऐंठन तुम्हारे शरीर पर पड़ी है, वह जेल में पहुंचते ही ठीक हो जायेगी।"

जीवन का चेहरा लाल मकई के दानों की तरह चमक उठा। वह कुछ कहने लगा था, कि मधुमा उसके पास जाकर, उसके घावों पर हाथ फेरने लगी। फिर बोली–"छोड़ो इसे, तुम्हें चोट तो काफी आई है ?"

"हाँ···जब दो जानवर आपस में लड़ते है, तो बीच-बचाव करने वालों को चोट आती ही है। लेकिन आत्म-विश्वास के सामने इस चोट का कोई प्रभाव नहीं मधुमा ! दोनों दलों के दीवानों के बीच समझौता कराने का यह अंजाम है···।"

"लेकिन तुमने गँड़ासा क्यों चलाया ?"

"न्याय-प्रति कार चाहता था !"

"तो तुमने सचमुच जान बूझ कर मारा···हाय-यह क्या कह रहे हो ?"

"अगर मैं कहूँ कि मैंने नहीं मारा, तो भी गवाहियों के कारण हमारी सारी बातें झूठ पड़ जायेंगी, मधुमा ! मुझे चोट लगी है पर इस चोट की गहराई को तू क्या जानेगी। पगली, बाहर की चोट को भी कहीं चोट कहा जाता है ?"

"और नहीं तो क्या–?"

"नहीं-नहीं, मधुमा ! मुझे तो मानवता के शरीर पर जो चोट लग रही है, उसे देख कर मेरा-रोम-रोम छटपटा रहा है।"

मधुमा के गाल सेमल के लाल फूल की तरह खिल उठे। वह बोली—"लेकिन अब तुम नहीं छूट सकोगे ?"

"तो क्या हो गया, तुम तो रहोगी। मुझे फाँसी हो जाय, तो गाँव के रचानात्मक कार्यों से तुम्हें विलग नहीं होना चाहिए।"

मधुमा की आँखों में एक आध कतरे उतर आए और उसने सूखे पत्तों सी अपनी मनो भावनाओं को समेट कर कहा–"सच कहते हो। अब तो जब तक तुम नहीं लौटोगे–मैं अपना सारा जीवन गाँव की उस कलह की दीवार तोड़ने में लगा दूंगी।"

मुखिया जी आँसू गिरा रहे थे, कि शिवपूजन चौकीदार आ धमका और फिर कुछ लोगों के साथ जीवन और सोखा की लाश लेकर थाने की ओर चल पड़ा।

गाँव से जीवन जब मुखिया और मधुमा को छोड़ कर पुलिस के साथ चला, तो ग्रामीण जनता ने काना फूसी शुरू कर दी। जब मधुमा उनके पास से गुजरने लगी, तो पंडित राज ने अपने साथी से कहा–"देखा न···इस छोकरी को···। सारे समाज के सामने जीवन की चोट पर अपने आँचल का चँवर डुला रही थी। भई, ऐसी लड़की को गाँव में कौन रहने देगा ?"

"रहने दो पंडित जी ! तुम भी जिस तरह उसके पीछे पड़े हो, उसे पाना बहुत कठिन है।

"अरे यार ! अब तो रास्ते का काँटा ही साफ हो गया। उधर जीवन को अब फाँसी की सजा होगी और इधर राजकुमारी शैला का विवाह भी सावित्री प्रसाद सिंह से हो जायेगा···फिर हम राजा साहब से मिल कर खूब गुल छर्रे उड़ायेंगे।"

"सो तो ठीक है लेकिन जीवन के सिवा उसके ऊपर कोई अपना हाथ नहीं रख सकता।"

"छोड़, यार–अब आगे देखना, कि इस बेशरम लड़की का क्या अंजाम होता है।"

बात-चीत करते हुए दोनों एक ओर चले गए। मधुमा भी अपने काका के साथ घर लौट आई। वह चुपचाप जाकर अपने घर में चारपाई पर लेट रही–

—०—

बाइस

गाँव के आस-पास के गाँवों में मधुमा और जीवन की प्रेम कहानी की चर्चा का सबसे बड़ा जो प्रसारित केन्द्र बना था वह गाँव राजा साहब के कार-गुजार पंडित राज का था, जिसने इस प्रचार में पूरा सहयोग दिया, जिन लोगों ने अपनी आँखों इसे देखा था, कि हत्या किसने की, वे गाँव के गुन्डों से बचने के लिए अपनी जबान हिलाने से भी डरते थे। लेकिन इसमें सबसे अधिक जवानों की बन आई थी। जब कभी मधुमा गाँव की गली-कूचे से निकलती, तो नव जवान उस पर आँखों की रोशनी फेंकते, कुछ मन ही मन अपना सब कुछ लुटाने पर तैयार हो जाते, तो कभी कोई उससे बातें करने के लिए मन ही मन कुछ सोच कर आगे बढ़ जाता। लेकिन एकाएक उसकी बरौनियों से छिटकती चिनगारी को देख कर, वह पीछे हट जाता! इस तरह कुछ दिन जब बीत गए, तो एक दिन पंडित राज ने अपने शिष्य चन्दर को उसके खिलाफ उभारा और उसकी पीठ पर हाथ रख कर बोले "बस, अगर आज मधुमा को छेड़ दे, तो तुझे पाँच कल्दारों से खुश कर दूंगा !"

"लाओ, पाँच रुपए···।"

"मुझ पर भरोसा रख, कहा पाँच चमकेंगे।"

"तो चल···देख वह जीवन के वियोग में बरसाती नदी सी अपनी आँखें बहा रही है। अवसर अच्छा है, जा, जरा छेड़ तो सही !"

चन्दर जरा शोख तबियत का आदमी था। गाँव-घर की बहू-बेटियों को तकना तो उसका अपना मुख्य एक पेशा सा हो गया था। पंडित राज की शह पाते ही वह तेजी से मधुमा के घर जा पहुंचा। राज पंडित उसके घर से थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे बैठ गए।

मधुमा के घर के निकट जब चन्दर पहुंचा, तो मधुमा किसी पुस्तक के

पढ़ने में लगी थी। बाल खोल कर वह अपने घर के सूत से बनी सुतली की चारपाई पर बैठी थी, कि चन्दर जा खड़ा हुआ और उसकी ओर देख कर बोला—"मधुमा ! आज तो बहुत अच्छी लग रही है !"

"ओह, तू चन्दर, यहां कैसे ?"

"तेरी भलाई के लिए आया हूँ !"

"मेरी भलाई क्या करेगा–तू अपनी देख। जा, यहाँ से, इस समय मेरा माथा क्यों खराब कर रहा है।"

"बड़ी भोली बनती है, अपनी करतूत को नहीं देखती।"

"देखती हूँ चन्दर ! लेकिन तेरी काली करतूतों से मेरी करतूतें कहीं अच्छी हैं।"

"रहने भी दे, सारे गाँव में तो हंगामा मचा दिया है, फिर अपनी डींग डींकती है।"

मधुमा का हृदय जैसे कोई लकड़ी चीरने वाले आरे की धार से चीर गया, वह अधीर होकर बोली—"चन्दर भैया ! तू चला जा। अपने हृदय को मलीन न कर !"

"चला जाऊँ···। जानती है न, कि चन्दर का जन्म इसलिए होता है कि वह सारे अंधकार को दूर क र दे···।"

"तो तू मेरे मन का अंधेरा दूर करेगा ?"

"हाँ···अगर मेरी मान, तो जीवन का आसरा छोड़कर मुझसे शादी कर ले···।"

मधुमा के लाल-लाल तुरई और गुड़हल के फूल जैसे ओंठ बज उठे। बीच उसके दाँतों की लड़ी चाँदी की लड़ी की तरह चमक रही थी। वह जोर से खिलखिला पड़ी। अपनी खिलखिलाहट रोक कर, बोली—"जा···कुत्ते की तरह अपनी वासना की बयार लेकर···मैं-मैं न मन से, न तन से··· किसी की नहीं···केवल अपने देश की हूं···।"

"अरे इस देश-वेश के चक्कर में क्या रखा है, रे। तू तो ऐसी है, जैसे बादल में बिजली।"

"लेकिन बिजली को अपने साथ रखने की क्षमता सब में नहीं है, चन्दर ! केवल बादल ही अपने अंक में बिजली को साथ रख सकता है।"

चन्दर के गले में गुलेल भी लटक रही थी। अपनी बात कटते देख झट उसे गुलेल की याद आ गई। इस गुलेल से न जाने कितनी चिड़ियों को उसने ढेर कर दिया था, कितनी पनहारिनी के घड़ों को निशाना साधने में किसी और घाट भेज दिया था। इसलिए चन्दर का यह आखिरी अस्त्र था, जिसका प्रयोग सम्भवतः सफल हो जाय, यह सोचकर, उसने गुलेल गले से उतारी और अपनी जेब से मिट्टी की गोलियों, जिन्हें आग में पकाकर उसने पत्थर सा बना लिया था, उसे गुलेल के बीच रख रबर खींचते हुए बोला—"देख ! इस गुलेल की गोली।"

मधुमा निर्भीक आँखों से उसके कारनामों को देख रही थी, जब उसने गुलेल की गरदन फेंकी, तो वह और भी जोर से हंस पड़ी, बोली—"पागल है, गुलेल से चिड़ियाँ मरती हैं, आदमी नहीं ?"

"आदमी-क्या कहती हो। अगर एक बार तेरे सीने पर पूरा रबर खींच कर छोड़ दू तो बस समझ कि तेरा सदा के लिए कल्याण हो जायेगा...।"

"लेकिन तुझे क्या मिलेगा। मेरा माँस भी तो तेरे खाने के काम नहीं आयेगा, फिर...?"

"सो तो है...लेकिन गाँव से ऐसी स्त्री का नाम तो मिट जायेगा।"

"भाग जा...नहीं तो अभी पड़ोसी को बुलाती हूँ।"

"पड़ोसी क्या करेगा...चन्दर की गुलेल की गोली का मुकाबला ऐसे तैसे तो अलग रहे, बन्दूक भी नहीं कर सकती।"

कहकर उसने गुलेल संभाली और जब रबर खींचने लगा था, कि पीछे से किसी ने हाथ पकड़ लिया। चन्दर घूम गया। उसने देखा पीछे पंडित राज के साथ शैला खड़ी थी। उसके थोड़ी दूर पर नीली अपने हाथ में जयमाला लिए खड़ी थी। उन्हें देखते ही चन्दर ने कहा—"ओ आप ! यहाँ कैसे ?"

"चन्दर...अब तू जा यहाँ से। मैं, मधुमा से बातें करने आई हूँ।"

चन्दर उसी दम वहाँ से चला गया । तब शैला मधुमा के समीप ही बैठ गई। फिर उसकी पीठ पर हाथ रखकर बोली—"मुझे क्षमा कर दो, बहन।"

"क्षमा···किस बात के लिए···।"

"मैंने तुम्हारे अधिकार को छीनने की कोशिश की थी—पर···पर पुरुष के मन अथवा नारी के मन के पर बलपूर्वक कोई अपना अधिकार नहीं कर सकता···यदि वह दलालों के डंडे से न घिरी हो ?"

"तुम्हें अक्ल आई, इसके लिए अनेक धन्यवाद, मिस शैला ! लेकिन अब तो उस पर आप की रियासत का जुल्म खून का है···तुम···जब कि मेरे सौभाग्य से खेल चुकी···तब आई हो.क्षमा माँगने···।"

"हाँ मधु ! मैंने समझने में भूल की···झूठे प्यार के स्वाँग पर संसार की समृद्धि नहीं हो सकती।"

"इसमें तुम्हारा भी क्या दोष। स्त्री हो या पुरुष। दोनों की वासना जन्म स्थिति इन्हें विवश कर देती है। जब उम्र बच्ची होती है तो कच्ची बातों का हो जाना भी कुछ स्वाभाविक है, शैला ! मुझे···अब तुमसे गिला नहीं, शिकवा नहीं। तुमने जीवन को फाँसी के तख्ते पर सुला दिया तो भी मेरे जीवन का सौहाग कभी नहीं सो सकता।"

"शर्मिन्दा न करो बहन ! अब मुझे माफ करो···तुम्हारा जीवन तुमको···मैंने अपने जीवन साथी को खोज लिया···।"

"कौन है वह···जो विवाहिता से पुनः विवाह करने का साहस रखता है ?"

"समाज बहुत आगे बढ़ गया है मधुमा ! राजा सावित्री सिंह से मैंने अपना गठ बन्धन कर लिया। सगाई पक्की हो गई है···तुम उस रोज मेरे विवाह में आओगी न ?"

"विवाह···नहीं नहीं शैला ! अब मैं इस समाज के दलालों द्वारा आयोजित विवाह में कभी नहीं जाती।"

'क्यों, जीवन के प्रतिकार का प्रतिशोध ले रही हो, या मुझे पूँजीपति, सामन्त शाही परिवार की पुत्री जानकर मरी अपेक्षा कर रही हो ?"

"सामंत शाही···परिवार के पुत्र-पुत्री यदि अपने प्राचीन सामन्त वादी प्रवृति का प्रयोग हमारे साथ करेंगे, तो विलगाव तो स्वाभाविक सा है, राज कुमारी !"

"तो न आओगी ?"

"डर लगता है—कि एक को कत्ल के अभियोग में फंसा दिया, दूसरे को अगर डाका जनी के डीह पर बैठा दिया, तो सारा गाँव चौपट हो जायेगा··· ।"

शैला को जैसे कोई प्रश्न मिल गया। मधुमा के चेहरे की ओर देखकर, वह बोली—"इतना न डरो ! जो हो गया, सो हो गया··· परन्तु जीवन के पुनः जेल जाने के बाद भी तुम्हारे चेहरे पर विषाद की रेखा नहीं दीखती ।"

"विषाद··· को हर्ष में बदल कर ही शेष काम की पूर्ति हो सकेगी, शैला ! जीवन को अगर फाँसी भी हो गई, तो वह···वह उसके अधूरे कार्यों को मधुमा अपना जीवन देकर पूरा करेगी··· और जब हमारे देश के गाँव-गांव का नकशा सुशिक्षित एवं सभ्य होकर हमारे सामने आयेगा··· तब हर गांव में जीवन का वास्तविक रूप दृष्टिगोचर होगा ।"

"सच कहती हो··· लेकिन वह दिन अभी तो बहुत दूर है ?"

"दूर नहीं, निकट है, शैला ! अब तो वह दिन भी दूर नहीं, जब मनुष्य सुबह अपने घर से खा पीकर चलेगा, तो दिन भर फ्रान्स, इगलेंड, रूस और अमेरिका से अपना काम व्यापार करके शाम के पाँच-सात बजे तक अपने घर आ जायेगा !"

इस पर शैला मुसकरा उठी। उसने मधुमा के सिर पर हाथ रखकर कहा —"तेरी भविष्य वाणी सच हो··· लेकिन यह बता, आयेगी न कल, हमारे विवाह··· ?"

"हाँ··· अगर काका आ गए, तो जरूर आऊंगी !"

"कहाँ गए हैं, तेरे काका ?"

"जीवन बाबू की जमानत की कोशिश करने ?"

'अब वह नहीं छूट सकेगा, मधुमा ! तुम अपना काम करो, इस गवांरु-पन को छोड़ दो ?"

"गवाँरुपन''' नारी होकर नारी की हूक को नहीं समझती—।"

"हूक''' कैसी हूक''' ?"

"हूक''' यह तो तुम्हारे हृदय में भी ईर्ष्या के कारण उपजी थी।"

"तो तेरा मतलब है कि मैं ईर्ष्यालु हूँ। और क्या तू ईर्ष्यालु नहीं है ?"

"नहीं, मेरे हृदय में ईर्ष्या के लालन-पालन का कोई स्थान नहीं। मुझे तो ईर्ष्या से उपजी बेचैनी भी बहुत प्यारी लगती है।"

"लेकिन तू उसके योग्य तो नहीं मधुमा !"

"योग्य न भी हूँ तो क्या हुआ, आकांक्षाए तो हैं''।"

"कैसी आकाँक्षाएँ'''! इस मन और शरीर की आकाँक्षाएँ ?"

"हाँ, मन पर शरीर का और शरीर मन की गति को अपने अनुरूप ढाल लेता है और तब प्रकृति मुरझाए हुए प्राणों को नया जीवन प्रदान करती है।"

"तो तुझे जीवन के इस काम से जरा भी दुख नहीं ?"

"जानती हो, चाहना और ईर्ष्या के दर्द में भी कितना सुख है, कितना आनन्द है।"

शैला ने कहा—"इस तरह जीवन बिताने से क्या लाभ होगा। अपने भविष्य को इस तरह सस्ता क्यों समझ रही है ?"

"सस्ता कहाँ'''मैंने उससे प्रेम किया है, आकांक्षाओं के सक्रिय प्रयोगों के अनुकूल प्रकृति ने मुझे शान्त और सम्मान पूर्वक जीवन भर साथ चलने की जो गति दी है, वह सस्ती नहीं, अद्भुत है, शैला !"

"तू चाहती है कि तेरा दुख सदा शेष बना रहे ! पर सच मान, इन पुरुषों के लिए चाहे हम कितना भी कुछ करें, ये हमेशा हमें प्रश्न सूचक दृष्टि से ही देखते रहेंगे'' जिस जीवन को तू इतना सस्ता समझ रही है, इसे व्यर्थ नष्ट न कर'''मधु !"

"सच कह रही हो। उसे आजीवन कारावास हो जायेगा'''उसके शरीर का सम्बन्ध मेरे शरीर से अलग हो जायेगा'''तुम जानती हो कि हम दोनों के चाहने का आधार क्या है ?"

"तुम्हारी इच्छा, तुम्हारी उमंग !"

"तो तेरा मतलब यह है कि उसका यौवन ही मेरी चाहना का आधार है ?"

मधुमा हँस उठी। उसके अधर लाल लाल तुरई की तरह चमक उठे। शैला का हाथ अपने हाथ में लेकर वह बोली—"यौवन-नहीं, बल्कि मैं'''मैंने अपनी बौद्धिकता को अपने प्राकृतिक प्रेम और सौन्दर्य रूप से उसे अपने समान ही पाकर ऐसा किया।"

"तेरे उन्माद के लिए ऐसे शब्द नहीं ! जिसकी अभिव्यंजना की जा सके'''। अच्छा मैं तो चलती हूँ !"

"क्यों ?"

"वह देख शायद तेरी कोई सहेली आ रही है ?"

"तो ठहर जाओ न, हमीदा है। वह तुमसे मिलने के लिए आतुर थी।"

शैला उत्तर भी न दे सकी थी, कि हमीदा आ पहुंची और शैला की ओर देखकर, मधुमा से बोली—"क्यों, दीदी ! यह कौन है ? किसी काम वस यहाँ आई हैं, क्या ?"

"नहीं हमीदा, यहा हैं, वह शैला !"

"शैला–रियासत की राजकुमारी ! जयहिन्द, मिस शैला !"

"अरी—अब शैला नहीं ! श्रीमती शैला कहो न !"

"लेकिन जीवन दादा को तो न जाने क्यों शैला के प्यार का गुलदस्ता जरा भी नहीं जंचा।"

"चुप रह हमीदा ! जीवन को मैंने गलत समझा। अगर मैं यह जानती कि वह कातिल भी बन सकता है, तो''''।"

"कातिल वह नहीं, बल्कि वह है मिस शैला'''जो किसी के न चाहने पर भी जबरन अपनी वासना की तृप्ती के लिए किसी को माध्यम समझता है।"

"रहने दे, अपनी जबान की जवानी···अब तो मैं उस से खुद घृणा करती हूं।"

"घृणा···एक जीवन का जीवन को कातिल बना कर अब उसे घृणा करती हो! छि···छि···सचमुच क्या तुम भी औरत कहलाने योग्य हो···?"

"हमीदा, जबान को कैंची को कैंची की तरह नाजायज फायदा न उठा, नहीं तो···तेरे अब्बा को···।"

"अब्बा···की बात छोड़ो, और सोचो, अब अपनी सन्तान की, अपने भावी जीवन की। आज जीवन को जेल-फाँसी दिलाकर तुमने अपने सोहाग के सौरभ पुष्प पर विजय भी प्राप्त की तो तुम्हारी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी। तुम्हारे हृदय की अनुभूतियों को केन्द्र बिन्दु नहीं मिलेगा···।"

"तेरी तरह मेरा अस्तित्व अग्नि की लपटों में नहीं जलता!"

"ठीक कहती हो···शैला! लेकिन अग्नि में इतनी शक्ति है कि वह आज भी पैदा कर सकती है, पूरे···समुद्र के पानी को सुखा सकती है।"

"तो क्यों नहीं तू कर देती··· ?"

"इसलिए न कि तुम जैसी बहनों में एकता नहीं है, आवाज में ऊँच-नीच की भावना अब तक बुझते हुए दीप की तरह टिमटिमा रही है।"

"अच्छा-अच्छा देख लूँगी! मधुमा से कहा था कि अगर मैं जीवन को अपना साथी न बना सकी, तो जीवन उसका भी नहीं हो सकेगा।"

"तुम्हारा कथन सत्य है, लेकिन मधुमा के जीवन की रक्षा गाँव के सच्चे देश भक्त करेंगे। और···और—वह कातिल कहीं भी छिप कर नहीं रह सकता, जिसने एक किसान के अधिकार को हड़पने की आशा में कत्ल जैसा नाचीज काम किया।"

शैला के चप्पल उठ पड़े, वह चमकती हुई जल्दी-जल्दी अपने घर के पास जा खड़ी हुई, कभी एक बार गरम-गरम आँखों से उसकी ओर देखा और गाड़ी में बैठ कर पेट्रोल की धुआँ छोड़ती हमीदा की आँखों से दूर निकल गई, तो हमीदा हँस पड़ी। मधुमा का हाथ पकड़ कर घर की ओर बढ़ी और कुछ दूर जाने के बाद वह, बोली—"क्या करने आई थी ?"

"उसका विवाह है···बुलाने आई थी।"

"जीवन को जेल भिजवा कर तुझे जहर देना चाहती होगी।"

"तो क्या हो गया, वह जहर भी मेरे लिए अमृत बन जायेगा।"

"यह भावुकता का समय नहीं, मधुमा ! शैला के व्यवहार से परिचित होकर ऐसा न करो न।"

मधुमा चुप रही, कुछ दूर जाने के बाद वह अपने घर के बरामदे में आ खड़ी हुई। बरामदे के सामने ही उसने हरेक प्रकार के फूलों के पौधे लगा रखे थे। इन फूलों के पास खड़ी होती हुई, वह बोली—"हमीदा ! उन फूलों को देखती है न।"

"हाँ···देखती हूं ! तुम्हारे आने की खुशी में वे अपना सुगन्ध बिखेर रहे हैं ?"

"नहीं, उसके स्त्री पुरुष हमारे ऊपर हँस रहे हैं, हमीदा !"

"फूल और स्त्री।"

"हाँ हमीदा। जैसे मानव समाज में.स्त्री-पुरुष की श्रेणी है, उसी प्रकार इन फूल पौधों में भी दो प्रकार के फूल होते हैं।"

"दो प्रकार के फूल—!"

"हाँ, हमीदा ! जिसमें एक नर फूल और दूसरा मादा फूल···मैंने अपने हाथों से उन्हें सींचा है···इसलिए···।"

"इसलिए वे तुम्हारे दुख पर दुखी होकर सुगन्ध दान कर रहे हैं ?"

"हाँ,···हमीदा ! लेकिन अब तो इन फूलों से न जाने क्यों विरक्ति होने लगी है।"

"भावा अभाव की कमी हो गई, होगी !"

"सो बात नहीं !"

'फिर क्या बात है ?"

"बात यह है कि अब मन न जाने किस अज्ञात दिशा में उड़ जाने के लिए लालायित रहता है ?"

कह कर मधुमा एक धीमी मुसकान के साथ मुसकरा उठी। हमीदा ने भी उसकी मुसकान में योग दिया और फिर बरामदे में रखी-चारपाई पर बैठ कर बोली—"अब तो कोई चारा नहीं। जो सपना देख रही थी, वह टूट गया।"

"प्रतिक्रिया की बातें न करो, हमीदा! सपना देखा था, वह साथ हो या न हो···पर मेरा सपना साथ है।"

"वह कैसे···?"

"लोग सोते-सोते सपना देखते हैं—मैंने जागते-जागते देखा है। उस सपने को देख कर मैं विभोर हो उठती हूं···।"

"वह कैसा सपना···?"

"मेरी ओर देख तो सही···।":

"ओह···यह क्या···तेरी आँखें, तो तू···।"

"यह क्या कह रही है,···?" यह···

"जब नारी माँ बन जाती है, तो जैसे उसकी आँखों से किसी नारी का गर्भवती होना छिपा नहीं रहता। उसी तरह तेरा प्रेम भी छिपा नहीं रह सकता।"

पर मधुमा के चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं उभरी, उसके स्थान पर अपरिमेय ओठों पर प्रसन्नता खेल उठी। उसके गुलाबी गाल गरम तवे की तरह लाल हो गए। खुशी में वह फूल कर बोली—"तू प्रेम की कह रही है। पर मैंने तो विवाह कर लिया है।"

"किस से दीदी!"

"जीवन से···।"

"लेकिन समाज को विदित नहीं। एक प्रकार से तो यह···।"

"जो कार्य हृदय-मन कर चुका, वह अनुचित नहीं। जीवन का प्रेम पुष्प ही तो फाँसी के बाद···।"

"लेकिन इस पौधे को आंधी-पानी से बचा सकोगी?"

"आनन्द-मग्न होकर इस पौधे को बीमारी और कीड़ों से बचाने के लिए सदा सावधान रहूंगी।"

"लेकिन काका तो कहीं के ही के नहीं रहेंगे, तुम्हारे मन में काम की प्रबल इच्छा कैसे हो गई।"

"जहां मन और प्राण की छाया दीख पड़ती हैं, वहां रति अपने हाथों में मशाल लेकर काम देव को स्वयं जगा देती है।"

"तो रति का संयम टूट गया ?"

"हाँ हमीदा···कामदेव के हृदय की हवा रति सगुन्ध से निकल कर नारी पुरुष की नाक में समा गई और तू नहीं जानती मेरे इन फूलों की सुगन्ध से ही स्वर्ग का निर्माण होता है। जीवन तख्ते पर झूल जायेगा···लेकिन वह एक नया जीवन हमें दे जायेगा।···और वह अगर छूट गया, तो हम इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग का निर्माण करेंगे···फूल-फल और सुगन्ध से भरा स्वर्ग···जिसमें हम सब निवास करेंगे—।"

हमीदा हंस पड़ी। भविष्य की कल्पना सुन कर उसके मन में एक अजीब सी बहार उठी। उसने आकाश की ओर देखा और फिर कुछ गंभीर होकर, बोली—"जिस भविष्य की बात कह रही है, मन अभी उसके निकट नहीं पहुंच सका है···जिस भूमि पर वह रहता है, उसका मन माना बंटवारा कर लेता है।"

"बँटवारे के साथ-साथ स्वामित्व भी अलग-अलग है ? जिसकी सुरक्षा में हर देश को प्रति वर्ष करोड़ों रुपए खर्च करने पड़ते हैं और···फिर भी एक का स्वार्थ दूसरे के महत्वा का क्षाओं के पहाड़ से टकराए बिना नहीं रहते ?"

"यह तो मानव का होड़ है, मधुमा ?"

"होड़ नहीं, तबाही पैदा करना होड़ नहीं, जेहालत है, इस भूमि के ऊपर फैला विस्तृत आकाश है···जिसकी कोई सीमा नहीं, जहाँ हर देश का हवाई जहाज अपने यात्री के साथ बिना किसी सीमा के उड़ सकता है।"

"लेकिन वह भी तो भावी के ही समान है।"

"नहीं, हमीदा, घर की भाँति वह ससीम नहीं, असीम है।"

"छोड़ो भी कुछ हो, या न हो। हमें उसकी चिन्ता नहीं। अब जीवन के

बारे में क्या सोच रही हो। इस धरती और आकाश के बीच तुम एक शिशु को जन्म दोगी, तो···।"

"हाँ···धरती की छाती का दूध पीकर, आकाश के पालने में झूल कर वह बड़ा होगा···।"

"लेकिन उसके पहले गाँव तुम्हें यहां से निकाल देगा।"

"रियासत का गाँव नहीं, यह गाँव प्रजातंत्र सरकार का है, हमीदा! हमारी जमीन जब कोई हम से नहीं छीन सकता, तो गाँव से कैसे निकाल देगा—।"

हमीदा उमस पड़ी और कुछ तेज स्वर में बोली—"तो लोक लाज से भय नहीं, माना। पर इस तरह का अनुदान तो सामाजिक होगा?"

"और असामाजिक क्या है···?"

"और असंगत न हो···।"

"तो यह असंगत कैसे है!"

"वह केवल रति और काम की वासना मात्र है, जो भूख प्यास की तरह जाग उठती है और तू भी अपना संयम खो बैठी उसी भूख प्यास में!

"अनुभूतियों एवं अभिलाषाओं की कसक सहने की क्षमता की भी एक सीमा होती है···शर्त काम आदि-अनादि मानव जीवन की ऐतिहासिक वासनाएं हैं···और उसके मूल में आदि भाव प्रेम का भी।"

"रहने भी दे···मुझे पाठ मत पढ़ा···हृदय की दीनता विनम्रता दारुण दुख भी सहन हो जाते हैं, लेकिन प्रेम अपनी प्रियतमा के प्रति प्रतिदान स्वरूप से अधिक स्पष्ट नहीं होता?"

"फिर भी प्रेयसि अपने प्रिय के प्रति सदैव शुभ कामना करती रहती है, और उसके प्रेम में किसी प्रकार का कपट नहीं होता!"

हमीदा कुछ और कहती, किन्तु एकाएक किसी के आने की सूचना पाकर दोनों दौड़ पड़ीं। मुखियाराम को देखते ही मधुमा ने अपने काका से विलक कर पूछा—"क्या हुआ काका!"

"हुआ क्या बेटा!"

"क्या कह रहे हो, काका !"

"ठीक कह रहा हूँ, बेटा ! जो कष्ट जानता नहीं, वह उसकी महगाई को क्या समझ सकता। वही हुआ जो अंग्रेजी कानून में होता था।"

"तो जीवन को फाँसी हो गई है ?"

"बेटा ! फाँसी हो गई और···और अब हाईकोर्ट में मोकदमा गया है। क्या करूं···?"

"हाय—जीवन···जीवन यह क्या किया तुमने ?"

"रोने का समय नहीं, बेटा ! उस मुजरिम का पता लगा···जो कतल करके हमारे बीच में रम रहा है !"

मधुमा की आंखें सावन के नए काले बादलों सी रिमझिम करके बरस रही थी। हमीदा समीप ही खड़ी थी। उसने आगे बढ़कर कहा—"काका ! मैं तो जानती हूँ पर वह अपने को अपराधी नहीं कह सकता।"

"जानता कौन नहीं, बेटा ! परन्तु जब भाटों के कपड़े पहन लिए गए तो भला।"

"अब क्या होगा काका ?"

"जो न्याय की समझ में आयेगा। दूसरी ओर गवाइयाँ चुकीं···पहला केस तो था ही···दूसरे केस ने हमारी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया।"

"लेकिन···काका···!"

मुखियाराम ने स्नेह से बेटी को गले लगाया। फिर पुचकार कर बोला—" कहो, बेटा ! अपनी सारी पूंजी बेचकर भी मैं बेटे जीवन की रक्षा करूंगा··· नहीं तो इससे अच्छा वर···।"

कहते-कहते मुखियाराम वहाँ से चले गए, तो मधुमा उदास्त मुखी हुई हमीदा के साथ एक ओर बैठकर आँसू सुखाने लगी।"

—o—

तेइस

छोटी अदालत ने जीवन को फांसी की सजा सुना दी और उसकी रिहाई के लिए जब हाई कोर्ट में अपील हुई, तो जीवन शहर की जेल में ही नजर बन्द कर दिया गया। खून के अपराध में पकड़े जाने के कारण उस पर काफी सख्त पहरा रखा जाता था, फिर भी जीवन उन सारे प्रतिबन्धों के बावजूद जेल के सभी कैदियों से मिलता, जब कभी उन्हें काम से फुरसत मिलती, उसके आस पास के सारे कैदी उसे घेर लेते और तब वह प्रत्येक कैदी के उन अपराधों की कहानी बड़े ध्यान से सुनता। सुनकर वह उन्हें अपराध न करने की शिक्षा देता···चोर मिलते तो उन्हें श्रम द्वारा जीविका पार्जन करने की सलाह देता, तो खूनियों को खून न करने की।

इस तरह उसे पाँच महीने जेल में बीत गये। इन पाँच महीनों में भी वह सदा खुश रहा और जब से इस जेल में आया था, जेल के कैदियों की चेतना ही अपूर्व हो गई थी। लगता था जैसे सारा जेल बाहरी समाज से भी अधिक सभ्य हो गया है। लेकिन एक दिन जब नव जवान लड़की को उसने अपने बैरक की बगल से निकलते देखा, तो उसे बड़ा अचरज हुआ। उसे देखने से लगता था कि वह महिला किसी भद्र परिवार की दुहिता है। लेकिन जेल में आकर अकबका रही है। जीवन उसे देख रहा था, कि सुरसा आ खड़ा हुआ। जीवन की ओर देखकर बोला—'जीवन दादा ! तुम उधर क्या देख रहे हो ! वह मेम साहब हैं···!"

"लेकिन इस मासूम कली ने क्या जुल्म किया है ?"

"जीवन दादा, जग में जुर्म करने वालों के लिए जगह की जरूरत नहीं होती !"

"फिर भी यह कौन है, सुरसा ?"

सुरसा ने अपने कान पर अधजली बीड़ी की टुकड़ी लगा रखी थी, उसे

उतार कर सुलगाते हुए बोला—"बाबू ! तुम तो एक खून करके घबरा गए हो···सुरसा ने तो अपने हाथों से दरजनों को निशाना बना दिया !"

लेकिन यह अच्छा नहीं, सुरसा !"

"सब अच्छा है, बाबू ! हमने जितनों की हत्या की है, वे निर्दोष नहीं ! अदालत की आँख में धूल झोंककर साधू बनने वाले ही हमारी गोली के निशाना बने···पर कभी निर्दोष पर मेरी हाथ नहीं उठे !"

"अब उसके लिए तुम्हें प्रायश्चित करना चाहिए···!"

"हाँ-जब से तुम आ गए हो···सारा जेल अपने पाप का प्रायश्चित कर रहा है !"

"इसे प्रायश्चित नहीं–अपने जीवन का निर्माण समझो सुरसा···पर यह लड़की कौन है ?"

"बाबू–यह लड़की नहीं, लड़की की माँ है ! इसने···अपने पति को कत्ल कर दिया है !"

"पति को कत्ल···?"

"हाँ, बाबू ! और जब से इसने जेल में तुम्हारी तारीफ सुनी है, वह आप से मिलना चाहती है ।"

"तो तुम उसका पैगाम लेकर आये हो ?"

"हां, वह भी तो आ रही है और आज जब आप हम लोगों को पढ़ाना शुरू करेंगे, तो वह आयेगी !"

"लेकिन वह तो पढ़ी लिखी जान पड़ती है ।"

सुरसा कुछ कहने लगा था, कि वह युवती स्वंय आ धमकी और जीवन को जयहिन्द करके बोली—"जी ! जेल का एक-एक कैदी आपकी तारीफ कर रहा है ?"

"यह कैदियों की चेतना जाग उठी है ! जेल के सारे कैदी एक आवाज से प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि अब वे जीवन भर कभी अपराध नहीं करेंगे···।"

"तो आप इनके स्वभाव को बदलने का प्रयोग कर रहे हैं ?"

"जी नहीं···किसी का स्वभाव रेल की पटरी नहीं है, जो जब चाहे, बदल दी जाय।"

"फिर आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ?"

"इसलिए कि अपने राष्ट्र के प्रति मेरा कर्त्तव्य है।"

"लेकिन क्या इस तरह कोई कैदी अपनी प्रवृत्ति को बदल सकता है ?"

"जी हाँ, प्रवृत्तियों को बदलने के लिए प्रयोग की आवश्यकता है !"

युवती कुछ कहने लगी थी कि सामने से जेलर आता दीख पड़ा। उसे देखते ही सब अपने वार्ड की ओर चले गये, पर युवती उसी तरह खड़ी रही कि जेलर ने जीवन के समीप पहुंचकर कहा—"मि० जीवन ! सरकार के पास आपने जो अर्जी दी थी, वह सरकार ने स्वीकार कर ली है। आप कल से कैदियों के जीवन सुधार के जो प्रयोग करना चाहते हैं, कर सकते हैं।"

"जी–मेरा प्रयोग पूर्ण हो चुका है। अब मुझे वह स्थान बता दें, कि किस कमरे में इन कैदियो को शिक्षा देने की व्यवस्था की है ?"

"जी–वार्ड नम्बर एक से लेकर दस तक सारे वार्ड खाली करा दिये गये हैं, लेकिन जेल में जो औरतें हैं, उनके बारे में अभी तक कोई ऐसी औरत नहीं मिल सकी है, जो उन्हें···।"

"इसकी चिन्ता नहीं। सामने ही जो खड़ी हैं, उसके लिए इनका सहयोग लिया जा सकता है।"

"तो आप जाकर अपने वार्ड का काम शुरू कर दीजिए।"

इतना कहकर जेलर वहाँ से चला गया, तो जीवन भी उठ पड़ा और उस युवती को साथ लेकर वार्ड की ओर चला था कि सुरसा फिर आ खड़ा हुआ और बोला—"जीवन दादा ! सुना है कि हम सब को लिखाने-पढ़ाने का काम तुम्हें सौंपा गया है ?"

"हाँ···सुरसा ! तुम तो पुराने कैदी हो···लेकिन अब जीवन को सुधार लो न···!"

"हाँ, दादा ! तुम्हारे जैसा सुयोग कैदी मिल गया है, सो अब भी जीवन न सुधरेगा, तो कब सुधरेगा। चलो मैं वार्ड में चल रहा हूँ।"

चलते-चलते युवती का ध्यान सुरसा की गठीली छाती पर जा टिका। उसने सुरसा से पूछा—"क्यों जी ! इतने बड़े शरीर को देखने से पता चलता है कि तुमने मामूली अपराध नहीं किया होगा ?"

सुरसा बड़ी जोर से हँस कर बोला—"बहन···जी ! अपराध तो मेरा जन्म सिद्ध संस्कार रहा। बाप ने जैसी आदत डाली, वह आगे चलकर जवान हो गई।"

"तो चोरी की थी ?"

"नहीं, बहन जी ! मैंने तो अपने जीवन में एक नहीं दर्जनों खून किए हैं।"

"दर्जनों खून···किसके ··· ?"

" किसी निरपराधी का नहीं–मेरी लड़ाई सदा भष्ट्राचार के भूतों से रही ··· जो अपने मानसिक और शारीरिक छल-बल से समाज के कमजोर व्यक्तियों को सताते रहे, जिनकी आँखें निर्दोष माँ, बहनों, बच्चों के अस्तित्व मिटाने में सदा क्रोधी मुनियों सी काम करती रहीं, उन्हें ··· ।"

कहते-कहते सुरसा की आँखें अपने-आप सजल हो उठीं । उसे रोते देख जीवन से न रहा गया, उसके प्रति सहानुभूति सूचक शब्दों में उसके कन्धे पर हाथ रखकर, बोला–"अधीर मत बनो। अगर तुम जेल में भी हो तो यहाँ साहस के साथ अपने भाइयों को साहसी बनाओ देश में फैली जेल की जिन्दगी बसर करने से हम तभी मुक्त हो सकते हैं, जब हमारी चेतना की सुसुप्त भावनाएँ जाग्रत हों ?"

युवती ने जीवन की बात का समर्थन करते हुए कहा–"बहुत ठीक फरमाया, आपने। लेकिन इस तरह शिक्षा देने के बाद भी वे नहीं सुधर सकते ?"

"करोड़ों अशिक्षित, भोजन वस्त्र और आवास स्थान से हीन जो गन्दे पानी के हौज कीड़ों की तरह फैले हुए हैं, उन्हें बड़ी-बड़ी भविष्य वाणियों से सुखी नहीं बनाया जा सकता, न उनका जीवन सुख की समतल भूमि पर पहुँच सकेगा ?"

"फिर आप इनका सुधार कैसे करोगे ?"

"सुधार-उधार तो सुधार वादियों के समाज की बात है, लेकिन आप से मैं पूछूं कि क्या आप कभी सोचती हैं कि वे इस प्रकार का जीवन क्यों व्यतीत करते हैं।"

"केवल उनकी हठधर्मी और आराम से···?"

"ऐसी बात नहीं मिस···अब पुरानी दुनिया की दीवारें दरिया के दामन में दब चुकी हैं, उसकी स्मृति तो केवल भावुक खोखले आदर्श वादियों के अतीत का प्यार बनकर रह गई हैं ?"

"तो आपका मतलब यह है, जिसने दुनिया को पैदा किया, उसको भी हम भूल जायें ?"

"नहीं···वे हमारे आदरणीय हो सकते हैं···लेकिन उन्होंने अपना काम पूरा कर दिया···और जो कुछ अधूरा है, उसे हमें पूरा करना है !"

"आप की ईमानदारी अगर सफल नहीं हो तब···!"

"यदि एकता का अभ्युदय काल आज उदय हो जाय, तो हम किसी के आधीन नहीं रह सकते ! इन कैदियों को अगर अपनी राष्ट्रीयता के प्रति जागरूक किया जाय और जीवन युद्ध का हानि-लाभ सब को मालूम हो जाय, तो···तो जानती हो···विश्व भर में एक सार्वभौनिक समाज की स्थापना होगी और मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी सभी अधिकारों की स्वतः रक्षा कर सकेगा।"

युवती ने विषय को बदल दिया, बोली—"आप तो बहुत सुलझे हुए विचार के व्यक्ति हैं, आप जेल में कैसे ?"

"अनुभव करने के लिए। मुझे भी आप की तरह खून के सिलसिले में यह भूमि मिली है···यहाँ आकर मुझे कुछ करना था···!"

"लेकिन यहाँ आप क्या करेंगे···?"

"जो बाहर रहकर नहीं कर सकता था।"

"अगर इस प्रयोग में असफल रहे तो ?"

"मुझे विश्वास है कि असफलता मेरे सामने नहीं आ सकती !"

"तो आप का पहला प्रयोग क्या है ?"

"जी" इन्हें इनकी इच्छाओं के बारे में बताना···और फिर जब···वह दिन आयेगा, तब आप देखेंगी, कि देश में अपराधियों की संख्या कम हो जायेगी···और तब सारी जेलो में अनाज के गोदाम हो जायेंगे।"

युवती हंस पड़ी। जोर से हंसी और फिर अपनी हंसी रोककर वह बोली—"आप तो अमेरिका के लोगों की सी बातें करते हैं !"

"क्या मतलब है आपका ?"

"मतलब यह है कि वहाँ के लोग डालरों के पीछे दीवाने रहते हैं और आप जेल के पागलों के पीछे···।"

जीवन मुसकरा उठा। उसने युवती की ओर देखकर कहा—"आपने ठीक फरमाया। शायद आप अमरीका भी हो आई हैं ?"

"जी···शहर बहुत सुन्दर है ! भौतिक सफलता में उसने डालरों के सहारे अच्छी उन्नति की है।"

"लेकिन बिल्कुल अधकचरा पन··· इन बातों से इतना अन्तर नहीं जितना कि···"

"जितना क्या···?"

"यही कि आपने अमरीका का इतिहास पढ़ा है।"

"इतिहास···! हाँ, हां पढ़ा है। उस के पूर्वज भी तो बड़े बहादुर थे !"

जीवन हंस पड़ा। उसने अपनी हंसी रोककर कहा—"बिल्कुल गलत ! आपने इतिहास नहीं पढ़ा है।"

"क्या कह रहे हैं, आप !"

"सच कह रहा हूँ, अमरीका का इतिहास नहीं है !"

"और योरुप···?"

"योरुप···योरुप की हर वस्तु के आधार में कुछ न कुछ तो अवश्य है—आपने वहाँ के नगरों को भी देखा होगा ?"

"हाँ देखा था ! क्यों क्या विचार है ?"

"ठीक कह रहे हैं, आप ! आज अमरीका के सारे नगरों में जैसे योरुपीयन संस्कृति को खरीद कर गोदाम में भर लिया गया है।"

"आप अमरीका के प्रति इतने श्रद्धाहीन क्यों हैं···अमरीकन भाई तो हमारा स्वागत करते हैं ?"

"हम जब स्वागत करते हैं, सबको भाई चारे की दृष्टि से देखते हैं, तो वे क्यों नहीं देखें···भले ही आप के मन को फ्रांस के गिरिजाघर, इटली की कला प्रदर्शिय और स्वीटजर लैंड के देहातों ने आकृष्ट किया हो···पर हमारे देश के देहात-हिमालय, काश्मीर और दक्षिण के मन्दिरों तथा मुगलकाल की मसजिदों में जो जीवित कथा विद्यमान है वह भी पाश्चात्य कला से अभाव पूर्ण नहीं।"

युवती ने इस विषय को कुछ गम्भीर जानकर, पुनः विषय को बदल दिया और उस ओर जीवन का ध्यान आकर्षित करते हुए बोली—"वह लीजिए ! सारे कैदी सभा में उपस्थित हैं।"

सुरसा ने अवसर देखा, तो अपने दोनों दाँतों को निवार कर कहा—"हाँ, जीवन दादा ! सच बात है। सब लोग बड़ी बेफिक्री के साथ इन्तजार कर रहे हैं।"

"बेफिक्री से···वह तो देख रहा हूं। लेकिन यह उत्साह तब और अधिक होगा, जब जेलर को अध्यक्ष बनाया जाय !"

"सो तो जेलर ने स्वीकार कर लिया है।"

उसके पश्चात् जीवन जल्दी-जल्दी सभा की ओर बढ़ने लगा और एकाएक तभी सम्मुख उपस्थित भीड़ ने एक स्वर से उलाट भरी आवाज से कहा—"विश्व शान्ति अमर हो···भारत माता की जय-धरती की जय···आदि नारों से जीवन का स्वागत हो चुका, तो वह मंच पर आया। अध्यक्ष पर कैदियों ने जेलर को ही अपना अध्यक्ष चुन रखा था, सो अध्यक्ष ने शुभ सन्देश देने के बाद जीवन से जीवन को विकसित करने के ढंग पर प्रकाश डालने का आग्रह किया।

जीवन उठा और जनता के सम्मुख जाकर उसने दो शब्द कहे—"भारत के भाइयों एवं बहनों ! यह शब्द इस लिए कह रहा हूं···अपराध, स्त्री और पुरुष दोनों से ही होता आया है। और हमारा विषय भी यही है, कि इन

अपराधों का विनिमय किस प्रकार बन्द हो ! इसके लिए हमें अपनी आदतों को दोष देना उचित है ! आराम-उत्पीड़न, भूख अपराधों की मूल नहीं, बल्कि स्वार्थ, अहं-द्वेष-ईर्ष्या का ऐतिहासिक वैज्ञानिक प्रभाव हमारी अनुभूतियों के ऊपर इस प्रकार से हावी है, कि मानव जीवन अपने हृदय से इन ऐतिहासिक विषयों को अलग करने से अब तक मजबूर है ! हम और आप और हमारी आशाएँ केवल किसी सरकार के द्वारा पूरी नहीं हो सकती, जब तक हममें स्वयं राष्ट्रीयता तथा एकता की भावात्मक प्रवृतियों का हमारे मस्तिष्क पर पूर्ण प्रकाश नहीं पड़ता ! आप-हम सबने अपराध किया है···लेकिन अब तक अपराधों को निरपराधों की तरह हम अपने मानसिक एवं शारीरिक शक्ति का उपयोग देश सम्बन्धी समस्याओं का समाधान करें तो हमें एक दिन जेल की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इस बात पर आप हँसेंगे लेकिन यह हँसी नहीं, सत्य है। नये मानव का निर्माण जिन धातुओं से हो रहा है, वह ऐसी है, जो कालान्तर में स्पष्ट रूप से प्रस्फुटित होती दीख पड़ेगी ! इसलिए···आपसे अनुरोध है कि जिन बातों को हमने जेल के बीच रहकर दृढ़ता पूर्वक पालन करने का निश्चय किया है वही भाव जेल से छूटने के बाद हों ! बहुत से ऐसे हैं, जिनमें मुझे भी फाँसी की सजा मिल चुकी है। लेकिन इसका अर्थ गलत है ! प्रजातन्त्र में फाँसी की प्रथा प्रजातन्त्र पर एक···एक धब्बा है···लेकिन हम···हम इसे सहर्ष स्वीकार करते हैं···पर यह नियम भी दूर हो जायेगा··· आजीवन कारा वास···से बढ़कर फाँसी की सजा नहीं···लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम अपराध करें···बल्कि· अपराध करने वाले को एक नवीन प्रयोग से देश की रचनात्मक कार्यों में लगा दें ! बोलो···साथियों···तैयार हो···कि तुम आज से अपने सारे मित्रों को भी श्रम करके जीने का तरीका बता सकोगे ?"

कहते कहते जीवन चुप हो गया। क्षण भर के लिए भीड़ के कैदी सोचते रहे। फिर सब के सब एक आवाज से चीखे, "हाँ···हाँ, हम अपने माँ की दूध की शपथ लेकर वादा करते हैं···अपने विश्वास को बलिदान

करने के लिए तैयार हैं आज से जीवन भर इस जेल में रहकर अपने देश के उत्पादन में अधिक से अधिक योग देंगे।"

जीवन ने सबकी ओर देखकर कहा—"आप सब से यही आशा थी। और कल से हमारे साथियों में जिसे भी जिस प्रकार के काम करने की इच्छा हो, वे कल से काम करना शुरू कर दें···अपने सान की कला के औजार से हम ऐसा निर्माण करेंगे, जो अद्भुत होगा !"

कैदियों ने एक आवाज से कहा—"हम अपनी आदतों के गुलाम नहीं रहेंगे···हम···अपने काम से जीविका चलायेंगे और जेल की अवधि समाप्त होने पर अपने सारे अपराधी साथियों को भी अपने साथ लेकर राष्ट्र के नव निर्माण में जुट जायेंगे।"

इसके बाद जेलर की ओर संकेत करके कुछ कहना चाहता था कि जेल का सुपरिन्टेन्डेन्ट आ धमका। उसके हाथ में एक सरकारी लिफाफा था। उसे देखते ही जीवन ने पीछे की ओर देखा, तो मधुमा तथा उसकी कुछ सहेलियाँ और मुखिया राम के साथ सरपंच भी खड़े हैं, उन्हें देखकर उसने जयहिन्द किया और कुछ कहने लगा था, कि जेलर ने लिफाफा खोल कर पढ़ा और फिर बोले—"मि० जीवन···आपको सरकार ने रिहा करा दिया !"

"यह कैसे···?"

"असली कातिल ने तथा चश्मदीद गवाहों ने सरकार के सामने सत्य को स्वीकार कर लिया है, इसलिए आप जा सकते हैं।"

कैदियों ने सुना तो सब एक स्वर से चीख उठे—"जीवन दादा ! हमें छोड़कर चले जाओगे ?"

"नहीं···मै जेल से मुक्त होने के बाद भी आप की सेवा के लिए सप्तह में दो बार आया करूँगा !"

कैदियों का सरदार सुरसा की आँखे सजल हो आई, उसने कैदियों की ओर से जीवन को एक पुष्प प्रदान किया और जीवन सबका अभिनन्दन करने के बाद जब मंच से नीचे उतरा, तो उस युवती ने कहा—"जी, आप तो साफ छूट गए···सच्चे-देश भक्त जो ठहरे।"

"देश भक्त नहीं—सत्य पर आवरण डालकर कोई जीवित नहीं रह सकता। लोगों की सफाई ने हमें पुनः मुक्ति दी! आप भी अपने सत्य का सम्बल लीजिए, असत्य स्वयं पराजित होकर सम्मुख आ जायेगा।"

फिर वह नीचे उतर कर मधुमा के पास पहुंचा, तो वह मुस्करा उठी। मुखिया के साथ जब सब जेल के बाहर आए, तो मुखिया राम ने अपना एक हाथ जीवन के कन्धे पर रखा, दूसरा मधुमा के और फिर चलते-चलते बोले—"बेटा! आज से इस मधुमा को तुम हमेशा के लिए अपने साथ ले लो और···अब यह!"

"लेकिन शैला···!"

"शैला का विवाह सावित्री प्रसाद से हो गया, बेटा! तुम इसके साथ गाँव चलो, मैं जरा शहर से निबट कर आऊँगा।"

जीवन रोकना चाहता था पर मुखिया राम जल्दी से निकल गए, तो हमीदा ने कहा—"जीवन दादा! क्यों रोक रहे हो?"

"आखिर शहर में कौन से काम हैं?"

"यह न पूछो। ब्याह का सामान लेने···गाँव में पहुंचकर मुखिया काका गाँव के बीच प्रकृति फल-फूलों से इस नियम की पूर्ति करेंगे।"

मधुमा मुस्करा उठी। उसे लजाते देखकर, जीवन ने कहा—"प्रकृति और यौवन के सम्मुख इस तरह क्यों लजा जाती हो···आओ···चलें···।"

"हँस रही हूं कि आखिर मंजिल तक पहुँच कर ही रही···।"

"हां—मधुमा···मंजिल पर निर्भय गति से बढ़ने वाले कभी पराजित नहीं होते···।"

और इस तरह जीवन, मधुमा तथा उसकी सहेलियों के साथ स्टेशन आया ···गाड़ी पकड़ी और गाँव की ओर चल पड़ा।

समाप्त